Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

सदा वत्सले मातृभूमे!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

168006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा वत्सले मातृभूमे!

मातृभूमि से अभिप्राय हिमालय पर्वत, गंगा-यमुना इत्यादि नदियाँ, पंजाब, सिंध, गुजरात, बंगाल इत्यादि भू-खंड नहीं, वरन् यहाँ की समाज है। अतः देश-भक्ति वस्तुतः समाज की भक्ति को कहते हैं।

भारत भूमि की जो भी विशेषता है, वह इस देश में सहस्रों-लाखों वर्षों में उत्पन्न हुए महापुरुषों के कारण है; उन महापुरुषों के तप, त्याग, समाज-सेवा तथा बलिदान के कारण है; उनके द्वारा दिए ज्ञान के कारण है।

(इसी उपन्यास में से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा वत्सले मातृभूमे !
शृंखला के चार उपन्यास

1. विश्वासघात
2. देश की हत्या
3. दासता के नए रूप
4. सदा वत्सले मातृभूमे !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा वत्सले मातृभूमे!

Central Library
168006
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

गुरुदत्त

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

081
168006

हिंदी साहित्य सदन
नई दिल्ली–110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-S

© ईशान दत्त

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
& Organic Products
BOOKS IN HINDI, ENGLISH & SANSKRIT
www.hindisahityasadan.com
M:-9213527666, 7065618555

प्रकाशक : **हिन्दी साहित्य सदन**
2 बी. डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 23553624, 23551344; फैक्स : 23553624
email : indiabooks@rediffmail.com

संस्करण : 2011

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स, दिल्ली

100-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय

नमस्ते!
सदा वत्सले मातृभूमे!
पतत्वेष कायः त्वदर्थे!!

हे वत्सलमयी मातृभूमे! तुम्हें नमस्कार करता हूँ। यह शरीर तुम्हारे निमित्त अर्पित है।

यह तो स्पष्ट हो चुका है कि हिंदू संस्कृति, हिंदू मान्यताओं तथा भारतीय ज्ञान-विज्ञान को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए अंग्रेजों ने षड्यंत्र रचे। अंग्रेजों ने देखा था कि एक हज़ार साल तक गुलाम रहते हुए भी हिंदू ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयास नहीं छोड़ा। अंग्रेजों के काल में तो आंदोलन अति उग्र हो गया था। यहाँ तक कि आंदोलन इंग्लैंड की भूमि तक पहुँच गया था।

यह इस कारण संभव हुआ क्योंकि हिंदुओं का अपनी संस्कृति, धर्म तथा ज्ञान-विज्ञान की श्रेष्ठता पर विश्वास स्थिर था। अंग्रेजों ने अनुभव किया कि हिंदुओं के मन से यह श्रेष्ठता समाप्त किए बिना आंदोलन दबाया नहीं जा सकता।

अंग्रेजों द्वारा सबसे विनाशकारी षड्यंत्र था कांग्रेस की स्थापना। कांग्रेस की सदस्यता के लिए एक शर्त यह रखी गई थी कि वह अंग्रेजी शिक्षित होना चाहिए। और अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य था हिंदुओं को अपने धर्म से विमुख करना।

अंग्रेजी शिक्षा के विषय में, भारत में अंग्रेजी शिक्षा आरंभ करनेवाले मैकॉले ने अपने पिता को लिखे एक पत्र में कहा था—अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं जो सत्य हृदय से अपने मज़हब पर आरूढ़ हो।

कांग्रेस के संस्थापक ह्यूम का आशय यह था कि हिंदुस्तान की राजनीति की बागडोर उन लोगों के हाथ में हो, जो यदि भारत को स्वतंत्रता देनी पड़े, तो हिंदू संस्कृति, हिंदू मान्यताओं तथा ज्ञान-विज्ञान को भ्रष्ट करते रहें। अंग्रेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझता था कि अंग्रेजों का प्रभाव इस प्रकार चिरकाल तक बना रहेगा।

कांग्रेस ने यही किया। इतिहास साक्षी है कि भारतीय जनता के साथ विश्वासघात किया गया। देश की हत्या अर्थात् भारत विभाजन को माना, जिसके कारण लाखों व्यक्ति मारे गए, करोड़ों बेघर हुए, अरबों-खरबों की सम्पत्ति नष्ट हुई। इतना ही नहीं राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करके भी बौद्धिक तथा मानसिक दासता में भारतवासी जकड़े गए। आज का भारत उस शिक्षा के परिणामस्वरूप पाश्चात्य रंग में रँगा हुआ है। नास्तिक्य का बोलबाला है। भारतीय ज्ञान-विज्ञान की बात करो तो भारतवासी ही बिदक उठते हैं।

समाज में यह सामाजिक, मानसिक, राजनीतिक परिवर्तन किस प्रकार आया, इसका युक्तियुक्त वर्णन तथा विश्लेषण श्री गुरुदत्त के उपन्यासों में हमें मिलता है। इस दृष्टि से उनके निम्न उपन्यास उल्लेखनीय हैं—ज़माना बदल गया, दो लहरों की टक्कर, न्यायाधिकरण।

प्रस्तुत उपन्यास 'सदा वत्सले मातृभूमे' 1945 से 1952 तक की पृष्ठभूमि पर लिखे गए उपन्यासों की श्रृंखला में है—'विश्वासघात', 'देश की हत्या', 'दासता के नए रूप' तथा 'सदा वत्सले मातृभूमे!'

लेखक का मत है कि हिंदू विरोधी राजनीति के दुष्परिणाम को मिटाने के लिए घोर प्रयत्न करना पड़ेगा। तब ही हम वत्सलमयी मातृभूमि (भारत माता) के ऋण से उऋण हो सकेंगे।

इसमें संदेह नहीं कि उपर्युक्त चार उपन्यासों में इतना स्पष्ट राजनीतिक घटनाओं का सजीव चित्रण एवं रोमांचकारी वर्णन, विश्लेषण कोई भी अन्य लेखक प्रस्तुत करने का साहस नहीं कर सका था।

हमें विश्वास है कि प्रत्येक देशभक्त, भारत माता का पुजारी इन उपन्यासों को गंभीरतापूर्वक पढ़कर प्रेरणा प्राप्त कर सकेगा। ये उपन्यास बार-बार पढ़ने योग्य हैं तथा किसी भी निजी अथवा सार्वजनिक पुस्तकालय की शोभा बन सकते हैं। आपके पुस्तकालय में इन पुस्तकों की उपस्थिति आपकी जागरूकता का परिचय देगी।

—प्रकाशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

किसी गतिशील पत्थर की गति की दिशा बदलने के लिए शक्ति उतनी ही बलवान् होनी चाहिए जितना पत्थर का भार हो। इसी प्रकार जड़ मन को सन्मार्ग दिखाने के लिए आघात उतना ही प्रबल होना आवश्यक है, जितना मन का जड़त्व हो।

चंद्रमोहन के मन को उसकी बहन के देहांत और उसकी प्रेमिका प्रमिला के किसी अन्य से विवाह कर लेने का आघात इतना प्रबल हुआ कि उसके मूढ़ मन की दिशा बदलने में सफल हो गया।

प्रमिला के विवाह से उसके मन को वह धक्का पहुँचा कि वह कम्युनिस्ट पार्टी से घूमा और पक्का 'कैपिटलिस्ट' बन गया। उसके मन में धन कमाने की लालसा जाग पड़ी; किसी से दान-दक्षिणा लेकर अथवा धोखा-धड़ी करके नहीं, वरन् ईमानदारी से प्रयत्न कर, प्रयत्न के फल को विस्तार देने से।

प्रमिला के विवाह के भोज में वह सम्मिलित हुआ था और भोज से लौट, रात पलंग पर लेटे-लेटे वह मन में कामना करने लगा था कि वह भी अपने परिश्रम से धन संचय करेगा और अपनी मोटरगाड़ी स्वयं चलाते हुए धनी प्रतिष्ठित समाज में अपना स्थान बनाएगा।

उसके पिता मुकुटबिहारी माथुर ने एक दिन कहा था, "बरखुरदार! तुम लॉ-कॉलेज में प्रवेश ले लो और अपने में कुछ अर्जन करने की योग्यता उत्पन्न करो।"

पलंग पर लेटे-लेटे पिता के इस वाक्य को स्मरण कर, वह उसके अनुरूप योजना बनाकर ही सो सका। परंतु लॉ-कॉलेज के दाखिले हो चुके थे और उसे इसके लिए एक वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

इसके डेढ़ वर्ष उपरांत एक सायंकाल चाय लेने जब वह घर पहुँचा तो उसके हाथ में मोटी-सी कानून की एक पुस्तक और एक नोटबुक थी। चंद्र ने पुस्तक और नोट-बुक ड्राइंगरूम में पड़ी साइड-टेबल पर रखी और पिता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समीप कुर्सी पर बैठ, सैंटर-टेबल पर रखे एक खाली प्याले में अपने लिए चाय बनाने लगा।

इस नित्य से विलक्षण व्यवहार को देख पिता ने पुत्र के मुख की ओर देखते हुए पूछ लिया, ''कहाँ से आ रहे हो, चंद्र?''

चंद्र ने प्याले में से सरुकी लगाते हुए कहा, ''पिताजी! कॉलेज में भर्ती हो गया हूँ।''

''गुड! किस कॉलेज में?''

''लॉ-कॉलेज में।''

''पार्टी के मुकद्दमे करने के लिए?''

''वह भी, यदि उन्होंने देने चाहे और सामान्य जनता के भी।''

''देखो चंद्र!'' पिता ने गंभीर भाव से कहा, ''जो कुछ लॉ-कॉलेज में पढ़ाया जाता है, उसका आधार भारतीय ज्यरिस्प्रूडेंस से बहुत अंशों में भिन्न है। मैं भारतीय ज्यूरिस्प्रूडेंस को पढ़कर और उसको भली-भाँति मन में बैठाकर ही अपने 'प्रोफेशन' में सफल हो सका हूँ। वह है—'न्याय-दर्शन'। इस ग्रंथ का किसी विद्वान् के चरणों में बैठ अध्ययन करने से ही तुम एक सफल वकील बन सकोगे।''

''यह कौन-सी पुस्तक है और कहाँ मिलती है?''

''मिल तो किसी भी दुकान से सकेगी, परंतु ग्रंथ संस्कृत भाषा में है। इसके लिए उस भाषा का अध्ययन करना होगा। वह ग्रंथ किसी न्याय के आचार्य से पढ़े बिना समझ नहीं सकोगे। मुझे भी इस ग्रंथ को पढ़ने और समझने में दो वर्ष लगे थे। इसको पढ़ हृदय में बैठाने के उपरांत ही मैं मुकद्दमे जीतने लगा और मेरी प्रैक्टिस बढ़ने लगी थी। अब मैं शिमला हाईकोर्ट और यहाँ के सुप्रीम कोर्ट में अपनी विद्वत्ता की धाक जमा रहा हूँ।''

''आप किस आचार्य से पढ़े हैं?''

''वह अब दिल्ली में नहीं रहते। यहाँ के तौर-तरीके देख अपने गाँव सुकेत मंडी में जाकर रहने लगे हैं।''

''पिताजी! उनका पता बता दीजिए। मैं उनसे संपर्क बनाने का यत्न करूँगा।''

यह वार्तालाप चाय पीते-पीते हुआ था। माथुर के ग्राहक उसकी बैठक में उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इस कारण चाय समाप्त करते ही वह उठा और अपनी बैठक में चला गया।

चंद्रमोहन की माँ भी सोफा पर वकील साहब की बगल में बैठी चाय ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी। एकाएक चंद्र के मन में एक बात उठी और उसने माँ से पूछ लिया, ''माँ! पिताजी ने यह नहीं पूछा कि कॉलेज-प्रवेश के लिए धन कहाँ से मिला? पिताजी तो मुझे पॉकेट-खर्च भी नहीं देते।''

''तुम्हें सहायता मुझसे मिल रही है, इसका ज्ञान उनको है।''

''तो तुमने उनको बता दिया है?''

''सब नहीं। केवल यह कि मैं तुम्हें कुछ मासिक दे रही हूँ। उन्होंने न तो मेरे देने पर आपत्ति की और न ही पूछा कि कितना कुछ देती हूँ। इस कारण उनको यह तो पता है कि तुम भूखे नहीं मर रहे, परंतु यह आज ही पता चला है कि तुम पढ़ाई करने लगे हो।''

''पर माँ! पिताजी से यह भी कह दो कि वह सुकेत मंडीवाले पंडितजी से मुझे भी शिक्षा दिला दें।''

''मैं तो आशा कर रही थी कि तुम स्वयं ही पूछोगे। परंतु तुम तो सदा की भाँति बुद्धू ही रहे हो। तुमको समय पर बात सूझती ही नहीं।

''इसी कारण मैं सुझाव दे रही हूँ कि उन पंडितजी से पढ़ने के स्थान पिताजी के पाँव दबा दिया करोगे तो अधिक लाभ होगा। वह पंडितजी तो सिद्धांती थे। परंतु सिद्धांतों का प्रयोग तुम्हारे पिताजी उनसे अधिक श्रेष्ठता से बता सकेंगे। मैं जब इनके घर में आई थी, तब इन्होंने अपनी वकालत अभी आरंभ ही की थी। हम तुम्हारे बाबा से धन लेकर ही दैनिक आवश्यकताएँ पूर्ण करते थे।

''पंडित विद्याविलासजी पीछे इनके संपर्क में आए और उनसे पढ़ते-पढ़ते ही इनकी वकालत चमकने लगी और अब तो ईश्वर की कृपा है।''

''तो मैं पिताजी से कहूँगा।''

''हाँ; और यदि उन्होंने मुझसे राय की तो मैं तुम्हारी सिफारिश कर दूँगी।''

इसके कुछ दिन उपरांत एक रात भोजन के समय चंद्र ने पिता से पूछा, ''पिताजी! आप कुछ समय मुझे न्यायदर्शन पढ़ाने के लिए दे सकते हैं?''

''क्यों? उन साकेतवाले पंडित विद्याविलासजी को लिखा था?''

''वहाँ से कोई उत्तर नहीं आया। पत्र भेजे हुए आज बीस दिन हो चुके हैं।''

''तो वहाँ जाकर उनका पता करो कि उन्होंने पत्रोत्तर किस कारण नहीं दिया?''

''हाँ, पता तो करना चाहिए; परंतु मैं एक अन्य बात विचार कर रहा हूँ। वह यह कि आपसे पढ़ा करूँ। आपसे पंडितजी की विद्वत्ता को मथकर प्राप्त हुआ नवनीत उपलब्ध हो सकेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माथुर पुत्र के मुख पर देखता रह गया। कुछ देर तक देखकर बोला, ''हाँ! यह हो सकता है। परंतु मुझसे यह शास्त्र पढ़ने के लिए कुछ दक्षिणा भेंट में देनी पड़ेगी।''

चंद्र पिता के मुख पर देखने लगा। वह जानता था कि उसके पास भेंट देने के लिए कुछ नहीं है। उसके पास जो कुछ भी है, वह माँ का दिया हुआ ही है। अतः उसने कह दिया, ''पिताजी! कुछ पास होगा तो अवश्य ही दूँगा।''

''है, तभी तो माँग रहा हूँ।''

''बताइए।''

''कल से स्नानादि से निवृत्त हो प्रातः चार बजे पढ़ने के लिए आया करो।''

''चार बजे आ तो सकता हूँ, परंतु यदि स्नानादि करने के उपरांत चार बजे आना होगा तो प्रातः तीन बजे उठना होगा। यह तो बहुत सवेर होगी?''

''नहीं; मैं पिछले पच्चीस वर्षों से ऐसा कर रहा हूँ और निरंतर बिना किसी प्रकार के व्यवधान के यह करता आ रहा हूँ।

''जब मैं एक गृहस्थ-जीवन में रहता हुआ यह कर सकता हूँ तो तुम अविवाहित होते हुए क्यों नहीं कर सकोगे?''

''कल से ही यत्न करूँगा। यदि कुछ अनियमित हुआ तो कुछ दिनों में ही अभ्यास से ठीक कर लूँगा।''

माथुर साहब को समझ आया कि इसको कोई सुमति देनेवाला है। वह पुत्र को एक जड़मति जीवों की संगत में रहते हुए जड़बुद्धि हो गया समझ रहा था।

उसी रात माथुर साहब ने चंद्र की माँ स्वरूपरानी से पूछ लिया, ''ऐसा प्रतीत होता है कि माँ पुत्र का मार्गदर्शन कर रही है।''

''तो यह उचित नहीं है क्या? मुझे वह दस-ग्यारह वर्ष का सुकुमार ही समझ आया है।''

''मैं मना नहीं कर रहा। मैं तुम्हें उसकी सहायता का ढंग बताना चाहता हूँ।''

''बताइए।''

''वह मेरा अलार्मवाला टाइमपीस लेकर, प्रातः तीन बजे का अलार्म लगाकर उसके पलंग के सिर के पास एक मेज पर रख आओ।''

''परंतु इस समय तो वह सो गया होगा?''

''उसको बताने की आवश्यकता नहीं। उसका कमरा तो खुला ही होगा। यह वहाँ रख आओ। वह जागे-न-जागे, टाइमपीस उसे जगा देगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूपरानी उसी समय उठी और टाइमपीस में तीन बजे का अलार्म लगा, चंद्र के कमरे में उसके पलंग के समीप पड़ी तिपाई पर रख आई।

प्रात: चार बजने में पाँच मिनट रहते ही पुत्र पिता के कमरे में आ गया। वकील साहब अपना स्वाध्याय आरंभ करने ही वाले थे।

माथुर मुस्कराकर पूछने लगे, "कुछ कष्ट तो अनुभव नहीं हो रहा?"

"जागते समय तो हुआ था, परन्तु अब मैं सर्वथा सजग और सतर्क हूँ।"

पहले दिन बैरिस्टर साहब ने न्याय-दर्शन के विषय पर ही बताया। उनका कहना था कि यह एक विज्ञान है, जिसे आन्वीक्षिकी विद्या कहते हैं। इसे अंग्रेजी में 'Science of investigation' (खोज करने का विज्ञान) कहते हैं।

"किसकी खोज?" चंद्र ने पूछ लिया।

"सत्य की।"

"और झूठ की नहीं?"

"जो सत्य नहीं, वह झूठ है। दोनों के बीच में कुछ नहीं होता। जो सत्य है, वह सत्य ही है। जो झूठ है, वह झूठ ही है।"

"परंतु पिताजी! यह भी तो हो सकता है कि किसी कथन में एक अंश झूठ हो और एक अंश सत्य हो?"

"ऐसा हो सकता है; परंतु मेरा कहना है कि जो अंश सत्य है, वह सत्य ही है और जो अंश झूठ है, वह झूठ ही है। झूठ और सत्य के मिश्रण से सामान्य लोगों को धोखा दिया जाता है। किसी कथन में सत्य अंश को देखकर पूर्ण कथन को ही सत्य समझने के लिए कहा जाता है। राजनीति में प्राय: ऐसा किया जाता है।

"देखो, एक उदाहरण से मैं बात स्पष्ट करता हूँ। गांधीजी ईश्वर पर विश्वास रखते थे, परंतु उनके जीवन में कुछ ऐसी बातें भी हुई हैं जो सत्य पर आधारित नहीं थीं। जैसे उनका यह कथन कि पंडित जवाहरलाल उनके सर्वथा अनुकूल हैं। गांधी एक सत्य की आड़ में दूसरे मिथ्या कथन को भी सत्य बनाने का यत्न कर रहे थे। परंतु सत्य सत्य है तथा मिथ्या मिथ्या है। इस प्रकार सत्य तथा असत्य को मिलाकर जनता के समक्ष उपस्थित करने का परिणाम महा भयंकर हुआ है।"

"तो क्या पंडितजी महात्मा गांधी के अनुकूल नहीं थे?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं। पंडितजी स्पष्ट घोषित करते रहे हैं कि वह नास्तिक हैं जब कि गांधीजी परमात्मा पर अगाध श्रद्धा रखते थे। गांधीजी सत्य की महिमा गायन करते थे जबकि पंडितजी को संसद में अपने प्रधानमंत्री पद पर से कई बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असत्य कथन करना पड़ा है। वह कई बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को महात्मा गांधी का हत्यारा कह चुके हैं परंतु एक बार भी इसे सिद्ध नहीं कर सके।

''ये तो हुई व्यक्तिगत बातें। देश तथा जाति के विषय में भी नेहरूजी गांधीजी की नीति को नहीं मानते थे। गांधीजी खद्दर अर्थात् घरेलू दस्तकारी को पसंद करते थे और नेहरूजी बड़े-बड़े कारखानों की स्थापना में लगे हुए हैं।''

''परंतु मुझे बताया गया है,'' चंद्र ने कह दिया, ''हिंदू-संस्थाओं के प्रति घृणा गांधीजी तथा नेहरूजी में समान रूप में थी। कई लोग यह भी कहते हैं कि हिंदू इतनी पतित कौम है कि इससे घृणा हो जानी स्वाभाविक है।''

''क्या बुराई है हिंदुओं में?''

''इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ-जैसी संस्था उन्नति कर रही है।''

''इस संस्था में क्या खराबी देखी जाती है?''

''ये तानाशाह हैं।''

''ये उसे अनुशासन का नाम देते हैं। परंतु चंद्र! तानाशाहों के प्रति घृणा तानाशाह ही करते हैं। मनुष्य का यह स्वभाव है कि दुर्गुणों में प्रतिस्पर्धा सहन नहीं की जाती। सद्गुणों में स्पर्धा होगी तो वह द्वेष का कारण नहीं होती।''

''तो आप भी मानते हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तानाशाही संस्था है।''

''हाँ, परंतु यह बुरी बात नहीं है। यह इस कारण कि यह शासक नहीं है। यह संस्था शासक बनने की लालसा भी नहीं रखती। मैं इनके अधिकारियों को समझाया करता हूँ कि आज्ञा न देकर, समझा-बुझाकर अपना कहा मनवाया करें।

''पिछली लोकसभा के निर्वाचनों में इन्होंने मुझको प्रत्याशी बनने के लिए कहा था। मैंने इनकार कर दिया। इस पर यह आज्ञा करने लगे। मैं नहीं माना। इस पर वे चुप कर गए।

''एक दिन ये मुझे अपने स्वयंसेवकों की एक सभा में ले गए और कहने लगे कि मैं इनको अनुशासन और विचार स्वतंत्रता के अर्थ समझाऊँ। मैंने अपने मन की बात बताई और अनुशासन तथा तानाशाही में भेद समझाया। इन्होंने ध्यान से मुझे सुना। तब से ये मेरे मित्र हैं, मेरे अफसर नहीं। मैं इनको अपने मन की बात बताता रहता हूँ। मानें, न मानें इनका अधिकार है।

''कुछ इनमें से मानते हैं, कुछ नहीं मानते। मुझे इससे रोष नहीं होता। यदि मैं भी तानाशाह होता तो इनके मेरी बात न मानने पर रुष्ट हो जाता।''

चंद्र समझा गया और उस दिन का पाठ समाप्त हुआ।

इस प्रकार दिनानुदिन पाठ चलने लगा।

चंद्र ने वकालत पास की तो पिता के काम में सहायता करने लगा। इस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी न्यायदर्शन का अध्ययन चलता था। प्रातः की गोष्ठी होती थी।

एक दिन चंद्र की माता स्वरूपरानी ने पति से कह दिया, ''आप चंद्र से सामयिक बातें ही करते रहते हैं। आप तो इसे दर्शनशास्त्र पढ़ाने लगे थे?''

''कौन-सी सामयिक बातें की हैं हमने?'' माथुर का प्रश्न था।

पत्नी ने कहा, ''उदाहरण के रूप में आज प्रातः शेख अब्दुल्ला की बात चल रही थी।''

''परंतु वह तो न्यायदर्शन के एक तत्त्व 'प्रमाण' पर वाद-विवाद हो रहा था। शेख अब्दुल्ला की बात तो उदाहरण मात्र थी।''

''क्या प्रमाण की बात थी?''

''बात हो रही थी कि अनुमान-प्रमाण सत्य होता है अथवा नहीं। उसी के विषय में उदाहरण दिया था कि शेख अब्दुल्ला दोषी सिद्ध होता है और उसे कश्मीर का मुख्यमंत्री नहीं रहना चाहिए।

''डॉक्टर मुखर्जी की हत्या हुई है। मैंने उसे बताया था कि यह आरोप है कि मुखर्जी की हत्या हुई है। यह वस्तुस्थिति है कि उनकी मृत्यु स्वाभाविक नहीं थी, इस कारण इस विषय में जाँच की जानी चाहिए और शेख अब्दुल्ला पर मुकद्दमा चलाना चाहिए। इस बीच शेख अब्दुल्ला को यदि पदच्युत नहीं किया गया तो वह प्रमाण नष्ट कर सकता है।

''मेरे इस कथन पर शेख के पूर्ण व्यवहार पर दृष्टिपात करने की आवश्यकता पड़ी थी।

''चंद्र को आपत्ति यह थी कि यदि शेख पर मुकद्दमा चलाया तो संभव है वह नेहरू पर तथा कई अन्य लोगों पर सत्य-असत्य आरोप लगाता। तब उन पर भी मुकद्दमा करना पड़ता।

''मैंने उसकी इस आपत्ति पर ही कहा था कि क्योंकि पंडित नेहरू तथा अन्य लोगों पर आरोप लग सकता है, इस कारण शेख अब्दुल्ला पर मुकद्दमा नहीं चलाया जाना चाहिए, यह कोई युक्ति नहीं। यदि शेख पर मुकद्दमा चलाते हुए अन्य नेता भी अपराधी सिद्ध हो जाते हैं तो हो जाएँ। इसमें क्या हानि है? उन नेताओं के बिना भारत-भूमि असहाय नहीं हो जाएगी। भारत-भूमि वीरों और श्रेष्ठजनों की जननी रही है। एक से एक बढ़कर योग्य व्यक्ति शासन के लिए मिल जाएँगे।

''इसी प्रकार जब गांधीजी ने भूख हड़ताल की थी तो नेहरू तथा मंत्रि-मंडल के सदस्य गांधीजी की बात को मान गए थे। इस पर रुष्ट हो किसी मनचले ने गांधीजी की हत्या कर दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पहला अपराध गांधीजी ने किया था। उन्होंने भारत के मंत्रिमंडल को स्वयं अनशन कर मरने की धमकी दी थी। नेहरू तथा मौलाना तो पहले ही पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपया दे देने के पक्ष में थे। परंतु मंत्रिमंडल के अन्य सभी सदस्य इसका विरोध करते थे। गांधीजी के धमकी दे देने पर सब भीगी बिल्ली बन उनका समर्थन करने लगे। इस प्रकार पूर्ण मंत्रिमंडल अपराधी बन गया था।

"मुकद्दमे में जैसे सावरकर और गुरु गोलवलकरजी को दोषी समझ कटघरे में न्यायाधीश के सम्मुख प्रस्तुत किया गया था, उसी प्रकार पूर्ण मंत्रिमंडल को भी अपनी सफाई देने के लिए वहाँ खड़ा किया जाना चाहिए था।

"ऐसा नहीं किया गया। जब मुख्य अपराधी गोडसे ने यह कहा था कि भारत सरकार अपराध कर रही थी और गांधीजी ने उनके अपराधों को छुपाने के लिए अनशन किया था, तब मंत्रिमंडल को अपनी सफाई देने के लिए बुलाना चाहिए था। उनको बुलाया नहीं गया। यह अन्याय हो गया है।

"इस प्रकार स्वरूप! यह न्यायदर्शन का ही विषय था और मैं चंद्र को इन उदाहरणों से समझा रहा था।"

"तो मंत्रिमंडल को भी फाँसी पर चढ़ाना चाहिए था?" स्वरूपरानी ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया।

"नहीं, परंतु जैसे गोडसे को भड़कानेवाला कहकर सावरकर को अपराधी के कठघरे में खड़ा किया गया था, वैसे ही मंत्रिमंडल को भी खड़ा कर उस पर वकीलों की जिरह होनी चाहिए थी। यह देखना न्यायाधीश का काम था कि मंत्रिमंडल कितना दोषी है और उसे सजा मिलनी चाहिए अथवा नहीं।"

स्वरूपरानी को इस लंबी युक्ति की सत्यता पर विश्वास नहीं आया। परंतु चंद्र के मन में बात बैठ गई थी। वह विचार करने लगा था कि नाथूराम गोडसे बड़ा अपराधी था अथवा भारत का मंत्रिमंडल? एक बात उसे स्मरण आ गई—"समरथ को न दोष गुसाईं।" अर्थात् शक्ति मंत्रिमंडल के पास थी इस कारण उसका दोष नहीं हो सकता।

इस प्रकार की शिक्षा के उपरांत उसकी बुद्धि का द्रुत-गति से विकास होने लगा और इसका परिणाम भी निकलने लगा।

:: 2 ::

जब किसी के भाग्य में एक दिशा विशेष में चलने का योग होता है तो फिर साधन भी मिल जाते हैं। यह एक निष्प्रयोजन कथन था कि माँ ने एक दिन चंद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को, जब वह कहीं घूमने जा रहा था, कह दिया, ''मेरे लिए बाजार से तीन ग़ज खद्दर लेते आना।''

''पर माँ! मैं तो कनॉट प्लेस को जा रहा हूँ।''

''तो वहाँ भी खद्दर मिल जाएगा। रामलाल की दुकान पर भी अब खद्दर बिकता है।''

''खद्दर?''

''हाँ! पिछले सप्ताह मैं गई थी तो उसकी दुकान में खद्दर का एक विभाग देखा था। बहुत बारीक खद्दर था। मैं कहती तो वह तीन के स्थान पर दस ग़ज बिना मूल्य के दे देता और मैं यह नहीं चाहती थी।''

''पर पिताजी तो अपने मुवक्किलों से बहुत बड़ी-बड़ी वस्तुएँ भेंट में लेते रहते हैं?''

''परंतु रामलाल तुम्हारे पिताजी का मुवक्किल नहीं है?''

''पिताजी ने उसकी पत्नी का मुकद्दमा तो हाईकोर्ट में किया था?''

''वह ऐसे ही है जैसे तुम कहीं अन्याय से पकड़े जाओ तो तुम्हारा मुकद्दमा बिना फीस के कर दें। भारत सरकार ने रामलाल की पत्नी रानी को जबरदस्ती पकड़कर पाकिस्तान भेज दिया था। जब रामलाल अपनी पत्नी को पाकिस्तान से छुड़ाकर लाया तो उसकी पत्नी की चाराजोई शिमला हाईकोर्ट में की गई थी। उसकी पत्नी को भारत में नागरिकता का अधिकार दिलाना था। रामलाल तुम्हारे पिता की फीस के दो हज़ार देना चाहता था, परंतु तुम्हारे पिताजी ने नहीं लिए। तुम्हारे पिता ने कहा था कि इससे वह अपनी बीवी को भूषण ले दे।''

चंद्रमोहन पिताजी के इस व्यवहार में कारण को विचार करते हुए अपने एक पुराने सहपाठी के साथ कनॉट प्लेस को चल पड़ा। उनका विचार था कि रीगल सिनेमा में पिक्चर देखेंगे। अब माँ ने एक काम बता दिया तो चंद्र ने मित्र को कहा, ''माँ के लिए थोड़ा कपड़ा लेना है।''

चंद्र के मित्र रमण ने कह दिया, ''तुम्हारे साथ यही तो झंझट है। पिक्चर के पहले समय नहीं है और पीछे दुकान बंद हो जाएगी।''

''तो पिक्चर किसी अन्य दिन देख लेंगे?''

''खद्दर किसी अन्य दिन नहीं खरीद सकते क्या?''

''यह मैं कैसे बता सकता हूँ? वह मेरे अपने लिए नहीं चाहिए। वह माँ को चाहिए।''

''अरे माँ के बेटे! रात माँ से कह देना कि कल ला दूँगा।''

''और लेनिन के बेटे! सिनेमा कल नहीं देख सकते क्या?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चंद्र! यह तुम लेनिन पर पहुँच गए हो?"

"तुमने माँ के बेटे जो कहा था।"

रमण चंद्र का मुख देखता रह गया। वह देख रहा था कि चंद्र ऐसे विवाद पहले कभी नहीं किया करता था। कुछ दिनों से ही वह वाद-विवाद करने लगा है। उसे ध्यान हो आया, पिछले मास जस्टिस ढींगड़ा ने एक सभा में कहा था—"प्राचीन काल में न्याय-व्यवस्था बहुत ही 'प्रिमिटिव' थी।"

इस पर चंद्र ने सभा के उपरांत पूछ लिया था, "सर! प्रिमिटिव का क्या अर्थ होता है?"

प्रोफेसर का कहना था, "जो अविकसित हो।"

चंद्र का कहना था, "प्रिमिटिव का शाब्दिक अर्थ आदिकाल है?"

"और आदिकाल अविकसित ही था।"

"परंतु यह तो वस्तुस्थिति से उलट है?"

इस पर समीप खड़े प्रायः लोग हँस पड़े। चंद्र इस पर चुप नहीं हुआ। उसने कह दिया, "श्रीमान्! मैं यह प्रमाण-युक्त बात कर रहा हूँ। यदि प्राचीन और अविकसित पर्यायवाची होते तो वेद बाइबिल से और बाइबिल कुरान से तथा कुरान कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो से घटिया दस्तावेज होते। यह सप्रमाण सिद्ध किया जा सकता है कि कम्युनिस्ट मैनिफैस्टो से कुरान श्रेष्ठ है। कुरान से बाइबिल और बाइबिल से वेद अधिक वैज्ञानिक ग्रंथ हैं।"

"आई ऐग्री टू डिफर विथ यू (मैं तुमसे मतभेद को स्वीकार करता हूँ)। इस पर भी प्रिमिटिव के यही अर्थ हैं।" ढींगड़ा ने निरुत्तर होते हुए कहा। यही बात जस्टिस महोदय ने स्वयं अपने व्याख्यान में कही थी। उसने वेद के विषय में नहीं कहा था, परंतु कम्युनिस्ट मैनिफैस्टो से कुरान की श्रेष्ठता और कुरान से बाइबिल की श्रेष्ठता की बात कही थी। यह वेद की बात चंद्रमोहन ने अपने पास से कह दी थी।

वेद को क्रम से अयुक्त कहने पर उसकी स्वयं की बाइबिल आदि की बात भी असिद्ध होती थी।

चंद्र ने साथ-साथ चलते हुए कहा था, "बट दैट इज़ नो आरग्यूमेंट, सर! (यह कोई युक्ति नहीं, जनाब)।"

ढींगड़ा का उत्तर था, "मैं यहाँ कोई मुकद्दमे पर युक्ति नहीं कर रहा हूँ।"

इस पर सब लोग हँस पड़े। परंतु न तो ढींगड़ा के मुख पर हँसी थी और न ही चंद्र के मुख पर। दोनों गंभीर मुख बनाए हुए थे।

रमण समझा था कि चंद्र ने युक्ति में जस्टिस ढींगड़ा को मात कर दिया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज भी वह उसके इस कहने पर कि तुम माँ के बेटे कहकर व्यंग कस रहे थे, वह हँस पड़ा।

''रमण! हँसे क्यों हो?''

''वैसे ही जैसे जस्टिस ढींगड़ा के यह कहने पर हँसा था—'आई एम नौट आरग्यूईंग ए केस विद यू'।''

''परंतु लोग तो मुझको निरुत्तर हो गया समझ हँस रहे थे?''

''नहीं चंद्र! कम-से-कम मैं ढींगड़ा को निरुत्तर होते देख हँसा था। आज भी अपने को निरुतर होते देख हँसा हूँ। हँसा हूँ तुम्हारी हाजिरजवाबी पर।''

''तो उस दिन मेरी बात को ठीक समझे थे?''

''बिल्कुल! जस्टिस ढींगड़ा स्वयं मानता है कि कुरान से बाइबिल एक श्रेष्ठ पुस्तक है।''

चंद्र ने मुस्कराते हुए कह दिया, ''तो सिनेमा कल देख सकते हैं? ठीक है न?''

अब दोनों हँसने लगे।

दोनों मित्र कनॉट प्लेस में रामलाल की दुकान पर जा पहुँचे। वहाँ एक चौदह-पन्द्रह वर्ष की लड़की हाथ में सितार लिए, एक अपने से दो-तीन वर्ष कम वयस्क के लड़के के साथ खड़ी थी। चंद्र का पिता मुकुटबिहारी माथुर भी वहाँ खड़ा उस लड़की से मुस्कराते हुए बातें कर रहा था।

चंद्र पिता के समीप जा खड़ा हुआ। माथुर साहब लड़की से पूछ रहे थे, ''कब से सीख रही हो?''

लड़की ने उत्तर दिया, ''तीन वर्ष हो चुके हैं, परंतु मास्टरजी कहते हैं कि मैंने इस थोड़े से काल में बहुत उन्नति की है।''

''कौन मास्टरजी हैं तुम्हारे?''

''एक मुद्गलजी हैं। उनका संगीत-विद्यालय हमारी दुकान के पिछवाड़े में है।''

''मैं तुम्हारे मास्टरजी के कथन की परीक्षा लेना चाहता हूँ?''

''तो आपकी भी संगीत में रुचि है?''

''हाँ! बचपन में मैं भी सीखता रहा हूँ। उस्ताद अली अकबर खाँ से सीखा हूँ। वह बहुत ही योग्य सरोदवादक हैं।''

''हाँ! उनका सरोदवादन मैं सुन चुकी हूँ। मुझे बहुत पसंद आया था।''

''मैं तुम्हारे मास्टरजी की परीक्षा लेना चाहता हूँ।''

''तो हमारे विद्यालय में आइए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मास्टरजी की शिष्या को अगले रविवार अपने घर निमंत्रण दे सुनने की इच्छा करने लगा हूँ?"

"आप पिताजी को निमंत्रण देंगे तो मैं सितार लेकर आऊँगी।"

इस समय रामलाल, जो अभी तक एक ग्राहक से बातें कर रहा था, उसको विदा कर माथुर साहब और उस लड़की तथा चंद्र के पास आ खड़ा हुआ।

"माथुर साहब! मैं चाय लेने जा रहा हूँ और आपको भी निमंत्रण देता हूँ।" रामलाल ने कहा।

"ओह रामलाल! इसे जानते हो?" माथुर ने अपने लड़के चंद्र की ओर संकेत कर कह दिया।

सितार पकड़े हुए लड़की जाती-जाती रुक गई। वह भी साथ खड़े लड़के का परिचय जानना चाहती थी। वैसे वह इस लड़के को कई बार माथुर साहब के घर देख चुकी थी।

उन दिनों चंद्र कम्युनिस्ट था और माथुर ने उसे कभी भी किसी के सम्मुख अपना पुत्र कहकर उसका परिचय नहीं दिया था।

रामलाल ने कह दिया, "जी! बहुत भलीभाँति जानता हूँ। इनको इनके साथियों के साथ कनॉट प्लेस में घूमते देख चुका हूँ।"

"यह मेरे साहबजादे चंद्रमोहन हैं। लॉ-कॉलेज से डिग्री प्राप्त कर आजकल मेरे काम में मेरे सहयोगी हैं।"

सितार पकड़े हुए लड़की अपने साथी लड़के के साथ दुकान से निकल गई। माथुर साहब ने कह दिया, "मैं शोभा को कह रहा था कि हम, मेरा मतलब है, मैं और इस लड़के की माँ, शोभा के संगीत का अभ्यास सुन उसके मास्टर की परीक्षा लेंगे। इसलिए मैंने उसे अगले रविवार मध्याह्न के भोजन पर आमंत्रित किया है।"

"तो क्या कहा है उसने?"

"वह कहती है कि उसके माता-पिता को भी निमंत्रण दूँ तो वह आएगी और सितार सुनाएगी।"

"तब ठीक है।" रामलाल ने कहा, "अब मेरा निमंत्रण चाय के लिए है और आपका निमंत्रण चाय पीते हुए ले सकूँगा।"

"आप भी आइए।" रामलाल ने चंद्र की ओर देख कह दिया।

"पर मैं तो आपकी दुकान से खद्दर खरीदने आया हूँ?"

"वह चाय पीकर ले लेना।"

चंद्र ने अपने सहपाठी रमण के मुख पर देखा, तो उसने कलाई पर बँधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़ी में समय देख कह दिया, ''अभी समय है। मैं पिक्चर देखने जाता हूँ।''

''नहीं, आप भी आ सकते हैं। पिक्चर तो किसी अन्य दिन भी देखी जा सकती है। आपसे भी परिचय हो जाएगा।'' माथुर साहब ने कह दिया।

रमण चंद्र से बड़ी आयु का था। उसे कम्युनिस्ट पार्टी ने वकालत पढ़ने के लिए लॉ-कॉलेज में भरती कराया था। वैसे वह पार्टी का टिकट-होल्डर सदस्य था और अब वह कर्मचारियों का सलाहकार बना हुआ था।

वह चंद्र के पीछे लगा रहता था। वह नहीं जानता था कि चंद्र के मन में परिवर्तन कैसे हुआ है। यह बात पार्टी में किसी को भी अभी ज्ञात नहीं थी।

इस कारण रमण भी माथुर साहब के निमंत्रण को स्वीकार कर उनके साथ रैस्टोरां में चाय लेने चल पड़ा। रामलाल यद्यपि रमण को साथ ले जाना नहीं चाहता था, इस पर भी जब माथुर साहब ने उसे निमंत्रण दिया तो वह चुप कर रहा।

चाय पर तो सामान्य बातें होती रहीं और चाय के उपरांत सब पुनः दुकान पर आ गए।

चंद्र ने सादा श्वेत खद्दर का तीन ग़ज का टुकड़ा माँगा तो रामलाल ने एक थान जो बारह गज का था, निकाल कागज में पैक करा चंद्र को दे दिया।

चंद्र ने पूछा, ''यह क्या है?''

''आपकी माताजी के लिए खद्दर है।''

''परंतु उन्होंने तो तीन गज माँगा है?''

''जब अगले रविवार मैं भोजन पर आऊँगा तो बताऊँगा कि वह किसलिए भेज रहा हूँ।''

''तो कैश-मीमो बना दीजिए।''

''वह भी मैं उसी समय दूँगा और वहीं दाम वसूल कर लूँगा।''

चंद्र ने मुस्कराते हुए कहा, ''आप तीन गज की तो कैश-मीमो बना मुझे दे दीजिए। उसका दाम मैं दूँगा और शेष कपड़ा उनको अपने सेवक के हाथ भेज दीजिएगा।''

''तो मैं यह माथुर साहब की मोटर में भेज सकता हूँ। वह सामने खड़ी है।''

माथुर चंद्र की बात में हस्तक्षेप नहीं कर रहा था और चुपचाप देख रहा था।

चंद्र ने कह दिया, ''यह आप जानें और पिताजी जानें। मैं इसमें हस्तक्षेप नहीं करूँगा।''

रामलाल ने खद्दर का बंडल दुकान के सेवक को देते हुए कहा, ''इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माथुर साहब की मोटर में रख आओ और वकील साहब! माताजी को मेरी नमस्ते कहें। साथ ही कहें कि मैं अगले रविवार मध्याह्न का भोजन लेने परिवार सहित आऊँगा और शेष खद्दर का उपयोग बता दूँगा।''

माथुर अभी भी मुस्कराता हुआ खड़ा था। चंद्र ने कह दिया, ''तभी तो माताजी स्वयं लेने नहीं आ रही थीं। उन्होंने मुझे भेजा था, इस विचार से कि आप मुझे नहीं जानते।''

''अब तो जान गया हूँ और आपको माँ का पुत्र जान ही यह काम करने के लिए कह रहा था।''

रमण हँस पड़ा। माथुर ने कहा, ''लो रामलाल! मैं चला। अगामी रविवार ठीक बारह बजे का निमंत्रण है। पत्नी और बच्चों को साथ लाना।''

माथुर ने दुकान से निकलते हुए चंद्र से पूछ लिया, ''मेरे साथ गाड़ी में चलोगे अथवा इन साहब के साथ जा रहे हो?''

''पिताजी! आप चलिए। मैं इनके साथ इंडिया-गेट तक भ्रमण के लिए जा रहा हूँ।''

दोनों मित्र चल पड़े। माथुर अपनी मोटर में सवार हो सिविल लाइंस अपनी कोठी को चल दिया।

रमण ने पहला ही प्रश्न किया, ''यह दुकानदार तुम्हारे पिताजी से बहुत मेलजोल रखता है?''

''हाँ! पिताजी इसे एक बहुत ही बहादुर व्यक्ति मानते हैं।''

''क्या बहादुरी की है इसने?''

''सुनोगे? एक सत्य कथा है, परंतु किसी भी सिनेमा-कहानी से कम रोचक नहीं है?''

''तब तो ज़रूर सुनाओ। पिक्चर न देख सकने का दुःख नहीं रहेगा?''

चंद्रमोहन ने बताया, ''इस दुकानदार का नाम रामलाल है। यह पंजाब से आया एक विस्थापित व्यक्ति है। लाहौर में इसकी एक बहुत बड़ी कपड़े की और सिलाई की दुकान थी। यह कहता है कि लाहौर में इसकी सम्पत्ति उस समय दो लाख रुपए के लगभग मूल्य की थी और वहाँ से केवल दो सौ रुपए और वह भी भूल से जेब में ला सका था। शेष सब कुछ वहाँ छोड़ने पर इसे विवश कर दिया गया था।

''जब यह स्कूल से पढ़कर निकला था तो पंजाब में मुसलमानी मंत्रिमंडल बन चुका था और एक सामान्य हिंदू को नौकरी मिलनी असंभव थी। अतः यह एक मुसलमान दर्जी की दुकान पर काम सीखने के लिये नौकर हो गया और पीछे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar 168706

R 089.9143 GUR-S 21

ईमानदार तथा बुद्धिमान् होने के कारण यह दुकान के मालिक का प्रिय बन गया। उस्ताद उससे घर का काम भी कराने लगा। वहाँ इसका उस्ताद की लड़की फातिमा से मेल हो गया और दोनों ने विवाह करने का निश्चय कर लिया। फातिमा का बाप रामलाल को पसंद करता था, परंतु वह इसके मुसलमान बन जाने के लिए इसरार करने लगा।

''आखिर दोनों प्रेमियों में यह निश्चय हुआ कि रामलाल मुसलमान हो जाए और विवाह के उपरांत फातिमा हिंदू हो जाए।

''फातिमा हिंदू बनने के लिए इसलिए तैयार हुई क्योंकि रामलाल के माता-पिता आर्यसमाजी थे और वे लड़के को हिंदू देखना चाहते थे। इस कारण दोनों ने अपने-अपने माता-पिता को धोखा दिया। पहले रामलाल अपने पिता से चोरी सुन्नत करवा मुसलमान हो गया और पीछे विवाह के उपरांत फातिमा ने अपना नाम देविका रानी रख लिया और अपने को हिंदू कहने लगी।

''फातिमा का बाप अपने दामाद को मुसलमान समझता रहा और रामलाल के माता-पिता पतोहू को हिंदू मानते रहे।

''यह देश-विभाजन से दस वर्ष पूर्व की बात है। रामलाल की दो संतान हो चुकी थीं। यह सितार लिए दुकान पर खड़ी रामलाल की बड़ी लड़की थी।''

''ओह!'' रमण के मुख से निकल गया, ''बहुत सुंदर है!''

''हाँ, और इसकी माँ तो इससे भी अधिक सुंदर है। वह इस समय काफी बड़ी आयु की है। मैं समझता हूँ, वह पैंतीस वर्ष की होगी। परंतु उसे देख अच्छे-भले पुरुष का सिर चकराने लगता है। मैंने उसे माताजी से मिलने घर आते देखा है।

''देश-विभाजन के उपरांत रामलाल दिल्ली आया और एक मुसलमान की दुकान पर अधिकार कर इसका मालिक बन गया। पिताजी कहते हैं कि संदिग्ध उपायों से अधिकार किया है, परंतु रामलाल कहता है कि उसने—'जैसे को तैसा'—व्यवहार ही किया है। उसकी दो-अढ़ाई लाख की सम्पत्ति पाकिस्तान में रह गई थी। वह वहाँ से आना नहीं चाहता था, परंतु किसी ब-रसूख मुसलमान ने पुलिस बुलाकर उसको जबरदस्ती घर से निकाल सड़क पर खड़ा कर दिया था। अकस्मात् उसके कोट की जेब में दो सौ रुपए थे और उसके बल पर ही वह बाल-बच्चों सहित दिल्ली पहुँच सका था।

''सन् 1947 के दिल्ली फसाद में यह दुकान लावारिस देखी तो उसने इस दुकान को और मकान को अपने अधिकार में कर लिया। वह इसे गैर-कानूनी नहीं मानता, न ही यह पाप है। यह कहता है उस समय न तो पाकिस्तान में और न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हिंदुस्तान में कोई कानूनी सरकार थी। दोनों देशों में सरकारें छीना-झपटी से बनी थीं और लोग भी छीना-झपटी से जीवित रह सके थे।

"मगर दोस्त! इस रामलाल का एक कांग्रेसी मित्र था मोतीराम। मोती होटल का मैनेजर। उसे कहीं पता चल गया कि रामलाल की बीवी मुसलमान है। उसने सरकारी 'विमेन रिकवरी' विभाग में रिपोर्ट कर दी और अपनी देशभक्ति का परिचय दे दिया। यह सरकारी विभाग, यहाँ रह गई मुसलमान औरतों को वापस पाकिस्तान भेजने के लिए बना था। उस विभाग ने बिना जाँच-पड़ताल किए कि रामलाल की बीवी छीना-झपटी से बनाई बीवी नहीं है, रामलाल की पत्नी को पकड़ जबरदस्ती पाकिस्तान भेज दिया। रामलाल और पिताजी ने शिमला हाईकोर्ट से सरकार पर 'इन्जंक्शन' लगवाया, परंतु रोक लगने से पहले ही इसकी पत्नी को पाकिस्तान पहुँचा दिया गया था। हाईकोर्ट का 'इन्जंक्शन' अप्रभावी सिद्ध हुआ।

"इस पर रामलाल को भारी क्रोध आया और वह कुछ करने के लिए मचल उठा। उसने अपनी पत्नी को वापस लाने की एक योजना बना ली।

"उसकी सुन्नत तो हो ही चुकी थी। इस कारण उसे एक मुसनमान बनने का नाटक करने में कठिनाई नहीं हुई।

"उसने कलकत्ता में पठानों की बस्ती में रहते हुए उनकी भाषा, उनके रहन-सहन का ढंग तथा उनका पहिरावा सीखा और पाकिस्तानी दूतावास में जा पहुँचा और यह बहाना कर कि पख्तूनिस्तान का एक पठान है, उसका बाप बंबई में रुपया लेन-देन का काम करता था; देश-विभाजन के समय उसका बहुत-सा रुपया यहाँ के लोगों से लेना बनता था, इस कारण यह उस समय पाकिस्तान नहीं जा सका; अब वह अपने देश जाना चाहता है; उसे 'विसा' बना दिया जाए। दूतावास के अधिकारियों को रिश्वत देकर इसने 'विसा' बनवाया और पाकिस्तान में जा पहुँचा। वहाँ जा वह पत्नी को ढूँढता हुआ घूमने लगा। उसे वह मिली एक प्राईवेट होटलनुमा वेश्यागार में।

"वहाँ इसने अपनी बीवी को उसके साथ आने के लिए राजी किया और फिर वेश्यागार की मालकिन को भारी रकम देकर उसे मोल लेकर, उससे पुन: इसलामी शरअ के अनुसार विवाह किया। विवाह कर वे एक मुसलमान पति-पत्नी के रूप में रहने लगे।

"वहाँ से हिंदुस्तान में घूमने के लिए मियाँ-बीवी ने पासपोर्ट बनवाया और फिर यहाँ लौट आए। यहाँ उसकी अनुपस्थिति में पिताजी उसके कारोबार और बाल-बच्चों की देख-रेख करते रहे थे। पिताजी ने हाईकोर्ट का पुराना इन्जंक्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरोताजा करवाया और भारत सरकार से पूछा कि क्यों न रामलाल और उसकी पत्नी को भारत का नागरिक माना जाए? भारत सरकार में इस विभाग की मुलाज़िम थी—एक अत्यंत कुरूप और कुत्सित बुद्धि की स्त्री। उसके कार्यालय में रामलाल की पत्नी का कोई रिकॉर्ड नहीं था। परिणामस्वरूप, रामलाल अपनी पत्नी और बच्चों के साथ पिछले चार वर्ष से यहाँ रह रहा है।''

रमण इस कथा को सुन चकित रह गया। एकाएक उसके मुख से निकल गया, ''ऐसे व्यक्ति को तो अपनी पार्टी का सदस्य बनना चाहिए?''

चंद्र हँस पड़ा और बोला, ''मैं समझता हूँ वह कम्युनिस्टों से अधिक बुद्धि रखता है और उनको पशु-तुल्य ही मानता है।''

''तुमसे भी अधिक समझदार है?'' रमण ने पूछा।

''वह तो है ही। यदि मैं इसके स्थान पर होता तो बीवी के अपहरण पर विवशता में हाथ मलता हुआ रह जाता। पाकिस्तान जैसे खूँखार मुल्क से अपनी सुंदर बीवी को निकाल लाना एक मामूली बात नहीं है। वह बहुत ही समझदार है और कम्युनिस्टों के जाल में नहीं फँस सकता।''

:: 3 ::

रविवार के दिन शोभा ने माथुर साहब के घर पर भोजन के पूर्व और उपरांत अपनी कला का प्रदर्शन किया। एक घंटा भोजन के पूर्व और घंटा-भर भोजन के उपरांत।

भोजन के समय बातचीत होने लगी तो चंद्रमोहन के साथी, मिस्टर रमण की चर्चा चल पड़ी।

''उस दिन,'' रामलाल ने चिकन सूप में से सरुकी भरते हुए चंद्र से पूछ लिया, ''वह लोफर-सा लड़का आपको कैसे मिल गया था?''

''तो आप उसे जानते हैं?'' चंद्र ने पूछा।

''मैंने उसे गांधीजी की हत्या के दिन बाबू जयप्रकाश की आर०एस०एस० के विरुद्ध रैली के समय देखा था। यह युवकों को भड़का रहा था और उनको बारह खंभा रोड की एक कोठी पर आक्रमण करने के लिए कह रहा था। पुलिसवाले इन युवकों को पकड़ नहीं रहे थे। मैं उस समय केंद्रीय पुलिस के एक उच्च अधिकारी के साथ उनकी गाड़ी पर आ रहा था। उसने बताया कि पुलिस को हिदायत है कि कोई पकड़ा न जाए। न ही दोनों पक्षों में लड़ाई होने दी जाए।

''पुलिस ने उन सबको घेरे में लिया हुआ था। पीछे ये सब शांत हो पुलिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के घेरे से निकल गए। पुलिस ने इन सबको जाने दिया।

"तब से मैं इसे जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि वहाँ एकत्रित युवक प्राय: कॉलेजों के विद्यार्थी थे जो कम्युनिस्ट पार्टी से संबंध रखते थे। इस लड़के को तो मैं कई बार कनॉट प्लेस में अवारागर्दी करते देख चुका हूँ।"

चंद्र रामलाल की जानकारी पर विस्मय करता हुआ बोला, "लाला जी! आप बहुत कुछ जानते हैं और ठीक जानते हैं। आजकल यह मेरे साथ अदालत में मजदूरों के मुकद्दमे करने जाता रहता है।"

"तो आप भी वकील बन गए हैं?"

चंद्र ने मुस्कराते हुए कहा, "यह देश में बेकार लोगों के लिए आश्रय-स्थान है। मुझे एम०ए० किए दो वर्ष से ऊपर हो चुके थे। पहले राजनीति में पहुँचा था, अब पिताजी ने यह काम बता दिया है।"

"मैं समझता हूँ कि राजनीति से यह पेशा अच्छा है। इसमें यदि आप चाहें तो गरीब-गुरबा को बहुत लाभ भी पहुँचा सकते हैं। राजनीति में तो जीवन व्यर्थ गँवाना है।"

"हाँ! पिताजी बता रहे हैं कि इस पेशे से सामान्य लोगों का बहुत कल्याण किया जा सकता है।"

रामलाल ने अपनी विशेष प्रतिभा का विशेष परिचय देते हुए कहा, "हाँ! यदि ईमानदारी से काम करें तो।

"देखिए चंद्रजी! मुझे केवल आपके पिताजी ही ऐसे व्यक्ति दिखाई दिए हैं जो किसी का भला करने में रुचि रखते हैं। प्राय: वकील अपने लाभ के लिए ही वकालत करते हैं।"

इस दिन शोभा के गायन के समय चंद्र मंत्र-मुग्ध शोभा के मुख पर देखता रहा था। वह देख रहा था कि शोभा अपनी माँ की प्रतिमूर्ति है। अभी कुँवारी होने से माँ से अधिक आकर्षक और सौम्य प्रतीत हो रही थी।

चंद्र ने दो-तीन बार यत्न किया कि शोभा के कला-प्रदर्शन में उसकी प्रशंसा कर उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करे, परंतु सफल नहीं हो सका। शोभा समझ ही नहीं सकी कि वह क्यों उससे बात करने का यत्न कर रहा है।

इस पर भी रामलाल की पत्नी रानी चंद्र के हाव-भाव और बातों तथा शोभा के मुख पर देखने से उसके मनोभावों को समझ रही थी।

अत: रामलाल और उसकी पत्नी में उसी सायंकाल अपने घर बैठे-बैठे बात हो गई। शोभा उस समय सितार पर अभ्यास कर रही थी। माणिक भ्रमण के लिए घर से बाहर गया हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति-पत्नी ड्राइंगरूम में बैठे पुस्तकें पढ़ रहे थे।

एकाएक सितार की मधुर-तरंगों से रानी का ध्यान पुस्तक से हट उसकी ओर चला गया। उसकी सितार को सुन माथुर साहब के घर पर चंद्र के शोभा के प्रति हाव-भाव उसे स्मरण हो आए। उसने अपने मन में उठ रहे संशय का वर्णन पति को कर दिया। उसने कहा, "मुझे कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि वकील साहब का लड़का शोभा की ओर आकर्षित हो रहा है।"

"तो होने दो। इससे कुछ हानि नहीं होगी।"

"मैं हानि-लाभ की बात नहीं कर रही। मैं तो जो संशय मेरे मन में उत्पन्न हो रहा है, उसका वर्णन कर रही हूँ। जो मन में संशय उत्पन्न हुआ है, वह भयकारक भी नहीं। इससे मुझे किसी प्रकार की अनहोनी बात समझ नहीं आ रही। न ही मुझे कुछ बुरी लग रही है।"

रामलाल ने कहा, "चंद्र होनहार युवक है। मैं समझता हूँ कि यदि हमारे प्रयत्न से संबंध बन सके तो अच्छा ही है।"

"और बन क्यों नहीं सकेगा? मैं तो समझती हूँ कि आपसे किया प्रयत्न तो कभी विफल जा सकता ही नहीं। मुझे इसका अनुभव है। वास्तव में मैं आज यहाँ हूँ तो आपके प्रयत्न के फलस्वरूप ही हूँ।"

रामलाल हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "हाँ, मियाँ रहमान की लड़की से विवाह की योजना तो सफल ही हुई थी।"

रहमान खाँ रानी के पिता का नाम था। रामलाल अपने श्वसुर का नाम लेता हुआ पुरानी स्मृतियों से पुलकित हो उठा। वह स्मरण कर उनका वर्णन करने लगा। उसने कहा, "बहुत ही मीठी याद है। आमों की ऋतु थी। उस्ताद ने कहा था, 'रामलाल! आज सावन की झड़ी लग रही है और आम चूसने को जी कर रहा है।'

"मैंने कहा था, 'तो उस्ताद! बाजार से ले आऊँ?'

"वह बोले, 'हाँ! बाईसिकल पर जाओ और मार्केट से बहुत बढ़िया सहारनपुरी आम लेकर घर छोड़ आओ।'

" 'तो यहाँ न लाऊँ?' मैंने पूछा।'

"उस्ताद ने हँसते हुए कहा था, 'पाँच-छः अपने लिए भी ले लेना और उनको लेकर यहाँ आ जाना। मैं तो घर फातिमा की अम्मी के साथ बैठकर खाऊँगा।'

"बस, मैंने बाईसिकल उठाई और बाईसिकल भगाता हुआ पुरानी अनारकली की मार्केट में जा पहुँचा। तीन रुपए के आम एक थैले में भरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस्ताद के घर जा पहुँचा।

''घर के द्वार का कुंडा खटखटाया तो तुम खिड़की में से झाँक कर देखने लगीं कि कौन आया है। मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि खिड़की की चिक उठी, मानो बादल टूटे और पीछे से चौदहवीं का चाँद निकल आया है।

''मैं देखता रह गया और मेरे मुख से बात नहीं निकली। परंतु तुम थैले में आम देख नीचे चली आईं और नीचे का द्वार खोल मेरे मुख पर देखने लगीं।

''मैं मुख से कुछ कह नहीं सका और काँपते हाथों से वह आम का थैला मैंने आगे कर दिया।''

यह सुन रानी हँस पड़ी और बोली, ''हाँ, याद है। उस दिन, मेरा मतलब है जिस दिन आप आम लाए थे, प्रातः माँ ने मुझसे कहा था, 'फातिमा! तुम्हारे अब्बाजान तुम्हारी शादी का बंदोबस्त कर रहे हैं।'

''मेरे मुख से निकल गया था, 'हाँ, अम्मी! यह तो करनी ही चाहिए। मगर कहाँ?'

''माँ ने बताया, 'दुकान पर एक लड़का है। तुम्हारे अब्बाजान को पसंद है, परंतु दिक्कत यह है कि वह हिंदू है?''

'' 'तो क्या हुआ?' मैंने पूछा था।

''माँ का कहना था, 'यह रिवाज नहीं है। मुसलमान की लड़की हिंदू के घर में नहीं जाती क्योंकि हिंदू एक बे-दीन कौम है।'

'' 'अम्मी!' मेरा प्रश्न था, 'दीन क्या होता है?'

''माँ ने कहा, 'तो तुम नहीं जानतीं? खुदा को मानना और उसके रसूल को अपना रहबर समझना।'

'अम्मी! तुमने उससे पूछा है कि वह ऐसा नहीं मानता?'

''माँ चुप कर गई। फिर कुछ विचार कर बोली, 'तुम्हारे अब्बाजान से कहूँगी कि पूछें।'

''बस, उस समय से मेरे मन में खिचड़ी पक रही थी। उस खिचड़ी में उस वक्त उबाल आ गया और मैं पूछ बैठी, 'आपसे एक बात पूछूँ?'

''आपने कहा था, 'हाँ, पूछ सकती हो।' आमों का थैला आपके हाथ में पकड़ा रह गया। मेरा ध्यान उस तरफ नहीं था। मैं तो आपके आफताब की तरह रौशन मुख को देख रही थी। मैंने पूछा, 'शादी करेंगे?'

''आपने पूछा, 'किससे?'

'' 'जो पूछ रही है?'

'' 'तो मेरे साथ भागने का ख्याल कर रही हो?' आपका सवाल था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'इसकी क्या ज़रूरत है? मेरी अम्मी ने आपको पसंद कर लिया है। मगर वह अंपने दामाद को मुसलमान देखना चाहती हैं?'

" 'मुझे तो कोई ऐतराज नहीं।' आपने कहा था, 'मगर मेरे माता-पिता मेरा मुसलमान होना पसंद नहीं करेंगे?'

"इस पर मैंने पूछा था, 'क्या इसका कोई हल नहीं? मैं आपसे शादी करना चाहती हूँ।'

"यह आपके दिमाग का कमाल है। आपने उसी समय कह दिया, 'हल तो है, अगर तुम मान लो।'

"मेरे मुख से, बिना जाने कि आप क्या कहने जा रहे हैं, निकल गया, 'मैं मान जाऊँगी।' आपने अपनी योजना ऐसे बता दी जैसे कैंची से कपड़ा काट दिया जाता है। आपने कहा था, 'मैं तुम्हारे माता-पिता का कहा मान लेता हूँ और मुसलमान हो जाता हूँ। तुम मेरे माता-पिता का कहा मान लो और हिंदू हो जाओ।'

"मेरी हँसी निकल गई। मैं समझी बराबर का सौदा है। मैं मान गई।"

"तब आपने इत्मीनान से आमों का थैला देते हुए कहा, 'तो अम्मी से कह दो कि विवाह का इंतज़ाम कर दें।'

"बताइए! है न दिमाग की सूझ-बूझ। आपने कमाल की बात बताई थी और उसकी याद आज भी दिल में हिलोरें पैदा करने लगती है।

"और हज़रत! लाहौर रावी रोड पर उस रण्डीखाने में आपने एक दूसरा कमाल किया था।

"मुझे चाबुकों से पीट-पीटकर अपना पाजी भूल जाने पर मजबूर किया गया था और मैं उस काम को, जिसको मैं ख्वाब में भी सोच नहीं सकती थी, रोज करती थी।

"जब उस रात पठानों के पहिरावे में आप आए तो मैं आपको पहचानी नहीं और अपनी शादी तथा आपके साथ सुखी जीवन व्यतीत करने की बात भूल चुकी थी। मगर आपने कमाल की बात की थी। आधे घंटे में ही सब कुछ तय कर दिया।

"आपने कहा, 'देखो फातिमा! तुम माल रोड पर काम करनेवाले मास्टर रहमान खाँ की लड़की हो?'

"अपने अब्बा का नाम सुन मुझे कुछ ऐसे समझ आया कि मानो मेरे मन पर छायी काली घटाओं में बिजली चमक गई हो। मगर वह एक लहमा के लिए ही था। फिर दूसरी बिजली की चमक तो उससे भी जबरदस्त साबित हुई। आपने कहा, 'तुम्हारे दो बच्चे हैं। एक शोभा और एक माणिक।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''इससे मेरे दिमाग में चक्कर आ गया और मैं अचेत हो गई।

''जब चेतना हुई तो आप गालों पर हाथ फेर प्यार दे रहे थे। मेरी आँख खुली तो आपने मेरा वर्तमान का नाम लेकर कहा, 'रानी! होश करो। मैं रामलाल, तुम्हारे बच्चों का पिता हूँ। जरा गौर से देखो और पहचानो।'

''अगरचे, मुझे अपना पाज़ी स्पष्ट दिखाई नहीं देता था, इस पर भी शीतकाल में सुबह के वक्त छाए कोहरे में से कुछ-कुछ दिखाई देने लगा।

''यह दुकान, उसमें आप और फिर बच्चे धुँधले-धुँधले दिखाई देने लगे। मेरा विचार है कि मैं पाँच-दस मिनट से अधिक अचेत नहीं रही थी और इतने ही काल में आपने एक पकी-पकाई रोटी की भाँति योजना बना ली थी।

''मैं मानी और आपने रुपया पानी की तरह बहाकर मुझसे दोबारा शादी की और एक मुल्ला का सर्टीफिकेट हासिल कर लिया। फिर भारत में आने के लिए पासपोर्ट ले लिया।

''मैं अपने दूसरे विवाह की बात जब स्मरण करती हूँ तो आपकी तेज अक्ल पर हैरान होती हूँ।''

''और तीसरीं बार तो आपने एक ही लफ्ज में मेरी काया पलट दी। फतेहपुरी होटल में बात हुई थी। मेरा मन मानता नहीं था कि फिर हिंदुआना नाम रखूँ। कारण यह कि इस बे-गैरत कौम में शामिल होना मुझे निहायत ही मनहूस मालूम होता था।

''देखो न, वह मोटी-सी औरत जो मुसलमान औरतों की निकासी पर अफसर बनी हुई थी, मानती ही नहीं थी कि मेरी शादी लाहौर में हुई थी, मेरे आपसे दो बच्चे हैं और मैं हिंदू हूँ। इस बे-गैरत औरत को जब मैंने कहा तो वह बोली, 'तुम झूठ बोल रही हो।' मुझे क्रोध चढ़ आया और मैंने उसके मुख पर थूक दिया।

''इसी तरह मैं हिंदू-कौम के मुख पर थूकना चाहती थी, मगर आपने तब कहा था, 'कासिम मियाँ शादी के नाम पर ले जाकर तुमसे जो पेशा कराने लगा था और जब तुम नहीं मान रही थीं तो चाबुकों से पीट-पीटकर तुम्हें ऐसे सिधाया जा रहा था, जैसे घोड़ी को ताँगे में जुतने के लिए सिधाया जाता है, तो क्या कासिम मियाँ की कौम नेक है?'

''बस, इतनी बात से ही मैं समझ गई कि एक से दूसरी को बेहूदा कहना ग़लत है।

''इस पर आपने कहा था, हम न तो हिंदू हैं न मुसलमान हैं, हम इनसान हैं। जो भी इनसान बन हमारे पास आएगा, हम उसी के हैं। बस, बात खत्म हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई और मैं कोर्ट में जाने के लिए तैयार हो गई।

"और जब माथुर साहब ने जजों को आपके पाकिस्तान जाने और अपनी शादी-शुदा बीवी से दुबारा शादी करने की बात बताई तो तीनों जज हँस पड़े थे।

"इस कारण यदि शोभा और माथुर साहब के लड़कों में संयोग आप ठीक समझते हैं तो फिर यत्न कर दीजिए। आप निश्चय से सफल होंगे।"

"ठीक है! मैं यत्न करूँगा। केवल एक बात है। चंद्र का एक साथी, जो उस दिन दुकान पर उसके साथ आया था, जंच नहीं रहा।"

"तो पता करिए। दोनों में क्या और क्यों मेल-जोल है ?"

रामलाल के मन में आया कि जो कार्य ठीक समझ में आए, उसे करने का यत्न करना ही चाहिए। उसने इस विषय पर माथुर साहब से राय करनी चाही। वह जानता था कि यदि वकील साहब को यह संबंध पसंद नहीं होगा तो इनकार कर देंगे और फिर न पसंद करने का कारण भी बता देंगे।

इस प्रकार विचार कर एक दिन सायंकाल के समय वह माथुर साहब को मिलने उनकी कोठी पर जा पहुँचा।

माथुर साहब अपने एक मुवक्किल से बातें कर रहे थे। रामलाल उनके खाली होने की प्रतीक्षा करता रहा। एक घंटा के लगभग लगा। जब माथुर साहब मुवक्किल को विदा कर चुके तो रामलाल के पास आ पूछने लगे, "आज कैसे आना हुआ है ? यह तो तुम्हारा दुकान का समय है।"

"जी! मगर दुकान से अधिक आवश्यक कार्य शोभा की माँ ने मेरे सुपुर्द किया है। मैं वह काम करने से पहले आपसे राय करने आया हूँ।"

"क्यों ? मोतीराम ने फिर तंग करना आरंभ कर दिया है क्या ?"

"जी नहीं। उधर से तो कोई शिकायत नहीं है। अब एक दूसरी दिशा में कुछ दिखाई दे रहा है, उसमें आपकी राय की ज़रूरत पड़ गई है।"

"हाँ, बताओ। मैं ध्यान से सुन रहा हूँ।"

"पिछले सप्ताह रविवार के दिन जब हम आपके यहाँ खाने पर आए थे तो मेरी पत्नी ने एक बात देखी थी और उसने उसमें आपकी राय और सहायता माँगी है।

"बात यह है कि जो कुछ उस दिन देखा था, उसका प्रमाण मुझे पिछले तीन-चार दिन से मिल रहा है। इस कारण रविवार की प्रतीक्षा किए बिना आपके काम में विघ्न डालने चला आया हूँ।

"रानी का कहना है कि उस दिन आपके साहबजादे चंद्रमोहनजी मुग्ध हुए शोभा की ओर देख रहे थे। उसका ख्याल है कि वह उसी दृष्टि से शोभा को देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था, जिस दृष्टि से एक दिन मैंने उसकी ओर, शादी से पहले देखा था।''

माथुर साहब खिलखिलाकर हँस पड़े। हँसते हुए बोले, ''तुम्हारी बीवी बहुत ही समझदार है। मुझे भी यही समझ आया था जो रानी ने समझा है। मैंने चार-पाँच दिन हुए चंद्र से इस विषय पर बात की है। वह मान गया है कि शोभा स्वप्नों में उसे तंग करने लगी है।

''मैंने उसे एक उपाय बताया है। वह यह कि वह शोभा की माँ की पहले सेवा करे। वह प्रसन्न होगी तो लड़की का विवाह उससे हो सकेगा। मैं समझता हूँ कि वह तुम्हारी पत्नी से संपर्क बनाने का यत्न कर रहा है।''

''ओह! मैं कुछ और समझा था?''

''क्या?''

''यही कि वह शोभा से संपर्क बनाने का यत्न कर रहा है। वह नित्य सायंकाल एक घंटा मेरी दुकान के आस-पास चक्कर काटता रहा है।''

''तब तो वह महामूर्ख है!''

''परंतु यदि वह शोभा की माँ से संपर्क बनाने का यत्न कर रहा है तो मैं उसकी इसमें सहायता कर सकता हूँ। मगर मैं जो पूछने आया हूँ, वह यह है कि क्या आप यह संबंध पसंद करते हैं?''

माथुर साहब ने कुछ विचार कर पूछा, ''लड़की अल्प आयु की नहीं है क्या?''

''लड़की की माँ तो इस आयु में शादी की इच्छा करने लगी थी। मुझे उसने बताया है कि वह साढ़े चौदह वर्ष की थी, जब उसकी मुझसे शादी हुई थी।''

''ओह!'' माथुर साहब ने कहा, ''लेकिन यह आयु तो बहुत कम है?''

''जी! मगर खुराक और फिर घर पर बेकार बैठने का यही परिणाम होता है। शोभा तो अभी नवीं जमायत में पढ़ती है। संगीत में भी परिश्रम कर रही है। इस कारण वह अपनी माँ की भाँति विचार करती प्रतीत नहीं होती। मैं भी चाहता हूँ कि अभी विवाह दो वर्ष ठहर कर हो। यदि आप पसंद करें तो सगाई हो सकती है और आपके साहबजादे को उम्मीद बन जाने से चित्त में शांति प्राप्त होगी।''

माथुर ने कह दिया, ''मैं यह संबंध बुरा नहीं समझता, परंतु शादी कम-से-कम दो वर्ष बाद होनी चाहिए।''

''यह तो होगा ही।''

''तब ठीक है।'' माथुर साहब ने कह दिया।

रामलाल उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ नमस्ते कह जाने को तैयार हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माथुर साहब ने पूछा, ''मगर अब क्या करोगे?''

रामलाल पुनः बैठ गया और बोला, ''वकील साहब! मेरे मस्तिष्क में योजना बन गई है, मगर उसे मैं बताऊँगा नहीं। आपको स्वयं ही पता चल जाएगी।

''देखिए वकील साहब! मैं आपको अपने जीवन की एक घटना सुनाता हूँ।

''मोतीराम पाकिस्तान से भारत आते हुए रेलगाड़ी में मुझे मिला था। हम दोनों में मुहब्बत जाग पड़ी। पीछे मालूम हुआ कि वह मेरी बीवी के सौंदर्य पर मुग्ध हो मुझे अपने साथ रखने पर तैयार हुआ था।

''हम दोनों ने मिलकर फैज़ बाजार में एक मुसलमान की दुकान पर अधिकार कर लिया। वह बात गांधीजी के सामने आई तो महात्माजी ने अथवा उनके किसी सचिव ने मोतीराम की पुनर्वासमंत्री के पास रिपोर्ट कर दी। तब हमें धक्के दे-देकर दुकान से निकाल दिया गया। मोतीराम ने अपनी पूर्ण पूँजी दुकान पर लगा दी थी।

''हमने पुनर्वास-मंत्री से मिलने का यत्न किया, मगर मंत्री महोदय माने ही नहीं। इससे मेरे मन में ग्लानि उत्पन्न हुई। मैं इनको मुर्ख समझ वही करने की बात पर विचार करने लगा था जो मूर्खों से की जाती है।

''उसी दिन मैं कनॉट प्लेस में इस दुकान के बाहर मद्रासी सैनिकों को पहरा देते देख आया था। मुझे यह विदित था कि मद्रास रेजिमेंट का अफसर लालकिला में रहता है और उसका नाम लैफ्टिनेंट अहमद दीन था। मैं लालकिला पर जा पहुँचा। दरवाजे पर मैंने लैफ्टिनेंट का नाम बताया और उससे मिलने की अर्जी कर दी। मैंने अपना वही नाम बता दिया जो मुझे मुसलमान बनाने के वक्त दिया गया था। यह था मुहम्मद असलम।

''लैफ्टिनेंट के सामने मैंने अर्जी की कि मैं उस दुकान का मालिक हूँ और मैं उसको अपने कब्जे में करना चाहता हूँ।

''वह सबूत माँगने लगा। मैंने हिंदू और मुसलमानों में बलवे के कारण सबूत लाने में दिक्कत बताई। मैंने यह कहा, 'मैं हिंदू बनकर दुकान पर कब्जा करना चाहता था,, मगर मैं हूँ मुसलमान।

''मैंने उसे अपनी सुन्नत दिखाकर कहा कि यह खुदाई मुहर मुझ पर लगी हुई है।

''इसके साथ उससे सौदा भी हो गया। मैंने उसे एक हज़ार रुपए देने का वायदा किया, मगर दुकान मिल जाने पर।

''उसी सायंकाल एक सैनिक को मेरे साथ भेज दिया गया और मुझे दुकान पर कब्जा मिल गया। जब दुकान और मकान का ताला खुला तो मैंने उस सैनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को एक सौ रुपए इनाम दिए और अगले दिन दुकान खोलकर बैठ गया।

"हिंदू समझे कि एक हिंदू ने दुकान पर अधिकार कर लिया है, मगर सैनिक दफ्तर में रिपोर्ट थी कि दुकान एक मुसलमान को वापस दिलवा दी गई है।

"मैंने युक्ति से वही किया था जो मेरे साथ पंजाब में किया गया था।

"मेरी योजना सफल हुई और मैं अब, रामलाल, पाँच-छः लाख का स्वामी हूँ।"

माथुर इस दुकान की बात मोतीराम से पहले सुन चुका था और अब रामलाल से उसकी ईमानदारी की विवेचना सुन मुस्कराता हुआ उसका मुख देखता रह गया।

:: 4 ::

इसके अगले ही दिन चंद्र को दुकान के आस-पास घूमते रामलाल ने देखा तो दुकान से निकल उसके साथ-साथ चलते हुए पूछने लगा, "चंद्रजी! चाय पी है अथवा नहीं?"

"जी! पी चुका हूँ।"

"मैं पीने ही जा रहा था। आइए, एक प्याला और ले सकते हैं।"

दोनों रेस्टोराँ में पहुँचे तो एक मेज पर बैठ, बैयरा की प्रतीक्षा करते हुए रामलाल ने मतलब की बात आरंभ कर दी। उसने कहा, "हम हिंदुस्तानियों का दिमाग दासता में कितना फँस गया है। देखो न, इस रेस्टोराँवालों ने भी नाम 'वोलगा' रखा है?"

"मैं जानता हूँ कि यह क्यों हुआ है?" चंद्र का कहना था।

"क्यों हुआ है?" रामलाल का प्रश्न था।

"हुआ यह है कि भारत में पाँव से चोटी तक सब नागरिकों के मन में रूस की महिमा बैठाई जा रही है। इस रेस्टोराँ के मालिकों के मन में भी यही बात बैठ गई है। इनको गंगा-यमुना से वोलगा अधिक प्रिय प्रतीत हो रहा है।

"पिताजी बताते थे कि जब मेरा जन्म हुआ था तो मेरा नाम रखा जाने लगा—डिप्टी लाल। घर के सब स्त्री-पुरुष इस नाम से प्रसन्न हो गए। तब हमारे घर के पुरोहित ने क्रोध में कह दिया, 'मुझे किसलिए बुलाया गया है? किसी पादरी को नाम रखने के लिए क्यों नहीं बुला लिया?'

"घर के सब प्राणी मुख देखते रह गए। पंडितजी ने कहा, 'डिप्टी का क्या अर्थ होता है, जानते हैं?'

"मेरी फूफी ने बताया, 'जानते क्यों नहीं? इसका अर्थ है—नायब और यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने बाप मुकुटबिहारी का नायब बनेगा।'

''पंडितजी का कहना था, 'मैं तो इसे उनके मुकुट का चाँद बनाना चाहता हूँ। यह अपने पिता को चार चाँद लगा देगा।' परंतु मेरी फूफी बोली, 'हमें डिप्टी नाम ही पसंद है।'

''पंडितजी वेदी से उठ पड़े और बोले, 'ठीक है। मैं चलता हूँ। आप डिप्टी बुलाइए, कमिश्नर बुलाइए। मेरा नमस्कार है।'

''पंडित चला गया। पीछे पिताजी ने मेरा नाम चंद्रमोहन रख दिया और फिर अगले दिन मुझे गोदी में उठाकर वह पंडितजी के घर जा पहुँचे। साथ ही बहुत-सी मिठाई और दक्षिणा देकर उसे उन्होंने प्रसन्न कर लिया। पंडितजी पहले तो माने नहीं। वह माने जब पिताजी ने बताया कि मेरा नाम चंद्रमोहन रखा है। यह है चंद्रमोहन माथुर।

''पंडितजी एक विद्वान् व्यक्ति हैं। वह पीछे पिताजी को न्यायदर्शन पढ़ाते रहे हैं। अब वही दर्शन पिताजी मुझे पढ़ा रहे हैं।

''पंडितजी को मैंने कहा था कि मैं वह दर्शन उनसे पढ़ना चाहता हूँ। उनकी चिट्ठी बहुत देर से आई। उन्होंने लिखा है कि वह अब मरन किनारे हैं और वहाँ अपने घर पर ही मरना चाहते हैं। इसलिए दिल्ली नहीं आ सकते।''

रामलाल ने बात बदल दी, ''परंतु चंद्र! आजकल कचहरी जाते हो क्या? मैं तो तुम्हें कनॉट सर्कस में ही घूमते देखता हूँ। कचहरी तो नगर के दूसरी ओर है?''

''जी! मैं नित्य वहाँ जाता हूँ। इस समय यहाँ एक मतलब से आता हूँ।''

''किस मतलब से आते हो?''

''कार्य सम्पन्न करने से पहले बताना बुद्धिमत्ता नहीं होगी। काम में विघ्न पड़ जाने की संभावना है?''

''आपकी इच्छा है। मैं तो आपके काम में विघ्न नहीं डाल सकता। मैं आपके पिता के अहसानों के नीचे इतना दबा हुआ हूँ कि उनके परिवार में किसी का भी अनिष्ट नहीं कर सकता।''

''लालाजी! मैं इस कारण चोरी नहीं रख रहा कि आप उसमें विघ्न बन सकेंमे। आपसे छुपाने में केवल यही कारण है कि मैं किसी की मरम्मत करना चाहता हूँ और यदि आपको पता चल गया तो आप हममें सुलह और समझौता करा देंगे। मैं यह समझौता उसकी मरम्मत करने के पीछे कर सकूँगा, पहले नहीं।''

रामलाल समझा नहीं कि चंद्र एक कहानी बना रहा है अथवा सत्य हृदय से कह रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय बैयरा आया तो रामलाल ने दोनों के लिए चाय लाने को कह दिया। बैयरा के चले जाने पर उसने कहा, ''चंद्र! मैं समझौता कराने के पक्ष में नहीं हूँ। बुराई और नेकी में समझौता सदा भयंकर परिणाम वाला होता है। दो विरोधी तत्त्वों में संधि सफल भी नहीं होती। प्राय: बुराई की विजय होती है। इससे आपको मुझसे इस प्रकार का भय नहीं करना चाहिए।

''देखिए, मैं बताता हूँ। पंडित जवाहरलाल के पिता पंडित मोतीलाल और महात्मा गांधी में घनी छनती रही है। दोनों के चरित्र में जमीन-आसमान का अंतर था। जवाहरलाल ने अपने जीवन चरित्र में लिखा है कि दोनों में मित्रता विस्मयजनक थी।

''पंडित जवाहलालजी ने तो लिखा है कि परस्पर विरोधियों में कभी मित्रता होती है तो बहुत गहरी होती है, परंतु मैं समझता हूँ या तो जवाहरलाल समझे नहीं और यदि समझे हैं तो झूठ कह रहे हैं कि बुराई और नेकी में मित्रता हुई थी।

''पंडित मोतीलाल और महात्मा गांधी में मित्रता नहीं थी, वरन् एक की दूसरे के लिए दासता थी। पहले पिता और पीछे पुत्र गांधीजी को गुलाम बना उन पर शासन करते रहे थे। इस दासता का परिणाम ही देश का विभाजन और लाखों नागरिकों की हत्या तथा करोड़ों पद्मों की सम्पत्ति का विनाश हुआ था।''

चंद्र ने मुस्कराते हुए कहा, ''परंतु आपको तो लाभ ही हुआ है। कनाट प्लेस में यह आलीशान इमारत आपको मिल गई है ?''

''यह नेकी और बुराई में मेल से नहीं हुआ, वरन् बुराई का घोर विरोध करने से हुआ है।

''मुसलमान और कांग्रेसियों ने मिलकर देश को मूर्ख बनाया था। मैं मूर्ख नहीं बना वरन् मैंने उनका विरोध किया था। परिणाम यह है कि मैंने छिन गई जायदाद वापस ले ली है और अपहरण की गई पत्नी को छुड़ा लिया है।

''मैं तो बुराई के विरोध की नीति को ही ठीक समझता हूँ।''

''तब आपको बताता हूँ।'' चंद्र ने कह दिया, ''मैं आपका इतिहास पिताजी से सुन चुका हूँ और अब समझ रहा हूँ कि आपसे चोरी रखने की आवश्यकता नहीं।''

बैयरा चाय लाया तो दोनों ने पीते हुए पुन: उसी विषय पर बात करनी आरंभ कर दी।

चंद्र ने बताया, ''मेरे साथी रमण को तो आप जानते ही हैं। उस दिन उसने शोभा को देखा था और न जानते हुए कि मैं आपके और आपके परिवार के विषय में क्या भाव रखता हूँ, बताने लगा कि वह इस लड़की का अपहरण करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं उस समय तो चुप रहा, परंतु मैंने योजना यह बनाई है कि कहीं वह शोभा पर हाथ उठाए तो मैं उसकी खूब मरम्मत करूँ।"

रामलाल चंद्र की बात को सुन उसका मुख देखता रह गया। वह समझ नहीं सका कि जो कुछ चंद्र कह रहा है वह सत्य है अथवा उसको धोखा देने का प्रयास है।

आखिर अपने मन की बात बताने के लिए उसने कह दिया, "परंतु चंद्र जी! मुझे तो आपके पिता ने आपके इस स्थान के चक्कर लगाने का एक दूसरा ही कारण बताया है?"

"तो पिताजी से इस विषय पर आपकी बातचीत हुई है?"

"इस विषय पर तो नहीं, हाँ, आपके विषय में बात हुई है और उन्होंने ही मुझे कहा है कि चंद्र हमारे मकान की प्रदक्षिणा लेने लगा है। इसमें उसका एक प्रयोजन है।"

"हाँ, वह प्रयोजन भी है। परंतु यह प्रयोजन मैंने पिताजी को नहीं बताया। इसमें कारण यह है कि जब मैंने इधर आने का कार्यक्रम बनाया था, तब रमण की नीयत का मुझे ज्ञान नहीं था।

"यह तो तीन-चार दिन हुए ही पता चला है। आज भी वह आया था, परंतु शोभा के विद्यालय जाते समय मुझे उसको 'शैडो' करते देखे बिना किसी हरकत के चल दिया है। कदाचित् वह अभी अपने कार्य की योजना बना रहा है।"

"आपने यह बता दिया है। मैं भी सावधान रहूँगा और शोभा को भी सावधान कर दूँगा। परंतु आपका दूसरा उद्देश्य क्या है? मैं उसके विषय में ही आपसे बात करना चाहता हूँ।"

"उसके लिए मैं शोभा की माताजी से मिलना चाहता था, परंतु जब आप पिताजी से बात कर चुके हैं तो फिर आपसे चोरी कुछ भी नहीं रहा।

"मेरा प्रस्ताव यह है कि शोभा की मुझसे सगाई कर दी जाए। हम दोनों को पता तो चल ही जाएगा। फिर हम अपने को एक-दूसरे के लिए 'बुक' हुआ समझेंगे तो चित्त में शांति अनुभव करने लगेंगे।"

"तो आप चाहते हैं कि सगाई हो जाए?"

"जी!"

"तो अपनी माताजी को मेरी पत्नी से मिलने के लिए क्यों नहीं कहते?"

"मैंने उनसे कहा है। वह मुझ पर पिताजी से कम विश्वास रखती हैं। इस कारण उन्होंने कहा है कि पहले वकालत चला लूँ, तब ही वह मेरी इस विषय में सहायता करेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परंतु मुझे भय है कि तब तक आप और लड़की कहीं अन्यत्र निश्चय न कर बैठें? इस कारण मैं 'बुकिंग' अभी चाहता हूँ। शादी भले ही दो-तीन वर्ष उपरांत हो सकती है?"

"आपकी योजना तो ठीक है, परंतु इसमें एक छिद्र है। वह यह कि इस लंबे काल में शोभा के और आपके विचार भी बदल सकते हैं। साथ ही मुझे आपकी कोई ऐसी बात विदित हो सकती है, जिससे मेरे विचार भी बदल जाएँ। तब यह बुकिंग रद्द करनी कठिन हो जाएगी।"

"जी नहीं! मैं इसमें कठिनाई नहीं मानता। रेलवे की बुकिंग भी कुछ हर्जाना देकर रद्द की जा सकती है। यह भी की जा सकेगी। परंतु मेरा मन कहता है कि मैं बुकिंग बदलने के विचार का विरोध करूँगा।"

"तब अपनी माताजी को कहें कि वह शोभा की माँ से बात करें। मैं समझता हूँ कि शोभा की माँ से वह बात करेंगी तो अधिक पक्की होगी।"

चाय समाप्त हुई तो दोनों रेस्टोराँ से बाहर निकले। बाहर निकलते ही रमण मिल गया। उसने हाथ जोड़ रामलाल को नमस्ते कही और कहा, "मैं समझता हूँ कि मुझे देरी हो गई है। अन्यथा, आज भी आपके साथ चाय लेने का सौभाग्य प्राप्त करता।"

"अब तो हम पी आए हैं। फिर किसी दिन चंद्रजी के साथ आइएगा तो वह सौभाग्य पुनः मिल सकेगा।"

चंद्र और रमण, रामलाल से विदा माँग रीगल की ओर चले गए और रामलाल गंभीर विचार-मग्न अपनी दुकान पर चला गया। वह मन में विचार कर रहा था कि चंद्र के कथन को कितना सत्य माने और कितना वर्तमान युग के युवकों की-सी कल्पना मात्र।

एक बात वह अनुभव कर रहा था कि चंद्र ने जो कुछ कहा था, उसमें छिद्र कोई नहीं था। वह उसके किसी भी शब्द अथवा वाक्य से उसके कथन में दोष नहीं निकाल सका था। इसी उधेड़-बुन में रात के साढ़े आठ बजे दुकान बंद करने का समय हो गया। वह सेवकों से दुकान बंद करा ताले की चाबियाँ ले, चौकीदार को दुकान का ताला दिखा, ऊपर मकान पर चला गया।

वहाँ भोजन के समय शोभा माँ को बता रही थी कि उसे स्टीफंस कॉलेज की स्टूडेंट्स क्लब की ओर से सितारवादन के प्रदर्शन का निमंत्रण मिला है। उसमें लिखा है कि एक घंटा सितार बजाने के पचास रुपए फीस, आने-जाने का टैक्सी का भाड़ा मिलेगा। सितारवादन के उपरांत भोजन का कार्यक्रम भी है।

"और तुम मान गई हो?" रामलाल ने पूछ लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारे महाविद्यालय के प्रधानाचार्य ने स्वयं मुझे यह निमंत्रण दिया है।"

"देखूँ निमंत्रण?"

शोभा खाने की मेज से उठी और अपने कमरे में से एक लिफाफे में रखे पत्र को ले आई।

अभी खाना परोसा नहीं गया था। पति-पत्नी और दुकान का सेवक गोकुल चंद तथा शोभा और माणिक खाने की मेज पर बैठे थे।

शोभा ने पत्र लाकर रामलाल के हाथ में दे दिया। रामलाल ने पत्र पढ़ा। पत्र के नीचे हस्ताक्षर आर०के० रमण के थे। रामलाल का सिर चकराने लगा। वह आँखें मूँद अपने चित्त को स्थिर कर पूछने लगा, "पत्र विद्यालय के प्रधानाचार्य ने दिया है?"

"जी!"

"समारोह कब है?"

"आगामी रविवार। रात्रि आठ से नौ बजे तक।"

"और यह रमण वहाँ का क्या है?"

"यह तो मैं नहीं जानती?"

"अच्छा, अभी तो आज मंगलवार है। मैं कल तुम्हारे प्रधानाचार्य से मिलकर पूछूँगा कि वह इस लड़के को जानते हैं क्या?"

शोभा का उत्तर था, "वे अवश्य जानते होंगे। मैं भी तो जानती हूँ। उस दिन वह चंद्र भापा के साथ दुकान पर आया था।"

"तब ठीक है। यह पत्र झूठा है। वह रमण इस कॉलेज में पढ़ता ही नहीं। वह आजकल वकालत करता है।"

"परंतु पिताजी!" शोभा ने कह दिया, "वह उस कॉलेज का 'ओल्ड ग्रैजुएट' भी तो हो सकता है?"

"कुछ पेशगी दे गया है क्या?"

"नहीं। कह गया है कि उनके कॉलेज का कोई विद्यार्थी टैक्सी लेकर मुझे लेने आएगा। वह मुझे घर से 'पिक-अप' कर लेगा।"

"अच्छा! मैं कल बताऊँगा।" रामलाल ने कहा। इस समय भोजन परोसा जाने लगा।

अगले दिन रामलाल संगीत विद्यालय के प्रधानाचार्य को मिलने गया। जैसी वह आशा करता था, वही बात प्रधानाचार्य ने कही। उसने कहा, "मैं रमण को नहीं जानता। हाँ, स्टीफंस कॉलेज की स्टूडेंट्स यूनियन के फार्म पर टाइप किया हुआ पत्र है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामलाल वहाँ से माथुर साहब के बँगले पर जा पहुँचा। वहाँ चंद्र मिल गया। रामलाल ने चंद्र को पत्र दिखाते हुए पूछा, "इन हस्ताक्षरों को पहिचानते हो?"

चंद्र मोहन ने कहा, "नाम तो रमण का ठीक है। परंतु जहाँ तक मैं समझ सका हूँ, हस्ताक्षर उसके नहीं हैं।"

"मैं इसमें कुछ साजिश समझता हूँ?"

चंद्र ने कहा, "लालाजी! पिताजी से राय कर यह पत्र पुलिस में दे दीजिए।

"यह ठीक है कि आज से पाँच वर्ष पूर्व रमण स्टीफंस कॉलेज में पढ़ता था, परंतु उसका अभी तक वहाँ स्टूडेंट्स यूनियन से किसी प्रकार का संबंध है, मैं नहीं जानता।"

माथुर साहब रात के नौ बजे आए तो पत्र उनको दिखाया गया।

माथुर साहब का विचार था कि पत्र पुलिस को दे देना चाहिए, परंतु पुलिस रिपोर्ट लिख चिट्ठी को रख छोड़ेगी। जब तक कोई घटना न हो, पुलिस सक्रिय नहीं होगी।"

रामलाल के मुख से निकल गया, "बहुत हरामखोर है!"

"हरामखोर ही नहीं, वरन् बेईमान भी। इससे तुम यह पत्र मुझे दे दो। मैं कल डिप्टी कमिश्नर को मिलकर बताऊँगा कि क्या हो सकता है।"

अगले दिन माथुर साहब ने रामलाल को टेलीफोन किया,"रामलाल! मैंने डी०एम० को पत्र दे दिया है और उसने खुफिया-पुलिस को पत्र के विषय में जाँच करने को कह दिया है। कल वीरवार है और जो-जो संशय मैंने डी०एम० को बताएं हैं, उनके विषय में जाँच हो सकेगी।"

रामलाल को इससे संतोष हुआ। एक बात का वह निश्चय कर चुका था कि यदि पुलिस की जाँच का कुछ निश्चयात्मक परिणाम न हुआ तो वह स्वयं शोभा के साथ जाएगा। शोभा इस फंक्शन के लिए उत्सुक थी। उसके मास्टर भी उसे उस दिन के कार्यक्रम के लिए विशेष शिक्षा दे रहे थे।

परंतु अगले दिन सायंकाल रामलाल रैस्टोराँ से चाय पीकर आया तो दुकान के सम्मुख लोगों की भीड़ लगी थी। रमण रक्त से लथपथ भीड़ में खड़ा था और कुछ लोगों ने एक युवक को जिसके हाथ में एक लोहे की दो फुट की छड़ थी, पकड़ा हुआ था। गोकुलचंद दुकान से थाने में टेलीफोन कर रहा था।

थाने के मुंशी ने कह दिया, "इस समय यहाँ कोई आदमी नहीं है। दोनों लड़नेवालों को पकड़कर थाने में आ जाओ।"

रमण ने रामलाल को कहा, "लालाजी! यह मेरा साथी ही है। मेरा इसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निजी झगड़ा है और मैं चाहता हूँ कि पुलिस को कह दिया जाए कि दोनों लड़नेवाले भाग गए हैं।''

''पर,'' गोकुलचंद ने कहा, ''मैंने तो कहा है कि हमला करनेवालों के हाथ-पाँव बाँधे हुए लोग बरामदे में खड़े हैं।''

इस पर लोग रमण पर चोट करनेवाले को पकड़े हुए दुकान के भीतर ले आए। पकड़नेवालों को जब पता चला कि पुलिस उनसे आशा करती है कि वे लड़नेवालों को लेकर थाने में पहुँचें तो वे एक-एक कर खिसकने आरंभ हो गए। केवल दो व्यक्ति जो उस युवक को बाँहों से पकड़े हुए थे, वहाँ रह गए।

गोकुलचंद ने कहा, ''भाई, पुलिस चाहती है कि तुम इन दोनों को थाने में ले जाओ।''

एक पकड़नेवाले ने कहा, ''तो मैं पुलिस का नौकर हूँ क्या?''

रामलाल हँस पड़ा और बोला, ''रमण बाबू! तुम क्या चाहते हो?''

''मैंने इस, अपने मित्र को मुआफ कर दिया है। मैं चाहता हूँ कि इसकी यह लोहे की छड़ इसे दे दी जाए और हमें अपने मार्ग पर जाने दिया जाए।''

''ठीक है।'' रामलाल को पुलिस पर कुछ अधिक विश्वास नहीं था। उसने पकड़े हुओं को कहा, ''देखो भाई! यदि थाने में नहीं जाना चाहते तो यहाँ किसलिए खड़े हो? इसे छोड़ दो और ये दोस्त आपस में निपट लेंगे।''

इस पर दोनों लड़नेवालों को छोड़ शेष लोग, थाने जाने की बात सुन दुकान से बाहर हो गए।

रामलाल ने कपड़े का एक टुकड़ा सिर पर घाव को बाँधने के लिए रमण को दे दिया। जब रमण सिर पर पट्टी बाँध रहा था तो रामलाल ने पूछ लिया, ''रमण बाबू! झगड़े क्यों थे?''

''यह बेवकूफ है। यह समझ नहीं सका और मुझ पर आक्रमण कर बैठा।''

''मगर यह लोहे की सलाख तो घर से ही लेकर आया प्रतीत होता है?''

''हाँ!''

''तो यह घर से तैयारी कर तुम्हारी हत्या करने आया था?''

''बताओ लीलाधर! किस नियत से घर से चले थे?'' रमण ने उस युवक से पूछा।

अब दुकान पर दो ग्राहक ही थे। रामलाल दुकान के अपने दफ्तर में दोनों दोस्तों को ले गया। इस समय तक रमण ने सिर पर कपड़े का टुकड़ा बाँध लिया था।

दफ्तर में जाते ही लीलाधर ने कह दिया, ''लालाजी! असल बात है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लड़की है और हम दोनों रफीक हैं।''

''ओह!'' रामलाल अपने ज्ञान की पृष्ठभूमि पर विचार करने लगा। उसे संदेह हो गया कि ये दोनों शोभा के लिए लड़ पड़े हैं।

उसने बात समझ कह दिया, ''भाई! मैं तुम लोगों की भाँति न तो कुँवारा हूँ, न किसी लड़की से मेरी आश्नाई है। इससे मुझे तुम लोगों की बातों में रुचि नहीं। हाँ, यदि पुलिस की लपेट में नहीं जाना चाहते तो तुरंत यहाँ से भाग जाओ। मुझे भय है कि पुलिस अवश्य ही यहाँ आएगी।''

इस पर तो लीलाधर और रमण अविलंब दुकान से निकल गए।

उनके चले जाने के आधा घंटा पीछे दो कांस्टेबल आए और दुकान के बाहर पूछताछ करने लगे। दुकान के भीतर भी आए और गोकुलचंद से पूछने लगे।

''टेलीफोन तुमने थाने में किया था?''

गोकुलचंद का तुरंत उत्तर था, ''बाहर बरामदे में झगड़ा हुआ था और एक लड़का लहूलुहान हो गया था। इस पर लोगों ने उन दोनों को पकड़कर थाने में टेलीफोन किया था, परंतु थाने से जब यह सूचना आई कि वे लड़नेवालों को लेकर थाने में आ जाएँ तो सब उनको छोड़कर अपने-अपने रास्ते पर चल दिए।''

''क्यों?''

''चौधरी साहब! यह उनसे जाकर पूछिए। मैं उनके मन की बात नहीं जानता।''

''मगर तुमको उन दोनों को पकड़कर हमारे पास लाना चाहिए था?''

''कैसे? मेरे पास कोई फौज है जो मैं लोगों को पकड़-पकड़कर थाने में पहुँचा सकूँ।''

''तो अपने बयान दो।''

इस समय रामलाल दफ्तर से निकल आया। उसके सामने ही गोकुलचंद के बयान लिखे गए। पुलिसवालों ने बयान के नीचे हस्ताक्षर लिए और चल दिए।

जब वे चले गए तो रामलाल खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, ''इस राज्य में अब खैर नहीं। यहाँ किसी समय भी लूट मच सकती है?''

''तो भापा! कुछ प्रबंध अपना करना चाहिए?''

''तुम ठीक कहते हो! मैं कल दो गोरखे चौकीदार रखनेवाला हूँ।''

''बहुत खर्च बैठेगा?''

''हाँ! डेढ़ सौ रुपए महीना पड़ेगा। मगर यह कुछ भी नहीं। मैं जिस परिणाम के होने का विचार कर रहा हूँ, उसमें तो सब कुछ जा सकता है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोकुल चुप कर रहा, परंतु माथुर साहब का टेलीफोन आया। उन्होंने कहा, ''आज रात रमण पकड़ा जाएगा। इस समय वह होस्टल में नहीं है, इस कारण वह अभी तक पकड़ा नहीं गया।

''रामलाल! कल मेरे पास आ जाना। दोनों चलकर थाने में उस चिट्ठी के विषय में बयान लिखाएँगे।''

रामलाल ने कहा, ''माथुर साहब! आ जाऊँगा।''

रात रामलाल ने शोभा को कहा, ''यह रमण अपने एक दोस्त से झगड़ पड़ा था, हमारी दुकान के सम्मुख ही। वह घायल हो लहू से लथपथ हो गया था। जब लोगों ने उसको मारनेवाले को पकड़ा तो दोनों बताने लगे कि वे मित्र हैं और एक लड़की के कारण लड़ पड़े थे। पीछे पुलिस के आने से पहले ही वे चले गए।''

''किस लड़की के लिए लड़े थे?''

''कनॉट प्लेस में ड्रेपर और टेलर है—रामलाल। उसकी लड़की शोभा के लिए। यह मेरा अनुमान है। दोनों हमारे मकान की सीढ़ियों के नीचे झगड़ा कर रहे थे।''

शोभा इस घटना का अर्थ समझने के लिए पिता का मुख देखने लगी। रानी तो, जब से रामलाल उसे पाकिस्तान से छुड़ाकर लाया था, उस पर अगाध विश्वास रखती थी। इस कारण उसने कहा, ''तो उसे पुलिस के हवाले क्यों नहीं किया?''

''केवल इसलिए कि पुलिस रमण को पकड़ने के लिए उसके कमरे पर उसकी प्रतीक्षा कर रही है। इस कारण मैंने इसमें व्यर्थ का कष्ट करने का यत्न नहीं किया।''

''परंतु पापा! पुलिस उसे किसलिए पकड़ रही है?'' शोभा ने पूछा।

''इसलिए कि उसने एक लड़की शोभा को बरगलाकर उसका अपहरण करने की योजना बनाई है।''

''माँ! यह क्या है?'' शोभा ने पूछ लिया।

''मुझे संदेह है कि रमण स्टीफंस कॉलेज का विद्यार्थी नहीं है। वह वहाँ की स्टूडेंट्स यूनियन के साथ संबंध नहीं रखता और वह चिट्ठी, जो तुम्हें संगीत विद्यालय के प्रधानाचार्य के द्वारा दी गई थी, झूठी है। तुम्हारा वह अपहरण करना चाहता था।''

''पर क्यों?'' शोभा ने माँ से पूछ लिया।

''तेरा हलुआ बनाने के लिए।''

शोभा चुप कर गई। वह कुछ-कुछ तो समझ रही थी। इस समय वह चौदह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष से ऊपर हो चुकी थी और पुरुष-स्त्री के संबंध का धुँधला-सा भास रखती थी।

:: 5 ::

अगले दिन कश्मीरी गेट पुलिस चौकी पर रामलाल तथा मुकुटबिहारी माथुर, संगीत महाविद्यालय के प्रधानाचार्य तथा शोभा को साथ लेकर जा पहुँचे। इन सबको पुलिसवालों ने बुलाया था। सबने अपने-अपने ज्ञान के अनुसार बयान दिए तो पुलिस ने चालान तैयार कर रमण को ए०डी०एम० की अदालत में उपस्थित कर दिया। पुलिसवालों का आरोप था—'अपहरण का यत्न।' इसके लिए मैजिस्ट्रेट ने कह दिया, "पाँच हज़ार की जमानत और पाँच हज़ार का मुचलका देकर छूट सकते हो।"

रमण ने याचना के भाव में रामलाल से ही कहा, "लालाजी! आप मेरी जमानत दे दीजिए।"

इस पर मैजिस्ट्रेट तथा अन्य वहाँ उपस्थित लोग हँसने लगे।

पुलिस ने दो दिन की अवधि रमण के लिए माँग ली। पुलिस का कथन था कि यदि मुजरिम किसी को दो दिन में ज़ामिन उपस्थित नहीं करता तो पुलिस इसके लिए दण्ड की माँग करेगी।

परन्तु ऐसा हुआ नहीं। उसी दिन एक धनी-मानी व्यक्ति जो नई दिल्ली में एक रेस्टोराँ का मालिक था, पाँच हज़ार की जमानत दे रमण को छुड़ाने में सफल हो गया।

उसी सायं रामलाल अपनी दुकान पर कुछ ग्राहकों से बातचीत कर रहा था, कि रमण वहाँ आ खड़ा हुआ। रामलाल ने उसको देखा तो वह समझ गया कि कोई उसे छुड़ा लाया है। वह अपने ग्राहकों को कपड़ा दिखाता रहा। जब कपड़ा पसन्द हो गया तो रमण की ओर देख पूछने लगा, "तो छूट आए हो?"

"जी!"

"और यहाँ किसलिए आए हो?"

"यह बताने के लिए कि इस राज्य में और राज्य की इस राजधानी में भी मेरे मददगार हैं।"

"हाँ! यह तो देख रहा हूँ।"

"मैं आपसे एक बात करने आया हूँ।"

"तो आओ मेरे केबिन में। मैं तुम्हारी बात सुनने के लिए तैयार हूँ।"

रामलाल रमण को लेकर अपने दफ्तर में चला गया। उसे अपने सामने बैठाकर पूछने लगा, "बताओ! क्या चाहते हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं शोभा से विवाह करना चाहता हूँ।"

"मगर उससे विवाह के दूसरे भी प्रत्याशी हैं?"

"एक को तो मैं जानता हूँ। वही जिसने कल मेरा सिर फोड़ दिया था।"

"मैं समझता हूँ कि उसके अतिरिक्त भी हैं।"

"तो क्या हुआ? मैं उन सबसे श्रेष्ठ हूँ। एक लाला बालकराम, जो पैरिस रेस्टोराँ का मालिक है, ने मेरी जमानत दी है। इस समय उत्तरी भारत में वह सबसे बड़ा धनी व्यक्ति और लैण्ड-लार्ड है।'

"ठीक! मगर रमण साहब! तुम उसके क्या हो—लड़के हो अथवा भाई? उसके धनी होने से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?"

"मेरा उससे सम्बन्ध इतना तो प्रकट हो ही गया है कि वह मेरी जमानत दे सकता है?"

"तो ठीक है। देखो रमण! शोभा अभी चौदह वर्ष से कुछ ऊपर ही है। मैं उसका विवाह तीन वर्ष उपरान्त करना चाहूँगा। यदि इसके तुम प्रत्याशी हो और लाला बालकराम तुम्हारे संरक्षक हैं तो उनको कहो कि मुझसे मिल लें। मैं उनसे बात कर लूँगा।

"यदि वह मुझे सन्तुष्ट कर सके तो सगाई हो जाएगी। विवाह तीन वर्ष उपरान्त ही होगा।"

"विवाह की बात तो देख लेंगे। सगाई हो जाए और मुझे उसका नियत पति घोषित हो जाने पर भी बहुत कुछ हो सकेगा।"

"क्या हो सकेगा?" रामलाल का प्रश्न था।

"यह लाला बालकराम जी बताएँगे। उन्होंने शोभा को देखा है। वह दिल्ली संगीत महाविद्यालय के सदस्य हैं और एक-दो बार शोभा का सितारवादन और संगीत वहाँ सुन चुके हैं?"

"तब ठीक है। उनको कहो, मुझसे मिल लें। और देखो, तुम इस दुकान पर फिर नहीं आना। मैं अभी पुलिस में रिपोर्ट कर रहा हूँ कि तुम जमानत पर छूटते ही मुझे धमकाने यहाँ आ पहुँचे हो।"

"तो झूठी रिपोर्ट करेंगे?"

"तुम्हारा इस समय यहाँ आने का यही अर्थ हो सकता है। अभी तो मैंने तुम्हारी बात का विरोध नहीं किया। यदि करूँ तो तुम धमकी दोगे ही।"

रमण हँस पड़ा और चल दिया।

इस स्थिति पर माथुर साहब से सम्मति लेने के लिए उसने उनको फोन कर दिया। फोन पर उसने कहा, "वकील साहब! मैं आपके पूर्ण परिवार को रात के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने पर आमंत्रित करता हूँ।"

"क्यों? क्या बात है?"

"आज मेरे विवाह का फैसला होने की सालगिरह है।"

"ओह!"

"हाँ माथुर साहब! मेरे संघर्षमय जीवन का आरम्भ इसी दिन से हुआ था। आज जनवरी चौबीस सन् 1955 है। मेरे विवाह का निश्चय चौबीस जनवरी सन् 1939 को हुआ था। उसे आज सोलह वर्ष हो चुके हैं। इन सोलह वर्षों में मैंने देश में, समाज में और राज्य में भारी इन्कलाब देखा है।

"इन परिवर्तनों पर विचार कर रहा था कि विचार आया कि आज इस दिन की याद मनायी जानी चाहिए।"

"मेरी इस दावत पर मेरा घोर अहित करनेवाला मेरा परम 'मित्र' मोतीराम भी अपनी पत्नी सहित आ रहा है। आप भी आइए तो अनुगृहीत अनुभव करूँगा।"

माथुर जानता था कि रामलाल के कथन के पीछे सदा कुछ उद्देश्य और रहस्य रहता है। इस कारण वह बोला, "मैं आऊँगा।"

रामलाल का निमंत्रण मोतीराम को मिला तो वह भी घर पहुँच अपनी पत्नी सुन्दरी से विचार करने लगा। उसने उसको कहा, "रामलाल ने आज रात के भोजन पर आमंत्रित किया है।"

"वह लड़की की सगाई कर रहा प्रतीत होता है!" सुन्दरी के मुख से अनायास ही निकल गया।

"ओह! कितने वर्ष की है वह?"

"चौदह वर्ष से ऊपर हो चुकी है। मेरे विचार में सगाई इस अवस्था में हो जानी चाहिए और छः महीने के उपरान्त विवाह भी हो जाना चाहिए।"

"अभी बहुत छोटी है।"

"देखने में लड़की तैयार प्रतीत होती है।"

"तैयारी के लक्षण क्या हैं?"

"तो आप नहीं जानते?"

"मैं बुद्धू पठान इन बातों के विषय में क्या जान सकता हूँ? इसका अनुमान तो मेरे रानी पर हाथ उठाने से समझ सकती हो। वह मेरी उँगली चबा यहाँ से भाग गई थी।"

"तो आप उस दिन की बात को भूले नहीं?"

"कैसे भूल सकता हूँ? मेरी उँगली टेढ़ी हो चुकी है और फिर रानी दिन दुगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह उन्नति उसके पति के कारण ही है। वह बहुत ही योग्य और बुद्धिमान् व्यक्ति है।"

"छोड़ो इस बात को। मैं इस विषय में झगड़ा नहीं करूँगा। इस पर भी वह है चार सौ बीस ही। किस कमाल से उसने पाकिस्तान सरकार को धोखा दिया है! वह तो एक कहानी बन गई है।"

"आपकी कहानी नहीं बनी क्या? एक लाखों के स्वामी पेशावर से भागे तो सबसे पहले अपने नौकर से ही ठग लिए गए। पाकिस्तान से जिसको धन देकर दिल्ली भेजा था, वह मालिक बन गया और आप उसके नौकर।"

"छोड़ो इस बात को। तुम दावत पर चलोगी?"

"ले चलेंगे तो चलूँगी। अकेली नहीं जाऊँगी।"

"मैं ले चलूँगा। देखना चाहता हूँ कि रामलाल ने लड़की के लिए कौन-सा वर ढूँढ़ा है?"

सुन्दरी ने कह तो दिया कि शोभा के लिए वर ढूँढ़ा होगा, परन्तु वह भी यह समझ रही थी कि यह कुछ जल्दी ही हो रहा है।

रात तीनों परिवार खाने पर एकत्रित हुए और ड्राइंगरूम में बातें होने लगीं। समीप के बोल्गा रेस्टोराँवाले खाने का प्रबन्ध कर रहे थे।

सुन्दरी ने रानी से पूछ लिया, "बहन! यह दावत किस उपलक्ष्य में है?"

"आपके भाई साहब बताएँगे। मुझे बताते लज्जा अनुभव होती है।" रानी ने कहा।

"ओह! क्यों भैया! आज क्या बात है जो रानी लज्जा अनुभव करती है?"

"भाभी! बताऊँगा। खाने की मेज पर बैठ, सब बात बताऊँगा।"

मोतीराम शोभा के विषय में विचार कर रहा था। उसने माथुर साहब के सामने रामलाल को कह दिया, "तुम्हारी भाभी सुन्दरी कहती है कि शोभा की सगाई कर रहे हो।"

रामलाल ने ही कहा, "हाँ! इसकी चर्चा तो है। परन्तु हम इसे अभी समय से पूर्व ही समझते हैं।"

इस पर माथुर ने कह दिया, "विवाह समय से पूर्व नहीं हो सकता, परन्तु सगाई तो जन्म से भी पहले हो सकती है।"

सब हँसने लगे। बात मोतीराम ने ही चलाई, "शोभा अपनी माँ का अनुकरण कर रही प्रतीत होती है। वह उससे भी आगे निकल सकती है। मेरा मतलब है सौंदर्य में उसे भी मात कर सकती है।"

आज चन्द्र शोभा से बात करने में सफल हो रहा था। चन्द्र माणिक के एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर बैठा था। शोभा माणिक के दूसरी ओर थी। चन्द्र ने बात माणिक की शिक्षा के विषय पर आरम्भ की तो फिर शोभा भी बातचीत में सम्मिलित हो गई।

माणिक ने कहा, "मैं पिछली वार्षिक परीक्षा में अपनी श्रेणी में प्रथम रहा हूँ और शोभा रियायती अंकों से नई श्रेणी में गई थी।"

शोभा ने अपनी सफ़ाई दे दी, "यह इस कारण कि मैं स्कूल की पढ़ाई को व्यर्थ समझती हूँ।"

"ओह!" चन्द्र ने पूछ लिया, "क्यों?"

"ऐलजेबरा, ज्योमैट्री, साइंस इत्यादि मुझे पसन्द नहीं।"

"और हिन्दी भाषा?" चन्द्र ने पूछ लिया।

"उसमें तो मैं श्रेणी में प्रथम रही हूँ। हिन्दी की अध्यापिका सरस्वती की सिफारिश पर ही तो अगली श्रेणी में चढ़ाई गई हूँ।

"मुझे मुख्याध्यापिका ने बुलाकर पूछा था, 'शोभा! तुम पाँच विषयों में से दो में फेल हो। दो में केवल पास होने योग्य नम्बर लिए हैं और एक में तुम श्रेणी में प्रथम रही हो। यह क्या बात है?"

"मैंने मुख्याध्यापिका जी को भी बता दिया है कि केवल हिन्दी पढ़ने में ही मेरी रुचि है। शेष विषय तो मुझे सर्वथा नीरस प्रतीत होते हैं।

"मुख्याध्यापिका जी कहती थीं कि बहन सरस्वतीजी ने उनसे सिफारिश की है और कहा है कि मैं बहुत ही समझदार तथा योग्य छात्रा हूँ। इस पर मैंने कह दिया कि मैं दसवीं श्रेणी की परीक्षा नहीं दूँगी। मेरे पास ऐलजैबरा, ज्योमैट्री पढ़ने और स्मरण करने के लिए समय ही नहीं है। मैंने उनको बता दिया है कि हिन्दी, संस्कृत और संगीत में ही मेरी रुचि है।

"मुझे अगली श्रेणी में बैठा दिया गया, परन्तु मैं वहाँ पढ़ती केवल हिन्दी और संस्कृत हूँ। अन्य विषयों के समय उपस्थिति लगा चली आती हूँ और बस।"

"बिना गणित सीखे जीवन कैसे चलेगा?"

"वैसे ही जैसे माँ का चलता है। वह तो पाँचवीं श्रेणी तक भी नहीं पढ़ीं।"

"अर्थात्!" चन्द्र ने पूछ लिया, "तुम्हारा भी विवाह वह किसी दुकानदार से कर देंगी?"

"यह मैंने कभी विचार ही नहीं किया। माँ और पापा कुछ प्रबन्ध कर देंगे। परन्तु वह अभी बहुत दूर की बात है।"

इस समय बैयरा खाने पर बुलाने के लिए आया। सब उठकर खाने के कमरे में चले गए। जब भोजन परोस दिया गया तो रामलाल ने संकेत से बैयरा को बाहर प्रतीक्षा करने के लिए कह दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामलाल ने खाना आरम्भ करने से पहले शोभा को संकेत किया तो वह बैठी-बैठी ही आँखें मूँद हाथ जोड़ 'वन्दे मातरम्' गाने लगी। उसने गाया—

वन्दे मातरम्!
सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्,
शस्य श्यामलाँ मातरम्।
वन्दे मातरम्!
शुभ्रज्योत्स्नां पुल्कित यामिनीम्।
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्।
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्।
सुखदां-वरदाँ मातरम्।
वन्दे मातरम्!!

इस वन्दना के उपरान्त भोजन आरम्भ हुआ। माथुर साहब ने ही वन्दे मातरम् गीत पर बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, "यह गीत देश में बहुत विख्यात हुआ है, परन्तु गीत के इस पद में कुछ भी तत्त्व की बात नहीं कही गई है।"

मोतीराम ने पूछ लिया, "वकील साहब! आप इस गीत में किस तत्त्व की आशा करते हैं?"

माथुर ने कहा, "यह वन्दना है। जितना कुछ भी शोभा ने गाया है, उसका तो कुछ अभिप्राय है ही नहीं। इस गीत में जो तत्त्व की बात थी, वह हमारी सरकार और उससे पहले कांग्रेस पार्टी ने निकाल रखी है।

"इस निरर्थक गीत के स्थान एक अन्य और इससे भी अधिक निरर्थक गीत को राष्ट्रगीत बना लिया गया है। उसका तो कुछ भी अभिप्राय नहीं हो सकता। वह गीत है—

जन गण मन अधिनायक जय हे! भारत भाग्य विधाता।

"इस गीत का अर्थ है—इस देश में जो लोग और लोगों के समूह रहते हैं, उनके अधिनायक अर्थात् नेता तुम्हारी जय हो। तुम भारत के भाग्यविधाता हो।

"इस गीत में किसी को सम्बोधित कर कहा गया है कि तुम भारत देश के भाग्य-विधाता हो। परन्तु कांग्रेस और उसके प्रायः नेता तो परमात्मा को मानते नहीं। इस कारण ये तोते की भाँति इस गीत को रटते हैं और इसके अर्थ मन में कुछ ऐसा समझते हैं, जैसा गीत में कहा नहीं। वैसे हृदय में वे जवाहरलाल नेहरू को ही भारत का एकमात्र नेता मानते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोतीराम को कांग्रेस की आलोचना प्रिय नहीं लगती थी। उसने पूछ लिया, "तो गीत में अधिनायक किसको कहा है? गीत तो बहुत पुराना है। तब नेहरूजी इतने विख्यात नहीं हुए थे?"

माथुर ने कहा, "कवि के मन की बात तो कही नहीं जा सकती। गीत में अधिनायक शब्द पर विवाद भी हुआ था। लोगों को संदेह था कि कवि ने अधिनायक 'ब्रिटेन' के राजा जार्ज पंचम को कहा है। ऐसा संदेह करनेवालों का कहना है कि यह गीत लिखा गया था सन् 1911 के दिल्ली दरबार से पूर्व। तब कवि को पता चला था कि इंग्लैण्ड के राजा यहाँ दरबार में आनेवाले हैं और बंगाल विभाजन को रद्द करने की घोषणा करनेवाले हैं। इस कारण, ऐसा कहा जाता है कि कवि ने ब्रिटिश सम्राट के चरणों में अपनी प्रसन्नता के फूल चढ़ाने के लिए इस गीत में उसे भारत के भाग्य को उज्ज्वल करनेवाला माना है।

"यह चर्चा लोगों ने आरम्भ की थी और इसके प्रमाणस्वरूप लोगों ने यह कहा था कि कवि महोदय ने इस गीत को ध्वनि सहित दरबार के आरम्भ में गाने की स्वीकृति माँगी थी। परन्तु अंग्रेज़ी सरकार ने यह स्वीकृति भी नहीं दी और दरबार के आरम्भ में—'गॉड सेव द किंग' ही गवाया था।

"पुनः इस गीत के कवि ने सन् 1912 अप्रैल में हुए कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गाने की स्वीकृति माँगी। इसमें इसके गाये जाने की स्वीकृति तो मिली, परन्तु अधिवेशन के आरम्भ में नहीं, वरन् अन्त में। उन दिनों कांग्रेस के अधिवेशनों में—'गॉड सेव द किंग' गाया जाता था।"

मोतीराम और रामलाल दोनों भिन्न-भिन्न भाव में वकील साहब का मुख देखते रह गए। मोतीराम को विश्वास नहीं आ रहा था। वह तो यह भी नहीं जानता था कि कांग्रेस किसी समय अंग्रेज-भक्तों की संस्था थी। इसलिए वह अवाक् बैठा रह गया।

रामलाल को विस्मय इस कारण हुआ था क्योंकि रानी ने, जब वह पाकिस्तान से छूटकर भारत में आई थी, तब कहा था, 'ये कांग्रेसी या तो महामूर्ख हैं अथवा धूर्त हैं।' उसने यह भी कहा था, 'मेरे विचार में ये धूर्त अधिक हैं और मूर्ख कम हैं।"

पीछे माथुर साहब ने बताया था कि यदि कांग्रेसी धूर्त हैं तो पाकिस्तानी भी कम नहीं। वे औरतों से एक ही काम लेना जानते हैं और वह है उनसे व्यभिचार कराना।

आज रामलाल को रानी की बात स्मरण हो आई, परन्तु इस समय चन्द्र ने पूछ लिया, "पिताजी! और कवि स्वयं क्या कहता था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब इस गीत को राष्ट्रगीत बनाने का विचार हुआ और यह विवाद छिड़ा, तब कवि जी महाराज स्वर्गवास कर चुके थे। इस कारण उनको इस विषय में सफ़ाई देने का अवसर नहीं मिला।

"हाँ, इस गीत को राष्ट्रगीत के रूप में पहले सुभाष चन्द्र बोस ने स्वीकार किया था। उसने अपनी आज़ाद हिन्द फौज में इसे राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकार किया था। परन्तु तब अवसर नहीं था जो इस प्रकार की बारीक बातों पर विचार किया जाता।

"परन्तु मैं तो इससे एक बहुत बढ़िया गीत जानता हूँ। उसे कुछ लोग राष्ट्र वन्दना के रूप में प्रयोग भी कर रहे हैं। अर्थों में वह इन दोनों गीतों से बहुत ही अधिक सुन्दर है।"

"वह कौन-सा गीत है?" शोभा का प्रश्न था।

"सुनोगी?" माथुर ने मुस्कराकर पूछा।

सब उत्सुकता से वकील साहब का मुख देखने लगे। वकील साहब सूप समाप्त कर चुके थे और दूसरे 'कोर्स' की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने गीत सुना दिया—

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे!
त्वया हिन्दु-भूमे सुखम् वर्धितोऽहम्॥
महामंगले पुण्य भूमे त्वदर्थे,
पतत्वेष कायो नमस्ते नमस्ते॥

"यह इस वन्दना गीत का एक पद है। इसका अर्थ है—हे वात्सल्यपूर्ण मातृभूमि! मेरा तुम्हें नमस्कार हो।

"वत्सले का अर्थ प्रिय किया जाता है, परन्तु प्रिय तो गुणों के कारण ही हो सकता है। यहाँ श्रेष्ठ पुत्रों की जननी होने से भारत-भूमि को 'वत्सले' अर्थात् प्रिय माना है। अभिप्राय है—श्रेष्ठ पुत्रों की जननी, हिन्दू राष्ट्र-भूमि! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।

"तुम महामंगलमयी हो। तेरे हित के लिए मेरी यह काया अर्पित हो। मैं बार-बार तुम्हारा अभिवादन करता हूँ।

"इसके दो पद और हैं। अगला पद है—

प्रभो शक्तिमन् हिन्दूराष्ट्राङ्ग भूता,
इमे सादरम् त्वाम् नमामो वयम्।
त्वदीयाय कार्याय बद्धा कटीयम्,
शुभामाशिषन् देहि तत्पूर्तये॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजैयाञ्च विश्वस्य देहीश शक्तिम्,
सुशीलम् जगद्येन नम्रम् भवेत्।
श्रुतञ्चैव यत् कण्टकाकीर्णमार्गम्,
स्वयम् स्वीकृतम् नः सुगम् कारयेत्॥

इस दूसरे पद का अर्थ है—

"हे शक्तिमान् परमात्मन् परमेश्वर! हम हिन्दू राष्ट्र के अंगभूत सब घटक तुम्हें आदरपूर्वक प्रणाम करते हैं! तुम हमें शुभ आशीर्वाद दो कि जिससे हम विश्व में अजय शक्तिशाली बनें। सारा जगत् तुम्हें नमस्कार करे। ऐसी विशुद्ध बुद्धि और ज्ञान हमें दो कि हम इस कण्टकमय मार्ग को सुगमता से पार कर सकें।

"वन्दना का तीसरा पद भी है। वह मुझे और भी अधिक प्रिय है। वह है—

समुत्कर्ष निःश्रेयसस्यैकमुग्रम्,
परम् साधनम् नाम वीर व्रतम्।
तदन्तः स्फुरत्वक्षया ध्येयनिष्ठा,
हृदन्तः प्रजागर्तु तीव्राऽनिशम्॥
विजेत्री च नः संहता कार्य शक्तिर्,
विधायास्य धर्मस्य संरक्षणम्,
परं वैभवन् नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्।
समर्था भवत्वाशिषाते भृषम्॥

"इस पद का अर्थ है—

"हम सब मिलकर निःश्रेयस् अर्थात् मोक्ष-प्राप्ति के लिए कठोर यत्न करें। वीरतापूर्वक इस सर्वश्रेष्ठ व्रत को सिद्ध करें। हृदय में तीव्र निष्ठा जागे और ध्येय की प्राप्ति के लिए स्फुरित हो कार्यरत हों, धर्म की रक्षा के लिए हममें शक्ति जागृत हो।

"हमारे इस राष्ट्र को परम वैभव और सामर्थ्यपूर्ण बनाने के लिए हमें आशीर्वाद दो। हे मातृभूमि! तुम्हें हमारा नमस्कार हो।"

जब माथुर साहब इस वन्दना गीत को और उसके अर्थों को बता रहे थे, तो सब दत्तचित्त सुन रहे थे। बैयरा फ्राईड फिश, साथ में आलू के चिप्स और टोमाटो सॉस सामने रख गया था।

किसी का खाने की ओर ध्यान नहीं था। माथुर साहब ने कहा, "यह वन्दना है भले लोगों की जो देश और राष्ट्र से प्रेम रखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''इसमें रोटी, कपड़ा, मकान नहीं माँगा गया; वरन् सेवा, कर्त्तव्य, श्रद्धा और भक्ति भरी है। अपने और पराये, सबके कल्याण के लिए इसमें प्रार्थना है।''

सबका ध्यान भंग हुआ जब शोभा अपने रूमाल से अपनी गालों पर लुढ़क रहे आँसू पोंछने लगी।

''ओह!'' माथुर साहब के मुख से निकल गया, ''शोभा! बहुत प्रिय लगा है यह गीत!''

''अंकल! कह नहीं सकती कि क्या लगा है। कुछ ऐसा अनुभव हो रहा है कि कलेजा मुख को आ गया है।''

सब हँसने लगे और शोभा लज्जित हो मछली को काँटे से पकड़ छुरी से काटने लगी।

इस पर माथुर ने कह दिया, ''मुझे बहुत प्रसन्नता होगी यदि शोभा इसे संगीत में बाँधे और अगली बार जब मैं यहाँ भोजन के लिए आऊँ तो वन्दे मातरम् के स्थान इसे गाकर सुनाये।''

''फिर कब आएँगे?'' शोभा ने पूछ लिया। शोभा का आशय था कि वह गीत अपने मास्टर से स्वरबद्ध कराकर तैयार रखेगी।

माथुर ने कहा, ''इसे राग भैरव रामकली के स्वरों में बाँधो तो कदाचित् यह बहुत भला लगे।''

''परन्तु वह राग खाने के समय शोभा नहीं देगा।''

''तब मैं तुम्हें अपने घर ले जाकर, प्रातःकाल अपने काम पर बैठने से पूर्व सुन अति प्रसन्न हूँगा।''

''तो मैं वहाँ चलकर सुनाऊँगी?''

''हाँ, अपना तानपुरा इत्यादि भी लेकर चलना होगा।''

''परन्तु कब?''

''जब तुम्हारे पिता स्वीकार करेंगे।''

शोभा उत्सुकता से अपनी माता का मुख देखने लगी। परन्तु रामलाल हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, ''वकील साहब! उसके लिए कुछ तो तैयारी करनी होगी। उसमें समय लगेगा।''

शोभा कुछ न समझती हुई पिता और वकील साहब का मुख देखने लगी। रानी भी हँसते हुए बोली, ''शोभा! इस गीत के गाने के लिए तो वकील साहब के बँगले पर चलना होगा। तुमको चाहिए कि भलीभाँति तैयार कर लो। कहीं बेसुरा और भद्दा न बन जाए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:: 6 ::

भोजन समाप्त हुआ तो सब खाने के कमरे से उठ ड्राइंगरूम में आ गए। शोभा माँ के पास जा बैठी। स्वरूपरानी उसके दूसरी ओर बैठी थी। स्वरूपरानी ने शोभा के गले में बाँह डालकर उसे अंग लगाते हुए उसके मुख को चूम लिया।

शोभा हँस पड़ी और पूछने लगी, ''मौसी! यह किस उपलक्ष्य में प्यार किया है?''

''तुम्हारे, हमारे घर आकर इस गीत को गाने के वचन के उपलक्ष्य में।''

''तो मूल्य पहले ही चुका रही हो। माल तो अभी तैयार भी नहीं हुआ?''

''परन्तु यह मूल्य नहीं है। यह तो पेशगी रकम है। असल मूल्य तो बहुत अधिक होगा। वह तुम्हें सोने में तोल कर दूँगी।''

''ओह!'' शोभा हँस पड़ी। उसे हँसते देखे सब उसकी ओर देखने लगे। शोभा ने कह दिया, ''मौसी कह रही हैं कि मेरा मूल्य मुझे सोने में तोल कर देंगी और मैं हँसी इस कारण हूँ कि मैं इस दाम पर भी बिकूँगी नहीं।''

''परन्तु शोभा! दाम तुम्हें खरीदने के लिए नहीं आँका जा रहा। दाम का अभिप्राय तो मूल्यांकन मात्र है। जानती हो, कोहेनूर हीरा इस समस्त भूमण्डल में सर्वश्रेष्ठ है। उसका दाम समय-समय पर जौहरी लगाया करते हैं। यह उसको खरीदने के लिए नहीं होता। उसे कोई खरीद नहीं सकता। मूल्य तो उसके गुणों का बखान करने के लिए होता है।''

''तब ठीक है मौसी! परन्तु मैं बता दूँ, मैं बिकाऊ नहीं हूँ?''

''और मैं तुम्हें ऐसे ही ले जाना चाहती हूँ जैसे कोहेनूर हीरा इस समय इंग्लैण्ड पहुँचा हुआ है।''

रामलाल माथुर साहब के समीप बैठा अपनी समस्या बता रहा था। उसने कहा था, ''रमण की जमानत लाला बालकराम, पैरिस रेस्टोराँ के मालिक ने दी है और उसने शोभा को प्राप्त करने की पेशकश की है।''

''किस मतलब के लिए?''

''वह औरतों का दलाल उनका एक ही काम जानता है और ऐसा प्रतीत होता है कि उसका दलाल वह रमण ही, है जिसे पाँच हज़ार की जमानत पर छुड़ाकर लाया है।''

माथुर ने कुछ गम्भीर होकर कहा, ''इसका भी कुछ वैसा ही प्रबन्ध करना होगा जैसा 'रिकवरी ऑफ मुस्लिम विमेन्स' विभाग की सुपरिण्टेंडेण्ट का किया था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं इसकी योजना बना रहा हूँ और आपको बताकर ही कार्य में लगूँगा।"

"तब ठीक है। इस प्रकार के व्यक्ति के लिए पुलिस अथवा कचहरी से कुछ भी सहायता नहीं मिल सकती।"

"तो मैं आपसे इस विषय में मिलूँगा।"

"हाँ! परन्तु यह लड़की अपने निखरते सौन्दर्य से विख्यात हो रही है। इसकी रक्षा का प्रबन्ध करना होगा?"

"वकील साहब! विवाह तो कोई प्रबन्ध नहीं।"

"वह तो समय पर होगा। केवल लड़की के मन में पति की निष्ठावान् पत्नी होने की भावना का निर्माण करना होगा। सगाई इसमें सहायक हो सकती है। इसके लिए मैं तब से योजना बना रहा हूँ जब से तुमने रमण के शोभा को सितारवादन के लिए निमंत्रण की बात बताई है।

"मैं चन्द्र से इस विषय पर बात करूँगा और तुम शोभा के मन की भावना का पता करो और साथ ही बालकराम के विषय में भी कुछ विचार करना होगा।"

इसी योजनानुसार रामलाल के घर से लौटते हुए माथुर ने चन्द्रमोहन से पूछ लिया, "क्या बातें कर रहे थे शोभा से?"

"भोजन के पूर्व ही दस मिनट तक बात हुई थी और उसमें माणिक की पढ़ाई की बातें होती रही थीं। शोभा ने कहा था कि वह ऐलजैबरा, ज्योमैट्री, भूगोल, अंग्रेजी इत्यादि विषयों के पढ़ने में रुचि नहीं रखती। इस कारण वह उन विषयों के पीरियड में हाज़िरी लगा चली आती है। पहले तो अध्यापिकाएँ पसन्द नहीं करती थीं, परन्तु अब वे समझ गई हैं और चुप रहती हैं।"

"यह बात तो ठीक है," माथुर ने कहा, "परन्तु फिर स्कूल में जाने की आवश्यकता क्या है? हिन्दी के लिए तो घर पर 'कोच' रखा जा सकता है?"

"मैंने यही प्रश्न किया था और वह कहती है कि सहेलियाँ तो स्कूल में ही मिल सकती हैं। घर में इतनी कहाँ हो सकती हैं? यही युक्ति वह संगीत विद्यालय में जाने की देती है।"

"यह तो है ही। अब तुम्हारी बात देखता हूँ तो इसी परिणाम पर पहुँचता हूँ कि स्कूलों-कॉलेजों का वातावरण ही अपवित्र हो रहा है।"

चन्द्र मोटर चला रहा था। वह इस पर मौन हो मोटर चलाने में लीन हो गया। बात स्वरूपरानी ने आरम्भ कर दी। उसने पूछा, "और तुम्हारे विषय में उसके मन की भावना का कुछ पता चला है?"

चन्द्र हँस पड़ा और बोला, "माताजी! वह रमण की करतूत को जान गई मालूम होती है। उसके बयान थाने में हुए हैं और रमण के विषय में बुरे विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखती प्रतीत होती है। साथ ही वह यह भी जानती है कि रमण मेरा मित्र है। मेरे साथ ही उसने उसकी दुकान पर देखा था।"

"परन्तु तुम अपने को रमण से अलिप्त भी तो प्रकट कर सकते हो?"

"वह तो मैं हूँ ही। यदि यह कहूँ कि मैं उसका विरोधी हूँ तो अधिक ठीक होगा। परन्तु प्रथम प्रभाव को मिटाना सहज नहीं होता। उसके लिए विचार कर रहा हूँ।"

"तुम युवकों ने हम बड़ी आयुवालों के लिए एक समस्या उत्पन्न कर दी है?" माथुर का कहना था।

चन्द्र हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "पर पिताजी! हम युवकों की समस्या भी तो प्रौढ़ावस्था के लोगों ने ही आरम्भ की है। प्रायः नेता जब प्रौढ़ावस्था में होते हैं तो वे युवकों का संगठन बनाने लग जाते हैं। उनमें तो यौवन होता नहीं और अपनी युवा-अवस्था में वे कुछ भी कर सके नहीं होते।"

"चन्द्र! तुम तो खूब युक्ति करना सीख गए हो!"

"पिताजी! सीख रहा हूँ और आपसे ही। पढ़ाते तो आप न्यायदर्शन हैं, परन्तु उस पर विवेचना से प्रचलित काल की घटनाओं में कैंची की भाँति युक्ति करने का ढंग सीख रहा हूँ।"

"ओह! परन्तु याद रखना। युक्ति को भले उद्देश्यों के लिए प्रयोग करनेवाले का ही कल्याण होता है। उद्देश्यों से ही युक्ति का फल मिलता है।"

"लक्ष्य तो इस समय शोभा बन रही है। माताजी ने बताया है कि यह लक्ष्य शुभ है। इस कारण युक्ति का दुरुपयोग नहीं कर रहा, सदुपयोग ही कर रहा हूँ। वह अभी हमारे चलने से पूर्व पूछ रही थी कि आप द्वारा कही वन्दना की लिखित प्रतिलिपि कहाँ मिलेगी और मैंने उसे लाकर देने का वचन दिया है।"

"कहाँ से लाओगे?"

"राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यालय से।"

"वहाँ से नहीं मिलेगी।"

"क्यों?"

"उनके पास छपी है ही नहीं। वे 'बुद्धिमान्' व्यक्ति अपनी बातों को लिपिबद्ध करने का न तो स्वभाव रखते हैं और न ही इच्छा।"

"बहुत विचित्र है!"

"हाँ! परन्तु सामान्य व्यक्ति संसार की ठोकरें खाकर ही मार्ग पाते हैं। बुद्धिमान् मार्ग पर चलने से पहले सब प्रकार की कठिनाइयों की चिकित्सा विचार कर चलते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ये संघवाले भी सामान्य व्यक्ति हैं ?"

"हाँ! ये भी वैसे ही हैं जैसे कम्युनिस्ट दल के लोग।"

"पिताजी!" चन्द्र ने इस तुलना से सतर्क हो पूछा, "वे तो अपने आपको हिन्दू कहते हैं।"

"हाँ! वे हिन्दू कम्युनिस्ट हैं।"

"यह आप हिन्दू की निन्दा कर रहे हैं अथवा कम्युनिस्टों की प्रशंसा कर रहे हैं ?"

"दोनों ही नहीं।" माथुर साहब का उत्तर था, "हिन्दू होना किसी एक क्षेत्र में है और कम्युनिस्ट होना दूसरे क्षेत्र में है।"

"समझा नहीं।" चन्द्र का अगला प्रश्न था।

"तो जीवन में दो भिन्न-भिन्न कार्यक्षेत्र नहीं हो सकते क्या? मैं तो समझता हूँ कि दो से कहीं अधिक क्षेत्र भी हो सकते हैं। देखो, मैं समझाता हूँ।" पिता बताने लगा और माँ तथा पुत्र सुनने लगे।

"तुम्हारी बहन नीना एक 'ऐजुकेशनिस्ट' थी और एक वासनाभिभूत लड़की भी। उसके सेवा-कार्य में कभी किसी भी प्रकार का दोष नहीं पाया गया था। आजकल के शिक्षा विभाग के सचिव मुझे बताते थे कि उसके 'नोट' जो वह स्कूल के अधिकारियों को लिखाया करती थी, अति स्पष्ट और ठीक दिशा-दर्शन करानेवाले होते थे। वे कभी मिलते हैं तो नीना की प्रशंसा ही करते रहते हैं।

"परन्तु जो व्यवहार उसका अपने प्रेमी से था, वह सर्वथा मूर्खों का-सा था। एक वासनाभिभूत प्राणी की भाँति मूर्खतापूर्ण। यही कारण था कि जब उसे गर्भ ठहरा तो गर्भपात कराने जा पहुँची और उसमें उसकी मृत्यु हो गई। यह मूर्खता ही थी।

"इसी प्रकार मनुष्य के कार्य के एक से अधिक क्षेत्र होते हैं। वे कभी परस्पर विरोधी भी हो जाते हैं। कभी बुद्धियुक्त और बुद्धिरहित भी हो जाते हैं।

"कुछ ऐसी ही बात इन संघ से लोगों की मैं देखता हूँ। जहाँ तक इनकी, हिन्दू समाज के विषय में धारणा है, वह अत्यन्त शुद्ध और पवित्र है। परन्तु उस समाज को संगठित करने का उनका उपाय कम्युनिस्टों का-सा ही है।

"कम्युनिस्टों के तो उद्देश्य और उपाय दोनों दूषित हैं। परन्तु इनका उद्देश्य तो ठीक ही है, केवल उपाय अधूरे हैं। ये भी संघ के घटकों में कम्युनिस्टों की भाँति बुद्धि के बहिष्कार पर बल देते हैं।

"मैं तुम्हें एक घटना बताता हूँ। सन् 1952 के निर्वाचनों में मेरी इच्छा दिल्ली के एक क्षेत्र से लोकसभा के लिए खड़ा होने की थी। इन्होंने कहा कि मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनसंघ का टिकट ले लूँ।

"मैंने इनको कहा कि मैं जनसंघ के सब सिद्धान्तों को स्वीकार नहीं करता। इस पर संघ के एक प्रवक्ता मुझे जनसंघ के मनोनीत प्रधान के पास ले गए। मैंने उनसे पूछा, 'आपने अर्थ-व्यवस्था के विषय में क्या निश्चय किया है? आपके घोषणा-पत्र में तो केवल इतना कहा है कि एक व्यक्ति की न्यून-से-न्यून आय एक सौ रुपये और अधिक-से-अधिक दो सहस्र रुपये करने का यत्न करेंगे।"

"हाँ!" प्रधान जी ने कहा।

"मेरा प्रश्न था, 'कौन करेगा?'

"उसका कहना था, 'यह तो जब हम सरकार बनाने की स्थिति में होंगे, तब बता सकेंगे।'

"मैंने उनको कहा था, 'इसका अर्थ यह है कि आप वस्तुस्थिति को न समझते हुए मत एकत्रित करने के आकर्षक उपायों का प्रयोग कर रहे हैं?'

" 'नहीं!' जनसंघ के प्रधान का कहना था, 'हम कुछ योजना मन में रखते हैं, परन्तु उसको बताने का समय अभी आया नहीं। इस कारण बता नहीं रहे।'

"मेरा प्रश्न था, 'यह धोखा-धड़ी हो जाएगी और यदि कहीं आप इस प्रकार धोखा देने में सफल हो गए तो आप अपने इस वचन को पूरा करने में अन्धेरगर्दी मचा देंगे। क्योंकि आपका एक और बीस का अनुपात अन्त में सबको शून्य पर ला खड़ा करेगा। आप सबको खाने-पहनने और रहने मात्र का देकर शेष सबकुछ ऐसे छीन लेंगे मानो देनेवाले आप ही हैं।'

" 'वह तो राजा होता ही है।'

"मेरा कहना था, 'मैं आपको परमात्मा नहीं मानता। इस कारण मैं आपका प्रतिनिधि बन लोकसभा में नहीं जाऊँगा।'

"इस भेंट के उपरान्त संघ के अधिकारी बोले, 'माथुर साहब! तो किस दल की ओर से खड़े होंगे?'

"मेरा उत्तर था, 'यदि खड़ा हूँगा तो अपने ही बलबूते पर खड़ा हूँगा।'

" 'तो आप सफल नहीं होंगे।'

"मैंने हँसते हुए कहा, 'यह तो मुझे भी लग रहा है। जहाँ बेसुरे ढोल-नगाड़े बज रहे हों, वहाँ बाँसुरी की मधुर-ध्वनि सुनाई नहीं दे सकती। तब मैं खड़ा नहीं हूँगा। लोकसभा का सदस्य बनना कोई धर्म नहीं है।'

"मैं लोकसभा के लिए खड़ा नहीं हुआ। यही बात कम्युनिस्टों की है। लोगों को आकर्षित करने के लिए लुभायमान नारे लगाते हैं और उनको पूरा करने की न तो उनमें बुद्धि है, न ही उनकी नियत। संघ के लोग भी यही कहते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल होना ही सफलता है।

"इससे मैं कम्युनिस्ट और संघियों को समान समझता हूँ। उद्देश्यों में भेद है परन्तु उद्देश्य तो कहने मात्र के हैं। न ये कम्युनिस्ट प्राप्त कर सके हैं, न संघवाले प्राप्त कर सकेंगे।

"साधन और साध्य में समानता होनी चाहिए। अन्यथा हवा के झोंके से सब कुछ विनष्ट हो जाएगा।"

मुकुटबिहारी माथुर के कथन में अयुक्तियुक्त बात नहीं थी। इस पर भी चन्द्र को उनकी वस्तुस्थिति से असंगति समझ आई।

इस समय गाड़ी कोठी में जा पहुँची। इस पर भी चन्द्र ने गाड़ी गैराज में ले जाने से पहले कह दिया, "परन्तु पिताजी! कम्युनिस्ट राज्य तो स्थापित हो चुका है और रूस में इसे स्थापित हुए अड़तीस वर्ष हो चुके हैं?"

माथुर साहब गाड़ी से उतर रहे थे। उतरते-उतरते बोले, "राज्य नहीं, साम्राज्य और स्मरण रखो, साम्राज्य पतन की दिशा है। इतिहास इस बात का साक्षी है। साम्राज्य में सुख-शान्ति कुछ-एक चुने-गिने लोगों के लिए होती है। शेष के लिए दासता होती है। यही अशोक, चन्द्रगुप्त, हर्षवर्द्धन तथा औरंगजेब इत्यादि के काल में हुआ था। यही रोम साम्राज्य और ब्रिटिश साम्राज्य में था और सबका एक ही परिणाम हुआ है। सब ओर ह्रास, पतन और चरित्रहीनता न केवल उनकी प्रत्युत जन-जन की।"

इतना कह माथुर कोठी में चला गया। चन्द्र गाड़ी को लेकर गैराज में चला गया। स्वरूपरानी ने कहा, "यह अधूरी बात लड़के के मन में विभ्रम फैला देगी।"

"इसकी विवेचना कल न्यायदर्शन पढ़ाते समय करूँगा।"

चन्द्र मोटर रखकर सीधा अपने कमरे में चला गया। वह पिछले तीन-चार दिन की घटनाओं से परेशानी अनुभव कर रहा था। उसे रमण जैसे गुण्डे से अपनी मित्रता अनिष्टकारी लगने लगी थी।

वह कपड़े बदल पलंग पर लेटा तो देर रात्र गए तक विचार करता रहा और अन्त में शोभा के स्वप्न लेता हुआ सो गया।

:: 7 ::

रामलाल बालकराम को सन्मार्ग दिखाने की योजना बनाने लगा। वह योजना का लक्ष्य निश्चय कर चुका था। लक्ष्य था लाला को सीधा जेल भेजने का और इस लक्ष्य की प्राप्ति के उपाय वह रात-भर विचार करता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह इसी प्रकार था, जैसे रानी को पकड़ पाकिस्तान भेज दिए जाने पर योजना का लक्ष्य था—रानी को भारत में लाना; और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए योजना पग-पग कर ही बनी थी।

यही रामलाल अब कर रहा था। उसे इस शोभा पर कुदृष्टि रखनेवाले को सन्मार्ग दिखाना था। उसके लिए सन्मार्ग जेलखाने को जाता था। अब वह इसके उपाय सोचता हुआ रात-भर पलँग पर करवटें लेता रहा। योजना का लक्ष्य ही बन पाया था, योजना नहीं बनी थी। वह जानता था कि बालकराम उससे कहीं अधिक धनवान् है। अपने पेशे में सिद्धहस्त भी होगा। उसकी पुलिस तथा अफसरों से मेल-मुलाकात भी होगी। इस पर भी वह दृढ़-निष्ठ व्यक्ति की भाँति योजना पर चल पड़ा।

एक सायंकाल वह बालकराम के रेस्टोराँ में जा पहुँचा। भीतर पाँच रुपए का टिकट लेकर गया था। चाय-पानी के लिए पृथक् प्रबन्ध करना था। रेस्टोराँ में एक सौ से ऊपर लोगों के बैठने का स्थान था।

रामलाल कुछ समय से पहले ही पहुँचा था। डांस का समय पाँच बजे था और अभी साढ़े चार ही बजे थे। इस कारण उसे सीट हॉल के बीचों-बीच मिल गई। इस पर भी कुछ लोग पहले पहुँचे हुए थे।

बालकराम को रामलाल जानता था। रामलाल ने देखा कि वह हॉल के एक कोने में बैठा हुआ है। वहीं हॉल का पिछला द्वार था। वहीं मंच बना था, जिस पर नर्तकियाँ नाचा करती थीं। इस दिन के प्रोग्राम में लिखा था—रहमान ऐण्ड पार्टी। उसका अभिप्राय था नाच में भाग लेनेवाली एक से अधिक नर्तकियाँ हैं।

रामलाल सीट पर बैठा तो बैयरा आ गया। रामलाल ने ऑर्डर दे दिया, "कॉफी तथा मटन स्टिक्स।"

बैयरा गया तो बालकराम अपनी सीट से उठकर उसके समीप आकर पूछने लगा, "आज तो बहुत खुशी का दिन है कि आप तशरीफ लाये हैं?"

"हाँ! आपके दूत ने बताया था कि आप मिलना चाहते हैं?"

"रमण की बात कह रहे हैं?"

"हाँ! आपने उसकी जमानत दी है और वह यह बताने आया था। मैंने जब पूछा कि उसका आपसे क्या सम्बन्ध है तो वह बोला, आप स्वयं बताएँगे।"

"बहुत बदमाश है। मैं क्या बताऊँगा? एक गरीब मद्रासी क्लर्क का लड़का है। मैंने इसकी परवरिश की है और वह अपने को मेरा दूत समझने लगा है।"

"दूत नहीं तो क्या है?" रामलाल ने पूछा।

"एक पालतू कुत्ते से जो सम्बन्ध हो सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब मैं जाता हूँ।" रामलाल ने कहा।

इस समय बैयरा चाय के बर्तन लगाने लगा। बालकराम ने पूछ लिया, "और यह पाँच रुपये का टिकट।"

"फाड़कर फेंक दूँगा।"

"लालाजी! जरा दिल बहलावा तो कर लीजिए।"

रामलाल ने कुछ सोचने का बहाना कर दिया, "हाँ! यदि मेरी पत्नी से अधिक सुन्दर कोई दिल बहलाने के लिए हो तो?"

"तो आपकी पत्नी भी बहुत सुन्दर है? लड़की को तो मैंने देखा है। यदि वह गाने के साथ नाचना भी सीख ले तो यूरोप के टूअर पर ले जाऊँगा और छः महीने में ही लखपति बन जाएगी।"

"तो वहाँ बहुत मुर्ख रहते हैं क्या?"

"मूर्ख तो हिन्दुस्तान में भी कम नहीं हैं। परन्तु वहाँ धन अधिक होने से हज़ारों के लाखों बन सकते हैं।"

"बात तो मजेदार है। यहाँ सप्ताह में छः दिन दुकान खुलती है और महीने में आय पाँच-छः सहस्र से अधिक नहीं होती।"

"हाँ! लोग कपड़ों पर इतना व्यय नहीं कर सकते, जितना सुन्दर स्त्री पर?"

"पर संग्रहालय में तो बहुत सुन्दर तस्वीरें लगी हैं और वहाँ तो देखने का कुछ नहीं देना पड़ता?"

"यह आज सायं आठ बजे तक यहाँ बैठ देख सकते हैं। बैठिए और देखिए तो पता चल जाएगा!"

कॉफी और स्टिक्स आ गईं। बालकराम उठकर अपनी जगह पर चला गया। इस समय तक हॉल लगभग भर गया था।

कॉफी कुछ अच्छी नहीं थी। स्टिक्स कच्ची थीं। इस कारण रामलाल को स्वाद नहीं आया, परन्तु वह समझ रहा था कि बालकराम से परिचय हुआ है। इसके किसी दुर्बल बिन्दु का पता करना चाहिए।

चाय इत्यादि लोग लेने लगे थे। इस समय पिछले द्वार से तीन लड़कियाँ भड़कीले वस्त्र पहने निकलीं और मंच पर चढ़ अभ्यागतों को नमस्कार करने लगीं।

मंच पर लगे पर्दे के पीछे बैण्ड बजने लगा और वे तीनों नाचने लगीं।

नाच था प्रणय-याचना; मंच पर खड़े किसी काल्पनिक पुरुष की संगत की लालसा के हाव-भाव नृत्य में प्रकट किए गए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृत्य समाप्त हुआ तो तीनों परस्पर पंजाबी गीत गा-गाकर एक-दूसरे को उलाहने देने लगीं।

पर्दे के पीछे से वाद्य-यंत्र उनकी संगत करने लगे। एक ने गाते हुए कहा—

नहीं है ओ पुछदा तैनूं,
फिर वी कहंदी है तू मैंनू।
साजन मेरा है ए, टैनू,
भटक रही है— भोलिए, निमानिये नी॥

इस पर दूसरी ने गा दिया—

करतूत तेरी मैं जानदी हाँ,
तेरी नजरां नूं पहचानदी हां।
मैं बंदी स्वाभिमान दी हां,
मैंनूं चाह नहीं है उसदी, बौरानिये नी॥

इस पर तीसरी बोल उठी—

दोनों मूर्ख, गंवार सखियां ने,
झगड़ रहियां बेकार पगलियां ने।
सुर्खी ज्यूड़े दे हाथ विच पखियां ने,
वांग पतंगे दीवे ते जल रहियां नी॥

प्रथम प्रदर्शन समाप्त हुआ और खाना-पीना फिर आरम्भ हो गया। इस समय नाचनेवाली लड़कियाँ भी खाने-पीनेवालों में आ बैठीं। उनमें से एक नर्तकी रामलाल के समीप आ पूछने लगी, ''यदि ऐतराज न हो तो आपके साथ एक प्याला चाय ले सकती हूँ?''

रामलाल ने मुस्कराते हुए कहा, ''चाय नहीं! मैं तो कॉफी ले रहा हूँ।''

''तब तो और भी ठीक है। साथ ही कुछ खाने को मँगवा लीजिए।''

''ठीक है। क्या नाम है श्रीमतीजी का?''

उस नर्तकी ने मुस्कराते हुए कहा, ''मैं अभी श्रीमती नहीं हूँ। मैं कुँआरी हूँ। नाम है रम्भा।''

रामलाल की हँसी निकल गई। उस समय बैयरा उसकी मेज पर आ खड़ा हुआ। रामलाल ने ऑर्डर दे दिया, ''कॉफी और— ।'' इतना कह वह सामने बैठी लड़की के मुख पर देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कह दिया, ''फिश स्टिक्स।''

''हाँ!'' रामलाल ने बैयरे को ऑर्डर दे दिया। बैयरा गया तो रामलाल ने कहा, ''रम्भा! तुम्हारा अभिनय पसन्द नहीं आया।''

''क्या दोष था उसमें?''

''तुम दूसरी दोनों से कम वयस् की प्रतीत होती हो। इस पर भी तुम्हारा रोल संतुष्ट तृप्त पत्नी का-सा था।''

''हाँ! मगर यह ठीक क्यों नहीं?''

''इसलिए कि तुम कहती हो कि तुम कुँआरी हो। तुममें कामनाओं की आग जल रही होनी चाहिए।''

''वह तो है?''

''सत्य?''

''इसी कारण तो आज मेहमानों में सबसे खूबसूरत की मेज पर आ बैठी हूँ?''

''यहाँ तो चाय की लालसा से आई हो न? और मैं चाय से बढ़िया कॉफी पेश कर रहा हूँ, परन्तु तुम्हारा सौन्दर्य कॉफी से संतुष्ट नहीं होना चाहिए?''

''उसके लिए लाला से बात करिए।''

''वह क्या है? उसका काम तुम मंच पर निभा रही हो। उसी के लिए तो वह तुमको देता है।''

''उसके कान्ट्रैक्ट में रेस्टोराँ से बाहर के जीवन की भी शर्त है?''

''उसमें उसका क्या भाग है?''

''दस प्रतिशत।''

''और शत-प्रतिशत क्या है?''

''एक रात के एक सौ दस रुपये। सौ मेरे और दस लाला के।''

''तब तो लाला ने बहुत सस्ता सौदा कर रखा है। पूरे कांट्रैक्ट का वह तुमको क्या देता है?''

''कांट्रैक्ट की यह भी शर्त है कि वह किसी को नहीं बतानी।''

''तब तो मजा नहीं आएगा।''

''क्यों?''

''यह लाला मेरे दिमाग पर सब समय मँडराता रहेगा।''

''मगर यह तो 'काण्ट्रैक्ट' है। इसमें बदल नहीं हो सकता।''

''परन्तु रम्भा! प्रत्येक कांट्रैक्ट के टूटने की शर्त भी होती है। जो कांट्रैक्ट टूट नहीं सकता, वह कांट्रैक्ट नहीं, वह सौदा होता है और इस मुल्क में इनसान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिकते नहीं। गुलाम रखने की प्रथा गैर-कानूनी है ?"

"हाँ, शर्त टूट तो सकती है; मगर उसमें नोटिस देना पड़ता है।"

"तो दे दो और हल्के मन से मैं तुमको निमंत्रण दे सकता हूँ।"

"यह मुश्किल है।"

"तो फिर कॉफी किसी अन्य के साथ ले सकती हो ?"

"मगर वह तो अब ली जा रही है ?" रम्भा ने दयनीय दृष्टि से देखते हुए कहा।

"ऑर्डर मेरा है, मगर तुम वह किसी दूसरे की मेज पर बैठकर पी सकती हो।"

रम्भा इसका अर्थ समझने के लिए रामलाल का मुख देखती रह गई।

रामलाल मुस्क़रा रहा था। उसने कह दिया, "परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। अभी बहुत से मेहमान खाली बैठे हैं जिनकी मेज पर कोई तितली नहीं ?"

"मगर मैंने आपका निर्वाचन किया है ?"

"मगर मेरी शर्त है ?"

"क्या ?"

"जिसका ठेका हो चुका है, मेरा उससे सम्बन्ध नहीं हो सकता।"

"मगर आपसे सम्बन्ध तो एक रात का है और यहाँ जीवन-भर का है। उस जीवन में से एक रात भाड़े पर मिल सकती है।"

"नहीं, मैं दूसरे की मलकीयत भाड़े पर लेना नहीं चाहता।"

"देख लीजिए। इस समय दिल्ली में मैं 'ब्यूटी क्वीन' समझी जाती हूँ ?'

इस समय बैयरा कॉफी और फिश-स्टिक्स ले आया। रम्भा लेने लगी।

"आप ले नहीं रहे।" रम्भा ने कहा।

"तुम इत्मीनान से लो। दाम मैं ही दूँगा। मगर मैं साथ तो अपनी शर्त पर ही दे सकता हूँ। किसी भी गुलाम औरत से मेरा वास्ता नहीं हो सकता।"

इस समय मंच पर पुनः प्रकाश हो गया और अब तीन अन्य नर्तकियाँ एक वृद्ध व्यक्ति के साथ आ गईं।

रम्भा मुस्कराती हुई उनका अभिनय देखने लगी। साथ-साथ वह कॉफी तथा फिश-स्टिक्स लेती रही।

रामलाल को नाच में रुचि नहीं थी। वह रम्भा की ओर देखता रहा। रम्भा इत्मीनान से खा रही थी।

दूसरा अभिनय भी समाप्त हुआ। कलाकार मेहमानों में ही विलीन हो गए। परन्तु रम्भा बैठी रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामलाल ने देखा कि जिन-जिनके पास कलाकार औरतें जाकर बैठी थीं, वे उनसे घुल-मिलकर बातें कर रही हैं।

इस प्रकार तीसरा 'ग्रुप' मंच पर आया। ये चार अर्द्धनग्न स्त्रियाँ थीं और बहुत ही भद्दी प्रकार का नाच करने लगी थीं।

रामलाल आँखें मूँदकर बैठा था। रम्भा उसके पास अभी भी बैठी थी। उसने रामलाल को आँखें मूँदे देख पूछ लिया, "तो आपको नींद आ रही है?"

"नहीं, कुछ मंच पर इतना भद्दा हो रहा है कि उसे न देखने के लिए आँखें मूँद ली थीं।"

"परन्तु इसको तो सब पुरुष अत्यन्त उत्सुकता से देख रहे हैं?"

"वे अवश्य रण्डवे अथवा कुँआरे होंगे?"

"मैं समझती हूँ, वैसा यहाँ कोई भी नहीं।"

अभी यह नृत्य चल ही रहा था कि एकाएक रामलाल के सामने बैठी रम्भा ने रामलाल के हाथ पर हाथ रखकर कहा, "यदि इतना कुछ नहीं दे सकते तो कुछ सस्ते दाम पर भी सौदा हो सकता है।"

रामलाल ने दूर खड़े बैयरे को उँगली से बुलाया और उसे बिल लाने के लिए कह दिया।

बैयरा ने कहा, "हुजूर! असली शो तो इसके बाद होनेवाला है।"

रामलाल ने कहा, "बिल लाओ।"

बैयरा चला गया तो रामलाल ने जेब से पर्स निकाला और उसमें से एक सौ रुपए का नोट निकाल रम्भा के सम्मुख रखते हुए कहा, "यह तुम्हारे लिए है। लाला के लिए कुछ नहीं।"

"तो मैं आपके साथ चलूँ?"

"किसलिए?"

"मेरा चुनाव आप हैं?"

"मगर मेरा चुनाव तुम नहीं। तुम मेरी शर्त पूरी नहीं करतीं। मैं भाड़े पर मकान में रहने की इच्छा नहीं करता। मेरा अपना बहुत सुखकारक मकान है?"

"तो मैं ग़लत जगह पर आई हूँ?"

"नहीं! जगह तो ठीक ही है। तुम्हें तो भाड़ा मिल गया है। आज तुम अपने मकान में अकेली ही सो सकती हो?"

इस समय बैयरा बिल लाया तो तीस रुपए का बिल देख रामलाल हैरान रह गया। वह अपने विचार से आठ-दस रुपए से अधिक की आशा नहीं करता था।

उसने जेब से पैंतीस रुपए निकाल बैयरा की ट्रे में रख दिए और उठ खड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ। वह रेस्टोराँ से बाहर निकल रहा था और बालकराम विस्मय में उसे जाता देख रहा था।

रामलाल समझ गया कि उसकी योजना यहाँ से आरम्भ नहीं हो सकती। इसका सूत्र किसी अन्य स्थान से पकड़ना चाहिए।

वह दुकान पर आया तो काम में लीन हो गया। उस रात शोभा की माँ ने बताया कि उसने शोभा को संगीत सिखानेवाले को घर पर आकर सिखाने का प्रबन्ध कर लिया है।

"क्या देना पड़ेगा?"

"कुछ अधिक नहीं। एक सौ रुपए महीना।"

"और स्कूल?"

"वहाँ की संस्कृत टीचर को मैंने बुलाया है। आशा करती हूँ, वह कल किसी समय मिलने आएगी।"

"शोभा प्रसन्न है?"

"वह पूछती थी कि यह किसलिए किया है? मैंने उसे बताया है कि उसकी सगाई और फिर विवाह होगा।

"उसने कहा है कि वह विवाह की अभी इच्छा नहीं करती।

"मैंने कह दिया है कि सगाई दो-चार दिन में उसके पिता कर रहे हैं, परन्तु शादी जब वह इच्छा करेगी, तब करेंगे। उसने पूछा नहीं कि सगाई किससे हो रही है। मैंने बताया नहीं।"

शोभा का कार्यक्रम बदला। इस नए प्रबन्ध की प्रथम प्रतिक्रिया यह हुई कि संगीत-अभ्यास और संस्कृत तथा हिन्दी के लिए अधिक समय दिया जाने लगा और वह रामलाल तथा रानी के साथ मध्याह्न के समय कभी पार्क में, कभी इण्डिया-गेट, कभी हुमायूँ के मकबरे में भ्रमण के लिए जाने लगी। मध्याह्न के समय दुकान बंद होती थी और रामलाल तीन घंटे का अवकाश पत्नी तथा लड़की को घुमाने पर व्यय करने लगा।

यह रामलाल का सौभाग्य था कि उसे दुकान पर कार्य करने के लिए एक ईमानदार सहायक गोकुलचंद मिला हुआ था।

गोकुलचन्द कोहाट का रहनेवाला था और उस हिन्दुओं की दुर्घटनाग्रस्त रेलगाड़ी में से अकेला बचा व्यक्ति था जिस पर मुसलमानों की भीड़ ने आक्रमण किया था और सबको मौत के घाट उतार दिया था।

रामलाल से गोकुलचन्द की भेंट तो मोतीराम के द्वारा ही हुई थी। वह पेशावर में मोतीराम की लाल कुर्ती खिदमतगार सेना का सदस्य था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली में दोनों में भेंट गांधीजी की प्रार्थना-स्थान पर हुई थी और गोकुलचन्द महात्माजी की हिन्दुओं के प्रति अवहेलना तथा मुसलमानों की चिन्ता करते देख अति दु:खी था। मोतीराम ने गोकुलचन्द की सहायता रामलाल के पास रखकर करनी चाही थी और परिणामस्वरूप, वह रामलाल का दाहिना हाथ बन गया। वह दुकान पर काम करता था। रामलाल के घर पर रहता था और घर का प्राणी हो, घर के सदस्यों के साथ घुल-मिल गया था।

जिन दिनों रामलाल की पत्नी पाकिस्तान भेजी गई थी और रामलाल उसको छुड़ाने का सिर-तोड़ यत्न करने पाकिस्तान गया हुआ था, गोकुलचन्द माथुर साहब के अधीन दुकान की देख-रेख करता रहा था।

:: 8 ::

रामलाल को बालकराम के रेस्टोराँ में गए तीन मास के लगभग हो चुके थे। अभी तक रामलाल बालकराम की जड़ों में तल देने की कोई योजना बना नहीं सका था। इस पर भी उसका मस्तिष्क शान्त नहीं था। वह निरन्तर लक्ष्य की ओर पहुँचने का प्रबन्ध कर रहा था।

यह तो वह जानता था कि बालकराम पर हाथ पुलिस के द्वारा नहीं रखा जा सकता। ऐसे कामों में पुलिस की स्वीकृति तो पहले ही ली रहती है।

इस दिशा में एक दिन कुछ प्रगति हुई। वह रानी और शोभा के साथ अपनी गाड़ी में कुतुब की लाट के अहाते में दाखिल हुआ तो रम्भा एक अन्य साथिन के साथ वहाँ टी-स्टाल पर चाय लेती मिल गई।

रम्भा ने ही पहले रामलाल को देखा था। वह चाय खड़े-खड़े ही ले रही थी। उसने रामलाल को पहिचाना तो अपनी साथिन को छोड़ उसका मार्ग रोककर खड़ी हो गई।

रामलाल ने प्रश्नभरी दृष्टि में उसकी ओर देखा तो वह पूछने लगी, "पहिचाना नहीं ?"

"पहिचाना तो है, परन्तु तुम्हारा मार्ग में आ खड़ा होना समझ नहीं आया ?"

"चाय लेंगे ?"

"नहीं! हम घर से अभी पेट-भर खाकर आए हैं।"

"इनसे परिचय नहीं कराएँगे ?" रम्भा ने रानी और शोभा की ओर देखकर पूछ लिया।

"परिचय के योग्य तुम हो नहीं, इस कारण इच्छा नहीं हो रही। साथ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे भी अभी तुम्हारा ठीक-ठीक परिचय नहीं है। तुम्हारा रम्भा नाम तो झूठा था। यह मैं तब ही समझ गया था ?''

रम्भा मुस्कराई और बोली, ''तो मैं आपको अपना असली परिचय दे सकती हूँ ?''

रामलाल को इसमें अपनी योजना का सूत्र हाथ में आता समझ आया। इस पर भी उसने कहा, ''वह देखो, तुम्हारी सहेली तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है ?''

रम्भा की साथिन स्टाल के बाहर खड़ी चाय पी रही थी और रम्भा अपना प्याला लिए हुए रामलाल का मार्ग रोकने आ खड़ी हुई थी। रम्भा ने उसकी ओर देख हाथ के संकेत से उसे समीप बुला लिया और जब वह आई तो उसको एक रुपये का नोट देकर बोली, ''मीना! चाय के दाम दे दो और मैं लौट नहीं रही। तुम बस में सवार हो चली जाओ।''

मीना परेशानी अनुभव करती हुई रामलाल इत्यादि की ओर देखने लगी थी। फिर कुछ विचार कर पूछने लगी, ''तुम कब तक लौटोगी ?''

''मुझे इनसे कुछ काम है। वह काम कर ही लौट सकूँगी। इस पर भी पाँच बजे से पहले पहुँच जाऊँगी।''

मीना कुछ नहीं समझी। वह देख रही थी कि इस व्यक्ति के साथ पत्नी और उसकी लड़की दोनों रम्भा से सुन्दर हैं। इस कारण वह उसको रम्भा का ग्राहक तो समझ नहीं सकी। इस पर भी यह विचार कर कि रम्भा के लौटने पर पूछने का यत्न करेगी, वह चुपचाप चल दी।

जब वह चली गई तो रम्भा ने कहा, ''इन माताजी का परिचय तो मैं आपके उस दिन के कथन से पा गई हूँ। आपने कहा था कि आप मुझसे अधिक सुन्दर मक़ान के निवासी हैं।

''और यह इनकी लड़की है। इसमें मैं संदेह नहीं कर सकती।''

चारों कुतुब की लाट के समीप लॉन में घास पर बैठने के लिए चल पड़े।

रानी कुछ-कुछ समझ गई थी। उसने कहा, ''देखो! जो भी तुम हो। हमारे परिचय से तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं। हाँ, अपना परिचय चाहो तो दे सकती हो ?''

''वह भी तो यहाँ नहीं दे सकती। इतना ही बता सकती हूँ कि मेरा नाम कमला है। पंजाब से आए एक रिफ्यूजी की लड़की हूँ। माँ विधवा थी और अब वह भी नहीं रही। शेष मैं तब बताऊँगी, जब आप एकान्त में मिलने का अवसर देंगे।

''आपका नाम और दुकान तो मैं जान गई हूँ, परन्तु वहाँ आप कभी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेले तो होते नहीं। इस कारण मिल नहीं सकती।''

अब रामलाल ने कहा, ''मैं वहाँ प्रात: नौ बजे से दस बजे तक मिल सकता हूँ। बताओ, ठीक है न?''

''हाँ! मैं शीघ्र ही मिलने आऊँगी और फिर आपसे सहायता की आशा करती हूँ।''

रामलाल के मन में उत्सुकता उत्पन्न हो गई। उसने कह दिया, ''अगले सप्ताह मैं बम्बई जा रहा हूँ। मिलना हो तो शीघ्र ही मिल लो?''

इसके उपरान्त इधर-उधर की बातें होने लगीं। रानी और शोभा तो घूमने आई थीं। इस कारण वे रामलाल और रम्भा को वहीं छोड़कर लॉन में चक्कर काटने लगीं।

उनके उठकर जाते ही कमला ने कहा, ''मैं बालकराम की सेवा छोड़ने का विचार कर रही हूँ।''

''मेरा विचार है अभी मत छोड़ो। पहले मुझसे दुकान पर मिल लो। पीछे सेवा छोड़ने की बात करना।''

''तो आप सहायता करेंगे?''

''यह तो तुम्हारी बात जानने के बाद बताऊँगा। इसी कारण कह रहा हूँ कि पहले मिल लो। पीछे काम छोड़ना।''

अब रामलाल ने पूछा, ''यह तुम्हारी साथिन भी वहाँ ही काम करती है?''

''जी! जिस दिन आप आए थे, इसका 'न्यूड डांस' हुआ था। आप पहले ही चले आए थे?''

''मुझे उसमें रुचि नहीं थी।''

''तो हमारा पंजाबी गाना रुचिकर प्रतीत हुआ था?''

''वह इतना सामान्य है कि मूर्ख ही उसमें रुचि अनुभव कर सकता है।''

''आपके चले जाने के उपरान्त मुझे एक अन्य मिल गए थे और···।''

''ओह!''

''वह कहते थे कि वह सर्वथा स्वाभाविक था।''

''हाँ! इसीलिए तो कहता हूँ कि फीकी और स्वाभाविक बातें किसी प्रकार की उत्सुकता उत्पन्न नहीं कर सकतीं।''

''परन्तु अस्वाभाविक व्यवहार तो लोग पसन्द नहीं करते?''

''वह तो प्रदर्शन करनेवाले पर निर्भर करता है। अस्वाभाविक भी जब ढंग से कहा जाए और दिखाया जाए तो रुचिकर हो जाता है।''

कमला इसका अर्थ समझी नहीं और टुकुर-टुकुर मुख देखती रह गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामलाल उठ खड़ा हुआ और बोला, "तुम भी ज़रा घूम लो और फिर हमारे साथ कनॉट सर्कस लौट जाना। मेरे पास अपनी गाड़ी है।"

"तब तो बहुत ठीक है।" वह भी उठ पड़ी और दोनों, रानी तथा शोभा के साथ जा मिले।

आधा घण्टा वहाँ टहल, चारों मोटर में बैठ नई दिल्ली लौट आए और रामलाल ने उसे रीगल सिनेमा के बाहर उतार दिया।

घर वे तीन बजे पहुँचे थे। रानी और शोभा तो ऊपर घर में चली गईं, रामलाल नीचे दुकान पर ठहर गया।

इसी सायंकाल लगभग सात बजे माथुर साहब का टेलीफोन आया।

"हाँ, वकील साहब! क्या आज्ञा है?" रामलाल ने पूछा।

"स्वरूपरानी आपके घर रात के खाने पर आ रही हैं।"

"ओह! अकेली ही?"

"नहीं, अपने परिवार सहित आएँगी। परिवार में एक मैं भी हूँ और दूसरे चन्द्रमोहन।"

"परन्तु वकील साहब! इस सौभाग्य का कारण बता दें तो उस विषय में भी विचार कर प्रबन्ध कर सकूँगा।"

"यह मैं जानता तो हूँ, परन्तु बताऊँगा नहीं। देखो, एक मास हुए, तब मैं तुम्हारे निमंत्रण पर आया था। आज मैं स्वरूपरानी के आग्रह पर आ रहा हूँ।"

"तब ठीक है, वकील साहब! कुछ विशेष 'मीनो' की इच्छा हो तो बता सकते हैं?'

"यह हम तुम पर छोड़ते हैं। मैं समझता हूँ कि तुम्हारी रुचि हमारे अधिक अनुकूल है।"

"तब ठीक है। यहाँ भी एक दिशा में कार्य हो रहा है। उस कार्य में आज कुछ दिशा-दर्शन हुआ प्रतीत होता है। परन्तु वह अभी आपको बताने योग्य नहीं है।"

रामलाल ने पूर्ववत् वोल्गा रेस्टोराँवालों से प्रबन्ध कर लिया।

रात आठ बजे वह दुकान बन्द ही कर रहा था कि मोतीराम और सुन्दरी भी आ पहुँचे। रामलाल ने दुकान को ताला लगाते हुए रुककर पूछा, "दादा! किसी काम से आए हो अथवा केवल घूमने?"

"माथुर साहब का टेलीफोन आया था कि तुमने घर पर रात के खाने पर मुझे और अपनी भाभी को बुलाया है।"

"सत्य? तो ठीक है। वकील साहब का हुक्म सिर-माथे पर है। आओ!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुमने नहीं बुलाया ?"

"मैंने तो माथुर साहब को भी नहीं बुलाया था। वे स्वयं ही बोले कि परिवार सहित भोजन पर आ रहे हैं।"

"तो रामलाल! हम दोनों के लिए भी भोजन का प्रबन्ध हो जाए। हमें तो अभी से भूख लगने लगी है ?"

रामलाल ने वोल्गा रेस्टोरां में फोन कर मेहमानों की संख्या में वृद्धि के लिए कहा, तो मैनेजर ने पूछ लिया, "कितने लोग खाने पर होंगे ?"

"नौ!" रामलाल ने कहा।

"मगर नौ का तो पहले ही ऑर्डर दिया गया है। इससे पहले सात का था, पीछे आपका फोन आया था कि नौ व्यक्ति होंगे।"

रामलाल समझ गया कि माथुर साहब ने स्वयं ही संख्या बढ़वा दी है। उसने कह दिया, "ठीक है।"

रामलाल ने ऊपर मकान को जाते हुए कहा, "मालूम होता है कि वकील साहब कुछ रहस्योद्घाटन करनेवाले हैं ?"

"हाँ! सुन्दरी ने कहा है कि तुम्हारी लड़की की सगाई माथुर साहब अपने लड़के से करना चाहते हैं ?"

"हाँ! यह लगभग निश्चय तो हो चुका है, परन्तु घोषणा की तिथि नियत नहीं थी।"

"तो वकील साहब ने स्वयं तिथि निश्चय कर ली है ?"

ये अपने घर पहुँचे तो रानी और शोभा सज-धज के वस्त्र पहने ड्राइंगरूम में प्रतीक्षा कर रही थीं। गोकुलचन्द ऊपर की मंजिल पर अपने कमरे में दुकान के वस्त्र बदलने गया हुआ था।

"आओ दादा!" रानी ने हाथ जोड़ नमस्ते कह दी।

"भाभी! क्या बात है जो आज सज-धज कर बैठी हो ?"

इस पर सुन्दरी ने ही उत्तर दिया, "हम तो बिन बुलाए मेहमान हैं ?"

"पर भाभी····।" रानी कहती-कहती रुक गई। रामलाल ने बात बीच में ही काट दी। उसने कहा, "भाभी! हम भी आमंत्रित ही हैं ?"

"क्या मतलब ?" मोतीराम ने पूछ लिया।

"मतलब यह कि इस खाने पर निमंत्रण देनेवाली हैं स्वरूपरानी, माथुरजी की पत्नी। आमंत्रित हैं—माथुर साहब, उनका लड़का, मैं, रानी, शोभा, भाभी और दादा।"

"और मैं भी तो हूँ ?" गोकुलचन्द ने कमरे में प्रवेश करते हुए कह दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह वस्त्र बदल नीचे ड्राइंगरूम में आ गया था।

"हाँ! तुम्हें तो मैं भूल ही गया था।"

"तो गोकुलचन्द भी तुम्हारा मेहमान है?"

"मेहमान तो सब स्वरूपरानीजी के हैं।"

इस पर तो सुन्दरी, जो प्रायः गम्भीर बनी रहती थी, भी हँसने लगी। सब हँस ही रहे थे कि माथुर परिवार आ गया। स्वरूपरानी ने एक अटैचीकेस उठाया हुआ था और चन्द्रमोहन एक बहुत बड़ा-सा 'बुके' हाथ में लिए हुए था।

सब अभी ड्राइंगरूम में बैठ गए। बैयरे खाने के कमरे में भोजन लगा रहे थे।

बात स्वरूपरानी ने आरम्भ की। उसने कहा, "तीन दिन हुए चन्द्र एक समाचार लेकर आया था। यह डी-ट्रायट विश्वविद्यालय में अढ़ाई वर्ष के लिए व्याख्याता नियुक्त होकर जा रहा है।

"यह जल्दी-से-जल्दी जाना चाहता है। इस कारण इसके जाने से पूर्व कुछ आवश्यक कार्यवाही करनी है। वैसे तो हम परसों आनेवाले थे, परन्तु चन्द्र बोला कि उसे जाने की तैयारी करनी है। पासपोर्ट तो बना था, विसा बनवाना था। वह आज चार बजे मिला है। इस कारण सीट बुक होते ही मैंने दावत के लिए टेलीफोन कर दिया था।"

सब समझ रहे थे कि चन्द्र की सगाई की बात हो रही है। बात स्वरूपरानी ने जारी रखी, "वैसे तो बात कई महीने से निश्चय थी, परन्तु उसकी घोषणा टल रही थी।

"मैं समझती हूँ कि चन्द्र को भारत से बाँधे रखने के लिए कुछ सुदृढ़ बन्धन निर्माण कर दूँ। उसके लिए ही यहाँ आने का कार्यक्रम बनाया है।"

"और इस अवसर पर मैं कुछ बताने आया हूँ।" माथुर साहब ने मुस्कराकर कहा, "चन्द्र की मंगेतर शोभा ने हमें एक भेंट भेजी है। वह भेंट चन्द्र अपने साथ अमेरिका ले जा रहा है। इस कारण मैंने यह उचित समझा है कि आप सबके सामने उस भेंट का दर्शन करवा दूँ।

"भेंट है तो चन्द्र की माता के लिए, परन्तु माँ ने पुत्र को दी है और वह इसे साथ ले जा रहा है।"

अन्य कोई भी इस बात को समझ नहीं सका था। मोतीराम और सुन्दरी तो बिल्कुल ही नहीं समझे थे। रामलाल उत्सुकता से शोभा के मुख पर देख रहा था और वह सोफा की पीठ का आश्रय ले आँखें मूँदे प्रसन्नवदन बैठी थी।

स्वरूपरानी ने कह दिया, "पहले उसको दिखाती हूँ। रानी बहन! अपना टेप-रिकॉर्डर यहाँ उठा लाओ। शोभा की भेंट उस पर सुनाई जा सकेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानी गई और अपने सोने के कमरे से अपना टेप-रिकॉर्डर उठा लाई। माथुर साहब ने अपनी जेब से टेप की रील निकाली और उसे शोभा को देते हुए कहा, ''लो बेटी! इसे तुम ही बजाओ तो ठीक रहेगा।''

शोभा ने रील डिब्बे से निकाल टेप-रिकॉर्डर पर चढ़ा दी।

अब सब सुनने लगे। टेप में कहा था, ''पिताजी! नमस्ते! आपने आज्ञा दी थी कि 'सदा वत्सले मातृभूमे' वन्दना को—भैरव राग में बाँधकर आपको सुनाऊँ। अतः मैंने माताजी को कहला भेजा है कि वह आपको यथा समय सुना दें। मैं अभी आपके घर में नहीं आ सकती। उसके लिए क्षमा चाहती हूँ। माँ कहती हैं कि मेरे वहाँ आने में अढ़ाई वर्ष की देरी है। अतः आपकी आज्ञा का पालन इस प्रकार कर रही हूँ।''

इसके उपरान्त तानपूरे के स्वर गूँजने लगे। सब इस भूमिका में तीन मास पूर्व की दावत पर हुई बात स्मरण कर समझ गए थे।

शोभा ने स्वर भरना आरम्भ कर दिया। फिर तीन मिनट तक भैरवी के आलाप लेकर गीत आरम्भ हो गया—

सदा वत्सले मातृभूमे नमस्ते।
नमस्ते! नमस्ते!! नमस्ते! नमस्ते!!

इस पद को तीन-चार प्रकार से गाकर फिर आलाप आरम्भ हो गया। अब आलापों के साथ-साथ पद-पद कर गीत होने लगा—

त्वया हिन्दूभूमे सुखं वर्धितोऽहम्।

गीत का प्रथम खण्ड समाप्त हुआ तो इसी राग में सितार बजने लगी। सितार की एक गत के उपरान्त पुनः गीत आरम्भ हुआ।

इस प्रकार पौन घण्टा-भर गाना तथा तानालाप और साथ्-साथ सितार पर उनके अनुरूप ही गत बजती रही।

अन्त में गीत समाप्त हुआ—

परम् वैभवन् नेतुमेतत् स्वराष्ट्रम्।
समर्था भवत्वाशिषा ते भृशम्॥
सदावत्सले मातृभूमे! नमस्ते!
नमस्ते! नमस्ते!! नमस्ते! नमस्ते!!

पौन घंटा-भर सब मंत्रमुग्ध सुनते रहे। दो मिनट तक सितारवादन हुआ और टेप समाप्त हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोभा ने टेप बंद किया तो सबका ध्यान भंग हुआ। सब शोभा की ओर देखने लगे। शोभा की गालें अश्रुओं से पूर्ववत् भीगी हुई थीं।

अब टेप-रिकॉर्डर उठा शोभा भीतर चली गई। इस पर माथुर ने कह दिया, "शोभा का कथन है कि वह स्वयं अढ़ाई वर्ष उपरान्त आएगी। इस कारण आज मैं इस बात का आश्वासन लेने आया हूँ कि समय आने पर वचन का पालन होगा।"

"परन्तु वकील साहब! बात तो शोभा, शोभा की माँ और चन्द्र की माँ में हुई है। इसमें हम क्या हैं?" मोतीराम का प्रश्न था।

"साक्षी!" मुकुटबिहारी ने कह दिया।

"हाँ! यह ठीक है।" मोतीराम ने कहा, "यदि मामला कचहरी में गया तो मैं इस टेप-रिकॉर्डर के विषय में गवाही कर दूँगा।"

"और मैं," स्वरूपरानी ने कह दिया, "इस वचन-पत्र पर मोहर लगाने के लिए कुछ लाई हूँ।"

"क्या?" रानी ने विस्मय में पूछा।

"दिखाती हूँ। पहले मोहर लगा लूँ।" इतना कह वह अपने हाथ में पकड़ा हुआ अटैची-केस लेकर उधर ही चली गई जिधर शोभा गई थी।

इस पर मोतीराम ने कह दिया, "रामलाल! मुख मीठा कराओ।"

"हाँ, दादा! पहले मीठा करो, फिर नमकीन और अन्त में फिर मीठा। सब प्रबन्ध है।"

इस समय बैयरा आकर बोला कि भोजन तैयार है।

माथुर साहब ने कह दिया, "पाँच मिनट में आते हैं।"

सब स्वरूपरानी और शोभा की प्रतीक्षा कर रहे थे।

उनको कमरे से आने में दस मिनट लगे। स्वरूपरानी शोभा को ज़रीदार साड़ी, जम्पर और सिर से पाँव तक भूषणों से भूषित साथ लिए हुए आ गई। सब शोभा की ओर चित्रवत् देखते रह गए।

उनके आते ही माथुर साहब ने किसी को कुछ कहने का अवसर नहीं दिया और बोले, "भोजन का समय हो गया है।"

सब उठकर खाने के कमरे में चल दिए। भोजन करते हुए ही माथुर ने पूछा, "शोभा! प्रसन्न हो?"

शोभा स्वरूपरानी और रानी के बीच बैठी थी। वह अपने स्थान से उठी और माथुर साहब, जो रामलाल और मोतीराम के बीच बैठे थे, के समीप जा चरण-स्पर्श करने लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माथुर ने आशीर्वाद दिया, ''सौभाग्यवती रहो।''

''पर माथुर साहब!'' मोतीराम ने पूछा, ''अमेरिका में चन्द्र की नौकरी कैसे लग गई?''

''इसके लिए भारी यत्न करना पड़ा है। यत्न तो चन्द्र ने ही किया है, मैं तो केवल मार्गदर्शन करता रहा हूँ।

''ईश्वर की कृपा से मेरी योजना सफल हुई है और यह 'हिस्टरी ऑफ लॉ—इन इण्डिया' पढ़ाने के लिए वहाँ प्राध्यापक नियुक्त हो गया है।''

''इसने एक सौ बीस लैक्चर इस विषय पर तैयार कर लिए हैं। ढेरों पुस्तकें मैंने इसे बताई हैं। मैं समझता हूँ कि उनकी सहायता से यह वहाँ बड़ा नाम पैदा करेगा।

''सबसे बड़ी बात यह है कि कानून की आधारशिला अर्थात् तर्क में यह कुशल हो रहा है। इसी कारण मैं विश्वासपूर्वक कह रहा हूँ कि यह वहाँ से महिमायुक्त होकर लौटेगा।''

जब भोजनोपरान्त सब कॉफी लेने लगे तो रामलाल ने अपने कमरे में से अपनी बैंक की चेक-बुक लाकर उस पर दस हज़ार का चेक काट चन्द्र को देते हुए कहा, ''इसे अभी रखो, कभी आवश्यकता होगी तो प्रयोग कर सकोगे।''

चन्द्र ने भी रामलाल के चरण-स्पर्श किए और चेक जेब में रख लिया। तदनन्तर उसने ड्राइंगरूम में रखा अपना गुलदस्ता शोभा के सामने रख दिया। वह कुर्सी की पीठ का आश्रय ले आँखें मूँदे बैठी थी।

चन्द्र को वकालत की पढ़ाई समाप्त किए भी दो वर्ष हो चुके थे। इन दो वर्षों में और पढ़ाई के दिनों में माथुर साहब नित्य उसे एक घंटा पहले न्यायदर्शन की और फिर कानून के इतिहास पर शिक्षा देते रहे थे। यह उस शिक्षा का ही परिणाम था कि चन्द्र एक अमेरिकन विश्वविद्यालय में प्राध्यापक का कार्य पा सका था।

छः महीने से ऊपर हुए थे कि चन्द्र ने अपने पिता के कहने पर एक लेख लिखा था—'लॉ इन इण्डिया'। इसमें उसने कुछ चमत्कारक रहस्योद्घाटन किए थे। यह लेख अमेरिका और लन्दन के 'जर्नल्स' में छपा था। उसकी ही यह प्रतिक्रिया हुई थी कि डी-ट्रायट विश्वविद्यालय में उसे भारत के कानून का इतिहास पढ़ाने के लिए आमन्त्रित किया गया था। उसका वेतन पाँच सौ डॉलर प्रति सप्ताह नियत हुआ था।

नियुक्ति का पत्र आए तो दस-बारह दिन हो चुके थे, परन्तु पिता-पुत्र इतने दिन तक उसके विषय में पुस्तकें और प्रमाण एकत्र करने में लगे रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग एक सौ बीस पाठों के नोट्स तैयार किए थे। सब कुछ तैयार हो जाने पर और विसा मिल जाने पर हवाई जहाज में सीट बुक कराई गई थी। सीट वाया यूरोप ही मिल सकी थी। अतः चन्द्र निश्चित दिन दिल्ली से फ्रांस के लिए रवाना हो गया।

रामलाल इत्यादि उसे विदा करने हवाई अड्डे पर गए थे। वहाँ से लौटने लगे तो मुकुटबिहारी ने शोभा से पूछ लिया, "अब तो तुम्हारी अढ़ाई वर्ष की शर्त अर्थहीन हो गई है?"

"हाँ," स्वरूपरानी ने कह दिया, "अब इसे हमारे घर आकर रहने का स्वभाव बनाना चाहिए।"

"मेरी पढ़ाई में गड़बड़ हो जाएगी?"

"कुछ नहीं होगा। जब भी आना चाहो, सायं टेलीफोन कर दिया करना। मोटर लेने आ जाया करेगी। अगले दिन प्रातः के समय मोटर तुम्हें माँ के पास छोड़ जाया करेगी।"

माथुर साहब के सुझाव को सुन शोभा माँ का मुख देखने लगी।

रानी ने कहा, "धीरे-धीरे अभ्यास से यह इसे और हमें भी ठीक लगने लगेगा।"

इस पर माथुर साहब ने अपनी पत्नी की ओर देखते हुए कहा, "तो शोभा के स्वागत का प्रबन्ध पहले कर लो। पीछे ही मोटर भेजना।"

"यही विचार कर रही हूँ।"

"इसमें विचार करने की इतनी आवश्यकता नहीं जितनी अनुभव की आवश्यकता है। एक दिन तुम रानी के घर रात जाकर रहो और वहाँ लड़की की दिनचर्या देख आओ। तब उसके अनुरूप प्रबन्ध कर मोटर भेज सकोगी।"

रानी हँस पड़ी। रानी के मनोभावों का विश्लेषण रामलाल ने कर दिया। उसने कहा, "सेंध लगाने से पहले देख लेना चाहिए कि मूल्यवान रत्न किस स्थान पर छुपाकर रखा हुआ है?"

माथुर और स्वरूपरानी हँस पड़े। इस समय तक सब कार-पार्किंग पर जा पहुँचे थे। माथुर ने गाड़ी पर सवार होते हुए कहा, "रामलाल! हम घर पर जाकर सेंध लगाने की योजना बनाएँगे।"

सब हँसने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

यद्यपि रामलाल आशा करता था कि कमला उसके दूसरे दिन ही मिलने आएगी, जिस दिन वह कुतुब पर मिली थी, परन्तु वह आई चन्द्र के अमेरिका विदा हो जाने के दो सप्ताह उपरान्त। वह रामलाल के कहे-अनुसार दुकान पर दिन के नौ बजे आई और रामलाल को दुकान में खड़े देख नमस्ते कह पूछने लगी, ''तो आप बम्बई नहीं गए?''

''हो आया हूँ। विचार था कि वहाँ कुछ अधिक दिन लगेंगे, परन्तु काम दो दिन में ही समाप्त हो गया और मैं शीघ्र ही लौट आया हूँ।''

''तब ठीक है। मैं विचार कर रही थी कि आपसे भेंट हो सकेगी अथवा नहीं?''

''हाँ! यदि दो-तीन दिन पहले आतीं तो निराश लौटतीं।''

रामलाल उसे अपने ऑफिस के 'केबिन' में ले गया और वहाँ उसे बैठा पूछने लगा, ''आप चाय लेंगी अथवा कॉफी?''

''कॉफी ठीक रहेगी।''

रामलाल ने मेज पर रखी घंटी बजाई। सेवक आया तो उसने कह दिया, ''दो प्याले कॉफी और कुछ बिस्कुट ले आओ।''

सेवक गया तो कमला ने बात आरम्भ कर दी। उसने कहा, ''पिछले एक मास से मेरी रुचि बालकराम के काम में नहीं रही। इसमें कारण समझ नहीं आ रहा। कदाचित् उस दिन के आपके तिरस्कार की प्रतिक्रिया है। इस पर भी कह नहीं सकती।

''एक मास हुआ कि मुझे नग्न-नृत्य करने के लिए कहा गया था। मैंने इनकार कर दिया।

''यद्यपि कहने को यह नग्न होता है, परन्तु सरकारी कायदे-कानून की पाबन्दी रहती है। इस पर भी जो कुछ छुपा होता है, वह लोग कल्पना से मन में समझ, उसके भोग की इच्छा करने लगते हैं और उसके उपरान्त नृत्य करने वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की नीलामी भी होती है।

"मैं कई बार पहले ऐसा कर चुकी हूँ और नीलामी पर चढ़ चुकी हूँ। यह सब कुछ नर्तकी की अनुपस्थिति में होता है। नर्तकी को तो केवल यह पता चलता है कि उसका मूल्य देनेवाला उसे मोटर में लेकर अपने निर्दिष्ट स्थान पर चला जाएगा।

"उस दिन मैंने इनकार किया तो लाला ने कारण पूछा। मैंने बताया, मुझे यह नीलामी पसन्द नहीं।

"उसका कहना था, परन्तु इस प्रकार अधिक जो मिलता है? पिछली बार तुम्हारे लिए एक सहस्र मिला था?"

" 'जी नहीं।' मेरा उत्तर था।

" 'तो तुमको काम छोड़ना पड़ेगा?'

" 'छोड़ दूँगी।'

" 'कब?'

" 'जब आप कहेंगे।"

"इस पर बालकराम मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचार कर बोला, 'अच्छा, अभी काम करो। पीछे बताऊँगा।'

"इस वार्त्तालाप के उपरान्त ही मेरी आपसे कुतुब पर भेंट हुई थी। आपने कहा था कि काम छोड़ने से पहले आपसे मिल लूँ।

"मैं अनिश्चित मन थी, जब कल मेरी पेशी लाला के सामने हुई। लाला ने मेरे सामने बैठते हुए पूछा, 'तो कब काम छोड़ रही हो?'

" 'जब आप कहेंगे।'

" 'तो तुम मेरे कहने पर जा रही हो?'

" 'जी नहीं!' मेरा उत्तर था, 'मैं काम तो स्वयं छोड़ रही हूँ, परन्तु छोड़ने की तिथि का निश्चय नहीं कर सकी।'

" 'तो सुनो!' लाला ने कहा, 'मैं जानता हूँ कि क्या हो गया है। जैसे पहलवानों में खलीफे होते हैं, वही तुम हो गई हो?

" 'इस पेशे में खलीफों को दलाल कहते हैं। मैं समझता हूँ कि या तो तुमने बहुत रुपया इकट्ठा कर लिया है अथवा तुम्हारा मन भर गया है। कुछ भी हो, तुम एक काम कर सकती हो। इससे जिन्दगी-भर का इनाम पा सकोगी।'

" 'मैं कुछ न समझती हुई लाला का मुख देखती रही। लाला ने ही बात की—

" 'यहाँ एक लड़की है। मैं उसे जरा यूरोप की सैर कराना चाहता हूँ। उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि किसी प्रकार सफदरजंगवाली हमारी कोठी में ले आओ तो एक हज़ार तुरन्त दूँगा और लाने का खर्च पृथक्।

" 'पीछे जब वह यूरोप में गई तो उसकी कमाई में से पाँच प्रतिशत 'रॉयल्टी'। मेरा विचार है कि चालीस-पचास हज़ार से कम नहीं होगी और फिर यूरोप की सैर फोकट में।'

"मैं कुछ न समझती हुई मुख देखती रह गई। इस पर लाला ने पूछा, 'याद है तुम यहाँ किस प्रकार आई थीं?'

"मैंने कहा, 'जानती हूँ।'

"एक जानकीनाथ, जो हमारे पड़ोस में रहता था, एक-दो बार मुझे मोती-महल में ले गया था। बस, एक रात वहाँ गई तो खाने में कुछ दिया गया और मैं गहरी नींद सो गई तो फिर सफदरजंग रोडवाली कोठी में ही मेरी नींद खुली थी।

"मुझे इसका ध्यान आया और लाला मेरे मुख पर भाव देख हँस पड़ा। उसने हँसते हुए कहा, 'वह जानकीनाथ अभी भी मेरी सेवा में है। तुम्हारे उपरान्त वह कई ला चुका है, परन्तु कोई काम की नहीं आई।'

" 'देखो रम्भा!' लाला ने आगे कहा, 'तुम उस लड़की से मिली हो। मीना ने बताया था कि तुम कुतुब पर उससे और उसकी माँ से बातें करती रही हो?'

" 'ओह!' मेरे मुख से निकल गया, 'तो वह रामलाल की लड़की है?'

" 'हाँ!' लाला ने कहा, 'देखो, इसके लिए यत्न करो और फिर जितनी जल्दी यह काम करो, उतना ही अच्छा है। अभी वह खिलती कली ही है।'

"मैं चुप रही। लाला ने पाँच सौ पेशगी दिया और मैं आज इस काम पर आई हूँ।"

रामलाल कमला का मुख देखता रह गया। वह विचार कर रहा था कि इसकी योजना से किसी प्रकार बालकराम को फँसाने का यत्न हो सकता है अथवा नहीं।

रामलाल ने कहा, "मगर तुमने यह सब बताकर भूल नहीं की क्या?"

"हो सकती है। परन्तु मैं समझती हूँ कि मैंने आपको बालकराम को फँसाने का मार्ग बताया है। यदि आप कर सकें तो मेरा भी उपकार होगा।"

"क्या उपकार होगा?"

"मुझसे जो दगा जानकीनाथ, बालकराम तथा एक रामस्वामी रमण ने किया है, उसका बदला निकल सकता है?"

"परन्तु इतने मात्र से तो कुछ नहीं हो सकता। इतने मात्र से न तो कोई मुझ पर विश्वास करेगा, न ही मुझे तुम पर विश्वास हो रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सब हो जाएगा। यदि आप मेरी योजना के अनुसार कार्य करें तो मैं आपको बहुत कुछ बता सकूँगी।"

इस पर कमला ने अपने पर्स में से एक लिफाफा निकालकर रामलाल को देते हुए कहा, "इसे मेरे जाने के उपरान्त पढ़िएगा। मैं आपको तीन दिन उपरान्त मिलूँगी और शेष योजना उस समय बताऊँगी।"

रामलाल अनिश्चित मन कमला का मुख देखता रहा। आखिर वह समझा कि पत्र पढ़कर ही योजना बनाई जा सकेगी।

"तो फिर अब कब मिलोगी?"

"यह मैं स्वयं ही निश्चय करूँगी। दो-चार दिन तो लग ही जाएँगे।"

"रमण आजकल कहाँ है?"

"तो आप उसे जानते हैं?"

"उसकी जमानत मेरी शिकायत पर ही हुई थी?"

"वह आजकल बम्बई में है। सुना है, वहाँ वह प्रैक्टिस करता है। कर्मचारियों के मुकद्दमे लिया करता है।"

कमला ने कॉफी समाप्त की और चल दी। उसके जाते ही रामलाल ने पत्र खोलकर पढ़ा। पत्र बहुत लम्बा-चौड़ा था। लगभग चार बड़े-बड़े कागजों पर लिखा था। अन्त में यह सूचना थी—

"आपके घर पर एक रात डाका पड़नेवाला है। यह मुझसे चोरी है। मुझे तो शोभा को बरगला कर सफदरजंगवाली कोठी पर ले जाने की योजना बनाने के लिए कहा गया है।"

लिखे के नीचे कोई नाम नहीं था। पत्र अंग्रेजी में टाईप किया हुआ था।

रामलाल इसे पढ़कर चकित रह गया। वह कमला को इतनी समझदार और साहसी नहीं समझता था। इस पर भी उसने उसके साथ अपनी योजना का समन्वय कर लिया। कमला ने अपनी भी एक योजना बनाई थी।

उसने पत्र को जेब में रखा और गोकुलचन्द को कहा, "मैं एक काम से जा रहा हूँ। जरा ध्यान रखना और यदि कुछ गड़बड़ हो तो वकील साहब को टेलीफोन पर बता देना।"

इतना कह वह सीधा मोतीराम से मिलने चला गया। मोतीराम इन दिनों होटल के बाहर 'रेडीमेड गार्मेंट्स' की दुकान करता था।

रामलाल को देख मोतीराम दुकान से बाहर निकल आया और पूछने लगा, "कैसे आए हो, रामलाल?"

"देखो दादा! एक बात का पता करना है। ऊपरवाले होटल से एक औरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला अथवा रम्भा किसी जानकीनाथ के साथ भागी थी। उसका पूर्ण परिचय चाहिए।''

''उससे क्या काम है?'' मोतीराम का प्रश्न था।

''तो तुम उसे जानते हो?''

''हाँ! जानकीनाथ मेरे यहाँ आता-जाता है।''

''तो दादा! तुम अभी भी यह काम करते हो?''

मोतीराम बोला, ''सोहनसिंह इसमें मेरी सहायता लेता रहता है।''

''और इस कमला अथवा रम्भा, जिसका जानकीनाथ से सम्बन्ध है, के विषय में क्या जानते हो?''

''यह अंसारी रोड पर रहनेवाली एक विधवा की लड़की थी। विधवा का नाम था—राधा। लड़की का नाम कमला है। वैसे सोहनसिंह इसको रम्भा ही जानता है। कमला का जानकीनाथ ने अपहरण किया था। उसकी माँ लड़की का पता करने आई थी तो सोहनसिंह ने उसे थाने में भेज दिया। वहाँ विधवा ने रिपोर्ट लिखाई थी, परन्तु उसी रात उसकी मृत्यु हो गई थी।''

''दादा! यह कब की बात है?''

''लगभग दो वर्ष हो चुके हैं। मुझे राधा के मरने का पता इस कारण है कि वह कपड़े सी कर मेरी दुकान पर बेचने के लिए दे जाया करती थी। इस कारण राधा के मरने पर पुलिस मुझसे पूछताछ करने आई थी।''

रामलाल सोहनसिंह से मिलना नहीं चाहता था। उसने मोतीराम को भी कह दिया, ''दादा! मेरी इस पूछताछ की बात सोहनसिंह से न कहना।''

रामलाल चला गया तो मोतीराम ऊपर होटल में चला गया और सोहनसिंह से पूछने लगा, ''सोहन! रम्भा का क्या झगड़ा है?''

सोहनसिंह ने चौंककर पूछा, ''क्यों? क्या बात है दादा?''

मोतीराम मन में विचार करने लगा कि रामलाल की बात बताए अथवा न?

एक समय था कि सोहनसिंह ने रामलाल की झूठी मुखबरी सरकार में की थी कि वह एक मुसलमान औरत को घर में रखे हुए है। इसका परिणाम यह हुआ था कि रामलाल की पत्नी रानी को पकड़कर पाकिस्तान भेज दिया गया था। तब रामलाल पठान का भेष धारण कर पाकिस्तान गया था और उसे वहाँ से छुड़ाकर लाया था। अत: मोतीराम रामलाल की कुछ भी बात सोहनसिंह को बताना नहीं चाहता था। इस कारण मोतीराम अपने, कमला और राधा की बात पूछने आने का कारण नहीं बता सका। वह चुप कर सोहनसिंह का मुख देखता रह गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहनसिंह को संदेह हुआ कि दाल में कुछ काला है। इस कारण उसने मोतीराम को अपने सामने कुर्सी पर बैठाकर पूछ लिया, "आज दो वर्ष के उपरान्त उसकी माँ की याद किसलिए आई है ?"

आखिर मोतीराम को एक बात सूझी। उसने कह दिया, "राधा की एक सहेली कमला के विषय में पूछने आई थी। मुझे उसका पता तो है, परन्तु उसने राधा के विषय में कुछ बताया है ?"

"क्या बताया है ?"

इस पर मोतीराम फिर विचार करने लगा कि क्या बताए।

"दादा! क्या बात है ? साफ-साफ बताओ।"

मोतीराम ने लड़खड़ाती हुई ज़बान में कहा, "वह कह रही थी कि राधा की हत्या हुई थी। वह मरी नहीं।"

"वह कौन पगली है ?" सोहनसिंह ने कुछ उद्विग्न हो पूछ लिया।

"सोहन! मैं तुमको बताने आया हूँ, क्योंकि उन दिनों तुम भी पुलिस के साथ भाग-दौड़ कर रहे थे।"

"हाँ, राधा का पड़ोसी एक वैद्य था। राधा के मरने पर पड़ोसियों ने उस वैद्य को बुलाया था और उसका कहना था कि उसे विष दिया गया है। इस पर पुलिन ने वैद्य को अपनी राय बदलने के लिए विवश किया था और राधा की मौत का मामला फाइल किया गया था। मुझे भी वैद्य को समझाने के लिए कहा गया था।

"इसीलिए तुमको बताने आया हूँ।" मोतीराम ने कह दिया।

मोतीराम चाहता था कि सोहनसिंह उसे बताए कि राधा की मृत्यु किस प्रकार हुई और उसका रामलाल की जाँच-पड़ताल से क्या सम्बन्ध है। वह रामलाल का नाम बीच में नहीं लाना चाहता था।

सोहनसिंह ने बात टाल दी। उसने कहा, "दादा! वह राधा की सहेली फिर आए तो उसे मेरे पास ले आना। मैं उसका समाधान कर दूँगा।"

"अच्छी बात है।" मोतीराम ने कहा और अपनी दुकान पर आ गया।

उसी रात मोतीराम सुन्दरी को लेकर रामलाल के घर जा पहुँचा। उस दिन स्वरूपरानी रामलाल के घर आई हुई थी।

"दादा!" रामलाल ने उसे आए देख पूछ लिया, "भोजन किया है अथवा नहीं ?"

"नहीं! कुछ तुमसे बात करनी थी। सुन्दरी बोली कि यह भी चलेगी। इस कारण हम दोनों ही आए हैं।"

"तो पहले भोजन करोगे अथवा पहले बात करोगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar 163003

"जैसे कहो। यदि भोजन तैयार है तो पहले भोजन करेंगे अन्यथा, पहले बात करूँगा।"

"तो पहले बात होगी। बताओ दादा! पृथक् में बैठकर बताओगे अथवा यहाँ ही?"

"पृथक् में।"

रामलाल उसे अपने कमरे में ले गया। सुन्दरी भी स्वरूपरानी से बातचीत करने लगी।

मोतीराम ने रामलाल को बताया, "रामलाल! मैंने उस समय तुम्हें बताया नहीं। मैं अपने मन का संशय निवारण करना चाहता था। मुझे संदेह था कि कमला की माँ राधा की हत्या सोहनसिंह ने की थी और इस संदेह का निवारण करना चाहता था। इस कारण तुम्हारा नाम बताए बिना मैंने सोहनसिंह से बात की है। उससे पता चला है कि अंसारी रोड पर एक वैद्य बैठता है। उसने राधा को विष देने की बात कही थी और पुलिस तथा सोहनसिंह ने वैद्य को समझाकर उसका वक्तव्य बदलवा दिया था।"

"राधा कहाँ रहती थी?"

मोतीराम ने मकान का नम्बर बताकर कह दिया, "अब वहाँ पर एक क्लर्क रहता है।"

"देखो दादा! यह कमला की सहेली मुझसे बातों ही बातों में तुम्हारी तारीफ करने लगी थी। इस कारण मैं जानना चाहता था कि उस औरत पर क्या ऐहसान किया है कि वह तुम्हारी तारीफ करती रहती थी?"

मोतीराम ने कह दिया, "मेरा कमला से किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं है। उसकी माँ से ही सम्बन्ध था। वह भी कपड़े सिलवाने का। मैंने उसके मरने पर साठ रुपये उजरत के उसको देने थे। वह मैं कमला को देने गया था। उसने लिए नहीं और रुपये मेरे पास अभी तक जमा हैं।"

"अब सब जानकर मुझे उसमें रुचि नहीं रही।" रामलाल ने कह दिया।

"क्यों?"

"अब सोहनसिंह का नाम बीच में आया है तो मैं उसके साथ किसी प्रकार का सम्पर्क रखना नहीं चाहता।"

मोतीराम को यह सफाई संतोषजनक समझ में आई और बात समाप्त हो गई।

परन्तु रामलाल को समझ आया कि बालकराम को फँसाने का सूत्र दिखाई देने लगा है।

अगले दिन रामलाल वकील साहब के पास पहुँचा। उसने कमला, राधा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृत्तान्त जितना वह जान पाया था, बताया और कह दिया, "वकील साहब! पैरिस रेस्टोराँ एक प्रकार से ग्राहक फँसाने की जगह है। बालकराम की एक कोठी है जहाँ वेश्यागार बना रखा है। यह वेश्यागार और इसी प्रकार के अन्य वेश्यागार बिना पुलिस की सहायता के चल नहीं सकते। इस कारण पुलिस और बालकराम की गहरी छनती है।

"परन्तु मुझे कुछ ऐसा समझ में आया है कि बालकराम ने कमला की माँ राधा की हत्या कराई है। वह कमला के अपहरण को छिपाने के लिए। कमला ने मोतीराम के विषय में अपने पत्र में विस्तार से लिखा है। उसके प्रमाण एकत्रित कर रहा हूँ। इस कारण दादा से पता करने गया था।"

माथुर ने सब बात सुनकर कहा, "मैं भी चाहता हूँ कि बालकराम का धंधा बंद करने की योजना बनाई जाए। परन्तु रामलाल! इतने से कुछ नहीं बनेगा। साथ ही पुलिस से किसी प्रकार की सहायता की आशा नहीं की जा सकती।"

"हाँ! कोर्ट में मामला जाना चाहिए। परन्तु वहाँ ले जाने के लिए अभी बात प्रमाणयुक्त नहीं है।"

"मैं भी यही समझता हूँ। आप इस बिना पर बात करिए और इसमें कहाँ-कहाँ जाने की आवश्यकता है, बताइएगा और फिर मैं यत्न करूँगा कि पहले पूर्ण कहानी का पता करूँ और उसके प्रमाण ढूँढूँ।

"तुम्हारा सोहनसिंह और उसके कामों में रुचि लेना किसी शुभ बात का सूचक नहीं। इस पर भी जो हो सो हो, इस सूचना का लाभ तो उठाना ही चाहिए।"

उक्त घटना के दो दिन उपरान्त रामलाल मोतीराम को उसकी दुकान की बगल में एक सिनेमा के रेस्टोराँ में बैठा कुछ कह रहा था। इस पर मोतीराम ने पूछा, "मैं क्या और किस प्रकार कर सकता हूँ?"

"सोहनसिंह के साथियों में से किसी से मिला दो?"

"यह हो सकता है, परन्तु मैं तुम्हारी किसी शरारत में सहयोग नहीं दूँगा?"

"और तुम समझते हो कि मैं शरारती हूँ?"

"मैं समझता हूँ कि इस समय भारत में तुमसे बड़ा शरारती कोई हो ही नहीं सकता। तुम मौत के मुँह से रानी को बचाकर ले आए हो। रानी ने अपनी पूरी कथा तुम्हारी भाभी को बताई है।"

"दादा! वह यहाँ नहीं हो सकता। यह पाकिस्तान नहीं है।"

मोतीराम मुस्कराया। इसका अर्थ रामलाल यह समझा कि मोतीराम को उसकी बात का विश्वास नहीं आया।

इस पर मोतीराम ने कह दिया, "मैं सोहनसिंह के एक साथी को जानता हूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसके ऐतबारी होने पर विश्वास करता हूँ। उसे मैं तुम्हारे पास भेज दूँगा। उससे कुछ काम बन सके तो बना लेना।

"परन्तु मैं विस्मय करता हूँ कि रानी-जैसी औरत के रहते हुए तुम कमला के पीछे क्यों लगे हुए हो?"

रामलाल मुस्कराया और चुप कर रहा। इस पर मोतीराम ने कह दिया, "उस आदमी का नाम 'काहनू' है। वह स्वयं तुमसे मिलेगा।"

रामलाल अनुभव कर रहा था कि अपनी योजना की ओर धीमी गति से ही सरक रहा है। उसे भय था कि उसके हाथ में कुछ सूत्र आने से पूर्व ही कोई दुर्घटना न हो जाए।

उसने घर की रक्षा के लिए दो गोरखे चौकीदार तो पहले ही रखे हुए थे, परन्तु वह उनके लिए बन्दूक इत्यादि का प्रबन्ध नहीं कर सकता था। वे अपनी खुखरियों से ही युक्त थे। साथ ही वह जानता नहीं था कि डाके में कितने लोग सम्मिलित होनेवाले हैं।

काहनू रामलाल से मिलने आया और एक घंटा-भर रामलाल से तपाक में बातचीत कर गया।

:: 2 ::

रामलाल के घर पर तो डाका नहीं पड़ा। हाँ, माथुर साहब की मोटर पर, जब रामलाल के घर से वापस जा रही थी, डाका डालने का यत्न किया गया।

रात के आठ बजे, बेला रोड पर, जो अब शान्ति मार्ग के नाम से विभूषित हो चुका था, माथुर साहब की मोटर से एक ट्रक की टक्कर हो गई। मोटर का पिछला भाग क्षतिग्रस्त हुआ और मोटर खड़ी हो गई।

जिसने टक्कर मारी थी, उस ट्रक को किसी प्रकार की हानि नहीं हुई और वह बिना रुके पुल की ओर भाग गया। मोटर के ड्राइवर को झटके से एक क्षण तक ही घबराहट हुई, परन्तु ज्यों ही उसे पता चला कि उसे किसी प्रकार की चोट नहीं लगी, वह गाड़ी से उतर देखने लगा कि गाड़ी को क्या हो गया है। परन्तु उसके गाड़ी से उतरने के पूर्व ही दस-पन्द्रह लोग एकत्रित हो गाड़ी को घेर कर खड़े हो गए। एक ने आगे बढ़कर पूछा, "क्या हुआ है?"

पूर्व इसके कि मोटर का ड्राइवर किसी प्रकार का उत्तर दे कि एक अन्य बोल उठा, "वह ट्रकवाला चलाता-चलाता एकदम मार्ग से डोला और इस गाड़ी के पिछले भाग से टकरा गया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अन्य ने पूछा, "क्या नम्बर था उसका?"

वही व्यक्ति, जो टक्कर का वृत्तान्त बता रहा था, बोला, "ट्रक का नम्बर पढ़ा नहीं गया।"

मोटर का ड्राइवर तो समझ ही नहीं सका कि क्या हुआ है। इस कारण वह इनकी बात छोड़ मोटर के पिछले भाग को, जो बिल्कुल पिचक गया था, देखने लगा। दाहिनी ओर का पिछला चक्का भी टेढ़ा हो गया था।

एक अन्य ने गाड़ी का पिछला दरवाजा खोल दिया और उसे खाली देख कहने लगा, "मोटर तो खाली है।"

"परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए।"

ड्राइवर महावीर ने देखा कि मोटर के चारों ओर एकत्रित लोग खिसकने आरम्भ हो गए हैं। परन्तु इस समय एक मोटर समीप आकर रुक गई। उसमें से कुछ लोग निकले। उनमें से एक ने पूछा, "क्या हुआ है?"

समीप खड़े एक व्यक्ति ने कह दिया, "ग़लत साईड पर जा रहा था।"

"और सवारियाँ?" मोटर से उतरे व्यक्ति ने पूछ लिया।

पहले व्यक्ति ने ही कहा, "मोटर खाली थी।" इस पर पीछे आई मोटर से उतरे लोग अपनी मोटर में सवार हो चल दिए। इस समय तक दो अन्य गाड़ियाँ समीप आ चुकी थीं।

महावीर अपनी गाड़ी को लॉक कर रहा था कि एक पीछे आई मोटर में से व्यक्ति ने महावीर से पूछ लिया, "किसकी गाड़ी है?"

महावीर ने गाड़ी को ताला लगाते हुए कह दिया, "मुकुटबिहारी माथुर की।"

अब एक पुलिस जीप आ खड़ी हुई।

जीप में से एक पुलिस-अधिकारी ने महावीर से पूछ लिया, "ट्रक का नम्बर क्या था?"

महावीर का कहना था, "मैंने देखा नहीं।"

पुलिस ने वहाँ खड़े हुओं से ट्रक का नम्बर पूछना आरम्भ कर दिया, परन्तु कोई कुछ बता नहीं सका। इस पर पुलिस महावीर को जीप में दरियागंज थाने में ले गई। वहाँ महावीर के बयान हुए और रिपोर्ट लिखी गई। वहीं से ड्राइवर ने माथुर साहब को टेलीफोन करवा दिया।

दस मिनट में ही माथुर टैक्सी में थाने में आ पहुँचा और पुलिसवालों से बात कर मोटर की टूट-फूट की रिपोर्ट लिखा, ड्राइवर को लेकर अपनी कोठी पर पहुँच गया। मोटर तो अगले दिन ही वर्कशाप में भिजवाई जा सकी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी पर पहुँचते ही स्वरूप रानी ने बताया कि रामलाल का टेलीफोन आया था।

"क्या कहता था?" माथुर ने पूछा।

"यही कि उसने जानबूझकर शोभा को नहीं भेजा था?"

"क्यों?"

"यह उसने नहीं बताया। वह थाने से बोल रहा था। उसने कहा है कि वहाँ से अवकाश पाते ही वह स्वयं कोठी पर आ रहा है।"

"मैं भी विस्मय कर रहा था कि महावीर की गाड़ी में शोभा क्यों नहीं थी। महावीर ने केवल यह बताया है कि शोभा की माँ ने कहा था कि वह यहाँ फोन पर बता देंगी कि शोभा नहीं आ रही।"

"कुछ भारी गड़बड़ी होने वाली थी। मालूम होता है कि रामलाल को पता चल गया था और उसने शोभा को यहाँ आने से मना कर दिया था।"

माथुर साहब ने नई दिल्ली पार्लियामेंट थाने में टेलीफोन किया और रामलाल के विषय में पूछा। वहाँ से उत्तर मिला कि रामलाल थाने में रिपोर्ट लिखाकर लौट गया है।

अब कोठी पर रामलाल की प्रतीक्षा होने लगी।

रामलाल अपने पूर्ण परिवार सहित अपनी गाड़ी में सिविल लाइन्स माथुर साहब की कोठी पर पहुँचा गया।

माथुर साहब ने अभी खाना नहीं खाया था। पहले वह औंर स्वरूपरानी शोभा की प्रतीक्षा कर रहे थे और पीछे रामलाल की प्रतीक्षा करने लगे थे।

लगभग साढ़े दस बजे रामलाल, रानी, शोभा, माणिक और गोकुलचन्द मोटर में सवार पहुँचे थे।

"रामलाल! भोजन किया है अथवा नहीं?" माथुर साहब ने पूछ लिया।

"किया तो नहीं, परन्तु वकील साहब! यदि तैयार न हो सके तो चिन्ता नहीं। केवल चाय-बिस्कुट पर भी निर्वाह हो जाएगा।"

"नहीं! चलो खाने के कमरे में। मैं तो इस सब घटना का अर्थ समझने के लिए व्याकुल हूँ।"

भोजन करते हुए रामलाल ने कहा, "वकील साहब! खाने के उपरान्त बच्चे सोने चले जाएँगे, तब आपको पूरी कहानी सुनाऊँगा।"

इस पर शोभा पूछने लगी, "मैं भी?"

"तो तुम बच्ची नहीं हो क्या?"

"पिताजी! मेरी सगाई हो चुकी है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब हँसने लगे। हँसते हुए माथुर साहब ने कहा, "शोभा! कानून किसी के सज्ञान होने में सगाई-प्रमाण नहीं स्वीकार करता?"

"तो घर में भी कानून चलता है?" शोभा का प्रश्न था।

"हाँ! यदि कानून 'नैचुरल-लाज़' के अनुकूल हो तो। ऐसी अवस्था में कानून ईश्वरीय नियम हो जाता है।"

"तो ईश्वरीय नियम है कि मैं अभी बच्ची हूँ?"

"हाँ! तुम सज्ञान इक्कीस वर्ष की वयस् के होने पर होगी?"

इस कथन पर शोभा चुप कर गई। माणिक हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "अब ठीक है।"

"क्या ठीक है?" माथुर साहब ने ही पूछा।

"यह घर पर मेरे कान खींचती है। अब यहाँ इसके कान खींचनेवाला इसे मिल गया है।"

सब हँसने लगे।

भोजन के उपरान्त शोभा, माणिक और गोकुलचन्द के लिए सोने का प्रबन्ध कर दिया गया।

तदुपरान्त रामलाल, मुकुटबिहारी, रानी और स्वरूपरानी ड्राइंगरूम में जा बैठे। वहाँ बैयरा कॉफी रख गया तो रामलाल ने बताया—

"वकील साहब! मुझे लगभग सायं सात बजे कमला ने सूचना दी थी कि उस सायंकाल वकील साहब की गाड़ी, जिसमें शोभा कोठी पर जानेवाली है, दुर्घटनाग्रस्त होनेवाली है।

"मैंने कमला की इस सूचना के लिए उसका धन्यवाद किया। मेरे धन्यवाद की चिन्ता किए बिना वह शीघ्र ही वहाँ से जाने लगी तो मैंने उसे उसकी सूचना के प्रतिकार में अपनी योजना बताए बिना कह दिया कि यदि वह उस रात लाला की कोठी पर न जाए तो अधिक ठीक होगा?

" 'तो कहाँ जाऊँ?' कमला का प्रश्न था।

"मैंने उसके लिए जनता होटल में रात-भर रहने का प्रबन्ध कर दिया। मेरी दुकान से वह यह कहकर गई है कि वह होटल में जा रही है। जब आपकी गाड़ी हमारे मकान पर पहुँची तो मैं सम्भावित दुर्घटना की रिपोर्ट करने के लिए नई दिल्ली थाने में जा पहुँचा।

"पहले तो मेरी रिपोर्ट लिखने के लिए पुलिस तैयार नहीं थी, परन्तु जब मैंने एक सौ रुपये का नोट मुंशी की मेज पर रखा तो वह लिखने पर तैयार हो गया। मैंने लिखाया कि मुझे विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि श्री मुकुटबिहारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माथुर की गाड़ी जब मेरी लड़की को लेकर सिविल लाइन्स को जा रही होगी तो एक मोटर-ट्रक से दुर्घटना की जाएगी और उस दुर्घटना में गाड़ी तो टूटेगी ही, साथ ही जान की हानि भी हो सकती है ?''

''मुंशी ने पूछा, 'मोटरगाड़ी मेरी लड़की को लेकर कब जानेवाली है ?'

''मैंने बताया, 'साढ़े आठ बजे हमारे घर से गाड़ी जाएगी। कुछ मिनट आगे-पीछे हो सकती है।'

''उस समय आठ बजकर पैंतीस मिनट हो चुके थे। इस कारण मुंशी ने मेरे घर पर टेलीफोन किया। रानी ने बताया कि आपकी गाड़ी आई थी, मगर उसने लड़की को नहीं भेजा।''

''क्यों ?'' मुंशी ने प्रश्न किया।

''रानी ने उत्तर दिया, 'लड़की के पिता को सन्देह हो गया है कि लड़की के अपहरण करने का षड्यन्त्र है। इस कारण उसने ही कहा है कि लड़की को न भेजा जाए।'

''मुंशी ने टेलीफोन बंद कर दिया और गाड़ी के लौटने का मार्ग पूछ लिया और एक जीप उस सड़क पर भेज दी। मैं घर की सुध लेने के लिए अपने घर चला आया। मैंने अपने वहाँ पहुँचने और वहाँ से आने का समय थाने में लिखा दिया है। रिपोर्ट का भी वक्त लिखा गया है।''

माथुर साहब ने मुस्कराते हुए कहा, ''बाबू रामलाल! तुम्हें तो दिल्ली खुफिया पुलिस का चीफ-इन्स्पेक्टर बना देना चाहिए ?''

''नहीं, माथुर साहब! मेरी कहानी अभी समाप्त नहीं हुई।''

''हाँ, तो बाकी भी सुना दो।''

''शेष कहानी तो कल समाचार-पत्रों में छपेगी। वह मैं अभी नहीं बताऊँगा। उस घटना में मैंने अपनी 'ऐलिवी' थाने में बैठकर बनाई है।''

माथुर रामलाल का मुख देखता रह गया। फिर यह स्मरण कर कि उसके सामने वह व्यक्ति बैठा है, जिसने भारत सरकार और पाकिस्तान सरकार दोनों को चकमा देने की योजना चलाई थी, वह चुपचाप कॉफी पीता रहा।

इस समय रात के साढ़े ग्यारह बज चुके थे। रामलाल ने अपने घर पर टेलीफोन किया। वहाँ घर के नौकर ने जवाब दिया। रामलाल ने पूछा, ''घर पर कोई आया है ?''

उत्तर आया, ''नहीं।''

''किसी प्रकार का टेलीफोन ?''

''नहीं, बाबूजी!''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब ठीक है, सो जाओ।"

अगले दिन प्रातः सात बजे रामलाल की नींद खुली। वह और रानी अपने-अपने पलंग पर बैठे बेड-टी ले रहे थे कि माथुर हाथ में 'स्टेट्समैन' पकड़े हुए आया और बोला, "तुमने ठीक ही बताया था कि समाचार-पत्र में कुछ छपेगा और तुम उसके विषय में बताओगे।"

"हाँ! तो कुछ छपा है?"

"लिखा है—नई दिल्ली में एक ब्रोदल-हाउस पर डाका। दिल्ली के एक धनी व्यक्ति ने सफदरजंग रोड पर एक बहुत बड़ी कोठी पर यह धंधा खोल रखा था। रात वहाँ बीस के लगभग नकाबपोशों ने मुख छुपाये हुए डाका डाला और वहाँ दस पेशा करनेवाली औरतों का अपहरण किया है।

"हमारे विशेष संवाददाता ने वहाँ के सेवकों से पता किया है। डाका डालनेवाले सब मुख पर नकाब लगाए हुए थे और दो के पास बंदूकें भी थीं। कोठी के सेवकों ने यह भी बताया है कि सब लोग पाँच-छः मोटरगाड़ियों में आए थे और जब औरतें उन गाड़ियों में बैठा दी गईं तो प्रत्येक गाड़ी में एक-एक व्यक्ति हाथ में छुरी लिए बैठ गया और गाड़ियाँ चली गईं। शेष डाकू तो पैदल ही लापता हो गए।

"सेवक टेलीफोन नहीं कर सके। उनकी कोठी का टेलीफोन बिगड़ा हुआ था।

"डाकुओं के चले जाने के उपरान्त सेवकों ने पड़ोस की कोठी से पुलिस को टेलीफोन किया था।

"पुलिस डाका पड़ने के एक घंटा उपरान्त वहाँ पहुँची।

"समाचार एजेन्सी में किसी ने टेलीफोन किया था कि अमुक कोठी पर नई दिल्ली में डाका पड़ा है। उस कोठी में एक 'ब्रोदल' है और वहाँ की दस लड़कियों का अपहरण कर लिया गया है। इस पर संवाददाता तुरन्त वहाँ पहुँच गया।

यह समाचार सुना, माथुर रामलाल का मुख देखने लगा। रामलाल ने चाय की सरुकी लगाते हुए कहा, "यह सब मैंने एक संस्था की ओर से कराया है। उस संस्था को धन देनेवाला मैं हूँ। संस्था में केवल तीन वकील हैं और एक सैक्रेटरी है।

"संस्था का नाम है—एस०एच०एच० अर्थात् 'सोसाइटी टू हैल्प द हैल्पलेस'। यह छापा इस संस्था की ओर से मारा गया है। मैं समझता हूँ कि इस संस्था की कार्यवाही की शेष रिपोर्ट कल के समाचार-पत्र में छपेगी।"

"परन्तु यह सब गैर-कानूनी कार्यवाही है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''जी! इस विषय पर विचार किया गया है और इसकी सफाई विचार की गई है।

''एक तो यह कि एक गैर-कानूनी, परन्तु पुलिस से रक्षित संस्थान् का भाण्डा-फोड़ एक गैर-कानूनी ढंग से ही किया जा सकता है। अब इसको कानूनी रूप देने के लिए वह संस्था आपको वकील करेगी और आपकी फीस का प्रबन्ध किया जा चुका है।''

''तो ये लोग मेरे पास कब आएँगे?''

''ये लोग मुझे मेरे घर पर मिलने आएँगे। मैं अब यहाँ से वहाँ भागनेवाला हूँ। चन्द्र की माताजी चाहें तो शोभा आज यहाँ ही रह सकती है।''

''फिर मुझे शेष सूचना कब मिलेगी?''

''सोसाइटी अपना प्रतिनिधि आपसे मिलने भेजेगी। मैं भी तो एक गुप्त सदस्य हूँ। इस पर भी पूर्ण गतिविधि से परिचित हूँ।''

रामलाल गया और फिर वकील साहब से मिलने नहीं आया। एक हाईकोर्ट में 'प्रैक्टिस' करनेवाला वकील सी०आर० मनचन्दा माथुर साहब से नौ बजे के लगभग मिलने आया और एक घंटा-भर बातचीत कर एक 'प्लेंट' टाइप करवा कर ले गया।

ठीक ग्यारह बजे हाईकोर्ट में एक अर्जी पेश की गई। अर्जी में कहा गया था—''हमारी संस्था ने सफदरजंग रोड पर से दस लड़कियों को एक वेश्यागार से छुड़ाया है। ये लड़कियाँ वहाँ पर बालकराम नाम के व्यक्ति द्वारा पेशा करने के लिए रखी गई थीं। इसके विषय में एक विस्तृत रिपोर्ट कोर्ट में उपस्थित की जा रही है। परन्तु इस बात का मुलज़िम को पता चल जाने पर, मुलज़िम उन प्रमाणों को नष्ट करने का यत्न कर सकता है, जिनसे उसका दोषी होना प्रमाणित हो सकता है। इस कारण निम्न विषयों पर हुक्म जारी किया जाए—

(1) सफदरजंग रोड नम्बर 55 को ताले लगा दिये जाएँ।

(2) बालकराम को भारी जमानत पर बाँध दिया जाए।

(3) बालकराम के 'पैरिस-रेस्टोराँ' की तलाशी लेने का हुक्म जारी किया जाए। सफदरजंगवाली कोठी इसी दुकान का एक अंग है।

यह अर्जी पुलिस में की जानी चाहिए थी, परन्तु पुलिस को तीन दिन पूर्व एक शिकायत लिखित-रूप में रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी गई थी। उस पर कुछ कार्यवाही न होने पर ही यह अर्जी की जा रही है।

रजिस्टर्ड शिकायत के अतिरिक्त नई दिल्ली थाने पर हमारी संस्था के एक सदस्य वहाँ रिपोर्ट लिखाने गए थे, परन्तु उसे डरा-धमकाकर बिना रिपोर्ट लिखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाली हाथ वापस कर दिया गया था।

हमारी ओर से दावा करनेवाली एक श्रीमती कमला हैं। वह अपना दावा पृथक् में उपस्थित कर रही हैं। परन्तु उनके दावे से पूर्व यह कार्यवाही यदि नहीं की गई तो मुलज़िम और पुलिस मिलकर सब प्रमाण विनष्ट कर सकते हैं।

यह अर्जी डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के समक्ष भी की जा सकती थी, परन्तु पुलिस डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट का अपना महकमा है। इस कारण अपराध के प्रमाण लुप्त हो जाने का भय है।

अर्जी पेश होने पर मुख्य न्यायाधीश ने पूछा, "और वह दावा कहाँ है?"

इस पर माथुर साहब ने अपने पीछे खड़ी कमला देवी को आगे आने का अवसर दिया। उसने अपने हाथ में बीस पृष्ठ की एक अर्जी पकड़ी हुई थी।

अर्जी के ऊपर लिखा था—निवेदन है कि प्रारम्भिक जाँच के लिए उचित अदालत को आज्ञा दी जाए।

इस पर मुख्य न्यायाधीश असमंजस में पड़ गया। इस परेशानी में उसने माथुर साहब को सम्बोधन कर पूछा, "हम किस कानून के अनुसार ऐसा कर सकते हैं?"

माथुर ने कहा, "हाईकोर्ट का अपने क्षेत्र की सब कचहरियों का अधिकारी होने के नाते।

"निर्णय तक पहुँचने के लिए जाँच की सुविधा सबको, न्यायालय को, पक्ष-प्रतिपक्ष को और उसके साक्षियों को होनी चाहिए। मेरी पहली प्रार्थना साक्षियों के साथ न्याय के लिए है। मैं साक्षी नहीं हूँ। मैं साक्षियों का वकील हूँ। मैं तो प्रार्थना करनेवाले की प्रार्थना को न्याय के अन्तिम द्वार तक पहुँचाने की सुविधा के लिए कह रहा हूँ।"

न्यायाधीश का प्रश्न था, "परन्तु निर्णय तक पहुँचने की विधा में अन्तर डालने से अन्याय का आरोप लग सकता है।"

"और श्रीमान्! इस विधि-विधान के गुंजल में से अपराधियों के बचकर पहुँच से दूर हो जाने का भय भी तो है। मैं जाँच की कार्यविधि बदलने को नहीं कह रहा। उसमें की किसी मदद को रद्द करने के लिए भी नहीं कह रहा। केवल सम्भावित छिद्रों को, जिनसे अपराधी भाग सकता है और न्याय को धोखा दे सकता है, उससे बचने का उपाय कर रहा हूँ।

"यह अर्जियाँ जाँच की कार्यविधि को बदलने के लिए नहीं हैं। ये तो अपराधियों और अपराधों के न्याय की पहुँच से दूर हो जाने से रोकने के लिए हैं। यह प्रोसीज़र कोड को बदलना भी नहीं है। यह कोर्ट के कार्य में सम्भावित बाधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनने से रोकने के लिए है।

"श्रीमान्! तीन दिन हुए इन्स्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस से अर्जी की गई थी कि भारत राजधानी के श्रेष्ठतम क्षेत्र में ब्रोदल चल रहा है और पुलिस उसकी रक्षा कर रही है। ब्रोदल का पता बताया गया; इस पर भी तीन दिन में उस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। इससे पहले इसी सोसाइटी का एक सदस्य पार्लियामेंट स्ट्रीट के थाने में रिपोर्ट लिखाने गया था और उसकी रिपोर्ट थाने में लिखी नहीं गई।

"इस अव्यवस्था में जो कुछ होगा, उसको रोकने के लिए ही यह सावधानी की जा रही है।

"मैं समझता हूँ कि न्याय की माँग यह है कि अपनी पहुँच से दूर भाग जानेवाले अपराधियों को रोकने के लिए तथा प्रमाण विलुप्त करने से बचाने के लिए कोई कार्य करना ही चाहिए।"

"परन्तु," मुख्य न्यायाधीश का प्रश्न था, "क्रिमिनल प्रोसीज़र कोड क्या निरपराधों की रक्षा के लिए नहीं है? यदि है तो उसके विपरीत कोई कार्यवाही क्यों की जाए?"

"इसी कारण तो हम सामान्य कोर्ट के स्थान उच्च कोर्ट से न्याय के विरोध की सम्भावना को रोकने की अर्जी कर रहे हैं।"

चीफ जस्टिस कमला की बीस पृष्ठ की अर्जी पढ़ने लगा। उसके साथ रामलाल का 'ऐफिडेविट' लगा था कि वह पार्लियामेंट स्ट्रीट के थाने पर गया था और वहाँ उसे धमका कर वापस कर दिया गया था।

"परन्तु यह पुलिस का कार्यवाही न करना कार्याधिक्य के कारण भी हो सकता है।" न्यायाधीश ने कहा।

"श्रीमान्! परन्तु अर्जी करनेवाले किसी प्रकार के लिए दंड की याचना नहीं कर रहे। पुलिस ने जो कुछ किया है, उसको कोर्ट पूछ सकता है और पुलिस इस प्रकार के कार्य में देरी का कारण बता सकती है। इस विषय में पुलिस पर किस प्रकार के प्रतिबन्ध की याचना भी नहीं है। याचना तो यह की जा रही है कि ब्रोदल की तलाशी ली जाए। उसकी तालाबंदी की जाए और उसके मुलाज़िमों को वहाँ पर उपस्थित प्रमाण नष्ट न करने दिए जाएँ। साथ ही उस मकान का स्वामी कहीं देश छोड़ बाहर न भाग जाए, इस पर रोक लगाई जाए।

"यदि यह तुरन्त न किया गया तो न्याय के मार्ग में बाधा हो जाएगी और क्रिमिनल प्रोसीजर कोड का यह आशय नहीं।"

"यदि कोर्ट यह न माने तो क्या होगा?"

"अर्जी करनेवाले के विचार से देश में गुण्डों की सहायता हो जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनको अपने अपराधयुक्त कार्यों को करने की छूट मिल जाएगी।''

''यह कमेटी किसने बनाई है?''

''सर्वोच्च न्यायालय के कुछ वकीलों ने।''

''क्या यह रजिस्टर्ड सोसाइटी है?''

''नहीं, इसके रजिस्टर्ड कराने में आवश्यकता नहीं समझी गई।''

''इस सोसाइटी के फण्ड कहाँ से आते हैं?''

''इसका कोई स्थाई फण्ड नहीं है। जब आवश्यकता होती है, मित्रों और जानकारों से माँग लिया जाता है।''

''आपको फीस क्या मिलती है?''

''मैंने इसमें अपना श्रम-दान दिया है। मैं इस केस के लिए कुछ नहीं ले रहा।''

''इस बड़ी अर्जी में रात एक ब्रोदल पर छापे का उल्लेख है। वह किसने कराया है?''

''इसी सोसाइटी ने। इस पर एक सहस्र सात सौ बीस रुपये खर्च आए हैं। वह चन्दा किया गया है और उसका सोसाइटी के कार्यालय में हिराब-किताब है। मुनासिब आदेश पर हिसाब पेश किया जा सकता है।''

माथुर साहब में यही गुण था कि वह सदा कानून के युक्तियुक्त अर्थ और उद्देश्यों पर बल देता था। उसने शब्दों पर विवाद को सदा गौण माना था। अनेक बार सुप्रीम कोर्ट में किसी कानून के शब्दों पर बहस हो जाती तो माथुर सदा कानून के उद्देश्य और भावार्थ पर बल दिया करता था।

हाईकोर्ट ने पचपन सफदरजंग की तलाशी लेकर कोठी को सील करने की और बालकराम से एक लाख रुपये की जमानत माँगने की आज्ञा दे दी। शेष कार्यवाही में एक घंटा ही लगा और हाईकोर्ट की आज्ञा थानेदार को पहुँचाने तथा उसे पुलिस सहित कार्यवाही करने के लिए मशीनरी को तेल देना पड़ा। दो बजे, जिस समय बालकराम अपने रेस्टोराँ में जाने के लिए तैयार हो रहा था, उसे पकड़कर स्थानीय मैजिस्ट्रेट के सम्मुख उपस्थित कर दिया गया। पचपन सफदरजंग को ताला लगा अगले दिन तलाशी के लिए समय निश्चय कर दिया गया।

:: 3 ::

माथुर साहब के दफ्तर में मुकद्दमे की रूप-रेखा बनने लगी। माथुर साहब का विचार था कि हाईकोर्ट यह मुकद्दमा अब सेशनकोर्ट में भेज देगा। वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराधी इस प्रोसीजर को गैर-कानूनी सिद्ध करने के लिए अपील करेगा। यह अपील सुप्रीम कोर्ट तक जाएगी। तब तक के लिए हमें यह यत्न करना चाहिए कि औरतों के बयान हो जाएँ और उन पर ज़िरह हो जाए।

वैसा ही हुआ। अगले दिन हाईकोट ने मामला सेशन कोर्ट में भेज दिया। सेशन कोर्ट ने एक मैजिस्ट्रेट को प्रारम्भिक जाँच के लिए नियुक्त कर दिया।

यह कार्यविधि सामान्य से भिन्न थी। इस कारण हाईकोर्ट के निर्णय के विपरीत कोर्ट में अपील कर दी गई। इस प्रकार छः महीने लगे इस मैजिस्टीरियल जाँच-पड़ताल में।

रामलाल ने पुलिस से यह समझौता कर लिया था कि यदि पुलिस इस मामले में बालकराम का पक्ष नहीं लेगी तो पुलिस की किसी भी अनियमित बात की जाँच के लिए रामलाल जोर नहीं डालेगा।

छः महीने की भाग-दौड़ का परिणाम यह हुआ कि बालकराम पर तीन हत्याओं का आरोप लग गया। साथ ही ब्रोदल में चौदह-पन्द्रह लड़कियों से पेशा कराने का भी आरोप दर्ज कर लिया गया। अब बालकराम की जमानत रद्द हो गई और उसे जेल में बंद रखने की आज्ञा हो गई।

शोभा और चन्द्रमोहन में पत्र-व्यवहार चलता था और दोनों में अनेकानेक विषयों पर लिखा-पढ़ी होती थी। शोभा ने अपने हरण के प्रयास पर उसके पिता के प्रतिकार का पूर्ण वृत्तान्त लिखकर अमेरिका में चन्द्र के पास भेज दिया था। उस वक्तव्य को तथा साथ ही माथुर साहब की दलीलों को पढ़कर चन्द्र ने एक पुस्तिका लिखी। विषय था—कानून का निर्वचन अर्थात् उद्देश्य।

पुस्तिका की पाण्डुलिपि चन्द्र ने पिता के पास भेजी तो उस पर भूमिका मुकुटबिहारी माथुर ने लिख दी।

मुकुटबिहारी माथुर ने भूमिका में लिखा—मनुष्य बोलता हुआ अथवा लिखता हुआ अन्तःप्रेरणा से प्रेरित होता है। उस अन्तःप्रेरणा को समझने के लिए ही भाषा का निर्वचन अर्थात् अभिप्राय निकाला जाता है।

यह विद्या भाषा के व्याकरण से ऊँची होती है। व्याकरण तो भाषा को समझने के लिए मानवकृत विधा है, परन्तु निर्वचन अर्थात् कथन का प्रयोजन मनुष्य के अन्तःकरण से चलता है।

निर्वचन मन में उठता है, भाषा यथा सम्भव उसको व्यक्त करने का यत्न करती है। जहाँ-जहाँ भाषा वक्ता अथवा लेखक के मनोभावों को स्पष्ट नहीं करती, विद्वानों का यह कर्त्तव्य होता है कि वक्ता अथवा लेखक के मनोभावों तक पहुँचने का यत्न करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदालतों में वकील भी यही करने का यत्न कर रहे हैं। जब वकील अथवा न्यायाधीश इन निर्वचनों को छोड़ भाषा के प्रपंच के पीछे चल पड़ते हैं, तो वे ठोकर खा जाते हैं और देश तथा समाज को पीछे धकेलने में ही सफल होते हैं।

पुस्तक का निष्कर्ष अन्तिम कण्डिका में लिखा था—न्याय युक्ति है। यह कानूनी शब्दों और वाक्यों से ऊपर होती है। न्याय अर्थात् युक्ति कानून का अर्थ लगाती है, न कि भाषा अथवा व्याकरण।

जब तक बालकराम का मुकद्दमा सुप्रीम कोर्ट में गया, तब तक चन्द्र पुरानी नौकरी की अवधि पूर्ण कर चुका था। नई नौकरी के लिए कांट्रैक्ट कर वह भारत में विवाह के लिए आ पहुँचा।

विवाह बहुत ही सरल और सादे ढंग से हुआ। निश्चित दिन माथुर साहब और उनकी पत्नी चन्द्र को लेकर हनुमान रोड आर्यसमाज मन्दिर में आ पहुँचे। वहाँ रामलाल अपने परिवार सहित पहुँचा हुआ था। रामलाल और मुकुटबिहारी के कुछ मित्र भी वहाँ आए हुए थे। मन्दिर की वेदी पर ही पण्डितजी ने विवाह कराया और वहीं अभ्यागतों को डिब्बों में मिठाई देकर विदा कर दिया गया। तदनन्तर वर-वधू घर जा पहुँचे।

अगले दिन मुकुटबिहारी, उसकी पत्नी, शोभा के माता-पिता और दो-चार निकटस्थ सम्बन्धी अल्पाहार लेने लगे तो चन्द्र भी शोभा को लेकर उनमें आ बैठा। दोनों के मुख प्रसन्नता से देदीप्यमान हो रहे थे। खाने की मेज पर बैठे सब समझ रहे थे कि पति-पत्नी परस्पर सन्तुष्ट रहे हैं। इनको भी अल्पाहार के लिए आमंत्रित कर लिया गया। सबके बैठते ही चन्द्रमोहन ने घोषणा कर दी, "पिताजी! हमने निश्चय किया है कि दो-तीन दिन में प्रबन्ध होते ही मैं अमेरिका लौट जाऊँगा और शोभा मेरे साथ जाएगी। वहाँ मैं अपने सेवाकार्य को ले लूँगा।"

"और हम," शोभा ने पति के कथन में संशोधन कर दिया, "यूरोप-भ्रमण करते हुए जाएँगे। यह ट्रिप हमारे हनीमून के प्रतिरूप होगा।"

"तो बस?" रानी का प्रश्न था।

सब रानी के मुख पर देखने लगे। शोभा ने प्रश्न का भावार्थ समझते हुए कह दिया, "मैं भारत में शीघ्र ही लौट आऊँगी।"

"किसलिए?" स्वरूपरानी का प्रश्न था।

उत्तर चन्द्रमोहन ने दिया, "हमें आशा है कि पिताजी इस वर्ष के भीतर ही बाबा बनने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे।"

"ओह! तो यह भी निश्चय है?" माथुर साहब ने मुस्कराते हुए पूछा।

"ऐसे ही जैसे दो और दो चार होते हैं।" चन्द्र ने प्लेट में से पूरी का ग्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठा मुख में डालते हुए कह दिया।

मेज पर बैठे सब हँसने लगे।

परन्तु चन्द्र और शोभा जा नहीं सके। सुप्रीम कोर्ट में बालकराम और उसके साथियों की अपील की तारीख घोषित हो गई थी।

इस मुकद्दमे की कार्यविधि के कारण कानूनी-क्षेत्रों में बहुत चर्चा थी। चन्द्र इस मुकद्दमे में अपने पिता की बहस सुनने के लिए ठहर गया।

विवाह के एक सप्ताह उपरान्त मुकद्दमा आरम्भ हुआ। बालकराम को तीन स्त्रियों की हत्या और उस हत्या में धन-लाभ के मामले में हाईकोर्ट में फाँसी का दण्ड हो चुका था। बालकराम के तीन साथियों—रमण, जानकीनाथ और सुन्दरसिंह को आजन्म कैद का दंड हो चुका था। बालकराम जेल में अपने फाँसी चढ़ाये जाने की प्रतीक्षा कर रहा था।

मुकुटबिहारी माथुर मुकद्दमे की पहली अदालत से ही पैरवी कर रहा था। समाचार-पत्रों में यह छप चुका था कि कुछ सुप्रीम कोर्ट के वकीलों ने एक सोसाइटी बनाई हुई है—'सोसाइटी फॉर द हैल्प ऑफ हैल्पलैस' (निस्सहायों की सहायता के लिए संस्था) और मुकुटबिहारी इस मुकद्दमे की बिना फीस लिए पैरवी कर रहा है। इस कारण मुकद्दमे में कानूनी-क्षेत्रों में बहुत रुचि उत्पन्न हो गई थी और मुकद्दमा आरम्भ होने के दिन से लेकर अन्त के दिन तक सुप्रीम कोर्ट में भीड़ लगी रही थी।

अपराधियों की ओर से बम्बई के एक वकील सदाशिव रानाडे और दिल्ली के दो वकील थे। रानाडे का कहना था—मुकद्दमा आद्योपान्त झूठा है। मुकद्दमे में मुख्य व्यक्ति एक रामलाल है जो पाकिस्तान से एक मुसलमान स्त्री को भगाकर भारत में छुपा बैठा है।

इसी प्रथम वक्तव्य पर माथुर ने उठकर आपत्ति प्रस्तुत कर दी। उसने पूछा, ''क्या ऑनरेबल कोर्ट मुकद्दमों के बाहर के विषय, जिस पर कोर्ट की मुहर लग चुकी है, बीच में लाने की स्वीकृति देगा?

''रामलाल इस मुकद्दमा करनेवाली सोसाइटी का सदस्य है। परन्तु जिस विषय को विपक्ष के प्रतिष्ठित कौंसिल ने उठाया है, उस पर सन् 1951 में शिमला हाईकोर्ट ने निर्णय दिया हुआ है और उस निर्णय की अपील नहीं हुई। क्या वर्तमान प्रतिष्ठित न्यायालय इस मामले पर बहस की स्वीकृति देगा?''

इस पर मुख्य न्यायाधीश ने कह दिया, ''मिस्टर रानाडे! यदि इस विषय पर बहस करना चाहते हैं तो शिमला हाईकोर्ट के निर्णय पर पुनरावलोकन की याचिका करिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर रानाडे ने दूसरी आपत्ति पर बात आरम्भ कर दी। उसका कहना था, "यह मुकद्दमा अनियमित ढंग से क्रिमिनल प्रोसीज़र कोड की धाराओं का उल्लंघन कर यहाँ तक पहुँचा है। इससे कोर्ट का निर्णय दूषित (विशिएटिड) हो गया है।"

इस विषय पर रानाडे ने मुकद्दमे का आरम्भ हाईकोर्ट से होने की बात चलाई। उसने कहा, "प्रारम्भिक पुलिस की रिपोर्ट नहीं है। एक अनधिकारी पब्लिक समिति, जिसकी कानून में कोई स्थिति नहीं, यह मुकद्दमा चला रही है।

"मुकद्दमा हाईकोर्ट के आदेश पर चलाया गया है। इस प्रकार मुकद्दमा चलाने की अनुमति 'कोड' में नहीं है। इसका परिणाम यह हुआ है कि मुकद्दमा जिसे छः-सात वर्ष लगते, वह डेढ़ वर्ष में ही समाप्त हो रहा है।

"परिणामस्वरूप, अभियुक्तों की रक्षा करनेवालों को अपने मुकद्दमे में विचार करने, अपने पक्ष को उपस्थित करने और उस पर बहस करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिला। यह उनके साथ न्याय नहीं हुआ।

"क्रिमिनल प्रोसीज़र कोड अभियुक्तों को विचार करने और बहस करने के लिए समय उपलब्ध कराने के लिए संकलित किया गया है। इस कारण दण्ड दोषपूर्ण है।"

दूसरे दिन रानाडे ने यह कहा कि मुकद्दमा पुलिस की छननी में से छनकर न आने के कारण असिद्ध मानना चाहिए अथवा इसे पुनः पुलिस के पास छान-बीन कर रिपोर्ट भेजने के लिए वापस कर दिया जाए तथा पुलिस को उस रिपोर्ट को प्रथम जाँच करनेवाले मैजिस्ट्रेट के पास भेजने का आदेश दिया जाए।

बैंच के एक जज ने पूछा, "क्या मिस्टर रानाडे का यह विचार है कि यदि मुकद्दमे को डेढ़ वर्ष के स्थान सात वर्ष में समाप्त किया जाता तो न्याय होता और अब अन्याय हुआ है?"

"हाँ, श्रीमान्! यह मेरी आपत्ति है। जितना अधिक विचार किया जाए, उतना ही अधिक ठीक निर्णय की सम्भावना है?"

इस पर एक अन्य न्यायाधीश ने पूछ लिया, "और यदि किसी मुकद्दमे का निर्णय चालीस-पचास वर्ष तक रोक रखा जाए तो अधिक न्याय होगा क्या?"

"निश्चित श्रीमान्! इसी कारण तो फाँसी के दण्ड के विरुद्ध जनमत बनता जाता है।"

इस पर सब हँसने लगे। मुख्य न्यायाधीश ने यह प्रश्न उपस्थित कर दिया, "क्या क्रिमिनल प्रोसीज़र कोड पीड़ितों की सहायता के लिए नहीं है?"

"है, परन्तु इस मुकद्दमे में पीड़ित बालकराम और उसके साथी हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और वे जिनकी हत्या हो चुकी है तथा उनके सम्बन्धी पीड़ित नहीं क्या?"

"पर वे तो मर चुके हैं और यदि कोई उनका सम्बन्धी इन हत्याओं से दुःखी है तो उसे अपने दुःख का उपाय करना चाहिए। एक बेकसूर को फाँसी पर लटका देने से उनके सम्बन्धी को क्या सुविधा और शान्ति मिलेगी? कुछ भी नहीं।"

इस पर चीफ जस्टिस ने कहा, "कमला अर्जी करनेवालों के दुःख का निवारण करने के लिए 'कोड' नहीं है क्या? इस अवस्था में प्रोसीज़र गौण नहीं हो जाता क्या?

"कमला की अर्जी में है कि उसे पेशा करने पर विवश करने के लिए, उसकी माता राधा देवी की हत्या की गई। तदनन्तर उसे दो वर्ष तक से ऊपर तक वेश्या का पेशा करने पर विवश किया गया। इस काल में वह अपराधी के विपरीत प्रमाण और उसे कोर्ट में लाने के लिए साधन बटोरती रही थी।

"क्या अभियुक्त के लिए यह समय पर्याप्त नहीं कि वह अपने कुकृत्यों को सुधारे?"

इस पर रानाडे ने कह दिया, "श्रीमान्! मैं अपराधी को सुधारने की बात नहीं कर रहा। मैं तो मुकद्दमे में लगे हुए वकीलों को विचार करने के अवसर की बात कर रहा हूँ। वकीलों को पर्याप्त समय नहीं मिला कि वे इस पर विचार कर सकें।"

तीसरे दिन भी सदाशिव रानाडे ने बहस जारी रखी। उस दिन मुकद्दमे की कार्यविधि के विषय में पूर्व हाईकोर्ट और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों को पढ़-पढ़कर सुनाता रहा।

इस सायंकाल चन्द्र ने पिताजी से कहा, "यही तो कानून में दोष है।"

मुकुटबिहारी का कहना था, "यह कानून नहीं है। यह कार्यविधि पर बहस हो रही है और दुर्भाग्य यह है कि जैसे पुरोहित हवनयज्ञ कराते हुए, सामग्री की इतनी चिन्ता नहीं करते जितनी चम्मच को पकड़ने की अथवा सामग्री को अग्नि में डालने की विधि की। वैसे ही ये वकील और न्यायाधीश कर रहे हैं।

"देखा नहीं कि यदि यजमान पूर्वाभिमुख बैठने के स्थान पश्चिम को मुख कर बैठ जाए तो आपत्ति की जाती है और घी-सामग्री पुरानी अथवा बदबूदार हो तो उसकी चिन्ता नहीं की जाती। बस, यही आज कोर्ट में करने को कहा जा रहा है।

"प्रतिपक्षी का वकील तीन दिन तक कोर्ट का समय इसी बात में व्यय करता रहा है और बताता रहा है कि पीनल कोड की कार्यवाही रोकी जा सकती है, यदि मुकद्दमे करने की विधि ठीक न हो तो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''वही बात हो गई है कि यदि चम्मच दाहिने हाथ में पकड़ने के स्थान, बाएँ हाथ में पकड़ घी की आहुति दी जाए तो यज्ञ भ्रष्ट हो गया है। भले ही यज्ञ का उद्देश्य और उसमें कर्म ठीक हो रहा हो।''

चन्द्र ने कहा, ''परन्तु मैं देखता हूँ कि यही बात अमेरिका और अन्य यूरोपियन देशों में हो रही है?''

''यह उन देशों के सर्वोच्च न्यायालयों की विचार-विधि में दोष है।

''जितना यत्न प्रतिपक्षी के वकील ने इस मुकद्दमे की कार्यविधि में दोष ढूँढने में किया है, उतना अपराध के प्रमाणों पर बहस करने में नहीं लगाया। कारण यह कि अपराध के प्रमाण तो अकाट्य हैं।''

''तो यह दोष कैसे दूर हो सकता है?''

''यह दोष कानून में अथवा कार्यविधि में इतना नहीं जितना न्यायकर्ता के विचार करने की सामर्थ्य में है। न्यायकर्ता स्वयं मुकद्दमे का अध्ययन करने के स्थान वकीलों की बहस पर निर्भर करते हैं।

''कार्यविधि निर्णय करने के लिए नहीं होती, वरन् ठीक निर्णय पर पहुँचने का साधन होती है। इस बात पर कोई बल नहीं देता।''

पाँचवें दिन माथुर साहब को पुनरावलोकन करने की याचना करनेवाले पक्ष का उत्तर देना पड़ा।

माथुर का कहना था, 'प्रोसीज़र' (कार्यविधि) न्यायकर्ताओं द्वारा निश्चय करने की है। जब न्यायाधीशों ने मुकद्दमे की कार्यविधि पर आपत्तियाँ स्वीकार नहीं कीं तो उनकी इस समझ को दोषपूर्ण नहीं कहा जा सकता।

''मैं समझता हूँ कि प्रतिपक्षी के वकीलों ने कार्यविधि पर बल दिया है। मुकद्दमे के दिए प्रमाणों के विषय में तो एक दिन भी बहस के लिए नहीं लगा।''

इस पर एक न्यायमूर्ति ने पूछ लिया, ''क्या निम्न कोर्ट ने यदि कोई भूल की हो तो उस पर विचार करने का हमारा अधिकार नहीं है?''

''श्रीमान्!'' माथुर का कहना था, ''दोष के प्रमाणों को अस्वीकार करने अथवा स्वीकार करने अथवा दोष पर दण्ड-विधान की उचित अथवा अनुचित धारा का प्रयोग करने के विषय पर तो पुनरावलोकन होना ही चाहिए। परन्तु उस कार्यविधि पर, जिससे वह मुकद्दमे अन्तिम निर्णय पर पहुँचा है, बहस जल मथने के समान होगी।

''कार्यविधि न्यायाधीशों के पथ-प्रदर्शन के लिए होती है, न कि वकीलों को मुकद्दमा तैयार करने में अधिक समय देने के लिए। यदि कार्यविधि सरल और शीघ्र निर्णय तक पहुँचानेवाली हो तो वकील एक समय में, एक से अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकद्दमे न लें और एक ही मुकद्दमा पर ध्यान केन्द्रित कर शीघ्र निर्णय पर पहुँचने के लिए यत्न करें।

"प्रतिपक्षी के वकील की पिछले चार दिन की पूर्ण बहस का यह निष्कर्ष है कि नीचे की कचहरियों में मुकद्दमे को शीघ्र समाप्त करने से उनको एक ही साथ कई-कई मुकद्दमे हाथ में लेने से रोका गया है। कार्यविधि की धाराओं का यह उद्देश्य नहीं है। यह तो इस प्रकार है कि अभियुक्त के विषय में शीघ्रातिशीघ्र निर्णय पर पहुँचने में सहायता के लिए बनाए गये हैं।

"यह सब बहस अभियुक्त के वकीलों को एक ही समय में कई-कई मुकद्दमे लेकर अपनी आय बढ़ाने के लिए की गई है।

"मेरा केवल मात्र यह कहना है कि नीचे की कचहरियों के न्यायाधीशों में कार्यविधि को किस प्रकार और कितना स्वीकार किया है, यह उनकी सूझ-बूझ के लिए ही था।

"मैं एक उदाहरण से अपनी बात स्पष्ट करना चाहूँगा।

"मुकद्दमा पुलिस की छननी से छनकर नहीं आया। परन्तु क्या किसी भी नागरिक को न्यायालय तक पहुँचने के लिए पुलिस ही एक मार्ग है? मेरे मुकाबले के विद्वान् वकील महोदय यह कह रहे हैं कि किसी नागरिक को कोर्ट की शरण में पहुँचने का अधिकार केवल पुलिस के द्वारा ही है।

"सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों को किसी भी विषय पर जाँच-पड़ताल अपने स्तर पर लेने का अधिकार नहीं है। क्या यह जनता और न्यायालयों के अधिकारों को निःशेष करने के लिए नहीं है? हाईकोर्ट ने जब देखा कि दिल्ली जैसे नगर में पुलिस की नाक के नीचे वर्षों से ब्रोदल चल रहे का आरोप है तो निःसन्देह पुलिस की देख-रेख में त्रुटि है।

"जब दूसरे प्रमाणों से वह अपराध प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है और वर्षों से वह पुलिस की दृष्टि में नहीं आया तो यह पुलिस का दोष है, न कि न्यायालय का कि उन्होंने पुलिस की सहायता के बिना अपराध का होना देख लिया है।

"सरकार ने पुलिस अपनी सहायता के लिए नियुक्त की है। यदि पुलिस किसी नागरिक की सहायता करने में रुचि नहीं रखती तो क्या वह नागरिक अपनी सहायता स्वयं नहीं कर सकता?

"तनिक कमला देवी के बयान और उस बयान पर नीचे की कचहरी में वकीलों की बहस पर ध्यान दिया जाए तो पता चलेगा कि उसने दो वर्ष की सतत खोज के उपरान्त अपनी माँ की हत्या के विषय में अपराधियों का पता किया है और उनके विपरीत प्रमाण ढूँढे हैं। तो क्या यह अनुचित प्रयास है? पुलिस जहाँ असफल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही, वहाँ कमला सफल हो गई तो यह किसी प्रकार का अपराध हो गया ?

''इसी प्रकार प्रतिपक्ष के वकीलों की अन्य बातें समझी जा सकती हैं ?

''प्रोसीज़र गौण है और दण्ड विधान मुख्य है। कार्यविधि के विषय में मुकद्दमा करनेवाले न्यायमूर्ति को निर्णय करने की स्वीकृति होनी चाहिए।

''देखने की बात यह है कि अपनी कार्यविधि से न्यायमूर्ति ने अपराध के किसी प्रमाण का उल्लंघन किया है ?

''इस कारण मैं अपराध और दण्ड-विधान की माँग पर ही प्रतिष्ठित न्यायमूर्तियों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।''

इस प्रकार केवल दो घंटा-भर कार्यविधि पर बहस कर माथुर साहब ने मुकद्दमे के निर्णयों पर पहुँचने के लिए घटनाओं और उनके प्रमाण पर चार दिन तक बहस की।

माथुर साहब का अन्तिम कथन यह था, ''मेरी यह प्रार्थना है कि यदि दो शब्द सर्वोच्च न्यायालय मुकद्दमे में कार्यविधि पर बताए और उनसे अधिक दण्ड-विधान की महत्ता को स्पष्ट करें तो बहुत उपकार का कार्य होगा। मुकद्दमे शीघ्र ही समाप्त होंगे। इससे न्यायालयों का और वकीलों का कार्य सरल हो जाएगा।

''मैं कार्यविधि को रद्द करने को नहीं कह रहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि न्यायकर्त्ता को यह समझने का अधिकार होना चाहिए कि कार्यविधि का कहाँ और कितना पालन किया जाए।''

इस प्रकार बहस पुनः रानाडे के प्रति उत्तर के उपरान्त समाप्त हुई और सर्वोच्च न्यायालय ने एक महीने के उपरान्त निर्णय दे दिया।

इस निर्णय घोषित होने से पूर्व ही चन्द्रमोहन और शोभा अमेरिका लौट गए थे।

सुप्रीमकोर्ट ने बालकराम की मृत्युदण्ड की सजा को घटाकर आजन्म कैद और उसके साथियों की आजन्म कैद की सजा को घटाकर सात-सात वर्ष कर दिया। एक कृष्णचन्द्र, जिसने राधा को विष दिया था, उसे मृत्युदण्ड ही दिया गया।

इस मुकद्दमे में पुलिस, रामलाल तथा एस०एच०एच० में यह समझौता चालू रहा था कि पुलिस इस मुकद्दमे में सक्रिय भाग नहीं लेगी और रामलाल इत्यादि पुलिस को इस मुकद्दमे में लिप्त नहीं करेंगे।

जिस दिन निर्णय समाचार-पत्रों में छपा और माथुर तथा स्वरूपरानी ने पढ़ा तो स्वरूप रानी विस्मय में कहने लगी, ''चन्द्र ठीक ही कहता था कि मुकद्दमे का यही निर्णय होगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, एक बात नहीं हुई।" मुकुटबिहारी का कहना था, "दण्ड-विधान और कार्यविधि के नियमों में महत्ता किसको है, सर्वोच्च न्यायालय ने इस पर कुछ नहीं कहा। मैं समझता हूँ कि इससे भविष्य में मुकद्दमों को और न्याय को लक्ष्य तक पहुँचने में बाधाएँ डालनेवाले वकील सफल हो जाया करेंगे।

"परिणाम यह होगा कि वकीलों की भरमार होगी, मुकद्दमों की संख्या बढ़ेगी और अभियुक्त बिना अपराध सिद्ध हुए दण्ड की अवधि से अधिक मुकद्दमे के निर्णय की प्रतीक्षा में जेलों में सड़ा करेंगे।

"प्रोसीज़र, मेरा मतलब है कार्यविधि, सरलता और सुगमता की ओर जाने के स्थान विषम होती जाएगी और न्यायाधीशों को बरगलाने में वकीलों को सुविधा मिलेगी।"

:: 4 ::

इस बार चन्द्रमोहन अमेरिका में एक स्थाई कार्य पर नियुक्त होकर गया था। स्वरूपरानी विस्मय करती थी कि यह कम्युनिस्ट विचारों से प्रभावित आवारागर्दी करनेवाला लड़का कैसे एक सफल प्राध्यापक बन गया है।

एक रविवार रामलाल के घर पर मध्याह्न के समय बात हो गई।

यह चन्द्रमोहन के अमेरिका जाने के पाँच वर्ष उपरान्त की बात है। पहली बार चन्द्रमोहन 'डी ट्रायट' विश्वविद्यालय में सन् 1955 में गया था। फिर सन् 1957 में विवाह कर पुनः अमेरिका में फिलाडैल्फिया विश्वविद्यालय में नियुक्त होकर गया था। अब सन् 1962 चल रहा था।

इस बीच एक बार शोभा बड़े लड़के राम के प्रसव के समय दिल्ली आई थी, परन्तु इसको भी चार वर्ष व्यतीत हो चुके थे।

एक दिन मुकुटबिहारी माथुर ने रामलाल को टेलीफोन किया। उसने कहा कि चन्द्रमोहन का 'केबल' आया है कि वह आगामी शनिवार 'पैन एयरवेज़' की फ्लाइट से दिल्ली पहुँच रहा है।

"मैं समझता हूँ," रामलाल ने कहा था, "इससे शोभा की माँ को बहुत प्रसन्नता होगी।"

"और," माथुर ने कह दिया, "स्वरूपरानी इस प्रसन्नता का प्रभाव शोभा की माँ के मुख पर देखने के लिए स्वयं वहाँ आना चाहती है।"

"तब यह समाचार यह स्वयं ही रानी को दें तो ठीक है।"

"हम दोनों मध्याह्न का भोजन आपके यहाँ लेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''तब ठीक है। शोभा के आ जाने का समाचार मैं तब तक नहीं दूँगा। किस समय हम आपके आने की प्रतीक्षा करें ?''

''मैं और स्वरूपरानी मध्याह्न साढ़े ग्यारह बजे आएँगे। भोजन आपके यहाँ लेंगे और फिर तीन बजे तक हम आपके यहाँ रहेंगे।''

माथुर और उनकी पत्नी स्वरूपरानी रामलाल के घर पर आए तो वार्त्तालाप चन्द्र की उन्नति पर होने लगा। स्वरूपरानी ने यह प्रश्न कर दिया, ''मैं सदा विस्मय किया करती हूँ कि यह आवारा लड़का जो मज़दूरों की हड़तालें और उनमें दंगे-फसाद कराने में लीन रहता था, कैसे समाज का एक सफल-उन्नत घटक बन एक उपकारी कार्य करने लगा है।''

रामलाल ने मुस्कराते हुए कहा, ''मैं यह बीज और भूमि की ही करामात समझता हूँ।

''मैं जब पाकिस्तान जाने लगा था तो यह लड़का कलकत्ते में एक कारखाने के कर्मचारियों की हड़ताल कराने में लीन था।

''हड़ताल के विरोधी कर्मचारी भी थे। इस कारण यह उन पठानों की बस्ती में कलकत्ता में दंगा करने के लिए मुसलमानों से सहायता लेने पहुँचा था। तब तक यह मुझे जानता नहीं था और मैंने भेष बदला हुआ था। इसने प्रत्येक पठान को दंगा-फसाद करने के लिए दस-दस रुपए नित्य देने का वचन दिया था।

''मैं समझता हूँ कि बीज कुछ ऐसा था कि उससे वृक्ष और फल ठीक ही प्रकट हुए हैं और उसकी योग्यता से अन्य लोग लाभ उठा रहे थे।''

मुकुटबिहारी का कहना था; ''मैं इसमें भूमि अथवा बीज की इतनी बात नहीं मानता, जितनी वृक्ष पर शिक्षा के प्रभाव की बात मानता हूँ।

''वास्तव में चन्द्र के मन पर उसकी बहन की मृत्यु का बहुत गम्भीर प्रभाव हुआ था। इसकी एक बहन थी नीरा। बहुत ही समझदार और पढ़ाई में बहुत तेज थी। एम०ए० पास कर वह एम०एड० की परीक्षा में प्रथम रही तो स्कूलों की इन्स्पेक्शन का काम करने पर लग गई।

''यूरोपियन उपन्यास पढ़ती-पढ़ती वह कामनाओं का शिकार बन गई। उसका सम्पर्क सेना के एक डॉक्टर से हुआ तो दोनों ने विवाह के बिना सम्बन्ध बना लिया।

''डॉक्टर में और नीरा में एक बात पर मतभेद हो गया। वह था सन्तान का विषय। नीरा सन्तान नहीं चाहती थी और डॉक्टर इसकी इच्छा करता था। नीरा यत्न करती रहती कि गर्भ स्थित न हो, डॉक्टर को इसकी चिन्ता नहीं थी।

''घटनावश गर्भ स्थित हुआ तो नीरा गर्भपात के लिए कहने लगी। डॉक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मना करने लगा। बस, इस पर दोनों में विषमता उत्पन्न हो गई। नीरा ने किसी नालायक डॉक्टर से गर्भपात कराने का यत्न किया और चन्द्र उसमें सहायक हो गया।

''ऑपरेशन-टेबल पर ही नीरा की मृत्यु हो गई। इस पर चन्द्र मुझसे सहायता लेने आया। वह चाहता था कि मैं कुछ धन दूँ जिससे नीरा का दाह-संस्कार झूठे नाम पर करा दिया जाए।

''उसकी इच्छा के विपरीत मैंने पुलिस में रिपोर्ट करनी चाही, परन्तु वह मेरे पाँव पकड़ मुझे रोकने लगा। स्वरूपरानी के आग्रह पर मैंने पुलिस में रिपोर्ट तो नहीं की और डॉक्टर को, जिसने ऑपरेशन किया था, पुलिस को रिश्वत दे शरीर का दाह-संस्कार कराने का अवसर दे दिया।

''मुझे अपनी बदनामी का डर नहीं था। मैं चाहता था कि अपराधियों को दण्ड मिले, परन्तु चन्द्र बोला, ''अपराधी मैं भी हूँ और इसमें कम-से-कम सात वर्ष का कठोर दण्ड हो सकता है।''

'' 'और ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए?' मेरा प्रश्न था, 'तुमने यदि अपराध किया है तो फल क्यों नहीं भोगोगे?'

''उसका कहना था, 'मैं आपका इकलौता बेटा हूँ?'

''मैंने कहा, 'परन्तु ईश्वरीय नियम अटल हैं। उनका पालन होगा।'

'ये टल नहीं सकते क्या?' उसका प्रश्न था।

''मेरा उत्तर था, 'प्रायश्चित्त और तपस्या से ये टल सकते हैं।'

''इस पर स्वरूपरानी ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'लड़के को प्रायश्चित्त और तपस्या का अवसर देना चाहिए?'

''उसकी माँ ने सिफारिश की और मैं मान गया। मैंने पुलिस में रिपोर्ट नहीं की।

''मैं समझता हूँ कि यह माँ की प्रेरणा का ही फल है कि वह 'लॉ-कॉलेज' में भरती हुआ और फिर मुझसे 'न्याय' पढ़ने के लिए प्रातः चार बजे उठकर आने लगा।

''बस, यह प्रायश्चित्त और तपस्या हो गई, जिसने उसके पुराने पापों के बोझे को हल्का किया है और वह इस समय अपने व्यवसाय में दिनानुदिन उन्नति कर रहा है।''

''हाँ, यह तो है। पाप-कर्म का फल भोगना ही पड़ता है।'' रामलाल ने बता दिया, ''स्वेच्छा से फल भोगने को प्रायश्चित्त कहते हैं।

''मैंने भी एक अनिच्छित बात की थी। इस मेरी दुकान और मकान का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी एक मुसलमान था जो मैं समझता हूँ कि सन् 1947 के दिल्ली के हिन्दू-मुसलमान झगड़े में मारा गया था। किसी पूर्वजन्म के कर्मफल से अथवा किसी वर्तमान के कर्मफल से मैं इस दुकान पर अधिकार पा गया।

"एक दिन जब हम पक्के रूप में यहाँ के मालिक घोषित हो गए तो रानी ने मुझसे कहा, "यह तो ठीक है कि हम लाहौर में बहुत बड़ी जायदाद छोड़ आए हैं, परन्तु वह अपने पूर्वजन्म के कर्मों का फल का ही रूप था, यह कैसे पता चले?"

"मैं भी विचार करने लगा कि दोनों कर्मों में सम्बन्ध कृत्रिम नहीं है क्या? मैं अपने पाप-कर्म को छुपाने के लिए ही यह बहाना तो नहीं बना रहा कि दोनों कामों में सम्बन्ध है। मेरे लाहौर की जायदाद के छिन जाने में और इस जायदाद को लेने में कोई सम्बन्ध प्रतीत नहीं हुआ।

"जब हम दोनों में कोई सम्बन्ध नहीं जान सके तो मुझे प्रायश्चित्त और तपस्या की बात सूझी।

"मैंने कहा, 'रानी! कह नहीं सकता कि मैंने पाप नहीं किया। इस कारण मैं समझता हूँ कि हमें अपने कर्म को अन्याययुक्त मान प्रायश्चित्त तथा तपस्या करनी चाहिए।'

"इसने पूछा, 'क्या करना होगा इसके लिए?'

"मैंने बताया, 'अपनी पूर्ण आय का तीन-चौथाई भाग लोकसेवा के लिए लगा दूँगा।'

"बस, उसी दिन से प्रतिमास मैं अपनी आय का अनुमान लगा खर्च इत्यादि निकालकर जो बचता है, उसका तीन-चौथाई पृथक् रख देता हूँ।

"उसमें से ही मैंने रानी को छुड़ाने के लिए व्यय किया था। उसी में से मैंने गोकुलचन्द की परवरिश और उसके जीवन-भर का प्रबन्ध कर दिया है। उसी धन में से एस०एच०एच० संस्था पर पचास हज़ार रुपया व्यय कर बालकराम को दण्ड दिलवाया है।

"ईश्वर की कृपा से अब फिर मेरे पास इस खाते में एक लाख के लगभग जमा हो गया है। हमने उसमें से एक पैसा भी अपने ऊपर व्यय न करने का प्रण किया हुआ है।

"हम, मेरा मतलब है—मैं और रानी, यह समझते हैं कि अपनी धोखा-धड़ी का हम प्रायश्चित्त कर रहे हैं। हम इसकी आय का केवल एक चौथाई भाग ही अपने पर व्यय करते हैं। हमारा विचार है कि इतना तो हमारे परिश्रम का मूल्य है ही।"

"बस, मैं यही कह रहा था," माथुर साहब का कहना था, "चन्द्र ने अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व पाप-कर्मों का प्रायश्चित्त किया तो उसकी स्वाभाविक प्रतिभा जाग पड़ी और उसका फल ही है कि एक विदेश में सेवा करते हुए वह अपना नाम पैदा कर सका है।''

रानी ने बात बदल दी। उसने कहा, ''मेरे मन में एक विशेष प्रकार की हलचल मच रही है। मैं शोभा के बच्चे को देखने के लिए एक विशेष प्रकार की उत्सुकता अनुभव कर रही हूँ। ऐसा क्यों है, कह नहीं सकंती?''

''यह शरीर के सम्बन्ध के कारण है। मन शरीर का एक अंग है और शरीर का एक अंग ही तो शरीर को मिलने आ रहा है। मन मन से मिलकर पूर्व की स्मृतियों का स्मरण कर आह्लादित होता है।''

''तो क्या आत्मा का इससे सम्बन्ध नहीं?'' रानी का प्रश्न था।

''आत्मा का सम्बन्ध तो सदैव रहता है। परन्तु उसका सम्बन्ध केवल संस्कारों तक ही सीमित रहता है। इच्छा, सुख, दु:ख जीवात्मा को होगा, परन्तु उनका स्वरूप शोभा और शोभा के बच्चों के प्रति नहीं, वरन् उनसे पृथक् है।''

इस प्रकार भोजन करते हुए स्वरूपरानी ने एक अन्य बात का कथन कर दिया। उसने कहा, ''कमला की माँ की हत्या में मोतीराम का भी सहयोग तो था। परन्तु चन्द्र के पिता ने मोतीराम का नाम उन लोगों में से निकाल दिया था, जिन्होंने राधा की हत्या को छुपाने का यत्न किया था।''

''हाँ! तो वकील साहब!'' रानी ने पूछ लिया, ''कमला की और उसकी साथिनों का क्या हुआ?''

''मैंने उनका प्रबन्ध स्त्री-निकेतन की प्रबन्धक कमेटी से करा दिया था और उनमें से छ:-सात के विषय में तो ज्ञान है कि वे अब विवाह कर सुखी जीवन व्यतीत कर रही हैं। कमला का विवाह मेरे मुंशी से हो गया था और उसके दो बच्चे हैं।

''वह कभी-कभी स्वरूपरानी से मिलने आया करती है।''

रामलाल ने बता दिया, ''उसमें मन की नेक और बुद्धि की सुलझी हुई अवस्था का ही कारण है कि उसने लाला को हत्याओं का दण्ड दिलाने का यत्न किया था। इसमें कारण यह भी था कि वह पता कर चुकी थी कि हत्या बालकराम के धन और रसूख से हुई थी।''

''छोड़ो इस बात को।'' माथुर साहब ने बात बदलते हुए कहा, ''मैं विस्मय करता हूँ कि चन्द्र का एकाएक भारत आने का क्यों विचार बना है। अभी पिछले मास ही तो उसने लिखा था कि वह परिवार सहित आएगा तो तीस हज़ार हवाई जहाज का आने-जाने का खर्च हो जाएगा। इतने से वह कुछ उपकारी कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकता है।

"इस पर मैंने उसे पूछा था कि उपकारी कार्य के लिए उसने पृथक् फण्ड बनाया हुआ है क्या, और यदि बनाया हुआ है तो अब उसमें कितना जमा कर चुका है?

"परन्तु उसका उत्तर आया है कि वह भारत आ रहा है।"

इस पर स्वरूपरानी ने कह दिया, "ऐसा प्रतीत होता है कि शोभा का माँ के प्रति स्नेह सफल सिद्ध हुआ है?"

"अभिप्राय यह कि शोभा पति को अपने साथ ला रही है।"

शनिवार के दिन प्रातः पाँच बजे जब चन्द्र परिवार सहित दिल्ली हवाई पत्तन पर पहुँचा तो दोनों परिवार उसके स्वागत के लिए वहाँ पहुँचे हुए थे।

शोभा का बड़ा लड़का राम इस समय चार वर्ष का था। उसने बड़े लोगों के बीच में अपने को खड़े देखा तो माँ से पूछ लिया, "मम्मी! हू इज़ हू?"

रामलाल और चन्द्र उस समय लग्गेज चैक करा रहे थे। शोभा अपने बच्चों सहित पहले ही बाहर आ चुकी थी।

राम की बात सुन माथुर ने हँसते हुए कहा, "हैव पेशंस! यू शैल नो वैन वी रीच होम।"

"शोभा!" माथुर ने उसकी माँ से पूछ लिया, "तुमने इसे हिन्दी में बात करना नहीं सिखाया?"

"पिताजी! उस देश में तो समय ही नहीं मिलता कि माता-पिता कुछ भी बच्चों को सिखा सकें।"

"और तुम दिन-भर क्या करती रहती थीं?"

"विश्वविद्यालय में इण्डियन म्यूज़िक सिखाने का काम करने लगी हूँ।"

"ओह! तो तुम सिखाने योग्य जानती हो?"

"यही तो बात है। सिखाती थी और नित्य चार-पाँच घण्टे स्वाध्याय से सीखती भी थी। इससे बच्चों के साथ 'रुटीन' सम्पर्क ही होता था।"

"क्या वेतन मिलता था?"

"वहाँ एक जूनियर प्रोफेसर का वेतन पाँच सौ डॉलर प्रति सप्ताह है। वही मुझे मिलता था।"

"तब तो बहुत धन पैदा कर लिया होगा?"

शोभा ने मुस्कराते हुए कहा, "राम के पिता तो यहाँ आने के लिए तैयार नहीं होते थे। मैंने जब यह प्रस्ताव किया कि आने-जाने का हवाई जहाज का भाड़ा मैं दूँगी तब वह तैयार हुए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत कंजूस हो गया है चन्द्र?"

"नहीं, पिताजी! कंजूस नहीं। उन्होंने वहाँ एक अच्छा खुला मकान बना लिया है। वह विश्वविद्यालय से बीस मील के अन्तर पर है। वहाँ इन्होंने एक बहुत ही अच्छा पुस्तकालय संकलित कर लिया है। इसके अतिरिक्त घर का सब खर्चा वे ही देते हैं। मैं तो बस कपड़े और अपनी मोटर का खर्च ही देती थी।"

"और तुमने भी मोटर रखी हुई है?"

"हाँ, पिताजी! राम के पिता की अपनी मोटर है और मेरी अपनी है।"

"और तुम्हारा बैंक-बैलेंस कितना है?" स्वरूपरानी ने पूछ लिया।

"तो सब कुछ अभी यहाँ ही बता दूँ?"

सब हँसने लगे। रानी ने कहा, "और यदि वह गिनती-मिनती करनी है तो घर चलकर भी बता सकती हो?"

इस पर फिर माथुर और स्वरूपरानी हँसने लगे।

शोभा ने बता दिया, "बहुत गिनती-मिनती की आवश्यकता नहीं। हवाई जहाज का भाड़ा दे, मैंने बैंक की पासबुक ठीक करवाई थी। उसमें पचास हज़ार डॉलर अभी जमा हैं। भाड़े के मुझे तीन हज़ार तीन सौ डॉलर देने पड़े हैं। शेष मैंने जमा कराया हुआ है। कुछ के ट्रैवलर्ज़ चेक साथ लाई हूँ।"

"अभिप्राय यह है," माथुर ने कह दिया, "कि तुमको पाँच वर्ष में एक घण्टा नित्य भी इन बच्चों से बातचीत करने को नहीं मिला?"

"हाँ, पिताजी! मैं वहाँ कुछ और भी करती रही हूँ।"

"क्या?"

"घर चलकर बताऊँगी।"

इस समय रामलाल और चन्द्र तीन बड़े सूकटेस ट्रॉली पर रखवाये हुए लेकर आ गए।

सब बाहर पहुँचे तो रामलाल तथा महावीर गाड़ियाँ ले आए।

:: 5 ::

"पिताजी!" चन्द्रमोहन अपने पिता को प्रातःकाल पूजागृह में बैठा हुआ बता रहा था, "मैंने वहाँ से चलने के पहले एक पत्र भारत के प्रधानमंत्री को लिखा था।

"उसमें अपना संक्षिप्त परिचय देकर देश के विषय में कुछ रहस्योद्घाटन करने की बात मैंने कही थी। मैंने यह भी कहा था कि मैं मौखिक बातचीत करने के लिए समय चाहता हूँ।

"मेरे पत्र का उत्तर मुझे मिला है और मुझे कहा गया है कि आज दिन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक बारह बजे मैं 'तीनमूर्ति' भवन के द्वार पर अपना नाम बताऊँगा तो मुझे भीतर जाने की स्वीकृति मिल जाएगी और प्रधानमंत्री मुझे एक घण्टे का समय दे सकेंगे।''

''तो तुम आज मिलने जा रहे हो?''

''जी!''

''तो इस राजसी कार्य के लिए ही तुम भारत आए हो?''

''राजसी नहीं पिताजी! अपने देश के कार्य के लिए। मैं अभी तक भारतीय नागरिक हूँ।''

''ओह! ठीक। मैं भूल गया था। तो अपनी देश-भक्ति का प्रदर्शन करने के लिए तुमने पत्नी का तीन हज़ार डॉलर व्यय करवा दिया है।'' अब तक सबको पता चल चुका था कि आने-जाने का खर्चा शोभा ने अपने पास से किया है।

बात की इस प्रतिक्रिया पर चन्द्र को विस्मय हुआ और वह पिता का मुख देखने लगा।

स्वरूपरानी इस समय पति और पुत्र के लिए दूध लेकर आई हुई थी। उसने गिलास सामने चौकी पर रख दिए और पति की इस अन्तिम बात पुत्र को कहते सुन बोल उठी, ''परन्तु शोभा तो कहती है कि वह भारत आने का विचार एक वर्ष से कर रही थी और इसके लिए आग्रह कर रही थी। चन्द्र अवकाश लेकर आने के लिए तैयार होता ही नहीं था।

''शोभा यह बता रही थी कि उसने ही जाने के दस दिन पूर्व इसे बताया था कि इसने पूर्ण परिवार के लिए दिल्ली के लिए 'पैसेज' बुक करवाया है। अब वह विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार छः मास का अवकाश लेकर दस जून को यहाँ से चल देंगे।

''विवश चन्द्र को अपना वहाँ का काम समेट, भारत आना पड़ा है।''

''और यह कह रहा है कि वह यहाँ के प्रधानमंत्री से आज देश के विषय में बात करने जा रहा है।''

''हाँ, माँ!'' चन्द्र ने वार्त्तालाप में हस्ताक्षेप करते हुए कहा, ''शोभा के हवाई जहाज पर सीटें बुक कराने से पूर्व ही मैं छुट्टी ले, भारत आने का विचार कर रहा था। वहाँ एक विश्वस्त स्रोत से कुछ पता चला था। वह मैं अपने देश के प्रधानमंत्री को बताना चाहता था।

''परन्तु जब शोभा ने सीटों के आरक्षण की बात कही तो मैं चुप कर रहा। हाँ, जहाँ मैं एक मास की छुट्टी का विचार कर रहा था, वहाँ शोभा के कहने पर छः मास का अवकाश लेने पर तैयार हो गया।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो तुम्हें शोभा का तीन हज़ार डॉलर उसे वापस देना चाहिए?" पिता का कहना था।

"किसलिए?"

"इसलिए कि पति को पत्नी की कमाई में से कुछ नहीं लेना चाहिए। यह हमारी भारतीय-प्रथा नहीं है।"

चन्द्र ने एक क्षण तक ही विचार किया और कह दिया, "आपकी व्यवस्था को मान, उसे इतने धन का चेक मैं दे दूँगा। परन्तु पिताजी! मैंने जो बात कही है, उसके विषय में आपने कुछ नहीं पूछा?"

"तो तुमने मुझसे कुछ पूछने के लिए बताया है? मैंने सुना नहीं कि तुमने क्या पूछा है। तुमने तो केवल यह सूचना दी है कि तुम भारत के प्रधानमंत्री से मिलने जा रहे हो और मैंने उस सूचना पर ही यहाँ आने के खर्च की बात पूछ ली थी।"

"अब तो आपका पता लग गया है कि मैं प्रधानमंत्री जी से मिलने जा रहा हूँ।"

"ठीक है! जब समय निश्चय हो गया है तो जाना ही चाहिए। परन्तु मैं बता दूँ, यह व्यर्थ होगा।"

"किस कारण इसे व्यर्थ कहते हैं?"

"इस कारण कि तुम बिन बुलाए बात करने जा रहे हो। बड़े पदों पर आसीन व्यक्तियों के समीप बिन बुलाये नहीं जाना चाहिए। इसमें मान-हानि होती है।"

"परन्तु एक डैमोक्रेटिक राज्य में तो बड़ा-छोटा कोई नहीं होता। मैंने वहाँ प्रेज़िडैण्ट कैनेडी को लिखा था कि मैं उनसे पन्द्रह-बीस मिनट के लिए मिलने की इच्छा करता हूँ।

"इस पर उसने अपना एक 'एडि' भेज दिया, जो मुझसे बात का विषय पूछ गया और फिर समय नियत हुआ। मैंने पन्द्रह मिनट के लिए समय माँगा था और जब बात होने लगी तो एक घण्टा-भर होती रही। बात समाप्त करते हुए प्रेज़िडैण्ट ने निश्चित से अधिक मेरा समय लेने के लिए क्षमा माँगी। उसने यह भी कहा कि मेरी बात उसे अत्यन्त रुचिकर प्रतीत हुई है और उसे इस भेंट से अति प्रसन्नता हुई है।

"इसके उपरान्त एक दिन प्रेज़िडैण्ट का एक पत्र आया जिसमें उसने मुझसे इक्कीस प्रश्न पूछे थे। मैंने उत्तर लिख भेजे हैं।"

"यह ठीक है चन्द्र!" मुकुटबिहारी ने कहा, "परन्तु वह एक डैमोक्रेटिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि-विधानवाले देश का प्रधान है और यहाँ प्रधानमंत्री एक समाजवादी देश का सर्वोच्च अधिकारी है।''

''तो समाजवाद और प्रजातन्त्रवाद परस्पर विरोधी विधाएँ हैं क्या?''

''हाँ! यहाँ की विशेषता यह है कि यहाँ दोनों की खिचड़ी पकाई जा रही है और वह ठीक बन नहीं रही।

''देखो, तुमने कैनेडी से भेंट की बात बताई है। इससे यह प्रतीत होता है कि वह जब तुम्हारी बात सुन रहा था तो उसका पूर्ण ध्यान तुम्हारी बात की ओर था और वह अन्य सब कुछ विस्मरण कर चुका था। इसी कारण उसने तुमसे पुन: प्रश्न किए थे।

''परन्तु यहाँ का वातावरण भिन्न है। भेंट की स्वीकृति तो एक प्रजातांत्रिक देश के प्रधानमंत्री ने दी है, परन्तु वार्त्तालाप एक समाजवादी देश का सर्वोच्च अधिकारी करेगा।''

चन्द्र इसका अर्थ समझने के लिए विचार-मग्न हो गया। इस समय पिता ने घड़ी में समय देख कहा, ''मेरे मुविक्किलों से मिलने का समय हो रहा है। मैं समझता हूँ कि इस विषय पर चाहोगे तो पुन: किसी समय बात करूँगा।''

चन्द्र अपने कमरे में गया तो शोभा दोनों बच्चों को स्नान करा, वस्त्र पहिना रही थी।

''राम!'' चन्द्र ने पूछ लिया, ''तुम स्वयं वस्त्र नहीं पहन सकते क्या?''

''पापा! मम्मी वाण्ट्स इन हर वे।''

''और तुम हिन्दुस्तानी में बात करनी नहीं सीखोगे?''

''पापा! ट्राइंग!''

इस पर शोभा ने कह दिया, ''मैं इसे अपनी माताजी के घर में कुछ दिन के लिए छोड़ आऊँगी तो यह हिन्दी में बात करना सीख जाएगा।''

चन्द्र ने बात बन्द कर दी। वह साईड-टेबल पर पड़े अपने ब्रीफकेस को खोल उसमें से अमेरिकन नेशनल बैंक की चेक-बुक निकाल, तीन हज़ार तीन सौ डॉलर का एक चेक काट, उस पर शोभा रानी का नाम लिखकर बोला, ''पिताजी ने आज्ञा दी है कि यह तुम्हें दे दूँ।''

इस समय तक शोभा बच्चों को वस्त्र पहिना कर तैयार कर चुकी थी और उनको कह रही थी कि घंटी बजेगी तो अल्पाहार के लिए चलेंगे!''

स्वयं वह पति के पास आ पूछने लगी, ''यह किस उपलक्ष्य में है?''

''तुमने यहाँ जो आने का हवाई जहाज का भाड़ा दिया है, यह वह रकम है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह क्यों?"

"पिताजी का कहना है कि यह मुझे तुमको देनी चाहिए। मैं अपने माता-पिता से मिलने आया हूँ। साथ ही मैं अपने एक अन्य काम से आया हूँ। इस कारण यहाँ आने-जाने का खर्चा मुझे देना चाहिए।"

"तो रखिये! यह मैं उनके सामने ही लूँगी। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि वे वृद्धता को प्राप्त हो रहे हैं। इस कारण उनको बात समझ नहीं आ रही।"

चन्द्र हँस पड़ा और बोला, "तब ठीक है। आज रात के खाने के समय एक अच्छी-खासी डिबेट हो जाएगी। मुझे सुनकर प्रसन्नता होगी।"

"हाँ! होनी ही चाहिए?"

बात समाप्त हो गई।

ग्यारह बजे चन्द्रमोहन ने अपना कार्ड तीन मूर्ति द्वार पर दिखाया तो उसे प्रधानमंत्री के कार्यालय का एक कर्मचारी अपने साथ एक बड़े से कमरे में ले गया। कमरे में प्रधानमंत्री अकेले बैठे थे। प्रधानमन्त्री ने चन्द्र को बैठने का संकेत कर दिया।

बातचीत पन्द्रह मिनट से अधिक नहीं हो सकी और वह भी उस विषय पर नहीं हुई जिसके लिए चन्द्रमोहन इतनी दूर से चलकर आया था। एकाएक प्रधानमंत्री उठे और वार्त्तालाप समाप्त हो गया। चन्द्र को तीन मूर्ति भवन से बाहर पहुँचा दिया गया।

चन्द्र को अपने कुछ मित्रों से मिलना था। इस कारण उसने टैक्सी पकड़ी और उस पर घूमने लगा।

वह घर मध्याह्नोत्तर चाय के समय ही पहुँच सका। मुकुटबिहारी माथुर चाय लेने के लिए आया हुआ था। शोभा भी उस दिन माँ के घर पर रही थी और चाय के कुछ समय पहले आई थी।

चन्द्र ने पत्नी से पूछा, "बच्चे कहाँ हैं?"

"वह माँ के घर में ही रह गए हैं। उनको नानी से बात करने में अधिक स्वाद आया प्रतीत होता है।"

माथुर साहब ने बात बदल दी। उन्होंने पूछा, "कहाँ रहे हो दिन-भर? क्या तीन मूर्ति भवन में ही इतनी देर हो गई थी?"

"जी नहीं। वहाँ तो पन्द्रह मिनट से भी कम में बात समाप्त हो गई थी और जिस विषय पर मैं बात करने गया था, उस पर तो बात हुई ही नहीं।"

"तो दिन-भर कहाँ रहे हो?" स्वरूपरानी ने उत्सुकता से पूछ लिया।

"दिन-भर तो मित्रों को मिलने में व्यतीत हो गया है। सारा दिन टैक्सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुमाता रहा हूँ।''

पिता ने पुनः बात बदलकर पूछ लिया, ''जिसके लिए गए थे, उस पर बात क्यों नहीं हो सकी?''

चन्द्र हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, ''पिताजी! पहले तो मुझे विस्मय हुआ था कि जब मैंने उस व्यक्ति का नाम लिया जिससे मुझे वह सूचना मिली थी तो श्रीमान् जी बोल उठे, 'तो इसीलिए आए हो? मुझे उसकी बात विदित है। कुछ और हो तो बताओ?'

''मेरे विस्मय का कारण यह था कि मैंने बात तो बताई ही नहीं थी। उसका कोई संकेत भी नहीं दिया था और वह व्यक्ति कोई साधारण व्यक्ति भी नहीं था। वह वहाँ के राष्ट्रपति के स्टाफ में उत्तरदायित्व के पद पर नियुक्त है।''

मुकुटबिहारी माथुर भी हँसने लगा। बात चन्द्र ने ही की, ''पिताजी! मेरे पास कहने को कुछ अन्य नहीं था। इस कारण मैंने उठते हुए कहा, 'तो क्षमा करें, मैंने आपको व्यर्थ में कष्ट दिया है'। और मैं उनसे विदा माँगने लगा। वह अभी भी बैठे हुए थे और बोले, 'बैठिये! मैंने आपसे भेंट की स्वीकृति एक अन्य कारण से दी है?'

''मैं बैठ गया तो श्रीमान् जी पूछने लगे, 'मैं तो यह जानने के लिए उत्सुक हूँ कि तुम जैसा व्यक्ति कैसे अमेरिका में एक प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हो सका है। तुम तो एक हिन्दू सभाईट के पुत्र हो और तुम अपने देश में कुछ ख्याति भी नहीं रखते।'

''मैंने पुनः बैठते हुए कहा, 'श्रीमान्! यह कोई रहस्य नहीं है। मैं बताता हूँ।'

''परन्तु पिताजी! मेरे बताने के पूर्व ही वह बोल उठे, 'मेरी सूचना यह है कि तुम यहाँ एक कम्यूनिस्ट विचार के व्यक्ति थे। ये कम्युनिस्ट तो उस देश में पसन्द नहीं किए जाते। और तुम उस देश में एक विख्यात विश्वविद्यालय में कानून जैसे दुरूह विषय को पढ़ाने पर लगा दिए गए हो।'

''मैंने बताया, 'यह मेरे पूज्य पिता, एक हिन्दू सभाईट की कृपा के कारण ही है कि मैं न केवल वहाँ इस उत्तरदायित्व स्थान पर नियुक्त हुआ हूँ, वरन् वहाँ मैं एक विख्यात ऐडवोकेट के रूप में जाना जाता हूँ।'

''उन्होंने मुझे दो वर्ष से अधिक काल तक एक हिन्दू ग्रन्थ—'न्यायदर्शन' पढ़ाया है। उस पढ़ाई की कृपा से ही मुझे एक कानून का पण्डित मान विश्वविद्यालय में यह 'पोस्ट' मिली है।

''श्रीमान् विस्मय में बोले, 'न्यायदर्शन का नाम तो सुना है। उसका अंग्रेजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अनुवाद भी देखा है। समझने का यत्न किया है, परन्तु मुझे तो उसका सिर-पैर समझ नहीं आया।'

"मैंने कहा, 'आपने किसी ऐसे व्यक्ति का अंग्रेजी में अनुवाद पढ़ा होगा जो स्वयं इसको समझ नहीं सका होगा।'

"वह बोले, 'हाँ! एक यहाँ चट्टोपाध्याय हैं। उन्होंने अंग्रेजी में अनुवाद किया है।'

"तभी! ऐसा प्रतीत होता है कि उस अनपढ़ व्यक्ति को अशुद्ध भाष्य किया है। कदाचित् उसने एक प्राचीनकाल के नास्तिक वात्स्यायन विष्णुगुप्त कौटिल्य के भाष्य का अनुवाद-मात्र कर दिया होगा?'

" 'कौन विष्णुगुप्त?'

" 'जिसका कौटिल्य शास्त्र विख्यात है।'

" 'तो वह नास्तिक था?'

" 'जी!'

" 'तब तो वह और भी अधिक प्रामाणिक माना जाना चाहिए। क्योंकि वह 'बॉयज्ड' नहीं होगा।'

" 'बॉयज्ड तो वह था। वह नास्तिक सम्प्रदाय को माननेवाला था और उसने अर्थ भी उसके अनुरूप ही किए हैं?'

" 'नास्तिक्य भी कोई सम्प्रदाय है?'

" 'जी! बहुत प्रचलित सम्प्रदाय है।'

" 'मैं तो नास्तिक्य को एक खुला वायुमण्डल समझता हूँ, जिसमें व्यक्ति जिधर चाहे जा सकता है।'

" 'जी! आप ठीक समझते हैं। खुले मैदान में यदि रात के समय 'पोलर स्टार' और दिन के समय सूर्य दिखाई न दे तो मैदान में खड़ा व्यक्ति दिशा-शून्य हो जाता है। तब वह दिशा-शून्यों के सम्प्रदाय में माना जाता है। मैं उसी के विषय में कह रहा हूँ। वात्स्यायन दिशा-शून्यों के सम्प्रदाय का एक घटक था।'

" 'और तुम मुझे क्या समझते हो?'

" आप भारत के प्रधानमंत्री हैं और मैं उनसे ही मिलने आया हूँ।'

" 'मैं यह नहीं पूछ रहा। मैं पूछ रहा हूँ कि तुम मुझको भटक रहा व्यक्ति मानते हो क्या?'

" 'जी नहीं! आपको भटक रहा नहीं, वरन् सायंकाल के शनि नक्षत्र को ध्रुव समझ, उत्तर के स्थान पश्चिम की ओर जा रहा व्यक्ति मानता हूँ। अर्थात् आप खुले शून्य मैदान में नहीं हैं। आपने मिथ्या दिशा स्वीकार की हुई है, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह दिशा पश्चिम की ओर है, ध्रुव अर्थात् उत्तर की ओर नहीं।'

" 'इस पर श्रीमान् जी ने कहा, 'बहुत बदतमीज हो तुम!'

" 'मैंने मुस्कराकर कह दिया, 'जी! यह पश्चिम की ओर जानेवालों के ही लक्षण हैं?'

" 'अब तुम जा सकते हो?' इतना कह वह उठ खड़े हुए। जब मैं भी उठा तो वह फिर बैठ गए और बोले, 'असल बात तो रह ही गई है। वह यह कि तुम अमेरिका कैसे जा पहुँचे?'

"मैंने बताया, 'वही तो मैं बता रहा था कि मैंने न्यायदर्शन उस पण्डित से पढ़ा है जो विष्णुगुप्त चाणक्य को नास्तिक मानता था और उसके इस दर्शन की व्याख्या को अशुद्ध मानता था।'

" 'वह कौन मूर्ख है?'

" 'वह मेरे पिताजी हैं।' फिर मैंने बताया, 'श्रीमान्! विष्णुगुप्त कौटिल्य के ग्रन्थों को हमारी हिन्दू-समाज ने अमान्य कर पढ़ना छोड़ रखा था। कोई अंग्रेज पर्यटक किसी विधवा ब्राह्मणी के घर से एक सौ रुपये देकर उसकी हस्तलिखित प्रति ले गया और उसे वेदादि शास्त्रों के विपरीत समझ, उसने उसकी डुग्गी पीट दी।

" 'परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजों से प्रसारित वह विलुप्त कौटिल्य-शास्त्र पुनः भारतीय मस्तिष्क को दूषित करने लगा है। अन्यथा हिन्दू-समाज ने कौटिल्य विष्णुगुप्त को एकदम भूला-भटका व्यक्ति मान विस्मरण कर रखा था।

"पिताजी!" चन्द्र ने आगे कहा, "मैंने उनको बताया कि मैंने ऐसे व्यक्ति से न्याय-दर्शन पढ़ा है जिसने अंग्रेज़ी-भाषा को ही अशुद्ध मान छोड़ रखा है। बस, इस अध्ययन ने ही मेरे ज्ञान को चार-चाँद लगा दिए हैं। मैंने वहाँ की एक लॉ-मैगजीन में 'लॉ-इन-इण्डिया' पर एक लेख भेजा था। वह छप गया। उस पर वहाँ के न्याय-शास्त्रियों में बहुत चर्चा चली और मुझे पहली सेवा 'डी-ट्रायट' विश्वविद्यालय में दो वर्ष के लिए मिल गई। तदनन्तर मुझे फिलाडैल्फिया में स्थाई प्राध्यापक का कार्य मिल गया और अब मुझे वहाँ के सरकारी विभाग ने यह प्रस्ताव किया है कि मैं अमेरिका की नागरिकता पर एक पुस्तक लिखूँ।"

"और तुम उस मूर्ख देश के नागरिकों का मार्गदर्शन करोगे?" प्रधानमंत्री ने पूछ लिया।

"जी नहीं! मेरा विचार भारत के नागरिकों को अंग्रेजी तथा यूरोपियन लेखकों से मुक्ति दिलाने के लिए कुछ यत्न करने का बन रहा है।"

"तो यहाँ के विद्वानों में कुछ दोष है?" उनका प्रश्न था।

"जी! मैं ऐसा ही समझ रहा हूँ। तभी तो आपके सुरक्षा-मन्त्री जैसे व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेता बने घूम रहे हैं।''

''इस पर प्रधानमंत्री का मुख लाल हो गया और वह उठकर बिना एक शब्द भी बोले, कमरे के एक द्वार की ओर चल पड़े।

''मैं भी उठ खड़ा हुआ और उनके चले जाने पर वहाँ से चले आने की बात विचार कर ही रहा था कि प्रधानमंत्री कमरे से निकलते-निकलते रुके, लौटे और पुन: मेरे सामने आ खड़े हुए। वह बोले, ''तुम अजीब व्यक्ति हो! मैं पूछता कुछ हूँ और तुम बातों का मुख मोड़ अपनी, दूसरी बात करने लगते हो?''

'' 'श्रीमान्!' मैंने कहा, 'बैठ कर बात करें तो इत्मीनान से बात हो सकती है। खड़े-खड़े आप भूल जाते हैं कि आपने क्या पूछा था।'

''इस पर वह मुस्कराए और एक सोफा पर बैठ गए। मैं भी सामने एक कुर्सी पर बैठ गया। प्रधानमंत्री ने पूछा, 'मैंने यह जानने के लिए तुमको समय दिया है कि तुम मुझे बताओगे कि तुम वहाँ की सुप्रीमकोर्ट में कैसे पहुँच गए?''

''तो उस 'केस' की सूचना आपको मिली है?'' मैंने मुस्कराते हुए पूछा।

''हाँ, और जानना चाहता हूँ कि तुमने कोर्ट में क्या कहा था कि अमेरिका के सब समाचार-पत्रों और मैग्जीनों ने तुम्हारी उस कोर्ट में बहस पर समालोचनाएँ लिखी थीं?'

'' 'आपको विदित है कि वह मुकद्दमा किस विषय पर था?'

'' 'नहीं! हमें केवल यह सूचना मिली थी कि हिन्दुस्तान का एक युवक अमेरिकन सुप्रीमकोर्ट में पहुँच वहाँ अपनी धाक जमा आया है।'

'' 'नहीं श्रीमान्! मुझे यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। मेरे विपुल यत्न करने पर भी मैं वहाँ के न्यायाधीशों को सन्मार्ग नहीं दिखा सका?'

'' 'बस, तुममें दोष है कि तुम बात करते-करते अपनी टिप्पणी को आगे ले आते हो? मुझे इस बात की चिन्ता नहीं कि न्यायाधीश समझे हैं अथवा नहीं। मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि तुमने क्या बात कही थी कि अमेरिका के सब समाचार-पत्रों में उसकी गूँज उत्पन्न हुई थी।'

''मैंने बताया, 'मैंने एक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। सिद्धान्त यह है कि यह सृष्टि कुछ प्राकृतिक नियमों के अधीन कार्य कर रही है। अत: मनुष्य विवश है कि उन प्राकृतिक नियमों का पालन करे। जो नहीं करता, प्रकृति उसे दण्ड देती है।'

''इस प्रकार राज्यों और राज्य के न्यायमूर्तियों को भी उस 'नेचुरल-लॉ' का मान करना चाहिए। यदि राज्य अथवा न्यायालय प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करेंगे तो प्रकृति उनको दण्ड देगी। देश की सरकार अथवा न्यायमूर्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि कानून का ऐसा अर्थ निकालेंगे जो प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध होंगे तो देश और जाति रसातल को चली जाएगी।

" 'बस, मेरी इस बात ने उस पूर्ण जाति के पढ़े-लिखों के मस्तिष्क को झटका दिया था। एक कठोर झटका लगा था। परन्तु वहाँ के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्तियों ने मेरे दावे को स्वीकार नहीं किया था। प्राकृतिक नियमों की अवहेलना करते हुए अपना निर्णय दे दिया था।'

"एकाएक प्रधानमंत्री ने कह दिया, 'तुम हमारे विधि मंत्रालय में आ जाओ।'

"मैंने कहा, 'परन्तु मैं अब अपने काम को छोड़ नहीं सकता और न ही छोड़ना चाहता हूँ?'

" 'क्यों?'

" 'इसलिए कि यहाँ तो आपके न्यायालय क्या और सरकार क्या, सब-के-सब ही प्राकृतिक नियमों की न केवल अवहेलना करते हैं, परन्तु ऐसा करना अपना अधिकार मानते हैं।'

" 'और वहाँ के सुप्रीमकोर्ट ने भी तो अवहेलना की है? अत: वहाँ और यहाँ में अन्तर कुछ नहीं रहा।'

" 'मैं वर्तमान कान्ट्रैक्ट समाप्त होते ही वहाँ का काम छोड़नेवाला हूँ। और वहाँ अथवा यहाँ दोनों स्थानों के न्यायाधीशों और सरकार को यह कहने वाला हूँ कि अपने वर्तमान व्यवहार को छोड़ दें?'

" 'परन्तु हम तो, जैसा लोग कहते हैं, वैसा ही करते हैं। हम प्रजातंत्रवादी हैं। इस कारण सरकार दोषी नहीं? सरकार तो जनता के आदेश का पालन करती है।

" 'यह बात वहाँ की सरकार के विषय में तो कही जा सकती है, परन्तु यहाँ की सरकार के विषय में नहीं कही जा सकती। यहाँ आप ही लोगों को शिक्षा देनेवाले भी हैं; शिक्षक होते हुए, आप जो कुछ यहाँ के लोग बने हैं, उसके जिम्मेदार भी हैं। यह प्रजातंत्र नहीं है। आप अपने विचारों के अनुकूल युवकों को तैयार कर रहे हैं और फिर कहते हैं कि आप लोगों के विचारानुसार यहाँ राज्य चलाते हैं। यदि शिक्षा देनेवाली सरकार से स्वतंत्र कोई संस्था होती और फिर आप लोगों के विचारानुसार शासन करते तो आप यह कह सकते थे कि आप प्रजातंत्रवादी हैं।'

"मैंने आगे कहा, 'क्षमा करें! मैं समझता हूँ कि आपकी शिक्षा की धारणा अशुद्ध है और उस शिक्षा को देकर आप अपने साथी तैयार कर रहे हैं और आप अपने सिखाए हुओं से राज्य चलाते हैं। यह डेमोक्रेसी नहीं है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अच्छा! तुम जा सकते हो।'

इतना कह वह उठे और उस कमरे से निकल गए। उनके जाते ही पर्दे के पीछे खड़े उनको दो संरक्षक आए और मुझे तीन मूर्ति भवन से बाहर ले आए।

:: 6 ::

रात खाने के समय रामलाल और रानी भी चन्द्र से मिलने आए हुए थे। रामलाल ने आते ही चन्द्र से पूछा, ''कहाँ रहे हो दिन-भर?''

''पिताजी!'' चन्द्र ने रामलाल के समीप बैठते हुए कहा, 'एक सौ एक स्थान पर गया हूँ। टैक्सी का भाड़ा ही एक सौ दस रुपये बन गए हैं।''

''तुमको इतना घूमना था तो गाड़ी ले जाते। व्यर्थ में इतना कुछ खर्च कर आए हो?''

चन्द्र हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, 'अमेरिका के अनुपात में तो मैं सस्ते में ही इतना घूम सका अनुभव कर रहा हूँ। केवल बारह-तेरह डॉलर ही तो खर्च हुए हैं और अमेरिका में इस रकम को बहुत तुच्छ समझा जाता है।''

''यह विषमता क्यों है?'' स्वरूपरानी ने चन्द्र की ओर देख पूछ लिया।

चन्द्र ने कहा, ''देशों में इस विभिन्नता का कारण है वर्तमान युग के मानव की मूर्खता। तकनीकी उन्नति के साथ-साथ मानव-मन उन्नत नहीं हुआ। आज यातायात के साधनों में उन्नति से भूमण्डल पुराने जमाने के एक नगर का एक छोटा-सा मुहल्ला रह गया है। इस पर भी मानव-मन ने एक देश और दूसरे देश के नागरिकों को परस्पर घोर विरोधी बना रखा है।

''देखो माँ! मैं समझता हूँ कि अशोक अथवा हर्षवर्धन के काल में एक व्यक्ति चीन से चलकर भारत में बिना रोक-टोक के आ सकता था, यद्यपि आने के साधन बहुत ही हीन थे। परन्तु आज हम अमेरिका से भारत में तीस घण्टे में आ सके हैं। इस पर भी हमें भारत में बीसियों स्थानों पर आने की स्वीकृति लेने के लिए बाधाएँ उपस्थित की गई हैं। और मैं समझता हूँ कि हमारे पासपोर्ट इत्यादि देखने के उपरान्त भी यहाँ के गुप्तचर-विभाग को संतोष नहीं हुआ। मैं देख रहा हूँ कि जिस दिन से हम यहाँ आए हैं, दिल्ली की पुलिस हमें 'शैडो' कर रही है।'

इस पर चन्द्र के पिता ने कह दिया, ''आज सायं जब मैं कोर्ट से लौट रहा था तो एक साहब मेरे कार्यालय में आए और कहने लगे, 'आपका सुपुत्र दिल्ली से बाहर गया हुआ है क्या?'

''मैं उसके मुख पर देखने लगा। वह मुस्करा रहा था। मैंने पूछा कि किसलिए पूछ रहे हैं। वह बोला, 'हुजूर! अपनी ड्यूटी बजा रहा हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझ गया और मैंने कह दिया, 'वह कुछ लोगों से मिलने प्रातः नौ बजे का ही गया हुआ है। आशा करता हूँ कि सायं-छः सात बजे तक घर आ जाएगा'।"

"परन्तु पिताजी! यह इस कारण नहीं। यह, जहाँ तक मैं समझा हूँ, मेरे प्रधानमंत्री से मिलने की याचिका के कारण है। गुप्तचर-विभाग को विस्मय हो रहा है कि मेरा प्रधानमंत्री से क्या काम हो सकता है। वे अपना रेकॉर्ड तैयार कर रहे हैं।"

"कुछ भी हो। मैं यह बता रहा हूँ कि जहाँ ह्वेन-स्वाँग महाराज हर्षवर्धन से बिना रोक-टोक के मिल सकता था, वहाँ आज तुम अपने ही देश में संदेह की दृष्टि से देखे जाते हो?"

इस पर चन्द्रमोहन अपनी, देश के प्रधानमंत्री से भेंट का वृत्तान्त सुनाने लगा। सब उपस्थित लोग उस भेंट का विवरण सुनने लगे।

चन्द्र ने बताया, "अपने देश के प्रधानमंत्री पूर्ण भेंट के समय इस प्रकार उठते-बैठते, नाराज होते और मेरी बातों पर हँसते तथा रूठते रहे जैसे राम अपनी माँ शोभा के साथ किया करता है।"

इस पर सब हँसने लगे। मुकुटबिहारी ने कह दिया, "परन्तु यह तो उनकी बचपन की आदत है। जब वह अभी प्रधानमंत्री नहीं बने थे, तब भी व्याख्यान देते-देते मंच से कूद श्रोतागणों में आ धमकाया करते थे और उनकी अच्छी-खासी सेवा कर दिया करते थे।"

इस पर चन्द्र ने हँसते हुए कहा, "तब तो ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए कि उन्होंने मेरे साथ वह व्यवहार नहीं किया। मैं सही सलामत घर लौट आया हूँ।"

चन्द्र ने आगे कहा, "मुझे विस्मय हो रहा है कि यह महानुभाव मेरी बात सुनने से पहले ही बोल उठे, "मैं सब जानता हूँ। मैं इस विषय पर सुनना नहीं चाहता।"

माथुर साहब का कहना था, "भूल यह हो रही है कि अभी भी देश को मुख्य माना जा रहा है और देशवासियों को गौण। इस देश में एक बहुत बड़ा समाज रहता है। वह समाज है—हिन्दू-समाज। उसमें कुछ साँझी बातें हैं। उन साँझी बातों पर उस समाज को एक राष्ट्र का रूप दिया जा सकता है। एक वर्ष हुआ मर्दमशुमारी हुई थी। देश की अड़तालीस करोड़ जनता में चालीस करोड़ हिन्दू हैं। इस चालीस करोड़ को यदि एक आदर्श पर एकत्रित कर दिया जाता तो यह देश विश्व-भर में अजेय हो जाता। कोई इस ओर उँगली उठाने का साहस भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कर सकता।"

"और वह समाज एकत्रित कैसे हो सकता है?" शोभा का अगला प्रश्न था।

"यदि यहाँ की सरकार अपने को हिन्दू माने और उसकी मुख्य-मुख्य बातों को स्वीकार कर ले। तब देश एक वज्र की भाँति सुदृढ़ हो सकता है।"

"और वह क्या बात है जिस पर हिन्दू-समाज एक हो सकता है?" चन्द्र का प्रश्न था।

"देखो चन्द्र!" मुकुटबिहारी ने कहा, "वैसे तो हिन्दू एक हैं ही। उनकी मान्यताएँ एक हैं। परन्तु अंग्रेज ने अपना राज्य सुदृढ़ करने के लिए समाज की उन मान्यताओं को गौण कर रखा था और जो गौण बातें थीं, उनको मुख्य बनाने का यत्न किया हुआ था।

"उदाहरण के रूप में हमारे देवी-देवताओं के भिन्न-भिन्न रूपों को लेकर समाज में भेद माना जा रहा है। और जो बात पूर्ण समाज में एक है, उसे गौण तथा मिथ्या कहकर पीछे धकेला जा रहा है।

"पूर्ण हिन्दू-समाज एक सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक के अस्तित्व को मानता है। हम उसे परमात्मा कहते हैं। कुछ भूले-भटके उसे शिव, दुर्गा, लक्ष्मी, काली और अन्य नामों से स्मरण करते हैं। इस पर भी हिन्दू सबको परमात्मा का स्वरूप ही मानते हैं। परन्तु अंग्रेज और उनकी शिक्षा से प्रभावित लोग परमात्मा को तो मानते नहीं और शिव, दुर्गा, विष्णु इत्यादि विभिन्न सम्प्रदाय बताते हैं। देश में स्वराज्य मिलने के समय सब सम्प्रदाय अपने को एक मानते थे। परन्तु अंग्रेज ने राज्य नास्तिकों के हाथ में दे दिया। परिणाम यह हुआ कि नास्तिक राजा ने यहाँ की शिक्षा को वह दिशा दी कि शिक्षा में जो कुछ हिन्दू-समाज को एक करने के लिए आवश्यक था, उसको धकेलकर पीछे दीवार के साथ कर दिया।

"जब-जब भी किसी विद्वान् ने शिक्षा में परमात्मा को लाने की बात कही, हमारे शिक्षामंत्री मौलाना साहब उसको मूर्ख कहकर पीछे धकेल देते रहे हैं।

"तीन-चार कमेटियाँ शिक्षा के विषय में विचार करने के लिए बैठाई गईं और किसी कमेटी की कोई भी सिफारिश नहीं मानी गई।

"अब स्थिति यह है कि हिन्दुओं में ही ऐसे उत्पन्न हो गए हैं जो हिन्दुओं को एक सूत्र में बाँधनेवाली बातें की हँसी उड़ाते हैं। परिणाम यह हो रहा है कि हिन्दू चालीस करोड़ एक गौण समाज है और ईसाई जो कुछ लाख ही हैं, वह एक महान् समाज माना जाता है। मुसलमान जो केवल आठ करोड़ हैं, उसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज सब बन्दगी करते हैं। यह सब अपने प्रधानमंत्री और उनके विचार के लोगों की करनी ही हैं। यदि कोई उनकी बात को स्वीकार नहीं करता तो उसे सरकार से बाहर कर दिया जाता है।''

''परन्तु इसको ठीक करने का कुछ उपाय नहीं है क्या?'' शोभा का प्रश्न था।

''उपाय तो है, परन्तु हिन्दू इतना दुर्बल हो गया है कि वह अपनी कामनाओं को नियंत्रण में नहीं रख सकता।

''ये कामनाएँ ही हैं जो राज्य पाने के लिए लालायित करती हैं और राज्य में स्थान देना 'महान् विचारक' प्रधानमंत्री के हाथ में है। इस कारण लोकसभा और राज्य-सभा में वे लोग हैं जो कामनाओं से प्रेरित हैं; अथवा वे हैं, जो विचार भेद रखते हुए भी प्रधानमंत्री का विरोध नहीं कर सकते। यह इस कारण कि उससे ही कामनाओं की पूर्ति होती है।''

इस विषय पर वार्त्तालाप होती रही और भोजन समाप्त हुआ।

उसी रात चन्द्र ने अपनी पत्नी से पूछा, ''तुमने पिताजी से अपने खर्चे की बात नहीं की?''

''मैं विचार कर रही हूँ कि पहले अपने मन में निश्चय कर लूँ कि मुझे आपसे दिया धन स्वीकार करना चाहिए अथवा नहीं?''

''तो तुम्हें नहीं भी लेना चाहिए?''

''हाँ! अमेरिका की जीवन-मीमांसा तो यही थी कि आर्थिक दृष्टि से पति-पत्नी स्वतंत्र हैं। इसी के अनुरूप जब मैंने यहाँ आने का विचार बनाया तो यहाँ आने-जाने का भाड़ा भी मैंने दिया था। यहाँ आ मुझे हिन्दुस्तानी-प्रथा भी दिखाई देने लगी है। वह यह कि अर्थ-उपार्जन पति करता है और वह ही पत्नी को देता है। साथ ही पत्नी पति से प्राप्त कर तृप्ति अनुभव करती है।''

''ओह! यह विचारों में क्रान्ति इन दो-तीन दिनों में ही हुई है?''

''जी नहीं! दो-तीन दिन में नहीं प्रत्युत् केवल एक वाक्य से। वह वाक्य मेरी माताजी ने कहा था। उन्होंने आज आपकी माताजी को बताया कि मेरे पिताजी ने उन्हें पाकिस्तान से छुड़ाने के लिए चालीस हज़ार रुपए व्यय किए थे। जब भी वह उन दिनों की बात स्मरण करती हैं तो मन में आह्लाद उत्पन्न होता है। इसका अभिप्राय यह है कि मेरे पिता ने इतना कुछ उन पर व्यय किया तो इतना अधिक मान उनके मन में माताजी का है। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है।

''बस, माताजी की इस बात ने मेरी बुद्धि का काँटा बदल दिया है और मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार कर रही थी कि आप जो भी मुझे दें, वह सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए।''

चन्द्र शोभा का मुख देखता रह गया। शोभा प्रसन्नता से देदीप्यमान हो रही थी। पति के प्रेम-भरी दृष्टि से अपनी ओर देखते हुए वह बोली, ''मैं मन में अति-हर्ष अनुभव कर रही हूँ कि आपके पिता मुझ पर धन न्योछावर करना चाहते हैं और आप भी सहज भाव में ही लगभग तीस हज़ार मुझे दे रहे हैं।''

चन्द्र उसी समय पत्नी के पास से उठा और अपने ब्रीफकेस में से तीन हज़ार डॉलर का प्रातः-वाला चेक ले आया और बोला, ''यह तुम यहाँ रिजर्व बैंक से तुड़वा सकती हो।''

''अभी रखिए! मैं तो विचार ही कर रही हूँ। अभी निर्णय नहीं किया।''

''ओह! तो कब तक निर्णय करोगी?''

''एक-दो दिन में बताऊँगी। साथ ही, आज एक और बात हुई है?''

''क्या?''

''अभी कुछ स्पष्ट नहीं। वह बात आपके पिताजी के कहने पर मन में उत्पन्न हुई है।''

चन्द्र विवाहित-जीवन के इन पाँच वर्षों में यह जान चुका था कि उसकी पत्नी बहुत ही संवेदनात्मक मन रखती है। वह स्वयं तो तर्क-वितर्क में लीन रहता था, परन्तु उसकी पत्नी मन से ही जानती है और उस जानने से ही प्रतिक्रिया पाती है। उसके कर्म मन के ज्ञान और उसकी मन की ही प्रतिक्रिया से सम्बन्ध रखा करते थे। ऐसे व्यक्तियों को मनोद्गारों से प्रवाहित व्यक्ति माना जाता है। वह जानता था कि शोभा वही है। इस कारण वह सदा उसकी ओर से सतर्क रहता था।

इस कारण एक दिन में ही उसके मन ने करवट ली तो वह विचार करने लगा था कि दिन में क्या-क्या घटा है।

जब मध्याह्न-पूर्व वह प्रधानमंत्री से मिलने जा रहा था तो उसने अमेरिका से भारत आने-जाने का खर्चा लेने से इनकार कर दिया था और यह कह रही थी कि वह स्वयं अपने श्वसुर से इस विषय पर बात कर लेगी। उसके कहने पर ही वह हवाई जहाज पर व्यय हुआ तीन हज़ार डॉलर दे रहा था।

वह आशा कर रहा था कि रात भोजन के समय श्वसुर और पतोहू में गरमा-गरम वाद-विवाद होगा, परन्तु जब इस विषय पर बात नहीं हुई तो उसने इसका कारण पूछा था और यह नया रहस्योद्घाटन हुआ था।

एक बार पहले भी ऐसा हो चुका था, जिस दिन अमेरिका में सुप्रीमकोर्ट ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैथोलिक-मिशन की ओर से उसकी कानूनी बहस पर न्यायाधीशों की प्रतिक्रिया बताई थी।

बात यह हुई थी कि उनके अपने ही विश्वविद्यालय के एक पुरुष अध्यापक ने वहाँ के मैजिस्ट्रेट के सम्मुख एक लड़के से विवाह रजिस्टर करने की याचिका की थी। मैजिस्ट्रेट ने विवाह रजिस्टर नहीं किया। सम-यौन विवाह की प्रथा देश में नहीं थी।

प्राध्यापक ने वहाँ के हाईकोर्ट में मैजिस्ट्रेट के इस निर्णय के विरुद्ध याचिका की और हाईकोर्ट ने भी इसे अस्वीकार किया था। इस पर प्राध्यापक ने देश के सुप्रीमकोर्ट के समक्ष अपील की थी।

जब इस अपील की चर्चा समाचार-पत्रों में छपी तो स्थानीय कैथोलिक-मिशन ने इस केस में अपना पक्ष रखने के लिए हिन्दुस्तानी वकील को वहाँ उपस्थित कर दिया।

चन्द्र ने युक्ति और कानूनी बहस में प्राध्यापक का प्रबल विरोध किया था तथा इसे प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध बताया था। परन्तु डेमोक्रेसी के नाते सुप्रीमकोर्ट ने निर्णय प्राध्यापक के पक्ष में दिया था और विवाह रजिस्टर करानेवाले मैजिस्ट्रेट को आज्ञा दी थी कि विवाह रजिस्टर हो सकता है।

सुप्रीमकोर्ट के तीन न्यायमूर्तियों की पीठ का यह निर्णय था कि विवाह एक व्यक्ति का निजी विषय है। देश का कानून उसमें बाधक नहीं हो सकता। यह कुछ मज़हबों में वर्जित है, परन्तु मज़हबों को अपना विचार राज्य-कानून के द्वारा चलाने की स्वीकृति नहीं दी जा सकती।

रही बात प्राकृतिक नियमों की। डेमोक्रेसी में प्राकृतिक नियम मान्य नहीं होते। डेमोक्रेसी में जो देश की कांग्रेस और सीनेट पास करती है, वह ही नियम है और देश की सर्वोच्च विधानसभा ने विवाह व्यक्तिगत समस्या स्वीकार की है, इस कारण इसमें प्राकृतिक-नियम मान्य नहीं।

जब इस विषय में सुप्रीमकोर्ट ने अपना निश्चय घोषित किया तो शोभा के मन में इसकी बहुत ही उग्र प्रतिक्रिया हुई थी और उस दिन से वह डेमोक्रेसी को एक हीन-प्रपंच समझने लगी थी। इस विषय में जो कुछ भी साहित्य वहाँ उपलब्ध था, वह पढ़ने लगी थी।

आज कुछ इसी प्रकार की उग्र प्रतिक्रिया हुई प्रतीत होती थी, परन्तु जब चन्द्र ने पत्नी को पूछा, क्या हुआ है, तो शोभा ने कह दिया, "बात अभी मन में स्पष्ट नहीं। जब होगी तो बताऊँगी।"

बात समाप्त हो गई, परन्तु अगली सुबह उसकी नींद खुली तानपूरे की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झंकार और शोभा के उसके साथ स्वर भरने से।

चन्द्र ने बिस्तर में करवट ली और लेटे-लेटे ही सुनने लगा। शोभा बगल के कमरे में, जो अमेरिका जाने से पूर्व उसका पति अपना स्टडी-रूम के रूप में प्रयोग किया करता था, बैठी वहाँ गा रही थी।

शोभा आज पुनः भैरवी स्वरों का आलाप भरने लगी थी और फिर आलाप के उपरान्त 'सदा वत्सले मातृभूमे' का गीत गाने लगी थी।

चन्द्र को रात सोने से पूर्व इस वार्त्तालाप की याद आ गई। वह अनुभव करने लगा था कि यह रात के वार्त्तालाप की मन पर प्रतिक्रिया है।

उसका अनुमान ठीक था। शोभा के मन में कुछ स्पष्ट और स्थिर विचार बन चुका था और उसके अनुरूप ही वह आज कई वर्ष पुराना स्वरबद्ध किया अपना गीत गाने लगी थी। चन्द्र उत्सुक था, जानने के लिए उसका मन किस दिशा में कार्य कर रहा है।

इस कारण वह बिस्तर से बाहर निकला और बाथरूम में चला गया। वहाँ मुख-हाथ धो सचेत और सतर्क हो, वह अपने पुराने स्टडी-रूम में चला आया।

शोभा वहाँ चौकी पर धूप-दीप जला, हाथ में तानपूरा लिए हुए थी। चन्द्र की माँ भी मन्त्र-मुग्ध समीप बैठी, सुन रही थी। दोनों आँखें मूँदे थीं। शोभा आँखें मूँदकर बैठी थी और अपने मनोद्‌गारों के वश अश्रुपात कर रही थी। स्वरूपरानी गीत के भावों से प्रभावित प्रसन्न, सन्तुष्ट और मन में सुख अनुभव कर रही प्रतीत होती थी।

चन्द्र चुपचाप बिना किसी प्रकार का शब्द किए अपनी माँ के पीछे बैठ गया।

मातृ-वन्दना के उपरान्त ईश्वर-स्तुति का गीत आरम्भ हो गया। इस प्रकार चन्द्र को वहाँ आए लगभग आधा घंटा हो चुका था कि शोभा ने गीत बंद किया। तानपूरा भूमि पर रख उसने आँखें खोलीं तो सामने माँ-पुत्र को देख, दोनों को हाथ जोड़ नमस्कार कर पूछने लगी, "तो आपकी नींद खराब की है मैंने?"

माँ-पुत्र दोनों हँस पड़े। वे हँस ही रहे थे कि चन्द्र का पिता भी उस कमरे में आया और बोला, "शोभा! बहुत-बहुत धन्यवाद। आज पाँच वर्ष उपरान्त अपना प्रिय गीत तुम्हारी मधुर आवाज़ में सुनने का अवसर मिला है। तब से तुम संगीत में भी बहुत उन्नति कर चुकी हो?"

"पिताजी! वहाँ अभ्यास ही तो करती रहती हूँ। हाँ, वहाँ अभ्यास के लिए सात बजे के बाद का समय होता था। आपके पुत्र मेरे इतनी प्रातःकाल उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा बच्चों को जगा देने से मना किया करते थे?"

"अर्थात् यह अभारतीय और अनार्य होने की ओर चल रहा था?" माथुर ने स्वरूपरानी के समीप बैठते हुए चन्द्रमोहन के विषय में अपने मन में प्रस्फुटित सम्भावना प्रकट कर दी।

वह कह रहा था, "भारतीयता के पथ से विचलित होने का प्रथम पग ही यह है—प्रातः देर तक सोना और रात को देरी से बिस्तर पर जाना।"

चन्द्र मुस्कराते हुए बोला, "पिताजी! मैं तो यह अनुभव कर रहा हूँ कि मेरा देश-प्रेम पहले से भी अधिक हो गया है। तभी तो तेरह हज़ार मील की यात्रा कर अपने प्रधानमंत्री को मन की बात कहने चला आया हूँ। यद्यपि उसमें सफल नहीं हुआ, परन्तु मुझे यहाँ आकर यत्न करने का दुःख नहीं है।"

इस पर शोभा बोल उठी, "पिताजी! मैंने एक संकल्प किया है।"

"क्या?"

"मैं अपना सेवा-कार्य वहाँ छोड़, पक्के रूप में भारत में आकर रहना चाहती हूँ। मेरा वहाँ का कान्ट्रैक्ट अगले वर्ष दिसम्बर में समाप्त हो रहा है और मैं यहाँ दिल्ली में अथवा भारत में किसी अन्य स्थान पर शेष जीवन व्यतीत करूँगी।"

यह सुन तीनों, पुत्र और माता-पिता शोभा का मुख टुकुर-टुकुर देखते रह गए।

"मेरे मन में आपकी रात की एक बात गूँज रही है। आपने कहा था कि मातृभूमि से अभिप्राय हिमालय पर्वत, गंगा-यमुना इत्यादि नदियाँ, पंजाब, सिन्ध, गुजरात, बंगाल इत्यादि भूमिखण्ड नहीं, वरन् यहाँ की समाज है। हम समाज की उपज हैं। अतः देशभक्ति वस्तुतः समाज की भक्ति है।

"जब से आपने यह बताया है, मेरे मन में उथल-पुथल मच रही थी। यहाँ की समाज की दुर्व्यवस्था देख, मेरे मन का काँटा बदल रहा है। वह उसी समय से संकल्प-विकल्प करने लगा था और प्रातः उठी तो मुझे यही समझ आया है कि मेरा कार्य वहाँ की मूढ़ समाज का विचार छोड़, अपनी समाज की सुध लेना है।"

"हाँ! मैं यही मानता हूँ। देश यहाँ के ईंट-पत्थर, नदी-नाले पहाड़ नहीं वरन् यहाँ की समाज है। वस्तुतः मातृभूमि हिन्दू-समाज ही है। हम इस समाज की ही देन हैं और उस समाज के निर्मित घटक ही हैं। भारत-भूमि की जो भी विशेषता है, वह इसके देश में अनेकानेक महापुरुषों के कारण ही है। यहाँ के महापुरुषों ने ही समाज का एक स्वरूप बनाया था। उन महापुरुषों को मैं नित्य प्रातः स्मरण किया करता हूँ। मेरा प्रातःस्मरण है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज नाद ब्रह्म विष्णु महेश नारद मरीचि सब वन्दनीया।
सनत् कुमार सनक सनन्दन वीतराग सदा पूजनीया॥

भृगु मनु अरु याज्ञवल्क्य थे महामानव और धर्म प्रवक्ता।
सत्यवक्ता अरु पुण्य कर्मा थे सब भारत-भाग्य विधाता॥

पितर देव देवन नमस्ते नित्य हमारी हो सुप्रभाते।
लक्ष्मी दुर्गा वीणापाणि धन यश भाग्य अन्न प्रदाता॥

भारत पुण्य भूमि के स्वामी यश कीर्ति हो सदा अनुगामी।
तव वीर धीर महा मनस्वी भूमण्डल उनके गुण गाता॥

इक्ष्वाकू रघु सगर तुम्हारे सियपति राम अरु लक्ष्मण भ्राता।
भू भारत पर रक्ष प्रसारण रोक दिया था राम सुजाता॥

देव लोक के विजयी रावण यमलोक गए थे राम वाण से॥
डंका बज गया पुण्य भूमि का फैली जग में राम सुगाथा॥

अर्जुन वीर था भारत वंशी भीम युधिष्ठिर महारथी भी।
कृष्ण योगेश्वर ज्ञानी ध्यानी अध्यात्म विद्या के व्याख्याता॥

गौतम बुद्ध प्रभु महावीर थे भारत जीवन के निर्माता।
शत्रु, दुर्जन्, महादुष्ट से मित्रता के थे वे व्यवस्थाता॥

शंकर प्रभृति थे ब्रह्मवाद के भाव प्रदाता अरु व्याख्याता।
है एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति जड़ चेतन में मानें समता॥

गुरुनानक अरु गुरु गोविन्द भक्त कबीर तथा गोस्वामी।
भक्तिभाव की मीरा मैना प्रभु भक्ति के उज्ज्वल वक्ता॥

परम हंस तथा राजा मोहन दयानन्द विवेका स्वामी।
नव चेतना के अग्र दूत वे महान् भारत के निर्माता॥

धन्य धन्य हे भारत भूमे कोटि-कोटि देवन की माता।
सदा वत्सले हे मातृभूमे नत मस्तक नमस्ते नमस्ते॥

"देखो शोभा! ये और अनेकों अन्य पुरातन महापुरुष समाज के निर्माता हुए हैं। ये सब एक स्वर से हमारी संस्कृति, परमात्मा, जीवात्मा, कर्मफल वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृतियों की ओर संकेत करते हैं।

"परन्तु देखो न! हिन्दू-समाज के ठेकेदार इस समाज का कुछ ऐसा चित्र वर्णन कर रहे हैं जिसमें अशोक और चन्द्रगुप्त, अश्वत्थामा और कर्ण तथा भीष्म, और अब मैकाले, गांधी, माउण्ट-बैटन, जवाहरलाल और मोरारजी जाति के चौधरी माने जाने लगे हैं।"

:: 7 ::

शोभा के विचार सुन चन्द्र को चिन्ता लग गई थी। प्रातः की वन्दना के कार्यक्रम में तो वह केवल उसके और पिता के मनोद्गार ही सुनता रहा था, परन्तु पीछे जब वह स्नानादि के लिए अपने कमरे में गया और शोभा के विचार के परिणामों पर विचार करने लगा तो उसको जीवन में विषमता उत्पन्न होती समझ आई।

उसने पिछले पाँच वर्ष में फिलाडैल्फिया विश्वविद्यालय 'कैम्पस' से बीस मील के अन्तर पर अपना एक 'माथुर-विला' निर्माण कराया था। उसने पचास सहस्र डॉलर व्यय कर, वहाँ भूमि ली थी और फिर कोठी बनवाई थी। लगभग दस सहस्र डॉलर उसने पुस्तकालय और फर्नीचर पर व्यय किया था। वह यह भी देख रहा था कि शोभा भी दो सहस्र डालर प्रति मास प्राप्त करती है और उसकी ख्याति भी अपनी कला के कारण विस्तार पा रही है। दो मास हुए न्यूयार्क के हिन्दुस्तानियों ने उसे एक समारोह में बुलाया था और उसको दो घंटे के गाने के सत्र का पाँच सहस्र डॉलर दिया था और वहाँ के समाचार-पत्रों ने उसकी कला और मधुर स्वर की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

शोभा के इस नवीन मानसिक उद्गार से यह सब ताश के पत्तों के महल की भाँति गिरता दिखाई दिया।

वह स्वयं भी ख्याति प्राप्त कर रहा था। कैथोलिक-मिशन की ओर से सुप्रीमकोर्ट में मुकद्दमा लड़ने से विश्वविद्यालय क्षेत्रों में और बाहर उसकी बहुत प्रशंसा हुई थी। वह मन में विचार करता था कि यदि शोभा भारत में आकर रहने लगी तो उसका यह सब बना-बनाया खेल समाप्त हो जाएगा।

दिन-भर वह चिन्ताग्रस्त रहा। शोभा उस दिन माँ के घर चली गई थी। इस कारण चन्द्र को उससे विचार-विनिमय करने का अवसर नहीं मिला।

उस दिन चन्द्र के पिता को एक मुकद्दमे में हाईकोर्ट में उपस्थित होना था। इस कारण चन्द्र को उनसे बातचीत करने का अवसर भी नहीं मिला। माँ से उसकी मध्याह्न के भोजन के समय बात हुई। उसने ही माँ से पूछा, "माँ! यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोभा को क्या हो गया है?''

''कुछ नहीं। विशेष कुछ नहीं। उसके स्वभाव के अनुसार ही है। प्रायः सब कलाकार मनोद्गारों के पीछे भागनेवाले होते हैं। यह भी वैसी ही है।''

''परन्तु मेरी तो इससे बहुत हानि होगी?''

''तो उसको प्रेम से समझाओ।''

''वह मानेगी नहीं। जब इसकी विश्वविद्यालय में नौकरी लगनेवाली थी, तब भी यह हठकर संगीत सिखाने पर नौकर हुई थी।

''माँ! यह इस प्रकार हुआ था कि यह नित्य अपने क्वार्टर में संगीत का अभ्यास किया करती थी। यह सूचना विश्वविद्यालय के चांसलर को मिली तो उसने अपने जन्म-दिवस के अवसर पर शोभा से प्रार्थना कर दी कि वह उसके इस समारोह में अपना एक सर्वप्रिय गीत सुनाए।

''मैंने व्यवहारिक रूप से चांसलर साहब की सिफारिश कर दी। यह मान गई और चाय-पार्टी, जो एक घंटा-भर होनेवाली थी, शोभा का गीत सुनते-सुनते तीन घंटे की हो गई।

''चांसलर साहब इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने इसे विश्वविद्यालय में भारतीय संगीत का प्राध्यापक का काम करने का आग्रह कर दिया।

''मैं मना करता रहा, परन्तु जब एक बार इससे प्रस्ताव किया गया तो यह तैयार हो गई।

''मैंने कई युक्तियाँ दीं और कई प्रकार की सुविधाओं का वर्णन किया, परन्तु यह नहीं मानी और तीन घंटा-भर घर पर अभ्यास और दो घंटा विश्वविद्यालय में लगाने लगी।

''जब मेरा मकान तैयार हुआ और मैं वहाँ जाने लगा तो कठिनाई यह हुई कि इसके काम का समय मेरे काम के समय से भिन्न था। इस कारण इसने अपनी पृथक् गाड़ी खरीद ली। जब बच्चों की देख-रेख की कठिनाई हुई तो इसने उनके लिए नर्सरी में प्रबन्ध कर लिया।

''अब इसकी ख्याति आस-पास की 'स्टेटों' में भी होने लगी है। दो मास हुए यह न्यूयार्क में विशेष निमंत्रण पर बुलाई गई थी। वहाँ पर दो घंटे का कार्यक्रम का इसे पाँच हज़ार डालर मिला था।

''मैं समझता हूँ कि यदि यह वहाँ रहेगी तो दस वर्ष में 'मिलियोनियर' बन जाएगी। यहाँ पर तो इसे फिर-अ-आ से आरंभ करना पड़ेगा। और मुझे भी यहाँ आकर प्रैक्टिस जमाने में विशेष यत्न करना पड़ेगा। इस पर भी यहाँ उतना कुछ कभी भी नहीं हो सकता जितना वहाँ होने की आशा है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेटा! उसे प्यार से समझाओ। एक बार बात उसकी समझ में आ गई तो फिर वह वहाँ रहने के लिए भी उत्साह से यत्न करने लगेगी।"

"माताजी! आप भी मेरी सहायता कर दें?"

"हाँ! यदि वह मुझसे पूछने आएगी तो मैं कह दूँगी कि उसे अपने पति के साथ रहना चाहिए।

"देखो चन्द्र! ऐसा करो कि उसके पिताजी को यह समझा दो कि तुम्हारी उन्नति के लिए तुम्हारा वहाँ रहना आवश्यक है और तुम्हारी पत्नी को तुम्हारे साथ रहना चाहिए। बस, उनकी बात वह नहीं टालेगी।"

"रात उनसे कहूँगा। मुझे भय है कि उसके माता-पिता लड़की के मोह-जाल में फँसे हुए उसको यहाँ ही रह जाने की प्रेरणा दे रहे हैं।"

"तो उसके पिता से मिलो। वह व्यापारी प्रकृति का व्यक्ति तुम्हारी बात को शीघ्र समझ सकेगा।"

अतः चन्द्रमोहन सायंकाल श्वसुर की दुकान पर जा पहुँचा।

रामलाल दुकान पर ग्राहकों से बातचीत में लीन था और एक ग्राहक जाता था तो दूसरा आ जाता था। यद्यपि गोकुलचन्द था, वह बातचीत करने में सिद्धहस्त भी था, इस पर भी रामलाल को अवकाश नहीं मिल रहा था।

चन्द्र को भीतर अपने ऑफिस में बैठा देख रामलाल ने सेवक को कह दिया, "चन्द्रजी के लिए चाय ले आओ।"

चन्द्र को चाय पीकर खाली हुए भी एक घंटा हो चुका था। रामलाल को अवकाश नहीं मिल रहा था। चन्द्र मन में संकल्प करके आया था कि वह शोभा के पिता से बात करके ही जाएगा।

रात के साढ़े सात बजे रामलाल केबिन में आया और पूछने लगा, "चाय और मँगवाऊँ?"

"नहीं पिताजी! मुझे और लेने की इच्छा नहीं हो रही।"

"कुछ हानि भी तो नहीं होगी। मैंने अपने और तुम्हारे लिए मँगवा ली है।"

चन्द्र चुप रहा। वह समझ रहा था कि चाय लेते हुए बात भली-भाँति हो सकेगी।

चाय आई तो रामलाल ने चाय बनाते हुए पूछ लिया, "भारत में कितने दिन तक रहने का विचार है?"

"जिस काम के लिए आया था, वह तो कल ही समाप्त हो गया था। अब तो मैं शोभाजी की अर्दली में हूँ। उसका विचार था कि मैं उसे भारत की तीर्थ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रा कराऊँ और भारत के ऐतिहासिक स्थानों पर ले जाऊँ। वह इसके लिए अपना कार्यक्रम बना रही है। फिर वह कश्मीर, कुल्लू-मनाली और दार्जिलिंग तथा दक्षिण में ऊटी इत्यादि स्थानों में भी जाने का विचार रखती है। इसके लिए छः मास का कार्यक्रम था।''

''तब ठीक है। कब से कार्यक्रम आरम्भ होनेवाला है?''

''मैं आज उससे इसी विषय पर बात करनेवाला था, परन्तु आज प्रातःकाल वह मेरी माताजी से कह रही थी कि वह तो भारत में ही रहना चाहती है और अमेरिका का काम छोड़ देगी।''

''सत्य? पर यह क्यों?''

''उसके मस्तिष्क में मातृभूमि की भक्ति का ज्वार आ रहा है।''

रामलाल को कुछ ऐसा समझ आया कि चन्द्र शोभा की शिकायत कर रहा है।

''परन्तु वहाँ काम पर तो जाएगी?'' रामलाल ने पूछ लिया।

''यही जानने के लिए मैं आया हूँ। मैं यहाँ के भ्रमण का कार्यक्रम ऐसा बनाना चाहता हूँ कि दस जनवरी से पहले हम अपने काम पर पहुँच जाएँ। हमें दस जनवरी को काम पर उपस्थित होना है।''

''तो ऐसा करो। आज रात यहीं रह जाओ। कदाचित् शोभा की माँ भी तुम लोगों के साथ भ्रमण का कार्यक्रम बना ले।''

चन्द्र को यह समझ आया कि शोभा का पिता अभी शोभा के प्रातः के विचार को नहीं जानता। इस कारण उसने अपनी बात बदली। उसने कहा, ''राम और सोम वहाँ हैं। इस कारण आज तो वहाँ जाऊँगा ही। फिर किसी दिन आपका निमंत्रण स्वीकार कर लूँगा।''

''मैं अभी अपनी मोटर भेज बच्चों को यहाँ मँगवा लेता हूँ?''

''यह शोभा और मेरी माताजी से पूछ लीजिए?''

''हाँ, यह ठीक है।'' रामलाल ने कहा और समीप मेज पर रखे टेलीफोन का चोंगा उठा वकील साहब के घर पर टेलीफोन करने लगा।

दूसरी ओर से स्वरूपरानी बोली। रामलाल ने कहा, ''माताजी! मैं चन्द्रजी से यह कह रहा हूँ कि रात यहीं रह जाएँ जिससे वह शोभा और उसकी माताजी से बात कर भारत-भ्रमण का कार्यक्रम बना सकें।''

स्वरूपरानी ने पूछ लिया, ''तो चन्द्र वहाँ है?''

''जी!''

''और वह क्या चाहता है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह आपसे पूछना चाहता है।"

"और शोभा से नहीं?"

रामलाल ने मुस्कराते हुए कह दिया, "वह तो रात यहीं रहने का विचार रखती थी परन्तु बच्चों के विषय में विचार कर रही थी कि वे आपको कष्ट देंगे।"

"कष्ट तो नहीं दे रहे। हाँ, माँ से मिलने की इच्छा अवश्य कर रहे हैं।"

"तो मैं उनको यहाँ ले आने के लिए गाड़ी भेज देता हूँ।"

"तब ठीक है।"

"वकील साहब कहाँ हैं?"

"वह अपने दफ्तर में बैठे हैं।"

"अच्छी बात है। मैं मोटर भेज रहा हूँ और उनसे पृथक् में बात कर लूँगा।"

जब टेलीफोन बंद हुआ तो चन्द्र ने पूछ लिया, "परन्तु आपने शोभा की इच्छा तो अभी जानी नहीं और स्वयं ही कह दिया है कि वह यहीं रह रही है।"

"वह ऊपर चलकर जान लेंगे।"

साढ़े आठ बजे दुकान बंद कर रामलाल चन्द्र के साथ ऊपर जा सका।

इस समय तक शोभा के बच्चे राम तथा सौमित्र भी आ चुके थे और ऊपर मकान पर अपने आने की सूचना दे चुके थे।

शोभा अपनी सास के घर लौट जाने की तैयारी कर रही थी कि बच्चे आए और वह उनका मुख देखती रह गई। राम ने ही कहा, "मम्मी! हम आ गए हैं।"

शोभा के मुख से अनायास ही निकल गया, "क्यों?"

राम का उत्तर था, "मोटर में आए हैं।"

"तो यह क्यों का उत्तर है?" शोभा ने मुस्कराकर पुत्र के मुख पर देखते हुए पूछ लिया।

राम माँ के प्रश्न और अपने उत्तर में विषमता ढूँढने लगा। शोभा हँस पड़ी और राम को समीप बैठा समझाने लगी, "मैंने यह नहीं पूछा कि तुम गाड़ी पर आए हो अथवा बस पर। मैंने यह पूछा था कि क्यों, किस मतलब से आए हो?"

शोभा सरल अंग्रेजी में समझा रही थी। कुछ-कुछ समझ, राम ने कहा, "ग्राण्डमम्मी से मिलेंगे।"

"और वहाँ की ग्रैण्डमम्मी से पूछकर आए हो?"

"उन्होंने ही तैयार कर भेजा है। यहाँ के ग्राण्डफादर ने गाड़ी भेजी थी। हम आ गए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब ठीक है। दिन के समय जब मैंने आने के लिए पूछा था तो तुमने कहा था कि तुम्हें वहाँ काम है। तो कर आए हो अपना काम?"

"हाँ, मकैनो से एक घर बना रहे थे। वह बन गया है।"

"और उसको वहीं छोड़ आए हो?"

"हाँ, पम्मी! वहाँ ग्राण्डमम्मी ने बहुत पसन्द किया है।"

"वह तुम दोनों भाइयों के लिए है या केवल तुम्हारे लिए?"

अब राम ने छोटे भाई से पूछ लिया, "क्यों सौमित्र! मेरे साथ मेरे मकान में रहोगे अथवा मम्मी के मकान में?"

"ग्राण्ड-माँ के मकान में।" सौमित्र ने बता दिया, "ग्राण्डी ने यहाँ भेजा है।"

चन्द्र माँ-पुत्रों की बात सुन रहा था। रामलाल अपने कमरे में वस्त्र बदलने चला गया था। रानी उसके साथ ही गई थी।

शोभा का भाई माणिक अब कॉलेज में पढ़ता था और अपने कमरे में बैठा अपनी पढ़ाई कर रहा था।

चन्द्र ने माँ-बच्चों की बात में दखल देते हुए पूछ लिया, "और मुझसे नहीं पूछा कि मैं क्यों आया हूँ?"

"तो आप पिताजी से मिलने नहीं आए?"

"हाँ, परन्तु क्यों, यह पूछने की बात थी?"

"ओह! तो आप मिलने नहीं आए, कुछ कहने आए हैं। मेरी शिकायत करनी भी हो सकती है। बताइए किसलिए आए हैं?"

"तुमने ठीक ही जाना है। तुम्हारी शिकायत करने ही आया हूँ।"

"और कर दी है शिकायत?"

"नहीं! पिताजी और माताजी, दोनों के सम्मुख करूँगा।"

"पहले बताकर करेंगे या बिन बताए ही?"

"तुम तो उसे जानती हो। इस कारण बताने की आवश्यकता नहीं समझी।"

"तो मैं जान गई हूँ?"

"क्या जान गई हो?"

"आप अमेरिका छोड़ना नहीं चाहते?"

"छोड़ सकता ही नहीं। अब मेरे चाहने की बात नहीं रही। वहाँ काम है, मकान है, पुस्तकालय है और मान-प्रतिष्ठा है।"

"परन्तु वहाँ समाज अपना नहीं है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरा समाज तो तुम हो। तुम वहाँ थीं और तुम ही वहाँ से भाग इधर को आना चाहती हो। उसी के विषय में शिकायत करने आया हूँ।"

"यह तो ठीक ही किया है जो शिकायत करने यहाँ आ गए हैं। वहाँ, मेरा मतलब है, अपनी माताजी के समक्ष शिकायत निष्फल हुई है न?"

"शोभा! बस, यही गुण है जो मुझे तुम पर मुग्ध रखता है। बात मेरे मन में ही होती है, तुम पहले ही जान लेती हो।

"मैंने अपनी माताजी से तुम्हारी शिकायत की थी। उन्होंने कहा है कि वह इसमें हस्तक्षेप नहीं करेंगी। मुझे तुमको प्रेम से समझाना चाहिए।"

"तो वह किस समय समझाएँगे? मेरे माता-पिता से शिकायत करने से पहले अथवा पीछे?"

"मैं अपने प्रेममय व्यवहार में उनकी बुद्धियुक्त सहायता चाहता हूँ। उस सहायता को पहले ही उपलब्ध करना चाहता हूँ।"

"तब ठीक है। माँ की बुद्धि तो मेरे अनुकूल ही है। पिताजी को मैंने अभी कुछ बताया नहीं।"

"तो माताजी ने क्या कहा है?"

"यही कि मेरे पति को मेरे साथ रहना चाहिए।"

"और तुम्हें पति के साथ नहीं रहना चाहिए?"

"यह तो लक्ष्य को प्राप्त करने का ढंग है। लक्ष्य एक ही है।"

"और यह भारत में आकर बसने का और वहाँ मकानादि पर लगा धन व्यर्थ गँवाने का क्या होगा?"

"नहीं, ऐसा मेरा विचार नहीं है।"

"तो····।" बात बीच में ही रुक गई। रामलाल और रानी आ गए थे।

पाचक सूचना देने आया था कि भोजन तैयार है। इस कारण रानी माणिक को बुलाने उसके कमरे को चल पड़ी और रामलाल दामाद तथा लड़की को लेकर खाने के कमरे में जा पहुँचा।

भोजन करते हुए भारत-भ्रमण की योजना बनने लगी। रामलाल ने बता दिया, "अभी जून मास है। गर्मी है। मेरा विचार है तुम अपना भ्रमण क़श्मीर से आरम्भ करो। वहाँ से लौटते हुए मंसूरी, नैनिताल घूमकर तुम सितम्बर के अन्त में आ जाना।

"यहाँ दिल्ली एक-दो दिन माता-पिता से मिलकर दक्षिण में ऊटी और वहाँ से शिलौंग होते हुए पूर्व में दार्जिलिंग में जाना अधिक ठीक होगा। मेरा विचार है कि अक्तूबर मास तक यह पहाड़ी स्थानों की ठण्डी हवाएँ लेते हुए पीछे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैदानी क्षेत्रों का भ्रमण हो सकेगा। हरिद्वार से कामाख्या तक और जगन्नाथ पुरी से रामेश्वरम् तक, फिर कन्याकुमारी, द्वारिका तक और वहाँ से जयपुर, जोधपुर होते हुए तुम दिसम्बर के अन्त तक दिल्ली पहुँच सकोगे।''

''और फिर हम तुम्हें और बच्चों को हवाई पत्तन तक अमेरिका के लिए विदा करने जाएँगे।''

भिन्न-भिन्न स्थानों के गुण-दोष और उस ऋतु में वहाँ के रहने का प्रबन्ध पर विचार करते-करते ही भोजन समाप्त हुआ और सब उठकर ड्राइंगरूम में आ गए।

''बताओ माणिक! चलोगे हमारे साथ?'' चंद्र ने पूछा।

''जीजाजी! नहीं! मैं इस वर्ष बी०ए० की परीक्षा दे रहा हूँ और परीक्षा तक दिल्ली से बँधा हुआ हूँ। कहीं भी नहीं जा सकता।''

''परंतु परीक्षा तक तो हम लौट आएँगे?''

''तब मैं आपसे मिलने अमेरिका आऊँगा।''

''बहिन से पूछ लो। वह तुम्हारे कान वहाँ भी मरोड़ सकती है?''

''अब मैं शरारतें करनी छोड़ चुका हूँ। इससे कान मरोड़े जाने का भय नहीं रहा।''

इस प्रकार सोने के समय तक शोभा के अमेरिका छोड़ देने की बात ही नहीं हो सकी।

:: 8 ::

राम और सौमित्र, माणिक के साथ उसके कमरे में सोए और चंद्र तथा शोभा जब सोने के लिए पृथक् कमरे में पहुँचे तो चंद्र ने पूछा, ''अभी तो तुम्हारे अमेरिका में काम न छोड़ने की चर्चा नहीं हो रही।''

''मैंने माताजी को अपनी इच्छा बताई है और उन्होंने कहा है कि यह बात मुझे आपसे निश्चय कर लेनी चाहिए?''

''और मुझसे कब विचार करोगी?''

''अभी तो जनवरी तक यहाँ घूमने का कार्यक्रम बन गया है?''

''कल प्रात:काल मैं तुमसे इस विषय पर बात कर लूँगा और तब किसी टूरिस्ट कंपनी से आरक्षण कराऊँगा।''

''माताजी कह रही थीं कि वह भी हमारे साथ चलने की सोच रही हैं, परंतु पिताजी से बात कर ही निश्चय करेंगी।''

''वह भी कल प्रात:काल तक ही अपना निर्णय बता सकेंगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''और वहाँ काम छोड़ने की बात, मैं अमेरिका पहुँचकर ही निश्चय कर सकूँगी।''

''और प्रात: वंदना के उपरांत जो कुछ कहा था?''

''वह तो योजना है। उसका आरंभ तो आज ही कर रही हूँ?''

''क्या आरंभ कर रही हो?''

''यही कि विचार कर रही हूँ कि कब आरंभ करूँ और कैसे मेरी योजना यौवन पर आएगी और फिर किस प्रकार उसका अंत होगा?

''देखिए, अब इस विषय पर विचार और निर्णय अमेरिका में अपने घर में बैठकर करेंगे।''

''बहुत-बहुत धन्यवाद है शोभा! मैं तो डर रहा था कि कहीं यहीं से ही अपना त्याग-पत्र भेजने की बात न कर रही हो।''

शोभा हँस पड़ी और बोली, ''वह जीवन-भर का कार्य है और यह तो अभी यहाँ छः मास व्यतीत करने का कार्यक्रम है।''

चंद्र बात टलती देख प्रसन्न था।

अगले दिन प्रात:काल अल्पाहार के समय चंद्र ने शोभा की माताजी से पूछ लिया, ''माताजी! आप हमारे साथ भ्रमण पर चल रही हैं न?''

रानी ने कह दिया, ''नहीं! मैं आपके साथ नहीं जा रही। इस पर भी मैं जा रही हूँ और चाहती हूँ कि तुम सब मेरे साथ चलो।''

''आप कहाँ जा रही हैं?'' चंद्र का प्रश्न था।

''यहाँ से हवाई जहाज में श्रीनगर। वहाँ एक सप्ताह 'हाउस बोट' में रहकर दो दिन के लिए गुलमर्ग, फिर पहलगाम और अमरनाथ। अमरनाथ से लौटकर श्रीनगर, पठानकोट, वहाँ से कुल्लू और तदनन्तर मनाली।

''एक सप्ताह मनाली रहकर दिल्ली में आपके माता-पिता से मिलकर हवाई जहाज से पटना, वहाँ से नेपाल। वहाँ के स्थानों को देखकर पीछे दार्जिलिंग। एक सप्ताह वहाँ रहकर शिलांग, दो दिन कलकत्ता, दो दिन मद्रास, त्रिवेंद्रम और वहाँ से कन्याकुमारी। कन्याकुमारी से कोचीन, गोवा, गोवा से समुद्री जहाज से बंबई। बंबई से अहमदाबाद, द्वारिका, उदयपुर और फिर दिल्ली।''

''और हमने भी तो लगभग यही कार्यक्रम बनाया है?''

''तो आप भी मेरे साथ चल सकें तो अधिक ठीक होगा?''

''और यही तो हम कह रहे हैं?''

''नहीं चंद्रजी! आप इससे उलटा कार्यक्रम बता रहे थे। आप कह रहे थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मैं आपके साथ चलूँ और मैं आपको निमंत्रण दे रही हूँ कि आप मेरे साथ चलिए। मैं इतनी छूट आपको दे सकती हूँ कि इस कार्यक्रम में यदि कहीं परिवर्तन चाहें तो मुझे कह दें, मैं विचार कर लूँगी।''

शोभा माताजी की बात सुन मुस्करा रही थी। चंद्र ने उसे मुस्कराते देख समझा कि वह अपनी माँ की बात मान रही है। इस पर उसे शरारत सूझी। उसने कहा, ''और माताजी! यदि हम आपके पिछलग्गू न बनें तो आपका कार्यक्रम क्या होगा?''

''मैं तो जा रही हूँ और शोभा तथा आपको साथ चलने का निमंत्रण दे रही हूँ। अभी तक मेरे साथ-साथ चलने के लिए राम और सौमित्र तैयार हुए हैं और उनकी दादी भी तैयार है।

''मैंने राम के बाबा को भी निमंत्रण दिया था, परंतु वह कहते थे कि उनको दिल्ली में काम है। वह इतने लंबे काल के लिए दिल्ली नहीं छोड़ सकते।''

''तो आप अपना टूअर कब आरंभ करेंगी?''

''तीन जुलाई को यहाँ से सीटें बुक कराने का विचार है। बस, आपसे जानने के लिए रुकी हूँ कि आप हमारी पार्टी में सम्मिलित होंगे अथवा नहीं?''

''जब दोनों माताएँ जा रही हैं तो हमारे लिए अन्य कोई मार्ग ही नहीं रहा। परंतु माताजी! इतनी बड़ी पार्टी, जिसमें चार तो बड़े प्राणी हैं और दो बच्चे हैं, के मार्ग में और रहने का प्रबंध करने के लिए कोई योग्य सेक्रेटरी भी तो साथ होना चाहिए?''

''एक सेक्रेटरी हमारे साथ चल रहे हैं। वह हैं—राम के नाना और वह पूर्ण कार्यक्रम का यहाँ की एक टूरिस्ट कंपनी से प्रबंध करने जा रहे हैं।''

''क्यों शोभा! क्या विचार है?'' चंद्र ने शोभा से पूछ लिया।

शोभा दूध-दलिया ले रही थी। उसने मुख का ग्रास गले से नीचे उतारकर कहा, ''आपके बाथरूम में जाने के समय मुझसे माताजी ने पूछा था। मैंने कहा है कि आपसे राय कर ही बता सकती हूँ।''

''तो कब राय करोगी? अभी या अल्पाहार के उपरांत राम की दादी के घर चलकर?''

''जब भी चाहें। मेरे लिए राम की दादी और राम की नानी में अंतर नहीं। राम की नानी ने निमंत्रण दिया है और फिर दादी को टेलीफोन कर पूछा था, वह कह रही थीं कि उनका भी हमारे साथ रहकर मन अभी भरा नहीं। इस कारण वह हमें साथ ले चलना चाहती हैं।''

''तब तो हमारे विचार करने का अवसर ही नहीं है। जब माताजी इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'टूअर' पर जा रही हैं और उनका जी हमारे साथ रहकर अभी भरा नहीं है तो फिर हम तो उनके घर आए थे। इस कारण विचार करने में कुछ अड़चन नहीं रही।

"मैं अपनी माँ के साथ जा रहा हूँ और तुम अपनी माँ के साथ जाओ। और क्योंकि दोनों की माताएँ साथ-साथ भ्रमण के लिए जा रही हैं इस कारण हम भी साथ-साथ हो जाएँगे।"

"ठीक है। आप अपनी माताजी से बात कर लीजिए और मैं अपनी माताज़ी से बात कर लेती हूँ।"

शोभा कहती-कहती हँस पड़ी। रामलाल गंभीर बन बैठा हुआ था।

चंद्र ने अपने श्वसुर के गंभीर मुख को देखा तो पूछ लिया, "पिताजी! आप प्रसन्न प्रतीत नहीं होते?"

"देखिए चंद्रजी! शोभा की माताजी ने कहा है कि इस टूअर पर जा रही पार्टी का मैं सेक्रेटरी हूँ। सेक्रेटरी का अधिकार नहीं होता कि मालिक के कार्यक्रम पर टीका-टिप्पणी करे। इस कारण मैं तो पार्टी के नेता की आज्ञा की प्रतीक्षा में हूँ कि कितने लोगों के भ्रमण का प्रबंध करना है।"

चंद्र ने अल्पाहार समाप्त करते ही अपनी माँ को टेलीफोन किया तो उसे पता चला कि शोभा की माँ ने प्रातः छः बजे ही कार्यक्रम उसकी माताजी से निश्चय कर लिया था। चंद्र का पिता नहीं जा रहा था। उसको दिल्ली में अगले मास दो बड़े मुकद्दमों का काम मिला हुआ था और स्वरूपरानी का रानी से कार्यक्रम व्याख्या सहित निश्चय हो चुका था।

"तो हम भी आपके साथ चलें?" चंद्र ने पूछा।

"यह तो होना ही चाहिए। मैं तो तुम दोनों के साथ के लोभ में चलने को तैयार हुई हूँ।"

"तब ठीक है।" चंद्र ने इतना कह चोंगा रख दिया और अपने श्वसुर से बोला, "पिताजी! हम दोनों पति-पत्नी भी आपके साथ चल रहे हैं।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद।" रामलाल ने कह दिया, "मैं अभी शोभा की माताजी को बता देता हूँ। मैं उनका सेक्रेटरी जो हूँ।" कहते-कहते वह मुस्कराया।

इस प्रकार तीन जुलाई को टूअर आरंभ हुआ और पार्टी भ्रमण करती हुई शिलांग से कलकत्ता पहुँची ही थी कि चीन के आक्रमण का समाचार रेडियो द्वारा प्रसारित होता हुआ सुना गया।

इस समाचार का प्रथम परिणाम यह हुआ कि कलकत्ता से मद्रास जाने के लिए हवाई जहाज नहीं मिला। हवाई जहाज की सेवाओं में कटौती हो गई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ रेलगाड़ियाँ भी चलनी बंद हो गई थीं। इस कारण उसमें भी सीट नहीं मिल सकी।

इस पर रामलाल ने रानी को बता दिया, "हम कलकत्ता में बंदी हो गए हैं।"

रानी का कहना था, "मेरी राय है कि शेष टूअर रद्द कर दिल्ली लौटने का प्रबंध किया जाए।"

रामलाल का अनुमान था कि शायद यह हो सकेगा। उसने बताया, "कलकत्ता से नियमित और अनियमित गाड़ियाँ खाली जा रही हैं। यह इस कारण कि अधिकारी और सैनिक भर-भर कर आसाम को जा रहे हैं।"

इस प्रकार सब लोग अक्तूबर की बीस तारीख को दिल्ली आ पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही चंद्र के पिता ने बताया कि प्रधानमंत्री के सेक्रेटरी का कल से टेलीफोन आ रहा है कि चंद्रमोहन का पता बताया जाए।

"और आपने क्या उत्तर दिया है?" चंद्र ने पूछा।

"मैंने कहा है कि मैं पता करता हूँ कि तुम इस समय कहाँ रुके हुए हो। मेरा विचार था कि तुम मद्रास पहुँच गए होगे। वहाँ के होटलों से पता करने के लिए टेलीफोन-बुक कराया हुआ है। अभी कोई कॉल मिली नहीं। और तुम यहाँ आ पहुँचे हो।"

चंद्र इत्यादि बिना किसी प्रकार की सूचना के दिल्ली पहुँचे थे। कलकत्ता से रेलगाड़ी सायं आठ बजे दिल्ली पहुँचती थी, परंतु गाड़ी पहुँची थी दस बजे और टूअर से लौटनेवाली पार्टी स्टेशन से दो भागों में बँट गई थी। एक सिविल लाइंस को और दूसरी कनॉट सर्कस को चल पड़ी। सिविल लाइंस को जानेवाली टैक्सी में स्वरूपरानी, चंद्र और शोभा थे। राम, सौमित्र दोनों नाना-नानी के साथ कनॉट सर्कस चले गए थे।

मुकुटबिहारी चंद्र, उसकी माता और पत्नी को आते देख विस्मित रह गया और उनके ड्राइंगरूम में बैठते ही पिता ने पुत्र को यह सूचना दी कि प्रधानमंत्री तुम्हारा पता पूछ रहे थे। पुत्र के कहने पर मुकुटबिहारी ने प्रधानमंत्री के प्राईवेट सेक्रेटरी को टेलीफोन कर दिया।

प्रधानमंत्री के सेक्रेटरी ने कह दिया कि यदि मिस्टर चंद्रमोहन दिल्ली पहुँच गए हैं तो उनको कल प्रातः आठ बजे तीन मूर्ति भवन के द्वार पर आ जाना चाहिए। प्रधानमंत्री उनसे मिलना चाहते हैं।

चंद्र विचार कर रहा था, जब आक्रमण हो गया है और भारतीय सेना में भगदड़ मच गई है तो उसको बुलाकर क्या कहना चाहते हैं यहाँ के प्रधानमंत्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर भी अगले दिन ठीक आठ बजे वह द्वार पर पहुँचा और उसने अपना कार्ड दिया तो तुरंत उसे भीतर ले जाकर उसी बड़े कमरे में भेंट का अवसर दिया गया जिसमें चार मास पहले भेंट हुई थी।

प्रधानमंत्री से भेंट कर चंद्र घर पहुँचा तो उसने पिता को सूचना दी कि वह तीन बजे हवाईजहाज से अमेरिका जा रहा है। पिता उसका मुख देखता रह गया। इस पर चंद्र ने पिता को अपनी भेंट का विवरण सुना दिया। उसने बताया, ''मैं कमरे में पहुँचा ही था कि प्रधानमंत्री पिछले द्वार से भीतर आ गए। मैंने हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए कहा, 'मैं कलकत्ता से मद्रास जाने के लिए तैयार था, परंतु हवाई जहाज का 'पैसेज' नहीं मिल रहा था। इस कारण ट्रेन से दिल्ली चला आया हूँ।'

''प्रधानमंत्री ने पूछा, 'तो वहाँ मद्रास में कुछ काम था?''

''मैंने बताया, 'जी! कुछ विशेष नहीं। मैं अपनी पत्नी के साथ देश-दर्शन के लिए घर से निकला था और जब सिलगुड़ी से कलकत्ता आ रहा था तो समाचार मिला कि चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया है।'

'' 'हाँ। ऐसा प्रतीत होता है कि चीन ने पूरे बल से आक्रमण कर दिया है। हमारी सेना उनका विरोध नहीं कर सकी और वहाँ से वापस लौट रही है।'

'' 'और श्रीमान्। सुना है कि क्षेत्र के लैफ्टिनेंट-जनरल बीमार होकर दिल्ली हस्पताल में आए हुए हैं?'

'तो आपका विचार है कि वह बीमार नहीं हैं?'

'मुझे सुनी-सुनाई बातों से ज्ञान है। सीधी सूचना मेरे पास नहीं। इसलिए मैंने आपसे पूछा है?'

''प्रधानमंत्री ने बात बदल दी। वह कहने लगे, ''मुझे आशा नहीं थी कि इस प्रकार आक्रमण होगा। एक कम्युनिस्ट देश इस प्रकार की बात नहीं कर सकता?'

''मैंने मुस्कराकर कहा, 'श्रीमान्! तब मैं यही कहूँगा कि आप कम्युनिज़्म के विषय में कुछ नहीं जानते। वैसे यह एक प्राकृतिक-सिद्धांत है कि जहाँ मैत्री का आधार भौतिक-पदार्थ हों, वहाँ अवश्य झगड़ा होता है। भौतिक-पदार्थ सीमित होते हैं और उनके आधार पर मैत्री रह नहीं सकती। पदार्थों के कम अथवा समाप्त होने पर झगड़ा होता ही है।'

'' 'इस कारण हमारे नीतिज्ञों ने कहा है कि मैत्री का आधार कुछ ऐसी वस्तु होनी चाहिए जिसका स्रोत असीम हो।'

'' 'तो ऐसा कोई पदार्थ संसार में है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'हाँ श्रीमान्! वह है आत्म-शांति। इसका स्रोत कभी सूखता नहीं।'

" 'बस, यही तो तुम हिंदू सभाईटों में दोष है। इसी कारण देश पतन के गड्ढे में गिर रहा है।'

" 'सर! मुझे खेद है कि मैं आपसे सहमत नहीं हूँ। मुझे बताइए कि मैं आपकी अथवा मातृभूमि की क्या सेवा कर सकता हूँ?"

" 'हाँ, सुनो। मैं एक पत्र अमेरिका के राष्ट्रपति को भेजना चाहता हूँ। निजी-रूप में ही उनसे कुछ कहना चाहता हूँ। मुझे बताया गया था कि राष्ट्रपति ने युद्ध के अवसर पर हमारी सहायता करने का विचार प्रकट किया था। हम चाहते हैं, वह करें। अब अवसर है।'

" 'तो श्रीमान्! किस प्रकार की सहायता चाहते हैं?'

" 'यह सब मैंने अपनी 'डिस्पैच' में लिख रखा है। वह तुम ले जाओ और देश की यह सेवा कर दो।'

" 'मैं हवाई जहाज से पैसेज बुक करवाने चला जाता हूँ। आप वह डिस्पैच मुझे अभी दे सकते हैं।'

" 'नहीं। सायं चार बजे के जहाज से आपको सीट मिल जाएगी। आप हवाई पत्तन पर ठीक साढ़े तीन बजे पहुँच जाइएगा। परसों प्रातःकाल आप वाशिंगटन पहुँच जाएँगे और वहाँ आप निजी रूप से राष्ट्रपति से संपर्क बना, हमारा पत्र देकर, उनका उत्तर लाने का यत्न करेंगे। हमारी डिस्पैच आपको हवाई पतन पर मिल जाएगा।'

" 'यह ठीक है। मैं वहाँ समय पर पहुँच जाऊँगा।'

माथुर ने चंद्र की बात सुनी तो गंभीर विचार में मग्न हो गया। चंद्र ने जब शोभा को अपने जाने का समाचार दिया तो शोभा का प्रश्न था, "मैं भी साथ चल सकती हूँ?"

"मैं आवश्यकता नहीं समझता। यह तुम बताओ कि तुम्हें वहाँ कुछ काम है? मैं समझता हूँ कि परसों मैं वहाँ पहुँचूँगा और यदि मेरा काम जाते ही हो गया तो उसी दिन वहाँ से चल पड़ूँगा। मुझे यहाँ आकर बताना है कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष यहाँ के पत्र की वहाँ क्या प्रतिक्रिया होती है।"

"तब मैं समझती हूँ कि मुझे आपकी प्रतीक्षा यहीं करनी चाहिए?"

चंद्र गया और पाँचवें दिन लौटा। वहाँ भारत के प्रधानमंत्री के पत्र की प्रतिक्रिया उत्पन्न होते दो दिन लगे।

पत्र का उत्तर ले चंद्र दिल्ली पहुँचा तो हवाई पत्तन से वह सीधा तीन मूर्ति भवन में पहुँच गया। वहाँ भारत सरकार के पत्र का उत्तर दे, वह अपने घर पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंकाल का समय हो चुका था। वैसे घर पर यह समझा जा रहा था कि उसे वहाँ से लौटने में दो सप्ताह लग जाने सहज हैं। इस कारण उसे बिना सूचना के घर पर पहुँचते देख पिता, जो चाय लेने कोठी के ड्राइंगरूम को जा रहा था, विस्मय में मुख देखते हुए पूछने लगा, "तो तुम आ गए हो?"

"जी!" चंद्र ने पिता के साथ ड्राइंगरूम को चलते हुए कहा, "आशा से एक दिन अधिक लगा है। ह्वाईट हाउस की प्रतिक्रिया बनने में देर लगी है। परंतु मुझे उस सरकारी व्यक्ति ने, जिसने चार महीने पहले मुझे गैर-सरकारी रूप में यहाँ भेजा था, अपनी प्रतिक्रिया बताई है। उसका कहना है कि भारत लेट-लतीफ है। इस पर भी रियायती अंक देकर पास करने का विचार है।"

"और यहाँ अमरीकी उत्तर की क्या प्रतिक्रिया हुई है?" मुकुटबिहारी माथुर का प्रश्न था।

"पत्र प्रधानमंत्री ने लेकर अपने पास रख लिया है और इधर-उधर की बातें होने लगी थीं।"

"किधर की?" स्वरूपरानी ने पूछा।

चंद्र ने हँसते हुए कहा, "मैं जब पत्र देकर चलने लगा तो प्रधानमंत्रीजी ने पूछा कि मैं अमेरिका कब लौट रहा हूँ?"

"मैंने बताया, 'अभी मेरी छुट्टी दस जनवरी तक है और मैं उससे चार-पाँच दिन पहले जाने का विचार रखता हूँ। मार्ग में एक-आध स्थान पर ठहरना होगा।'

:: 9 ::

अगले दिन भारत सरकार की ओर से यह विज्ञप्ति निकली कि भारत पर चीन का आक्रमण अकारण है। भारत की ओर से किसी प्रकार की उत्तेजना इस कार्य के लिए नहीं थी। इस कारण सब समृद्ध राष्ट्रों से भारत सहायता की आकांक्षा रखता है। इस समय हमें विशेष प्रकार के शस्त्रास्त्र जो पहाड़ी क्षेत्रों में प्रयोग होने योग्य हैं, की आवश्यकता है।

इस विज्ञप्ति को पढ़कर चंद्र समझ गया कि उसके मिशन की यह प्रतिक्रिया है। संभवत: अमेरिका ने यह माँग की है कि कुछ-न-कुछ आधार हो तभी अमरीका भारत की सहायता का हाथ बढ़ा सकता है।

परंतु चंद्र समझता था कि सहायता प्राप्त करने का यह ढंग उचित नहीं है। इस प्रकार अमेरिका की सार्वजनिक याचना की माँग अनुचित और अंतर्राष्ट्रीय विधि-विधान के विपरीत समझी जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु इसी समय हिमालय के क्षेत्र में और लद्दाख क्षेत्र में, भारत देश के सहस्रों मील के क्षेत्र पर अधिकार कर लेने के उपरांत चीन ने स्वयमेव युद्ध बंदी की घोषणा कर दी।

इस समय तक चीनी सेनाएँ हिमालय पर भारत की ओर ढलवानों पर आ पहुँची थीं और सरकारी क्षेत्र में आशंका प्रकट की जा रही थी कि असम और लद्दाख क्षेत्र पूर्ण रूप से चीन के अधिकार में हो जाएगा। असम सरकार तो अपने सरकारी कागजात ले, अपने कार्यालय के साथ नीचे मैदानों में उतर आई थी।

यह युद्धबंदी की घोषणा एक बार तो सुखद् प्रतीत हुई। सरकारी क्षेत्रों में इसका स्वागत किया गया। जनता ने इस पर असंतोष प्रकट किया। जनता और संसद् में विरोधी दलों का आशय था कि भारत युद्धबंदी स्वीकार तो कर ले, परंतु मुख से चीनी सेनाओं का भारत-भूमि पर रहना स्वीकार न करे।

इस प्रकार की घोषणा का परिणाम यह हुआ कि चीन ने युद्धबंदी के साथ यह घोषणा कर दी कि चीन की सेना उस क्षेत्र में भी पहुँच गई है, ज़िसे चीन अपना नहीं मानता, अत: वह उन सब क्षेत्रों से अपनी सेना को लौट आने की आज्ञा दे रहा है।

परिणाम यह हुआ कि भारत और तिब्बत के भीतर जो सीमा 'मैकमोहन' रेखा निश्चय की गई थी, वह चीन ने स्वीकार नहीं की और जो सीमा चीन उचित समझता था, उसके आधार पर शेष क्षेत्र से चीनी सेनाएँ लौट गईं।

यह घोषणा और चीनी सेना का लौट जाना, कुछ भारतीय और अमेरिकन क्षेत्रों में अमरीका के इस युद्ध में रुचि के कारण माना गया। अमरीका का सागर पोत 'सात' बंगाल की खाड़ी में आ पहुँचा था। चीन ने यह प्रकट किया कि युद्ध-बंदी से इसका कोई संबंध नहीं है। उसका यह भी कहना था कि उसने युद्ध इस कारण किया था क्योंकि वह समझता है कि अंग्रेजी-काल से भारत ने तिब्बत का कुछ क्षेत्र अपने अधिकार में ले रखा था। वह उस क्षेत्र को वापस लेना चाहता था।

मुकुटबिहारी माथुर और चंद्र को चीन की इस घोषणा पर विस्मय नहीं हुआ था। दोनों समझते थे कि यह एक गंभीर चाल है और भारत-विजय का शेष कार्य कभी भविष्य के लिए छोड़ दिया गया है।

माथुर का कहना था कि इसका प्रभाव भारत में साम्यवाद के प्रसार के रूप में होगा। भारत के कम्युनिस्टों को यह कहने का अवसर मिलेगा कि साम्यवाद एक न्यायसंगत विचारधारा है।

हुआ भी यही। इस युद्धबंदी के उपरांत भारत में एक नवीन प्रकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। उस समय तक रूस और चीन में भी सीमा का विवाद उग्र हो रहा था तथा रूस में चीन का एक पक्षीय आक्रमण और भारत के कुछ क्षेत्रों पर अधिकार कर लेना पंसद नहीं किया गया था।

परिणामस्वरूप भारत के कम्युनिस्ट दल में फूट पड़ गई। कम्युनिस्ट पार्टी बहुत अंशों में रूस के धन और सहायता पर चल रही थी। अत: भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने रूस के मत का समर्थन किया और कुछ कम्युनिस्ट, जो चीन के प्रशंसक हो रहे थे, उन्होंने सी०पी० आई से पृथक् हो सी०पी०आई०एम० के नाम से नया दल बनाना घोषित कर दिया।

इस दल ने खुलकर प्रचार करना आरंभ कर दिया कि चीन के कम्युनिस्ट रूस के कम्युनिस्टों से भिन्न हैं। इन्होंने चीन की नीति को 'माओ-वाद' का नाम दिया और यंह पार्टी भारत की राजनीति में खुलकर भाग लेने लगी। इसी कारण इन्होंने अपनी पार्टी का नाम सी०पी०आई०(एम०) रखा। एम० से माओवाद संबंधित था, यद्यपि वे कहते थे कि इसका अर्थ मार्क्सवादी है।

चंद्र और शोभा नौ जनवरी को फिलाडैल्फिया जा पहुँचे और अगले दिन से ही दोनों अपने कार्य में लीन हो गए।

दोनों को आए एक सप्ताह ही हुआ था कि उनमें भविष्य में अमेरिका में रहने के विषय पर बातचीत हो गई। एक दिन चंद्र ने पूछा, "शोभा डीयर! बताओ, अमेरिका में कब तक रहने का विचार है?"

शोभा ने अपना विचारित मत बता दिया। उसने कहा, "मुझे दिसंबर 1963 तक अपने विश्वविद्यलाय के साथ हुए अनुबंध के अनुसार यहाँ रहना ही है और उसमें अभी ग्यारह महीने हैं। इस कारण मैंने भविष्य के विषय में अभी कुछ निश्चय नहीं किया। कम-से-कम इस विद्यालय में मेरा सेवा-कार्य मेरे अकेली के अधीन तो है नहीं। यह यहाँ के विश्वविद्यालय के विचार करने की बात है। वर्तमान कुलपति बदल रहे हैं और आनेवाले नए कुलपति भारतीय संगीत के विषय में क्या विचार रखेंगे, कहा नहीं जा सकता।"

"यह सब ठीक है। मैं यह जानता हूँ। समय से पूर्व अनुबंध तो दोनों पक्षों की अनुमति से ही समाप्त किया जा सकता है। मैं तो उसके पीछे की बात विचार कर रहा हूँ।"

"और मैंने अपने विचार बता दिए हैं। यह एक बहुत बड़ा कारण है कि मैंने बच्चों को भारत में ही रहने की स्वीकृति दे दी है।

"माताजी और मैं भी उनमें कुछ अधिक भारतीयता का संचार चाहती थी। इसके लिए उनको वहाँ छोड़ आने का मेरा विचार बना था। अपने विषय में अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं अनिश्चित मन हूँ।"

चंद्र ने अपने विचार का आधार बता दिया। उसने कहा, "मैं यह विचार कर रहा हूँ कि मकान तथा पुस्तकालय पर और अधिक धन व्यय करूँ अथवा न? यदि शेष जीवन भारत में व्यतीत करना है तो यहाँ की सम्पत्ति बेच देनी होगी। मैं इस छोटी-सी पूँजी को घर से इतनी दूर रखने में कुछ कारण और लाभ नहीं समझता।"

"मुझे तो इसमें किसी प्रकार की असंगति समझ नहीं आ रही। भारत में रहते हुए यहाँ भी एक निवास-स्थान क्यों नहीं रह सकता? यदि कानून से यह वर्जित नहीं तो हम इसको क्यों नहीं रख सकते?"

चंद्र ने अपने मन की बात बता दी। उसने कहा, "मैं इंग्लैंड अथवा भारत के राजा-रईसों की भाँति नहीं हूँ, जिनकी कमाई में उनके परिश्रम का कुछ भी अंश नहीं होता। स्पष्ट शब्दों में यह कहता हूँ कि मेरी कमाई हराम की नहीं है। इस पर मेरा खून-पसीना लगा हुआ है। इस कारण मैं लगे धन का पूर्ण भोग करना चाहता हूँ।"

"और इसका भोग करने से कौन मना कर रहा है?"

चंद्र ने मुस्कराते हुए कहा, "मेरी प्रिय पत्नी कह रही है कि कदाचित् यह माथुर-विला अब खाली करना होगा।"

"जी नहीं। मेरा आशय यह नहीं है। मेरी योजना कुछ ऐसी बन रही है कि भारत और अमेरिका की जो अर्थ-व्यवस्था में अंतर है, उसका पूर्ण लाभ भारत की समाज को पहुँचाया जाए। इस कारण अपने मन और शरीर की धनोपार्जन-सामर्थ्य का उपयोग यहाँ अमेरिका में रहकर ही करूँगी। परंतु उस धन का भरपूर लाभ भारतीय, विशेष रूप से हिंदू-समाज को देना चाहती हूँ।"

चंद्र खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "तो मेरे मन का भय निर्मूल हो गया है। तुम मुझे यहाँ पेड़ पर बैठे को छोड़ यहाँ से उड़ जाना नहीं चाहतीं?"

"हाँ, यह ठीक है; मैं अभी तक अपने आठ वर्ष के आपसे संपर्क के अनुभव पर विचार कर रही थी। मैं सोच रही थी कि क्या आपका मेरे प्रति आकर्षण मेरे शरीर के कारण ही है और क्या वह दिन-प्रतिदिन क्षीण तो नहीं हो रहा है न।"

चंद्र इस आरोप पर गंभीर हो, विचार करने लगा और ध्यान से पत्नी का मुख देखने लगा।

वह चिंतन करने लगा कि शोभा का उस समय का सौंदर्य, जब उसने उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पिता की दुकान में सितार लिए खड़े, उसके पिता से बातें करते देखा था, कैसा था? वैसे तो उसने रामलाल के बच्चों को पहले भी देखा था, परंतु उस दिन उसे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ था कि वह मंच पर खड़ी है और मंच के एक ओर से उस पर किसी तीव्र प्रकाशवाले लैम्प से 'फ्लड लाईट' पड़ रही है और उसका पूर्ण शरीर उस प्रकाश में ज्योतिर्मय हो रहा है।

वह सुंदर तो थी, परंतु उसके सौंदर्य के अतिरिक्त कुछ विशेष अन्य प्रकाश भी था जो उसे देदीप्य कर रहा था।

यह शोभा में आ रहे यौवन का प्रकाश भीतर से प्रस्फुटित हो रहा था। वह चौदह वर्ष की हो रही थी और कौमार्यावस्था यौवन में बदल रही थी।

चंद्र को यह समझ आया कि वह कोई चीनी का अति सुंदर ग्लोब है और उसके भीतर कई सहस्र 'वाट' का लैम्प जल रहा है।

आज जब उसे उस समय की बात स्मरण कराई गई तो वह उस काल की स्मृति पर मुग्ध हो उठा।

परन्तु उसे सामने बैठी, दो बच्चों की माँ के भीतर का वह प्रकाश कम हो रहा प्रतीत हुआ। शरीर तो वैसा ही सुंदर था, परंतु भीतर तेज मद्धम हो रहा दिखाई दे रहा था। वह इस परिवर्तन के विषय में विचार करता हुआ पत्नी के मुख पर देखने लगा। आखिर शोभा के अपनी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि में देखने पर उसने अपने मन के उद्गार प्रकट कर दिए। उसने कहा, "मुझे उस समय के तुम्हारे दर्शन की याद आ रही है और उस स्मृति से मेरा पूर्ण शरीर पुलकित हो उठा है। मैं यह भी देख रहा हूँ कि अब वह ओज क्षीण हो रहा है। परंतु शोभा, जो कुछ भी उसके स्थान पर मिला है, उसका अनुभव भी हो रहा है। वह है तुम्हारा बच्चों की माँ होना और तुम्हारा मेरे प्रति वासना के अतिरिक्त अनुराग।

"शोभा! इस अनुराग में शिथिलता का संकेत दिल्ली में तुम्हारे कथन से अनुभव हुआ था। परंतु आज तुम्हारी विचार-दिशा को सुनकर पूर्ववत् स्थिति का आश्वासन हुआ है और मैं बहुत अनुगृहीत अनुभव करता हूँ।"

शोभा ने मुस्कराते हुए कहा, "सुनिए, मैं आपको अपने भावों का विश्लेषण बताती हूँ।

"मुझे स्पष्ट रूप से स्मरण है कि जब आपके पिताजी ने कहा था कि हमारी मातृभूमि हमारी समाज है तो मेरे मन पर जैसे ज्योति जल उठी हो, जो मन के कोने-कोने को जाज्वल्यमान करने लगी थी। मुझे स्मरण है कि आपके पिताजी के कथन का प्रभाव मेरे मन पर यह हुआ था कि समाजरूपी माँ की दुर्दशा की भी सुध लेनी चाहिए। माँ ने जो कुछ मुझे दिया है, उसका कुछ तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिकार उसको देना चाहिए। बस, इसी मनोद्गार का फल था, जो मैंने अगले दिन प्रातःकाल अपने वंदना-संगीत के उपरांत प्रकट किया था।

"परंतु मैं पीछे विचार करने लगी थी कि आपको भी तो मेरे साथ रहना चाहिए अथवा आपकी माताजी के अनुरूप मुझे अपने पति के साथ रहना चाहिए। इस विचार ने मेरे मन का काँटा बदला और मेरा मन दूसरी दिशा में यात्रा पर चल पड़ा। उस यात्रा पर चलती हुई मैं अभी तक इस स्थान तक पहुँची हूँ कि हमें किसी-न-किसी प्रकार इस धनी देश में से जो कुछ मिल सके, प्राप्त करना चाहिए और यहाँ के दूषणों से निर्लेप रहते हुए अपनी मातृभूमि को शुद्ध, पवित्र एवं सम्पुष्ट करने का यत्न करना चाहिए।

"आज मैं अपना बैंक-बैंलेंस देख रही थी। छुट्टी के दिनों का वेतन आज मिला है और मैंने वह चेक बैंक में भेज दिया है। इस समय मेरा बैंक-बैलेंस लगभग पचास हज़ार डॉलर तक पहुँचा हुआ है। अभी मैं यहाँ पर नौ मास से अधिक और कार्य करूँगी ही और पीछे मैं अर्जन का अन्य ढंग भी विचार कर रही हूँ। इस प्रकार एक अच्छी-मोटी राशि भारत की समाज-सेवा में अर्पण कर सकूँगी। उसमें आपकी, एक योग्य वकील और मेरे सहायक होने के नाते, राय तो लूँगी ही। साथ ही आपके पिताजी की सहायता की कामना करती हूँ। वह ही तो इस विचार-श्रृंखला के प्रेरक हैं। उनको मैं एक संतुलित मन का अति बुद्धिशील व्यक्ति मानती हूँ।"

चंद्र इस दिन के वार्त्तालाप से अति संतुष्ट हो बोला, "आज तुम मुझे अतिप्रिय लग रही हो।"

"ठीक है। यह प्रेम मानसिक क्षेत्र तक ही रहना चाहिए। इसका प्राकट्य भी वहीं तक ही सीमित रखना चाहिए। इसका आक्रमण शरीर पर नहीं होना चाहिए?"

चंद्र हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "उसका यह समय भी नहीं है। वह रात सोने के समय पर ही हो सकता है। अब तो केवल मन के भाव ही बता रहा हूँ।"

"तब ठीक है। मैं समझती हूँ कि अब कहीं भ्रमण के लिए चला जाए?"

"तो आज संगीत का अभ्यास नहीं होगा?"

"आज एक भ्रम आपके यत्न से दूर हुआ है। इसकी प्रसन्नता में ही मैं कह रही हूँ।"

"तब आज होटल में डिनर लेंगे और फिर पीछे कोई मूवी देखने चलेंगे?"

"तो यह मूवी देखना भी मन की प्रसन्नता का सूचक हो सकता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, कोई चार्ली चैपलिन जैसे की पिक्चर हो तो?"

दोनों हँसने लगे।

उस दिन के उपरांत दोनों का कार्य सरलता से चलने लगा।

शोभा को अनुभव हो रहा था कि जो तनाव दिल्ली में उत्पन्न हुआ था, वह मिट रहा है। इसका प्रमाण उसे अगले वेतन मिलने पर मिला।

पति-पत्नी वेतन लेकर घर पर आए थे। वेतन चेकों के रूप में था।

चंद्र ने पत्नी को कहा, "मैं एक प्रस्ताव मन में लेकर आज घर आया हूँ।"

"क्या?"

"यही कि शोभा देवी की मातृभूमि (समाज) सेवा को एक रूप देना चाहिए।"

"कैसे?"

"कल मैं बैंक में एक नया खाता खोल रहा हूँ। वह शोभारानी के नाम पर होगा। उसमें अपने वेतन का दस प्रतिशत जमा कराया करूँगा और मैं चाहूँगा कि शोभा भी उसमें अपने वेतन का उचित भाग जमा कराती जाया करे।

"हमारे कार्यमुक्त होने तक उसमें बहुत-कुछ जमा होने की संभावना है। और उस कोष में से शोभारानी मातृ-सेवा कर सकेगी। सेवा की योजना जो कुछ भी वह उचित समझे, बना सकेगी।"

शोभा बोली, "परंतु मैं तो अपना निजी खर्च न्यूनातिन्यून कर शेष बचा सब धन इसी खाते में डाल रही हूँ। इस खाते में मेरा पचास हज़ार जमा हो चुका है।"

"तब ऐसा करो। मैं अपना तीन सौ डॉलर का चेक भी तुम्हें दे देता हूँ। तुम उसे भी इसी खाते में जमा करा दो।"

इस प्रकार शोभा अब आश्वस्त मन से अपनी योजना पर विचार करने लगी।

इस योजना को एक नया मोड़ मिला।

संगीत की तीन श्रेणियाँ विद्यार्थियों की संगीत में योग्यता के अनुसार थीं। जब भी कोई विद्यार्थी संगीत सीखने के लिए प्रवेश लेने आता, उसे प्रारंभिक श्रेणी में प्रवेश मिलता। इस श्रेणी में दो मास की शिक्षा देकर यह देखा जाता कि विद्यार्थी संगीत सीख भी सकता है अथवा नहीं। इसमें सफल होने पर उसे प्रथम श्रेणी में प्रवेश मिल जाता। ज्यों-ज्यों उसकी योग्यता बढ़ती जाती, उसे द्वितीय और फिर तृतीय श्रेणी में ले लिया जाता।

जब से शोभा इस विश्वविद्यालय में कार्य करने लगी थी, ऐन्ना नाम की एक लड़की संगीत में अति रुचि ले रही थी। वह अब तीसरी श्रेणी की शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त कर रही थी। उस लड़की की बी०आई०एम० (बैचलर ऑफ इंडियन म्यूजिक) की उपाधि के लिए शोभा ने वाइस-चांसलर के पास सिफारिश कर दी थी। वाइस-चांसलर ने उस लड़की की परीक्षा के लिए एक परीक्षक-बोर्ड नियुक्त कर दिया।

यह एक नियम का पालन-मात्र था अन्यथा परीक्षक बोर्ड के दो सदस्य तो भारतीय संगीत के विषय में कुछ नहीं जानते थे। तीसरी सदस्या शोभा स्वयं थी।

जब ऐन्ना को यह सूचना मिली कि उसको डिग्री देने के लिए परीक्षा ली जाएगी और शोभा के अतिरिक्त दो व्यक्ति उसकी परीक्षा लेंगे तो वह शोभा का मुख देखती रह गई। उसने पूछा, ''मैडम! ये बोर्ड के दूसरे सदस्य मेरी क्या परीक्षा लेंगे ? वे भारतीय संगीत के विषय में क्या जानते हैं ?''

शोभा ने मुस्कराकर कहा, ''कुलपति महोदय लकीर पीट रहे हैं। इसमें मैं कुछ हानि नहीं समझती। तुमको इनके सब प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए। चाहे वे समझें, चाहे न समझें।

''देखो ऐन्ना! तुम उत्तीर्ण तो हो ही जाओगी। तुम बताओ कि परीक्षा के उपरांत इसी विश्वविद्यालय में कार्य करना चाहोगी क्या ?''

''मैडम! नहीं! मेरा अब विवाह होने जा रहा है।''

''गुड! परंतु विवाह के बाद भी तो काम कर सकती हो। मैं भी तो कर रही हूँ।''

''नहीं मैडम! विवाह के बाद समय ही कहाँ मिलेगा ? और फिर मैं अपना एक बड़ा परिवार बनाना चाहती हूँ।''

शोभा ऐन्ना की आकांक्षा सुन हैरान रह गई। यह अमेरिका का चलन नहीं था। यहाँ तो लोग विवाह ही बड़ी आयु में करते थे और बड़े परिवार की कल्पना भी नहीं करते थे।

उसने पुनः पूछा, ''बड़ा ? कितना बड़ा ?''

ऐन्ना ने मुस्कराकर कहा, ''कम-से-कम आपसे बड़ा। आपके तो दो ही बच्चे हैं। मैं तो अधिक ही लालसा रखती हूँ।''

''पर क्यों ? यहाँ के चलन के विपरीत क्यों ?''

''मैं कारण नहीं बता सकती। मैं इतना चाहती हूँ कि आज से साठ-सत्तर वर्ष उपरांत जब मैं मरने लगूँ तो मेरे परिवार के चालीस-पचास सदस्य मेरे चारों ओर बैठ, आपका सिखाया हरि-गीत गाते रहें।''

''ओह!'' शोभा के मुख से निकल गया, ''परंतु ऐन्ना! इतने बड़े परिवार का खर्च और फिर 'वर्ल्ड पौपुलेशन' में वृद्धि का भी तो विचार करना चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैडम! मैंने सब विचार कर लिया है। मेरे सब बच्चे योग्य होंगे। मैं भी और मेरे बच्चे भी इस दुनिया की सुख-वृद्धि में योगदान देनेवाले होंगे। मेरे माता-पिता और मेरे होनेवाले पति के पास धन का अभाव नहीं है। इस कारण हमारा परिवार किसी पर बोझा नहीं होगा। मैं तो समझती हूँ कि सब दूसरों के कुछ-न-कुछ बोझे को हल्का करनेवाले ही होंगे।"

"परंतु खाना-पीना तो प्रकृति निर्माण कर सकती है। उसमें वृद्धि कैसे कर सकोगी?"

"मैडम! योग्य और कार्य-कुशल लोगों के लिए अन्न की कमी कभी नहीं होगी। ऐसा ही मेरे पापा बताते हैं। और जो अयोग्य हैं, वे धकेल कर समुद्र में फेंक दिए जाएँगे। अयोग्यों का क्या अधिकार है कि योग्यों की संख्या में बाधा खड़ी करें।"

शोभा इस अधिकार की बात सुनकर विचार करने लगी। वह निरुत्तर हो गई थी।

:: 10 ::

उसी रात भोजन करते हुए उसने पति को बताया, "यहाँ भारतीय संगीत सीखनेवाली एक लड़की ने आज बताया है कि वह इच्छा करती है कि मरने के समय चालीस-पचास उसके पोते-परपोते उसको घेरे हुए हरि-गीत गाते हों।"

"ओह! कौन-सा गीत?"

"हरि-गीत। वही जो मैं गाया करती हूँ—

हरि तुम हरो हर की पीड़॥
हम बुद्धिविहीन दीन-हीन,
जानत नहीं तव नीड़।
हरि तुम हरो हर की पीड़॥"

"वह इसका अर्थ जानती है क्या?"

"हाँ, मैं जब भी कोई भारतीय-गीत के स्वर सिखाती हूँ तो उसके अर्थ अंग्रेजी-भाषा में लिखा देती हूँ।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि वह बहुत दुखियारी है?"

"परंतु वह तो कहती थी कि उसके माता-पिता बहुत धनी हैं। वह बहुत-से बच्चों की माँ बनने की इच्छा रखती है।"

"बहुत विचित्र है! ऐसा प्रतीत होता है कि इस देश के काँटेदार जंगल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह गुलाब का पेड़ लग गया है?

"देखो शोभा! जब तुम सौमित्र के प्रसव पर नर्सिंग-होम में गई हुई थीं तो मैं तुम्हारी छुट्टी की याचिका रजिस्ट्रार महोदय को देने गया था। रजिस्ट्रार और मेरे सब साथी कहते थे कि मैं तुम पर दया करूँ और अधिक संतान पैदा न करूँ?

"इसी कारण मुझे यह विचित्र प्रतीत हुआ है कि अमेरिका की एक कुमारी ढेर सारे बच्चों की इच्छा कर रही है।"

शोभा ने आगे कहा, "उसने एक बात और कही है। वह यह कि वह स्वयं एक श्रेष्ठ इनसान है और अपने जैसे ही पुत्र-पौत्र उत्पन्न करेगी। उसे विश्वास है कि उसकी संतान श्रेष्ठ, सबल और योग्य होगी। इस कारण यदि इस पृथ्वी पर स्थानाभाव होता है तो अयोग्य धकेल कर समुद्र में डुबो दिए जाएँगे। अयोग्यों को अधिकार नहीं कि योग्यों को यहाँ इस संसार में आने से रोकें।"

चंद्र ने कहा, "ऐसा प्रतीत होता है कि वह पूर्व-जन्म में कोई किसी देश की मलिका रही होगी। परंतु वह यह कैसे जान गई है कि उसकी सब संतान श्रेष्ठ और योग्य होगी तथा किसी निर्धन की संतान दुष्ट और अयोग्य होगी?"

"इस पर भी," शोभा ने कहा, "आज भूमंडल में यह विषमता तो है ही कि पैदा होने से पहले ही समझ लिया जाता है कि होनेवाला बच्चा माता-पिता के घर में तीसरा होने के कारण निकृष्ट होगा और वह कोई संत महापुरुष नहीं होगा। हर घर में होनेवाली तीसरी संतान अनिच्छित मानी जाती है।

"मैंने उसे कहा था कि पृथ्वी पर अन्न कम हो रहा है और यदि सब उसकी भाँति आठ-आठ, दस-दस बच्चे पैदा करने लगे तो लोग भूखे मरने लगेंगे?

"इस पर उसने कहा था कि जो अयोग्य हैं, वे समुद्र में डूब जाएँगे। अयोग्यों का अधिकार नहीं कि योग्यों का मार्ग रोकें।"

"यह युक्ति तो ठीक है, परंतु संतान-निरोध के अतिरिक्त अन्य कुछ उपाय भी तो नहीं?"

"मैं समझती हूँ," शोभा का कहना था, "जो संतान के पालन-पोषण की सामर्थ्य नहीं रखते, वे संतान पैदा ही न करें।"

"यह असंभव है। इसी कारण जो उपस्थित हैं, वे स्वयं जीवित रहने के लिए अपने पीछे आनेवाले मानवों का मार्ग अवरुद्ध करना चाहते हैं।"

"बिना जाने कि आनेवाला बालक महात्मा बुद्ध, गांधी अथवा टाल्स्टाय होनेवाला है अथवा हिटलर, मुसोलोनी, स्टालिन या माओ बननेवाला है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह प्रश्न बहुत गंभीर है। आज के लोग इस युक्ति को स्वीकार नहीं करेंगे ?"

"बिना तर्क से सिद्ध किए कि इसमें छिद्र कहाँ है ?"

"जो संतान-निरोध की वकालत करने हैं, वे तर्क से बात नहीं करते। वे तो मनोद्गारों से प्रभावित हो कहते हैं कि भूखे मरते हुओं को देखने से बचने के लिए संतान का बीज ही नहीं बनने देना चाहिए।"

"और तुम्हारी शिष्या, क्या नाम बताया है तुमने उसका ?"

"ऐन्ना!"

"हाँ, ऐन्ना कहती है कि उसे निर्बाध संतान उत्पन्न करने दिया जाए क्योंकि वह समझती है कि उसकी संतान बुद्धिशील और ईश्वरभक्त होगी।"

"यह तो उसने नहीं कहा। उसने इतना ही कहा है कि वह स्वयं बहुत समझदार है और समझती है कि उसकी संतान अवश्य ही श्रेष्ठ, बुद्धिशील और कार्यकुशल होगी।"

"बात तो ठीक है। परंतु इस कथन में दो छिद्र हैं। एक यह कि इसके घर में कोई हिटलर जैसा महादुष्ट पैदा नहीं होगा, इसका दावा वह नहीं कर सकती और दूसरा छिद्र यह है कि जब निर्धन भूखे मरने लगेंगे तो भूमंडल के देशों में क्रांति हो जाएगी और फिर ऐन्ना अथवा उसकी संतान को सिर छुपाने को भी स्थान नहीं मिलेगा ?"

"तो मुझे तीसरी संतान पैदा नहीं करनी चाहिए ?"

"परंतु तुमको मना किसने किया है ?"

"आजकल के अर्थशास्त्रियों ने। उनको भूमंडल में जनसंख्या की वृद्धि से कष्ट तथा दुःख हो रहा है। मुझे तो ऐन्ना की युक्ति अधिक रुचिकर लगी है। मुझे यत्न करना चहिए कि स्वस्थ, सबल और कार्यकुशल संतान हो।"

"युक्ति से वह ठीक है, परंतु व्यवहार में यह बात चलेगी नहीं। मूर्ख होंगे अधिक और वे अपनी संख्या के बल पर श्रेष्ठ तथा बुद्धिशील को मार डालेंगे।"

"परंतु जो मूर्खों से मारे जा सकेंगे, वे ज्ञानवान् और कार्यकुशल कैसे समझे जा सकेंगे ?"

"अर्थात् तुम कह रही हो कि प्रति बीस-तीस वर्ष के उपरांत मूर्खों का संहार होना चाहिए और यह संहार घोर संग्राम से ही हो सकेगा।"

"मुझे ऐन्ना के कथन का यही अर्थ समझ में आया है।"

"तो होने दो। मैं समझता हूँ कि शोभा को आधा दर्जन बच्चे पैदा करने चाहिएँ और जब वे बड़े हों तो उनको लाठियाँ, छुरियाँ ले, परस्पर लड़कर अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योग्यता और कुशलता की परीक्षा कर लेनी चाहिए। बहुत भयंकर संभावना हो जाएगी।''

''यह तो हम बंद गली में पहुँच गए हैं। हम देख रहे हैं कि जनसंख्या द्रुतगति से बढ़ रही है। अन्न-अनाज का उत्पादन उसके अनुपात में बढ़ नहीं रहा। परिणामस्वरूप युद्ध होंगे और ऐटम बम चलेंगे, जिनसे नगर के नगर विनष्ट हो जाएँगे।

''परंतु मैं विचार करती हूँ कि जनसंख्या में वृद्धि क्यों हो रही है ?'' शोभा का प्रश्न था।

''इस विषय पर न्यूयार्क की मेट्रोपोलिटन कौंसिल में चर्चा हुई थी और डॉक्टरों तथा चिंतकों की एक कमेटी बैठी थी। न्यूयार्क का मेयर सभा का सभापति था। उसने कहा था—जनसंख्या में वृद्धि इस कारण हो रही है क्योंकि जिस गति से विज्ञान उन्नति कर रहा है, उस गति से मानव-समाज बुद्धिमत्ता नहीं सीख रही। ज्ञान और बुद्धि का संतुलन नहीं रहा।''

शोभा इस ज्ञान और बुद्धि में भेद समझने के लिए अपने पति का मुख देखने लगी।

चंद्र को अपने पिता की न्यायदर्शन की शिक्षा स्मरण हो आई। उसे जनसंख्या ही समाज की अव्यवस्था का कारण समझ आया। इस कारण वह कहने लगा, ''विज्ञान ने पिछले दो सौ वर्ष में भारी उन्नति की है। यह उन्नति औषधि-विज्ञान में भी हुई है। अत: चिकित्सा ने दुर्बल, मूर्खों, अकुशल व्यक्तियों को भी अपना जीवन लंबा करने के साधन उपलब्ध करा दिए हैं। परिणाम यह हुआ है कि प्रकृति ने जो ब्रह्मदंड बनाया हुआ था, वह कुंठित हो गया है। पैदा होते ही बहुत-से निर्बल बच्चे मर जाते थे। उनको बचाने का उपाय पता कर लिया गया है। संक्रामक रोगों से भी बहुत मरते थे; उनसे बचने की औषधियाँ पता कर ली गई हैं। इस सब कुछ के होने पर भी मनुष्य संयम से रहना नहीं सीखा।''

शोभा की हँसी निकल गई और बोली, ''जैसे आप सीख गए हैं ?''

''मैं भी तो वर्तमान मूर्ख-युग का प्राणी हूँ और औषधि-विज्ञान का लाभ उठाता रहता हूँ और यदि तुम चाहोगी तो ग्यारह संतान उत्पन्न करने की सामर्थ्य रखता हूँ। परंतु मेरा ज्ञान जिससे मैं जीवन लंबा और सबल बना रहा हूँ, उसके साथ यदि मेरी बुद्धि भी उन्नति करती रही तो फिर मैं संतान उत्पन्न करने के स्थान कुछ अन्य उपकारी कार्य करूँगा।''

''और अफ्रीका में उत्पन्न होनेवाले तथा चीन में उत्पन्न होनेवाले संख्या में बढ़कर भारत, जापान, अमेरिका, केनाडा इत्यादि देशों पर आक्रमण को हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुर-खोज मिटा देंगे।''

''यही तो कह रहा हूँ कि ज्ञान-विज्ञान का संचय स्थान मन है। इस पर नियंत्रण बुद्धि का होता है। हम और अन्य लोग बुद्धि को तीक्ष्ण और सबल नहीं बना रहे।''

''प्रश्न यह नहीं,'' शोभा का कहना था, ''प्रश्न यह है कि हम तो बुद्धि से संतान-निरोध का प्रयोग कर रहे हैं, परंतु चीन, अफ्रीका और इसलामी देश ऐसा नहीं कर रहे। परिणामस्वरूप, वे हमारे ही हथियारों से हमें ही गुलाम बनाने चल पड़ेंगे।

''हम ऐटम बम बना उनको मारने का यत्न कर सकते हैं, परंतु हमारे नेता हमको दया-भाव से ऐसा करने नहीं देंगे?''

चंद्र विचार करने लगा था कि जनसंख्या की समस्या का जो सुझाव वर्तमान युग ने बताया है, वह उचित नहीं है। इसका उपाय वह भी नहीं जो वह कह रहा है अर्थात् संयम से संतान कम उत्पन्न करना। ये उपाय तो भले लोगों की ही संख्या कम कर देंगे।

उसने कहा, ''मैं इस विषय में अपने विश्वविद्यालय की पत्रिका में एक लेख देने की इच्छा करने लगा हूँ।''

''क्या लिखने का विचार कर रहे हैं, आप?'' शोभा का प्रश्न था।

''यही कि बढ़ती हुई जनसंख्या का उपाय न तो संतान-निरोध है, न ही संयम।''

''तो क्या उपाय है?''

''ग्लोबल वार।'' चंद्र ने मुस्कराते हुए कहा।

''बहुत ही भयंकर इलाज बताएँगे। सब आपको पागल कहेंगे?''

''वह तो होता ही है। पागलखाने में सही दिमाग ही पागल समझे जाते हैं।''

शोभा को इस वार्त्तालाप और इस चिकित्सा से संतोष नहीं हुआ।

इस कारण अगले दिन जब संगीत की क्लास समाप्त हुई और ऐन्ना अपना वायलिन लिए हुए जाने लगी तो शोभा ने पूछ लिया, ''ऐन्ना! अब किधर जा रही हो?''

''मैडम! दो घंटे के अभ्यास से थकावट अनुभव करने लगी हूँ और 'बार' में एक प्याला कॉफी लेने का विचार है।''

''तो ऐसा करो। मेरे कमरे में आ जाओ। मैं भी कॉफी पी रही हूँ। तुम भी मेरे साथ ही ले सकती हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''हाँ, यदि आप निमंत्रण दें तो मुझे आपके साथ बैठ कॉफी लेने में बहुत प्रसन्नता होगी।''

''तो आओ। तुम्हारी कल की बात मेरे मस्तिष्क में खुजली उत्पन्न कर रही है। मैं उस पर बात करना चाहती हूँ।''

ऐन्ना भूल गई थी कि उसने पिछले दिन क्या कहा था जो उसकी अध्यापिका के मस्तिष्क में खुजली उत्पन्न होने लगी है। वह उसके साथ उसके कमरे को चलती हुई पूछने लगी, ''किस विषय पर बात हुई थी?''

''यही, संतान पैदा करने की बात।''

''ओह मैडम! वह तो मैंने हँसी में ही कहा था। वैसे मैं यह समझती हूँ कि आपको और संतान के लिए यत्न नहीं करना चाहिए। पिछले तीन वर्ष में आपने दो महीने की मैटर्निटी लीव ली थी तो इस संगीत की श्रेणियों में मुर्दनी छा गई थी।''

शोभा ने अपने कमरे में कॉफी बनाने का सामान रखा हुआ था। प्रायः दो घंटे की शिक्षा देने के उपरांत, उसे कॉफी लेने का स्वभाव बन गया था। अब कमरे में पहुँच, उसने अपने इलेक्ट्रिक जग में पानी डाल गरम करने के लिए स्विच ऑन कर दिया। जब तक पानी गर्म हुआ उसने कप-बोर्ड में से मग और कॉफी इत्यादि निकाल ली। दो प्याले कॉफी बना और कुछ बिस्कुट सामने रख, पीते हुए वे बातें करने लगीं।

शोभा ने कहा, ''तुम्हारी युक्ति को सुन मैं रात विचार करती रही थी कि अब समय हो गया है कि मैं एक और संतान के लिए यत्न करूँ। परंतु मुझे तुम्हारी यह युक्ति समझ नहीं आई कि अयोग्यों को अधिकार नहीं कि योग्यों को कहें कि संतान कम पैदा करो?''

''इस युक्ति में क्या दोष दिखाई दिया है?'' ऐन्ना का प्रश्न था।

''दोष यही है कि अयोग्य अधिक होते हैं। वे संगठित हो, योग्यों को ही समुद्र में धकेल देंगे।''

''नहीं, मैडम! बात यह है कि इस समय भूमंडल के प्रायः सब देशों में मूर्ख-राज्य स्थापित हो चुके हैं। वे हम बुद्धिजीवियों को तो पहले ही धकेल, सागर में डुबोने का यत्न कर रहे हैं। मैं तो इस अवस्था को ही बदलने का विचार रखती हूँ।''

''यह कैसे?'' शोभा का प्रश्न था।

''मेरे कहने का अभिप्राय है कि वर्तमान डेमोक्रेसी मूर्खों का राज्य है और यही राज्य है जो कह रहा है कि बहुमत का अधिकार है कि राज्य करे। बहुमत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनपढ़ों का ही होता है। अभिप्राय यह है कि अविचारशीलों और अज्ञानियों का राज्य हो। न राज्याधिकारी चुननेवालों और न चुने जानेवालों में किसी प्रकार की योग्यता कोई मापदंड है। राज्याधिकारी चुने जानेवालों के लिए एक ही पैमाना है। वह यह कि वे ख्याति प्राप्त हों। ख्याति किस बात में? यह भी निश्चित नहीं। इसका निर्णय बहुमत पर छोड़ दिया जाता है। कई बार यह देखने में आया है कि फिल्म-जगत् की सुंदर नर्तकी योग्य वकील पर ख्याति में बाजी ले जाती है और वह चुनाव जीत जाती है।

"और यही नेता बन संतान-निरोध की कूक लगाते हैं। ये दिखाते हैं कि ऐसा समय आनेवाला है, जब लोग भूखे मरने लगेंगे। मैं समझती हूँ कि इनका बताया उपाय मिथ्या है।

"देखिए मैडम! मेरे माता-पिता कैथोलिक मत को मानते हैं और वे कहते हैं कि संतान-निरोध के उपाय परमात्मा के विधि-विधान के विपरीत हैं। इस कारण इनका प्रयोग नहीं करना चाहिए। परंतु मैं उनसे कह रही हूँ कि उनको धर्म-संगत उपाय बताना चाहिए। वे उपाय बताते हैं संयम का। मेरा कहना है कि यह उपाय तो केवल धर्मात्मा और बुद्धिशील व्यक्ति ही प्रयोग कर सकते हैं। परिणाम यह होगा कि बुद्धिशील और नेक धर्मात्मा लोगों की संतान कम होती जाएगी और लंठ-गँवार, उजड्ड प्रकृति के लोग धड़ाधड़ संतान पैदा कर ही रहे हैं।"

इस समय दोनों सरुकियाँ लगा, कॉफी पी रही थीं। ऐन्ना ने जब पहले दिन के कथन का विश्लेषण कर दिया तो शोभा ने आगे पूछ लिया, "परंतु ऐन्ना! इससे भय तो दूर नहीं होगा। बुद्धिशील और कार्यकुशलों के बच्चे भी समाज के भूखों के बच्चों के साथ भूखे मरेंगे। यह ठीक है कि वे अकेले नहीं मरेंगे। उनके साथ ज्ञानहीन, असंयमी और उजड्ड प्रकृतिवालों के बच्चे होंगे। अतः यह कोई सुझाव नहीं। हम संतान पैदा करें और वे मूर्खों के बच्चों के साथ भूखे मरें अथवा ऐटामिक युद्धों में भस्म हो जाएँ। क्या अंतर पड़ता है इससे?"

ऐन्ना अपने टीचर की युक्ति सुन, टुकर-टुकर उसका मुख देखती रह गई। वह इस युक्तियुक्त आपत्ति का उत्तर विचार करने लगी थी। उसको कोई उत्तर सूझ नहीं रहा था। उसे चुप देख, शोभा ने मुस्कराते हुए कहा, "मैंने इस समस्या पर बहुत विचार किया है और एक परिणाम पर पहुँची हूँ। एक ऐसी ही समस्या पिछले वर्ष इस देश के समक्ष उपस्थित हुई थी।

"तुम्हें स्मरण होगा कि यहाँ के सर्वोच्च न्यायालय ने एक निर्णय दिया था। एक पुरुष को दूसरे पुरुष से ही विवाह रजिस्टर करने की स्वीकृति दे दी थी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा था कि वर्तमान युग के डेमोक्रेटिक-चलन में हम किसी को किसी के साथ भी विवाह करने से मना नहीं कर सकते।

"विवाह की प्रथा समाज के बुद्धिशील अंश ने निर्माण की थी। वह प्रथा जब डेमोक्रेटिक-समाज के अधिकार में आई तो उसका दुरुपयोग करने की स्वीकृति हो गई।

"इस सब प्रकार की दुर्नीतियों का विरोध होना चाहिए, परंतु किस प्रकार? यह ही प्रश्न है।"

ऐन्ना समस्या को समझ गई। केवल डेमोक्रेसी की निंदा करने से काम नहीं चलता। उसका युक्तियुक्त बदल उपस्थित करना चाहिए। वह बदल संतोषजनक भी होना चाहिए। अतः ऐन्ना ने माना, "मैडम! मैं तो आपके सम्मुख अभी बच्ची हूँ। मैं उपाय नहीं जानती। यह तो जान गई हूँ कि समाज और आज के काल के प्रायः राज्य ग़लत दिशा में जा रहे हैं। परंतु किया क्या जाए, यह मैं नहीं बता सकती।"

"देखो, मैं और मेरे पति इस विषय में एक योजना का विचार कर रहे हैं। वह यह है कि समाज को युक्तियुक्त व्यवहार करने का स्वभाव डाला जाए। तुम भी हमारी इस योजना में सम्मिलित हो जाओ। तुम कहती हो कि तुम्हारे माता-पिता बहुत धनी व्यक्ति हैं तो उनके धन से भी सहायता लेकर समाज-सुधार का उपाय करना चाहिए।

"हमारे भी कुछ साधन हैं, यद्यपि बहुत सीमित हैं। हम उन सीमित साधनों का संचय कर रहे हैं। मेरे श्वसुर भारत में धनी व्यक्ति हैं। मैंने उनको भी अपनी इस योजना में सम्मिलित होने का सुझाव दिया है।"

"परंतु वह संस्था किस देश की समाज के सुधार का प्रयत्न करेगी?" ऐन्ना का प्रश्न था।

"अभी तक तो मैं और मेरे पति अपने सीमित साधनों से सीमित समाज का ही लक्ष्य रख सकते थे। यदि यहाँ के भी कुछ लोग हमारे साथ सम्मिलित हों तो हम अपने कार्य-क्षेत्र का विस्तार कर सकते हैं?"

"मैं अपने पापा से इस विषय पर बात करूँगी। वह आपके पति के विषय में जानते हैं। सर्वोच्च न्यायालय में उनकी युक्तियों की बहुत प्रशंसा करते थे। उनको आपके पति की योजना बताऊँगी तो वह अवश्य विचार करेंगे।"

शोभा विचार करने लगी कि यह ठीक ही होगा। यदि यूरोपियन समाज में कोई आंदोलन चले तो वह अधिक प्रभावयुक्त होगा। इस कारण उसने ऐन्ना के द्वारा उसके पापा और मम्मी को अगले रविवार अपने घर में लंच के समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमंत्रित कर लिया।

''तो लंच आप घर पर लेती हैं ?'' ऐन्ना ने पूछा।

''हाँ, परंतु यदि तुम्हारे पापा और मम्मी भी आनेवाले होंगे तो हम किसी रेस्टोराँ में विशेष प्रबंध भी कर सकते हैं।''

''मैं यह कह रही हूँ कि यदि घर पर लंच लेना हो तो मैं उस दिन सहायता के लिए पहिले भी आ सकती हूँ। पापा-मम्मी पीछे समय पर आ जाएँगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

सन् 1975 आ गया था। चंद्रमोहन और शोभा विश्वविद्यालय के सेवा-कार्य से मुक्त हो रहे थे। उनको फिलाडैल्फिया विश्वविद्यालय में कार्य करते हुए अट्ठारह वर्ष हो चुके थे। दोनों का अमेरिका में एक लंबा-चौड़ा परिचय हो चुका था। शोभा की विचारित और ऐन्ना के माता-पिता द्वारा समर्थित संस्था एस०आर०एच०एस० (सोसायटी फॉर रिकंस्ट्रक्टिंग ह्यू मन सोसायटी) का निर्माण और चलन हो रहा था। इसमें भूमंडल के अन्य मुख्य देशों के बुद्धिशील नागरिक भी सम्मिलित हो रहे थे और इस समाज के केंद्र इंग्लैंड, अमेरिका, कैनेडा, स्विट्ज़रलैंड तथा फ्रांस में बन चुके थे।

ऐन्ना अब पाँच बच्चों की माँ बन चुकी थी। तीन लड़के और दो लड़कियाँ थीं। शोभा की तीन संतान थीं। राम तथा सौमित्र के उपरांत मोहिनी उत्पन्न हुई थी। मुकुटबिहारी माथुर अभी जीवित थे, परंतु स्वरूपरानी का देहांत हो चुका था। रामलाल और रानी दोनों स्वस्थ और सबल थे। राम की शिक्षा-दीक्षा अपने बाबा मुकुटबिहारी की देख-रेख में हो रही थी। सौमित्र और मोहिनी अपने माता-पिता के साथ फिलाडैल्फिया में रहते थे।

शोभा और ऐन्ना के परिवारों में घना संबंध था। मुकुटबिहारी भी एक बार अमेरिका आया था और ऐन्ना, उसके पति कार्माईल स्टीफंस से मिला था। दोनों मानव-समाज के नव-निर्माण में संलग्न संस्था में गहरी रुचि ले रहे थे।

यह संस्था अब एक प्रकार से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काम कर रही थी। इसमें प्राय: सदस्य कैथोलिक-क्रिश्चियन और हिंदू थे। इस संस्था का घोष था—समाज के नेता बुद्धिमान् हों; बुद्धिमत्ता का एक स्तर हो और उस स्तर से ऊपर के लोग ही मानव-समाज के नेता बन सकें।

माथुर परिवार के दोनों घटकों के विश्वविद्यालय की सेवा से मुक्त होने के पूर्व यह विचार होने लगा था कि समाज के नव-निर्माण का कार्य कैसे किया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी तक तो यह सभा इस विचार का प्रसार ही कर रही थी कि समाज के नेता विद्वान् हों, न कि बहुमत प्राप्त व्यक्ति। अब विचार किया जा रहा था कि विद्वान् का मापदंड निश्चय किया जाए। अभी तक उनका घोष यही था कि मत-गणना ज्ञानवान् होने का मापदंड नहीं है। परंतु इस नकारात्मक घोषणा से काम नहीं चल रहा था। अत: यह विचार हो रहा था कि ज्ञानवान् की परिभाषा तथा कोई स्तर निश्चित किया जाना चाहिए।

इस बात का विचार करने के लिए अमेरिका के कुछ विद्वानों की एक सभा बुलाने का विचार हुआ। उस सभा में अपना पक्ष उपस्थित करने के लिए फ्रांस, इंग्लैंड तथा भारत के कुछ लोग भी बुलाए गए थे। भारत से मुकुटबिहारी माथुर भी आए थे।

जब माथुर अमेरिका आने लगा तो चंद्रमोहन का लड़का राम भी अपने माता-पिता से मिलने आने को तैयार हो गया।

संविधान को समझनेवाले कुछ एक विद्वानों को फिलाडैल्फिया में बुलाया गया था। लगभग एक सौ विद्वान् उपस्थित थे। सबको सभा बुलाने का उद्देश्य एक विज्ञप्ति के रूप में पहले ही भेजा गया था।

वह विज्ञप्ति कुछ इस प्रकार थी—जब से भूमंडल के प्रमुख देशों में प्रजातांत्रिक-पद्धति से राज्य स्थापित हुए हैं, मानव-समाज का नैतिक स्तर हीन हुआ है। इस कारण इस पद्धति के बदले में कोई अन्य पद्धति की रूप-रेखा बनाई जाए जिससे मानव-समाज वर्तमान हीन अवस्था से उठ सके।

वैसे तो यह विचार कि प्रजातांत्रिक पद्धति से समाज के नेताओं का निर्वाचन अयुक्त विधान है, का प्रचार समाचार-पत्रों द्वारा पिछले दस वर्ष से किया जा रहा था, परंतु इस प्रचार ने जनमानस पर कुछ गहरा प्रभाव उत्पन्न नहीं किया था। यह केवल एक विचारमात्र ही था।

अब इस कांफरेंस का आयोजन किसी प्रकार का क्रियात्मक पग उठाने का निश्चय करने के लिए किया गया था।

मुकुटबिहारी फिलाडैल्फिया में माथुर-विला पर पहुँचा तो शोभा अपने श्वसुर के साथ राम को देख हँस पड़ी। उसके मुख से अनायास ही निकल गया, "तो तुम्हें हमारी याद आ गई है?"

"माताजी! आपने कभी बुलाया भी तो नहीं? आप स्वयं चार-पाँच बार भारत आई हैं और मुझसे मिल गई हैं, परंतु आपने मुझे कभी यह नहीं कहा कि राम अमेरिका नहीं चलोगे?"

"तो यह बात है?" चंद्र ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए पूछ लिया, "तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी माताजी के बुलाने की प्रतीक्षा में थे?''

''हाँ, पिताजी!'' राम अब हिंदी-भाषा में बहुत सरलता से बातचीत कर सकता था।

शोभा ने कह दिया, ''पिछले वर्ष मैं दिल्ली में एक सप्ताह-भर रही थी। उस काल में तो तुम अपने मित्रों में ही घूमते रहे थे। मुझे पूर्ण सप्ताह में दो-तीन घंटे से अधिक समय के लिए तुम्हारे दर्शन नहीं हुए थे।''

''वे मेरी परीक्षा के दिन थे। मैं उनमें व्यस्त था। अब उस समय की कमी को पूरा करने के लिए ही तो आया हूँ। दादाजी से कहा तो यह तुरंत यहाँ लाने के लिए तैयार हो गए।''

''दादाजी तो यहाँ एक-आध सप्ताह-भर ही रहेंगे? तो तुम भी उनके साथ ही लौट जाओगे?''

''नहीं लौटूँगा तो कॉलेज की पढ़ाई कैसे हो सकेगी? अब मैं कॉलेज की फर्स्ट ईयर में भरती हुआ हूँ।''

''यहाँ भी तो कॉलेज हैं?'' शोभा का सुझाव था।

''परंतु वहाँ दादाजी भी तो पढ़ाते हैं?''

''ओह! यह तो मैं भूल ही गई थी।'' शोभा का कहना था, ''तुम्हारे पिताजी भी उनसे पढ़ते रहे थे।''

''हाँ, दादाजी ने बताया है। परंतु मुझे पिताजी वाला ग्रंथ नहीं पढ़ाया जा रहा?''

''क्या पढ़ रहे हो?''

''मैंने कॉलेज में अर्थशास्त्र लिया है। इस कारण मुझे धर्मशास्त्र पढ़ाया जा रहा है। उनका कहना है कि अर्थशास्त्र को समझने के लिए धर्मशास्त्र को समझना आवश्यक है।''

अब मुकुटबिहारी ने माँ-पुत्र के वार्त्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''राम अभी तीन वर्ष तक मेरे पास रहेगा। तब यह दिल्ली विश्वविद्यालय से बी०कॉम० उत्तीर्ण कर लेगा और मैं समझता हूँ कि अर्थ के साथ यह अपना भारतीय धर्मशास्त्र भी पढ़ लेगा तो फिर मैं इसे यहाँ अमेरिका भेज दूँगा। तब तुम इसे यहाँ किसी भी विश्वविद्यालय में भरती करा सकोगी?

''मेरा विचार है कि धर्म ही अर्थ है। अर्थ से मेरा अभिप्राय है जीवन का प्रयोजन। धन और इसके उपार्जन तथा व्यय करने का ढंग तो जीवन के प्रयोजन को सफल बनाने के उपाय हैं। बस, यही राम को मैं समझा रहा हूँ।''

शोभा इस वात्तार्लाप का अभिप्राय समझ रही थी। इस कारण वह राम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली अपने बाबा के पास रहने को उचित ही समझती थी।

अब चंद्र, राम का अमेरिका में कार्यक्रम बनाने लगा। ऐन्ना के पति कार्माईल सटीफंस की सेवाएँ उपलबध हो गईं। स्टीफंस फिलाडैल्फिया का एक साईकेट्रिस्ट था।

स्टीफंस ऐन्ना के मानव-समाज नवनिर्माण सभा में आमंत्रित नहीं था। उसका कहना था कि मानव की वर्ममान दुर्दशा का सबसे बड़ा कारण है, उसके मन की दुर्बलता। यह दुर्बलता वर्तमान मशीन-युग की भाग-दौड़ का मन पर दबाव के कारण थी और उस दबाव में व्यक्तिगत मन उच्छृंखल व्यवहार स्वीकार कर रहा था।

जब फिलाडैल्फिया में विद्वत् मंडल की बैठक आरंभ हुई तो स्टीफंस ऐन्ना के बच्चों और राम को लेकर मैक्सिको-भ्रमण के लिए निकल गया। वह बच्चों को वहाँ के प्राचीन मंदिरों को दिखाने ले गया था। इन पुराने मंदिरों में सूर्यदेव का मंदिर बहुत विख्यात था।

फिलाडैल्फिया में कांफरेंस आरंभ हुई। चंद्र का कांफरेंस में उद्घाटन-भाषण हुआ और फिर पाँच उप-समितियाँ बनाकर समस्या के भिन्न-भिन्न अंगों पर विचार होने लगा।

इनमें एक उप-समिति यह विचार करने के लिए थी कि वर्तमान प्रजातांत्रिक विधि-विधान का विकल्प क्या हो? इस उप-समिति के अध्यक्ष मुकुटबिहारी माथुर थे। मुकुटबिहारी के अतिरिक्त बारह अन्य सदस्य थे जो इस विषय पर विचार करने लगे थे।

माथुर साहब ने पहला विचार यह रखा कि वर्तमान प्रजातंत्र की कौन-सी बात है जिसके कारण इससे समाज के नैतिक स्तर में ह्रास हो रहा है।

उप-समिति ने इस विषय में सर्वसम्मत मत दिया था कि आज प्रायः देशों में राज्य ही व्यक्ति के आचार-विचार का निश्चयकर्त्ता बना हुआ है जबकि मानव-व्यवहार के नियमोपनियम राज्य नहीं निश्चय कर सकता। राज्य नियमोपनियमों का पालन करा सकता है। इस विषय में सबसे बड़ी युक्ति यह थी कि जो व्यक्ति अथवा संस्था नियमों का पालन करानेवाली हो, वह नियमों का निर्माण करनेवाली नहीं होनी चाहिए।

ये दोनों कार्य, कानून बनाना और कानून का पालन कराना एक ही संस्था अथवा व्यक्ति के हाथ में नहीं हो सकते। ऐसा होने से शासक के हाथों में असीम सामर्थ्य आ जाएगी और वह तानाशाह बन सकता है।

इस उप-समिति में दूसरा विचार यह पारित हुआ कि व्यवस्था देनेवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा उन लोगों की हो सकती है जो मानव-मन की प्रेरणाओं को समझते हों तथा उन प्रेरणाओं के स्रोत को जानते हों।

मन कल्पना करता है। उसकी कल्पना का आधार उसकी कामनाएँ होती हैं। इन कामनाओं को सीमित रखनेवाली बुद्धि होती है। अत: कानून बनानेवाले लोग विद्वान् प्रतिभाशाली और व्यवहारिक ज्ञान रखनेवाले होने चाहिएँ। इस कारण उप-समिति के बहुमत ने यह निश्चय किया कि व्यवस्था सभा अनुभवी और कानून के जाननेवाले तथा ईश्वरीय नियमों को जाननेवाले होने चाहिएँ। प्रस्ताव तीन के विरुद्ध नौ मतों से पारित हुआ। इस निर्णय का विरोध करनेवालों ने अपना मत पृथक् लिखकर दिया। इनका कहना था कि व्यवस्था सभा के सदस्यों की योग्यता मतदान करनेवालों की सूझबूझ पर छोड़ दी जाए। वे देख लेंगे कि उनका प्रतिनिधि योग्य है अथवा अयोग्य है।

इस प्रकार भिन्न-भिन्न उप-समितियों में समस्या के भिन्न-भिन्न मुद्दों पर विचार कर जनरल कौंसिल में विचार रखा गया और पूरे बारह घंटे-भर इस संयुक्त विषय पर विचार के उपरांत यह निश्चय हुआ कि एक कांफरेंस भूमंडल के विद्वानों की बुलाई जाए जो अमरीका की इस कांफरेंस के निर्णयों पर विचार कर समाज के नव-निर्माण में निश्चित पग उठा सके।

जब यह कांफरेंस फिलाडैल्फिया में हो रही थी, भारत में आपात्-स्थिति लागू हो गई। विभिन्न विचार के एक बहुत बड़ी संख्या में लोग पकड़ लिए गए।

मुकुटबिहारी अभी फिलाडैल्फिया में ही था। अतएव फिलाडैल्फिया में विचार होने लगा कि वापस भारत जाया जाए अथवा न। मुकुटबिहारी माथुर का कहना था कि उसको इससे भय करने में कोई कारण नहीं। इस पर भी चंद्रमोहन और उसकी पत्नी शोभा का विचार था कि जब तक आपात्-स्थिति का कारण न पता चले, तब तक वहाँ नहीं जाना चाहिए।

सबसे बड़ी समस्या राम की थी। वह वहाँ विश्वविद्यालय में भरती हो चुका था। वहाँ प्रथम वर्ष की परीक्षा देकर ही वह बाबा के साथ अमरीका आया था। उसकी पढ़ाई का सत्र जुलाई में आरंभ होनेवाला था और वह वहाँ की पढ़ाई छोड़ नहीं सकता था।

इस कारण बहुत विचार-विमर्श के उपरांत यह निश्चय हुआ कि राम को तो भारत भेज दिया जाए और वह वहाँ अपने नाना के पास रहे। और शेष परिवार भारत से बाहर ही रहे। तब तक, जब तक भारत की राजनीतिक अवस्था स्थिर नहीं हो जाती।

राम दिल्ली आया और अपने नाना के घर रहने लगा। चंद्र, शोभा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकुटबिहारी और सौमित्र तथा मोहिनी फिलाडैल्फिया में ही रह गए। परिणामस्वरूप ऐन्ना के परिवार से मेल-जोल बढ़ने लगा।

सन् 1976 के अगस्त मास में रामलाल का पत्र आ गया। उसने लिखा था—

"मैं समझता हूँ कि अब आप आ सकते हैं। प्राय: जानकार कहते हैं कि आपात-स्थिति बूढ़ी हो गई है। पकड़े लोग छोड़े जा रहे हैं और नए पकड़े नहीं जा रहे। यह भी कहा जा रहा है कि आपातृ-स्थिति उठनेवाली है।"

चंद्र, शोभा इत्यादि भी भारत लौटने के लिए आतुर हो रहे थे। अत: माथुर-परिवार दिल्ली में आ पहुँचा।

:: 2 ::

माथुर-परिवार दिल्ली आया तो पिता-पुत्र दोनों का विचार किसी प्रकार की राजनीति में भाग लेने का नहीं था। उनके विचार में जो कुछ भारत में हुआ था, वह एक स्वाभाविक घटना ही थी।

भारत के संविधान में कमियाँ थीं, यहाँ इस देश में डेमोक्रेसी और समाजवाद की तानाशाही का मिश्रण चलाने का यत्न किया जा रहा था। इस बे-मेल मिश्रण का ही यह परिणाम था।

माथुर साहब का विचार था कि वर्तमान प्रधानमंत्री भी इसका अनुभव करती हैं। इसी कारण संविधान के छिद्रों को दूर करने का यत्न किया है। जब वह संविधान लागू हो जाएगा तब यह आपात्-स्थिति हट जाएगी।

जब चंद्रमोहन भारत में आया तो राम बी०ए० के तृतीय वर्ष में पढ़ रहा था। परीक्षा सन् 1977 में होनेवाली थी।

चंद्रमोहन एक दिन कोर्ट से शीघ्र आया तो राम कोठी के लॉन में बैठा कुछ लिख रहा था। जनवरी का महीना था और धूप बड़ी प्यारी लग रही थी। वह उसका रसास्वादन कर रहा था।

चंद्र अपनी मोटरगाड़ी से उतरा और राम के समीप पड़ी कुर्सी पर बैठ, धूप की ऊष्मा का आनंद लेने उधर आने लगा तो राम ने पिता को आते देखा। अपने सामने रखे कागज को लपेटकर उसने समीप पड़ी पुस्तक में रख दिया। चंद्र ने पूछा, "क्या कर रहे हो?"

"एक फ्रैंड को पत्र लिख रहा था।"

"किसी गर्ल-फ्रैंड को?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक क्षण के लिए राम झिझका और फिर बोला, ''एक मित्र है। दो वर्ष हुए जब अमेरिका गया था, तो मिला था।''

''ओह! परंतु मेरा प्रश्न यह नहीं था?''

''तो मित्र के सैक्स के विषय में बताना आवश्यक है?''

चंद्र हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, ''यह तो तुमने सिद्ध कर दिया है कि वह लड़की है? देखो राम! मैं न्यायदर्शन पढ़ा हूँ और युक्ति कर ठीक परिणाम पर पहुँच जाता हूँ।

''देखो, मैं बताता हूँ। मैं जब गाड़ी में आया था तो मेरी दृष्टि तुम पर पड़ी थी। और तुम दत्त-चित्त हो लिख रहे थे। मैं गाड़ी में से उतर, धूप में बैठने आ रहा था तो तुम लिखे पुत्र को बंद कर पुस्तक में रखने की जल्दी में हो गए। फिर मैंने पूछा कि क्या कर रहे हो। मेरा आशय तुम्हारे लिखने के विषय में नहीं था, वरन् यह था कि तुम यदि कुछ विशेष काम नहीं कर रहे तो भीतर जा, रामलोक को कॉफी लाने के लिए कह दो।

''परंतु तुम्हारे मुख से निकल गया कि एक फ्रैंड को पत्र लिख रहा हूँ।

''तुमने इन शब्दों से यह प्रकट कर दिया था कि पत्र तुम्हारे मस्तिष्क में भर रहा था। यदि कोई सामान्य कार्य होता तो तुम मुझसे कहते, पिताजी! कुछ खास काम नहीं। बताइए, कुछ काम है?

''पत्र की बात अनायास ही तुम्हारे मुख से निकल गई और फिर 'फ्रैंड' अंग्रेजी भाषा का शब्द है, जो भ्रम उत्पन्न करने के लिए घड़ा गया है।

''बस, मैं समझ गया कि पत्र आवश्यक था। तुम्हारे दिमाग में इतना भरा हुआ है कि तुमने मेरे पूछने का अभिप्राय समझे बिना पत्र और फिर 'फ्रैंड' का शब्द कह दिया। फिर उस पत्र को छुपाने के लिए पुस्तक में रख देने से तुमने यह भी प्रकट कर दिया है कि तुम किसी लड़की को प्रेम-पत्र लिख रहे हो।

''अब बताओ, क्या कहते हो?''

राम मुस्कराते हुए बोला, ''पिताजी! मैं वकीलोंवाली युक्तियाँ करना नहीं सीखा। बाबाजी ने मुझे धर्मशास्त्र पढ़ाया है और उसमें उन्होंने कहा है कि सत्य परम धर्म है। इस कारण झूठ बोलने का तो विचार था ही नहीं। हाँ, छुपाने की बात अवश्य थी। कारण यह कि 'लव-लैटर' तो किसी दूसरे का रहस्य भी है और उससे बिना पूछे बताना मित्रद्रोह हो जाता है। इस कारण छुपाना आवश्यक था।''

''परंतु अब तो मैं जान गया हूँ और यदि कुछ और जानना चाहते हो तो कहो, वह भी बता दूँगा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम अनिश्चित मन मुख देखता रह गया। इस पर पिता खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसकर बोला, ''देखो! मैं तुम्हें एक बात बताता हूँ। जब मैं तुम्हारी माँ के प्रति आसक्ति अनुभव करने लगा था तो पिताजी, जो मुझसे भी अधिक युक्ति करना जानते हैं, जान गए थे कि मैं प्रेम-फाँस में फँस गया हूँ।

''उन्होंने मुझसे पूछा तो मैंने स्वीकार कर लिया। इस पर उन्होंने पूछा, 'तो अब क्या करोगे?'

''पिताजी विचार कर रहे थे कि कदाचित् मैं तुम्हारी माँ का अपहरण करूँगा। जब मैंने बताया कि लड़की से संपर्क उत्पन्न करने का विचार कर रहा हूँ तो वह बोले, 'यह ठीक होगा कि मैं अपनी माँ अर्थात् तुम्हारी दादी से कहूँ कि वह लड़की की माँ से संपर्क बनाए। लड़की अल्पवयस्क है और मेरा उसके साथ प्रेम-प्रलाप अनुचित होगा।'

''मैंने पिताजी की बात मान ली और मेरी सगाई हो गई।

''मैं समझता हूँ कि यदि तुम्हारी इच्छा उससे विवाह करने की है तो अपनी माँ से कहो और वह लड़की की माँ को कहेगी। मैं समझता हूँ कि तुम्हारा काम बन जाएगा।

''परंतु तुम अभी उन्नीस वर्ष के हो। तुम्हारा विवाह कम-से-कम दो वर्ष उपरांत होना चाहिए। इस पर भी यदि लड़की इस योग्य है कि तुम्हारी पत्नी बने तो माँ से कहो कि सगाई हो जानी चाहिए।''

''पिताजी! धन्यवाद। मैं आपकी राय मान माँ से कहूँगा।''

चंद्र ने बात बदल दी। वह बोला, ''मैं समझता हूँ कि आपात्-स्थिति बूढ़ी हो गई है और अब शीघ्र ही समाप्त होनेवाली है। तब सगाई का प्रबंध सुगमता से हो सकेगा।''

राम ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए पूछा, ''तो इसके बूढ़ी हो जाने के लक्षण दिखाई दिए हैं?''

''हाँ!'' पिता ने कहा, ''संविधान में परिवर्तन हो चुके हैं और अब इसकी आवश्यकता नहीं रही। साथ ही भूमि के नीचे क्रांति की गड़गड़ाहट सुनाई देने लगी है। यह हमारे प्रधानमंत्री कभी नहीं चाहेंगे।''

राम मुख देखता रह गया। उसने बात बदल दी, ''माताजी को सूचना दूँ कि आप आ गए हैं?''

''वह कहाँ है?''

''अपने कमरे में अपना संगीत का अभ्यास करते-करते थक सो गई हैं।''

''तो मत जगाओ। रामलोक को कहो कि तीन प्याले कॉफी ले आए। और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौमित्र कहाँ है?"

"मैं समझता हूँ कि वह अपने स्टडी-रूम में कुछ पढ़ रहा है।"

इतना कह, राम वह पुस्तक उठा बगल में रख जाने लगा, जिसमें उसने अधूरा लिखा पत्र रखा था।

चंद्रमोहन फिर हँसा और बोला, "डरो नहीं, मैं तुम्हारा पत्र पढ़ने की इच्छा नहीं रखता। मैं समझता हूँ कि मैं जान गया हूँ कि पत्र किसको लिख रहे हो।"

राम ने उत्तर नहीं दिया और परेशानी में कोठी के भीतर चला गया। इसी समय मुकुटबिहारी माथुर बाहर आया। उसने विस्मय में पूछ लिया, "आज शीघ्र ही चले आए हो?"

"जी! वहाँ वकीलों की घिसी-पिटी बातें सुनते-सुनते ऊबकर चला आया हूँ। विचार था कि शोभा यदि खाली हो तो मोटर में ले बीस-तीस मील का राउंड लगा आऊँ।"

"ओर व्यर्थ में पेट्रोल फूँक आओ?"

"व्यर्थ नहीं पिताजी! पत्नी की संगत, खुली हवा में द्रुतगति से भगाते हुए रसयुक्त होगी।"

"ठीक है। जा सकते हो। राम कह रहा है कि परीक्षा के उपरांत अमेरिका पढ़ने जाएगा।"

चंद्र हँसते हुए बोला, "और तीन वर्ष में विवाह कर वहाँ से लौटेगा।"

"तो यह बात है?"

"मेरा अनुमान है कि ऐन्ना की लड़की से प्रेम-पत्रिकाएँ चल रही हैं।"

"हो सकता है! दो वर्ष हुए जब यह वहाँ गया था तो स्टीफंस इसे अपने बच्चों के साथ मैक्सिको-भ्रमण कराने ले गया था। ऐन्ना की बड़ी लड़की, मेरी हो सकती है।"

"पिताजी! आपका क्या विचार है? इस 'अफेयर' को इसके स्वाभाविक परिणाम पर पहुँचने दें?"

"इससे पूर्व मैं वहाँ जाने का विचार कर रहा हूँ। ऐन्ना अपनी संस्था की कार्यकारिणी की सभा बुला रही है। यह अगले वर्ष जून-जुलाई में हो सकेगी। मैं चाहूँगा कि यदि राम ने मेरी पर दृष्टि रखी है और वह इसके अनुकूल है तो मैं कुछ महीने उसे भी धर्मशास्त्र पढ़ा दूँ। तब दोनों में भली-भाँति पट सकेगी अन्यथा, वही होगा जो अमेरिका में प्रायः हो रहा है।"

"यही सब तो विचारणीय है। आपको वहाँ हमारे बिना बहुत कष्ट होगा। तब शोभा को आपके साथ जाना पड़ेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और फिर मोटर भगाते हुए प्रेम की बातें किससे किया करोगे?" पिता ने पुत्र से पूछ लिया। परंतु चंद्र के उत्तर देने से पूर्व ही उसने कहा, "मैं समझता हूँ कि हम-सब ही वहाँ चलें। परंतु देश की वर्तमान स्थिति में क्या कुछ हो सकेगा, यह भी विचारणीय है।"

इस समय कॉफी आई तो शोभा भी आ गई।

:: 3 ::

राम के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब अगले दिन कॉलेज से लौटने पर उसने अपने पिता की सम्मति माँ को बताई और शोभा ने अपना अनुमान बताया।

शोभा प्रातः का अल्पाहार सात बजे लेती थी। तदनंतर वह चार घंटे स्वाध्याय करती थी। उसकेस्वाध्याय का भी विषय धर्मशास्त्र था। इस स्वाध्याय का सुझाव मुकुटबिहारी ने ही उसे दिया था।

बारह बजे वह मध्याह्न का भोजन लेती थी और फिर आधा घंटा विश्राम कर वह संगीत का अभ्यास करती थी और यह अभ्यास तीन बजे तक चलता था। तदनंतर कुछ आराम कर वह पति की 'कोर्ट' से लौटने की प्रतीक्षा करने लगती थी।

इस दिन वह विश्राम के उपरांत कमरे से निकल, कोठी के ड्राइंगरूम में आई तो राम उसके पास आ बैठा। शोभा ने उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा तो वह कहने लगा, "माताजी! पिताजी ने एक राय दी है।"

शोभा ने मुस्कराते हुए कहा, "यही न कि अपनी प्रेम-पत्रिका मेरी राय से लिखा करो।"

"तो उन्होंने आपको बताया है?"

"पर मैं तो पहले ही जानती थी कि तुम मेरी से लगाव रखने लगे हो। मैंने इस विषय में ऐन्ना को लिखा है। वह तुम्हारे उससे पत्र-व्यवहार को अनुचित नहीं कहती, परंतु वह इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहती। वह अपने देश के चलन के अनुरूप बच्चों को इस विषय में स्वतंत्रता से निश्चय करने की प्रथा पसंद करती है।"

"मेरी तो मेरे अनुकूल प्रतीत होती है।"

"देखो राम! इस विषय में तुम भी कुछ समय से पूर्व ही कह रहे हो। तुम्हें अभी अपनी पढ़ाई में समय लगाना चाहिए। 'लव-अफेयर' के लिए अभी जीवन बहुत लंबा है। इसका चिंतन पढ़ाई में बाधक हो सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परंतु पिताजी का कहना है कि यदि सगाई हो सके तो अधिक ठीक होगा?"

"परंतु तुम्हारे और मेरी के विचार बदल भी सकते हैं?"

"सगाई के उपरांत और विवाह से पूर्व तो विचार बदलने की छूट सबको होती है?"

"बात यह है," शोभा ने कहा, "मैं और तुम्हारे पिता भारतीय हैं। हमारी सगाई माता-पिता की स्वीकृति से हुई थी। परंतु मेरी में अमेरिकन रक्त है और उसके साथ तुम्हारा प्रेम-पत्र ही सगाई का रूप है।

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि तुमको इस दिशा में अधिक ध्यान और समय व्यय नहीं करना चाहिए। विषयों का चिंतन बहुत भयंकर होता है।"

"परंतु मैं जब उसे पत्र लिख लेता हूँ तो चित्त में शांति अनुभव करता हूँ और फिर पढ़ाई में अधिक ध्यान लगा सकता हूँ।"

"पत्र लिखने से मना तो मैं नहीं कर रही। केवल उसके विषय में चिंतन से मना कर रही हूँ। इसके लिए एक उपाय है।"

"क्या?"

"कर्म करने पर फल की बात परमात्मा पर छोड़ दो और मन में सदा असफल होने की स्थिति सहन करने के लिए तैयारी करते रहो। इसे निष्काम भाव से कर्म करना कहते हैं।"

"तो पत्र भेज दूँ?"

"हाँ, यदि उसमें कोई अनुचित शब्द नहीं लिखा, तो भेज दो।"

"उचित-अनुचित का क्या अर्थ है?"

"जो बात तुम अपने पिता अथवा माता के सामने अपनी प्रेमिका से कह सकते हो, वह उचित है और जो उनसे परोक्ष में कहना चाहते हो, वह अनुचित है।"

राम गंभीर विचार में मग्न हो गया। फिर कुछ विचार कर उठा और अपने कमरे में से एक लिफाफा ले आया। उस पर मेरी का नाम और पता लिखा था। लिफाफा बंद था। उसने वह लिफाफा माँ के सामने खोला और उसमें का पत्र निकाल, माँ के सामने रखते हुए कहा, "इसे पढ़ लीजिए और यदि कुछ अनुचित हो तो उसे काटकर मुझे दे दीजिए। मैं इसको पुनः लिखकर भेज दूँगा।"

राम में यह स्वभाव धर्म की शिक्षा से ही उत्पन्न हुआ था। वह यह था कि धर्म का मूल ज्ञान में है। ज्ञान, मन और बुद्धि का कार्य है। एक ज्ञान का संचय स्थान है और दूसरा उस ज्ञान को छननी में से ऐसा छानकर साफ करने का कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती है जैसे छननी से आटा छनकर भूसा पृथक् किया जाता है।

इस धर्म की शिक्षा का ही परिणाम था कि राम ने पत्र माँ को दिया और अपने स्टडी-रूम में चला गया।

भारत में आपात्-स्थिति समाप्त हुई। उससे पूर्व लोकसभा भंग हुई और राजनीतिक बंदी छोड़े जाने लगे। देश में एक प्रकार की चेतना की तरंग उठ खड़ी हुई।

वकीलों और समाचार-पत्रों के मुख खुल गए और वे एक स्वर से कहने लगे कि जो कुछ आपात्-स्थिति में हुआ था, वह ग़लत था और उसे बदल देना चाहिए। बदल देने का उपाय किया गया। वह यह कि लोकसभा के निर्वाचनों में जो पहले शासक थे, उनको बदलकर उनको शासन के लिए आगे लाया गया जो बंदीगृह में डाल दिए गए थे।

मुकुटबिहारी ने इस समय एक लेख पाँच-छः समाचार-पत्रों में भेजा। लेख का शीर्षक था—"चेंज! बट वट चेंज?" लेख अंग्रेजी में था और शीर्षक का अभिप्राय था—"परिवर्तन—परंतु कैसा परितर्वन?"

लेख में उसने कहा था कि कम-से-कम छः मास के लिए नए निर्वाचन नहीं होने चाहिएँ और देश में राष्ट्रपति का शासन होना चाहिए। लोगों को समय मिलना चाहिए कि वे विचार करें कि क्या ग़लत था और उस ग़लत व्यवहार को बदलकर क्या लाना है? केवल लोकसभा के सदस्य बदलने से कुछ लाभ नहीं होगा।

इस विषय पर लेख छापने तथा उस पर गंभीरतापूर्वक विचार करने का किसी के पास समय ही नहीं था। यह प्रधानमंत्री और लोकसभा के अधिकार में ही था कि लोकसभा कब भंग करे और फिर कब इसका नया जन्म हो। यह सब कुछ अस्वाभाविक था। जो कुछ सन् 1947 से लेकन सन् 1975 तक हुआ था, उस पर गंभीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता थी। यह लेख किसी समाचार-पत्र में नहीं छपा। किसी समाचार-पत्र के पास इस प्रकार की दीर्घकालीन योजनाओं को छापने के लिए न समय था, न समाचार-पत्रों में स्थान। सामयिक समस्या पर ही इतना कुछ छपने को होता था कि किसी को न तो विचार करने का समय था, न आवश्यकता अनुभव होती थी।

परिणामस्वरूप निर्वाचन दो मास के भीतर हो गए और उसका परिणाम जो होना था, वह हो गया। सन् 1947 में राज्य उन लोगों के हाथ में गया था जो अंग्रेजी राज्य-काल में जेलों में बंद किए जाते थे और सन् 1977 में राज्य उनके हाथों में चला गया जो आपात्-स्थिति में जेलों में थे। यह जेल जाने का मापदंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य चलाने की योग्यता नहीं थी।

समाचार-पत्रों में निर्वाचनों के परिणाम छपे तो एक दिन उसके परिणामों पर बात चल पड़ी। उस दिन रामलाल भी माथुर साहब की कोठी पर आया हुआ था।

वहाँ माथुर, चंद्र, शोभा और अमेरिका से आई ऐन्ना बैठे थे। ड्राइंगरूम में बैठे एस०आर०एच०एस० के कार्यक्रम पर विचार हो रहा था।

रामलाल से ऐन्ना का परिचय था। ऐन्ना जानती थी कि वह उसके म्यूजिक-टीचर का पिता है। निर्वाचनों पर बात चली तो रामलाल ने कहा, "मैं आपको एक पूर्व-स्मृति की घटना सुनाता हूँ। लाहौर में कांग्रेस के नेता डॉक्टर गोपीचंद थे। जब लॉर्ड माउंटबैटन ने घोषणा कर दी कि स्वराज्य पंद्रह अगस्त को मिल जाएगा तो मैं डॉक्टर साहब से पूछने गया था कि इस घोषणा का पंजाब पर क्या प्रभाव होगा।

"मेरा प्रश्न सुन डॉक्टर साहब बोले, 'कुछ नहीं होगा। हम सब यहाँ ही रहेंगे और स्वराज्य का सुख भोग करेंगे।'''

"परंतु," मेरा कहना था, 'जब पंजाब सरकार की नाक के नीचे मोची दरवाजा, पीपल वेड़ा और किनारी बाजार की दुर्दशा हुई है तो पाकिस्तान सरकार के अधीन क्या कुछ नहीं होगी?'

"डॉक्टर साहब ने मेरी बातों से क्रुद्ध होकर कहा, 'लाला! जाओ अपनी दुकान पर। चिंता क्यों करते हो? हम सब अभी यहाँ बैठे हैं। अब वह कुछ नहीं होगा।'

"मैं घर चला आया, परंतु इसके दो मास उपरांत डॉक्टर साहब शिमला में पंजाब के मुख्यमंत्री बन कर चले गए और प्रायः सब कांग्रेसी नेता दिल्ली और शिमला में पहुँच गए। पीछे रह गए कुछ हिंदू नेता, जो पंजाब की राजधानी लाहौर को हिंदुस्तान में रखने का यत्न कर रहे थे।

"एक दिन विचार आया तो न्यायमूर्ति मेहरचंद महाजनजी से मिलने चला गया। महाजन जी सीमा-आयोग की सहायता के लिए नियुक्त थे। वैसे वह मुझे जानते नहीं थे। इस पर भी मिले और पूछने लगे, 'किस काम से आए हो?'

"मैंने बताया, 'हुजूर! मैं एक हिंदू हूँ और जो कुछ मेरे पास है, सब यहाँ पाकिस्तान में ही है। लोग कह रहे हैं कि लाहौर हिंदुस्तान में जाएगा। इस आशा से बैठा हूँ। आपसे यह जानने आया हूँ कि क्या मैं ठीक कर रहा हूँ?'

" 'हाँ,और न, दोनों।' मेहरचंद महाजन का उत्तर था। उन्होंने अपनी बात की स्वयं ही व्याख्या कर दी। वह बोले, 'जो कुछ चल है, वह हिंदुस्तान में चला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना चाहिए। अचल की रक्षा करनी चाहिए। यही मैं कर रहा हूँ।'

"मैं उनका आशय समझ गया, परंतु कुछ कर नहीं सका। वहाँ से लौटते हुए एक कांग्रेसी नेता मिल गए और साथ-साथ चलते हुए पूछने लगे, 'लाला रामलाल! कहाँ से आ रहे हो?'

"मैंने बताया, 'महाजनजी से मिलने गया था।'

" 'क्या काम था उनसे?'

"मैंने काम बताया तो वह बोले, 'तुमने बहुत भूल की है। चल-सम्पत्ति तो जून में ही बाहर भेज देनी चाहिए थी। अब तो एक पैसे की वस्तु भी पंजाब से बाहर नहीं जा सकेगी।'

"मैंने पूछा, 'तो आपने ऐसा किया है?'

"वह बोले, 'मैंने तो अपने बैंक में जमा रुपया और लॉकर में रखे पत्नी के आभूषण फरवरी मास में ही दिल्ली पहुँचा दिए थे।'

"मैंने उनकी जानकारी का अनुमान लगाने के लिए पूछ लिया, 'परंतु कुछ लोग तो यह भी कह रहे हैं कि दिल्ली भी पाकिस्तान में जाएगा।'

" 'हाँ, मुसलमानों की यह माँग थी। परंतु लॉर्ड माउंटबैटन द्वारा बँटवारे में तो यह फैसला हो गया है कि रावी तक पंजाब हिंदुस्तान में रहेगा।'

" 'तो फिर यह कमीशन किसलिए बैठी हुई है?'

" 'लोगों की आँखों में धूल झोंकने के लिए।'

"मैंने अपने मतलब की बात पूछ ली, 'और लाहौर के विषय में क्या खबर है?'

"वह बोले, 'बताया तो है। रावी तक का सब क्षेत्र पाकिस्तान को मिलेगा।'

"मैं द्विविधा में फँसा हुआ घर पहुँचा और वहाँ समाचार मिला कि अपना एक पड़ोसी कुछ आभूषण ले दिल्ली जा रहा था तो रेल के स्टेशन पर रजाकारों ने उसकी तलाशी ली। जब उसके सूटकेस में भूषण निकले तो भूषण लूट लिए गए और उसके पेट में छुरा घोंप दिया गया।

"यह मेरी कहानी तो है ही कि मैं किस प्रकार सब कुछ देकर केवल दो सौ रुपए कोट की जेब में पड़े ही ला सका था।

"वकील साहब! मैं यह जानना चाहता हूँ कि अब यहाँ से तो नहीं भागना पड़ेगा?"

माथुर साहब ने पूछा, "परंतु रामलाल! क्या चुनावों से कोई नया पाकिस्तान बन रहा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामलाल मुस्कराता हुआ बोला, "वकील साहब! मेरा यह अभिप्राय नहीं। कनॉट सर्कस में लोग यह कह रहे हैं कि कांग्रेस-सरकार की रूस के साथ संधि है। इस कारण वह कांग्रेस की मदद के लिए आ सकता है और वह तो पाकिस्तान से भी बुरा होगा।"

"नहीं रामलाल! ऐसा कुछ नहीं होगा।"

:: 4 ::

समीप बैठी ऐन्ना ने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं यहाँ भारत में इस कारण आई हूँ कि यहाँ के प्रधानमंत्री से मिलकर अपनी योजना का रंग नई सरकार को दिया जाए।"

माथुर ने कहा, "फुज़ूल है। भला जो नए प्रधानमंत्री हैं, वह जानेवाले दल से किस प्रकार भिन्न हैं?"

ऐन्ना माथुर की बात समझी नहीं। इस पर माथुर ने अपनी बात की व्याख्या कर दी। उसने कहा, "देखो मिसेज स्टीफंस! जो कुछ सन् 1947 से चला आ रहा है, उसका रूप ही तो यह जनता पार्टी है। ये भी गांधीजी के भक्त हैं। ये उसी प्रकार के देशभक्त हैं, जैसे हमारे सभी पूर्व के शासक थे। अर्थात् वे यहाँ की ईंट-पत्थरों को देश समझते हैं। वर्तमान दल में सभी हाड-चाम के पुतले ही हैं, जिनमें आत्मा नहीं है?"

"परंतु हाड-चाम, पत्थर-सीमेंट से तथा लोहा ऐलुमीनियम से तो भिन्न ही होता है।" ऐन्ना का कहना था।

"परंतु," माथुर साहब ने कह दिया, "हाड-चाम की भिन्नता जिस कारण से है, उसे ये नहीं मानते।"

"फिर भी मैं आई हूँ और नए प्रधानमंत्री से मिलना चाहती हूँ।"

"परंतु अभी तो पता नहीं कि प्रधानमंत्री कौन होता है? अभी तक सफल हुए सदस्यों में मोरारजी देसाई, चरणसिंह, जगजीवनराम ही मुख्य हैं। वैसे ये तीनों महापुरुष प्रधानमंत्री पद के अभिलाषी हैं। परंतु इन तीनों में देश के पूर्व के प्रधानमंत्री के समान चतुराई नहीं है। नेहरूजी की चतुराई यह थी कि गांधीजी का विरोध करते हुए भी उनका आशीर्वाद सदा प्राप्त करते रहे थे।

"मैं समझता हूँ कि यह भी भारी गुण था और उस गुण के कारण ही पंडित जवाहरलाल सत्रह वर्ष भारत जैसे विशाल देश पर शासन करते रहे। जनता-दल के नेताओं में वैसा चतुर व्यक्ति कोई है नहीं। ये लोग जीवन-भर अन्य नेताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मुख देखते रहे हैं और सब अपने को एक-दूसरे से श्रेष्ठ समझते हैं।''

ऐन्ना सोच में पड़ गई। उसने कुछ विचार कर कहा, ''तब तो मैं इन तीनों से मिलूँगी और यदि इनको कुछ भी अपनी बात समझा सकी तो अपनी विचारित दिशा में कुछ तो प्रगति होगी।''

''ठीक है। करो।''

इस पर ऐन्ना स्टीफंस ने अपनी संस्था के छपे फार्म पर तीनों जनता-दल के नेताओं से भेंट के लिए याचना कर दी।

इनमें से दो के साथ तो भेंट पार्टी का नेता निश्चय होने से पहले ही हो गई और तीसरे से तब हुई जब वह पार्टी का नेता चुन लिया गया था और राष्ट्रपति से भेंट कर लौटा था। वह राष्ट्रपति को अपने कुछ साथियों के नाम मंत्रिपद के लिए दे आया था और अगला दिन शपथ लेने का नियत हो चुका था।

इन तीनों से भेंट करने के उपरांत ऐन्ना सर्वथा निराश लौटी। उसने अपनी प्रतिक्रिया माथुर को बता दी और अपनी भेंट का विवरण सुना दिया। उसने बताया, ''मैं इन तीनों नेताओं से मिली हूँ और मेरा इन तीनों के विषय में एक समान विचार बना है। वह यह कि ये तीनों नेता नहीं है। जहाँ तक राजनीति का संबंध है, तीनों किसी के पिछलग्गू हैं।

''ये तीनों महात्मा गांधी को गुरु मानते हैं, परंतु उनको भिन्न-भिन्न प्रकार से समझते हैं। एक ने यह कहा है कि महात्माजी का निश्चित मत था कि आठ-दस करोड़ अछूत जाति के घटकों को हिंदू-समाज ने घूर के ढेर पर रखा हुआ है और भारत का भविष्य उनके हाथ में है। इस विस्तृत विशाल जनता पर ही भारत का भविष्य आधारित है। अतः यदि वह प्रधानमंत्री बना तो इस जनसमूह को भारत के मुकुट में लगा देगा।

''इनसे जब मैंने अपनी समस्या के विषय में बताया तो कहने लगे कि आज की समाज में राज्य के अतिरिक्त अन्य कोई संस्था नहीं जो कुछ भी मूल्य रखती हो। जो कुछ भी संस्थाएँ हैं, वे राज्याश्रय पर ही चलती हैं। वह बात को समझ ही नहीं सके कि शिक्षा राज्य से स्वतंत्र होनी चाहिए।

''दूसरे नेता बोले कि जो आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हैं, राज्य उनकी उन्नति को प्रथम स्थान देगा। इनके मस्तिष्क में यह समा गया है कि अर्थ के विचार से भी जातियाँ हैं और भले ही उन जातियों में कोई धनवान् हो जाए, परंतु उसकी जाति-बिरादरी का निर्धन होना, उसके मार्ग में बाधक है।

''मैंने इनको बताया कि किसी की आर्थिक दशा हीन है अथवा श्रेष्ठ, हमारा इससे संबंध नहीं है। हमारा कहना यह है कि मानव-समाज का नेतृत्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानवान्, बुद्धिशील और सबल आत्मावाले लोगों के हाथ में होना चाहिए। वे किस जाति के हैं, किस पेशे के हैं अथवा किस व्यक्ति की संतान हैं, उनसे हमारा संबंध नहीं है। यह काम शिक्षा संस्थाओं का होना चाहिए।

''वे श्रीमान् बोले, 'निर्धन-समाज और परिवार के घटक अवसर मिलने पर भी लाभ उठा नहीं सकते। इस कारण पहले आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग को आगे ले जाना चाहिए। पीछे विद्वानों के हाथ में नेतृत्व देने की बात पर विचार किया जा सकता है।'

''अब तीसरे श्रीमान् नए प्रधानमंत्री का कहना है, 'मैं तो ईश्वर भरोसे हूँ और यदि वह सत्य ही शक्तिमान् और बुद्धिमान् है तो वह हमारे कार्यों में सम्मिलित होगा।'

''मैंने हँसी-हँसी में कह दिया, 'परंतु हमें परमात्मा को बताना तो चाहिए कि हम क्या चाहते हैं।'

''इस पर वह कहने लगे, कि वह सब कुछ जानता है और उनके विचार में ईश्वर पर भरोसा रखकर जो कुछ भी किया जाता है, वह ठीक ही होता है।''

जब ऐन्ना अपना कथन समाप्त कर चुकी तो माथुर ने मुस्कराते हुए पूछा, ''अब आप क्या करना चाहती हैं?''

''मैं तो एक-दो दिन में अमेरिका लौट जाना चाहती हूँ। अगली कार्य-समिति में अपनी रिपोर्ट उपस्थिति कर दूँगी। जो कुछ और जितना कुछ मैं भारत के इन नेताओं से आशा करती थी, वह होना संभव प्रतीत नहीं होता। मेरा विचार था कि ये तीनों नेता भारत की प्राचीन संस्कृति के उपासक हैं और इनको मैं अपनी बात समझा सकूँगी। भारत की तो यह प्रथा रही है कि दस सहस्र अनपढ़ व्यक्तियों से दो-तीन विद्वान् भारी होते हैं। परंतु मैं भूल गई थी कि यह गए युग की बात है।''

माथुर ने कह दिया, ''ठीक है। मैं जून मास में अमेरिका आ रहा हूँ। कदाचित् चंद्र और उसका परिवार भी आएगा। मेरा विचार है कि चंद्र के लड़के राम को अमेरिका के किसी विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र की स्नातकोत्तर परीक्षा के लिए छोड़ आऊँ।''

''यह तो आप बहुत ही ठीक करेंगे।''

''हाँ, परंतु मेरी और राम परस्पर विवाह करने की योज़ना बना रहे हैं?''

''हाँ, मुझे ज्ञात है। यद्यपि मैं इस विषय में निष्पक्ष हूँ, इस पर भी इस संबंध को न-पसंद नहीं करती।''

''मेरा एक प्रस्ताव है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या?"

"वह यह कि यदि राम को वहाँ किसी विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल गया तो मेरी को तुम यहाँ भारत में पढ़ने के लिए भेज दो।"

"परंतु वह तो इतिहास में रुचि लेती है। स्कूल पढ़ाई के उपरांत इतिहास में स्नातक की पढ़ाई करना चाहेगी।"

"मैं यह चाहूँगा कि उसे यहाँ दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए भेज दिया जाए और फिर वह हमारे घर में रहेगी तथा भारतीय दृष्टि से विश्व के इतिहास का ज्ञान प्राप्त कर सकेगी।"

"मैं यह विचार करूँगी। उसके पिता से भी राय करनी होगी।"

"यह मैं इस कारण कह रहा हूँ कि राम और मेरी दोनों में ज्ञान की रंगत एक समान हो जाए तो इनका जीवन सुखी रहेगा।"

"मैं भी इसे ठीक ही समझती हूँ। विशेष रूप से जब दोनों का विवाह होना है। परंतु मेरी के पिता मनोविज्ञान के विद्वान् आपकी इस योजना को किस दृष्टि से देखते हैं, पता नहीं। यह जानकर लिखूँगी।"

"हाँ! मैंने राम को कॉलेज की शिक्षा के अतिरिक्त कुछ समझाया है और उस पर अभ्यास भी कराया है। कुछ वैसा ही राम की होनेवाली पत्नी को समझाना चाहता हूँ। बस, हम बड़ों का काम इतने पर समाप्त हो जाता है।

"देखो ऐन्ना! मैं तुम्हें चंद्र की बात बताता हूँ। वह कॉलेज में पढ़ता हुआ कम्युनिज़्म की लपेट में आ गया था और प्रथम श्रेणी का आवारा हो गया था। मैंने जब उसे सीमा से अधिक बिगड़ते देखा तो उसकी प्रेमिका को कुछ सीख दी। वह समझी तो उसमें और चंद्र में अन-बन हो गई। तब राम की माँ ने उसे समझाया और वह तीन वर्ष कॉलेज की पढ़ाई छोड़ने के उपरांत पुनः कानून पढ़ने लगा। उस समय मैं उसे अपना भारतीय कानून का आधार पढ़ाने लगा और वह अब एक सफल वकील तथा सही दिमाग नागरिक बन गया है।

"यदि यही कुछ मेरी और राम में हो सके तो मैं समझता हूँ कि मेरा परिवार के प्रति कर्त्तव्य पालन हो जाएगा और ये दोनों जीवन में सफलता के मार्ग पर चल पड़ेंगे।"

ऐन्ना को दिल्ली से चलने के पूर्व राम से भी बात करने का अवसर मिला। दोनों दिल्ली में नेशनल म्यूज़ियम देखने गए हुए थे। म्यूज़ियम देख, लौटते समय राम ने अपने अमेरिका में आकर शिक्षा पूर्ण करने का विचार बताया। ऐन्ना ने कह दिया, "इससे मेरी को सर्वाधिक प्रसन्नता होगी।"

"सत्य आंटी! मैंने उसे भी पत्र में लिखा है, उसके उत्तर की प्रतीक्षा में हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आशा करती हूँ कि वह तुम्हें शीघ्र ही लिखेगी। यदि उसने वहाँ पहुँचने तक तुम्हें वहाँ 'वैल्कम' करने की बात न लिखी तो मैं उसको प्रेरणा दूँगी कि अपने मन की बात लिख दे।"

"मैं तो," राम ने कह दिया, "उससे जीवन-भर की कम्पैनियनशिप स्थापित करने का यत्न कर रहा हूँ।"

"मेरी शुभकामना तुम दोनों के साथ है।"

राम इससे अति प्रसन्न था। उसी सायंकाल उसने अपनी माता से मेरी की माँ के विचार बताये तो शोभा ने कह दिया, "मैं समझती हूँ इसमें भी कुछ प्रसन्न होने की बात नहीं। प्रत्येक अमेरिकन माँ अपनी लड़की के विषय में यही चाहेगी।

"मुख्य बात तो मेरी की है। अभी उसकी आयु चौदह वर्ष की है और उसमें बुद्धियुक्त जीवन का आरंभ ही हो रहा है। ठीक इसी आयु में मैं तुम्हारे बाबा के संपर्क में आई थी। तब तुम्हारे पिता डी-ट्रायट में प्राध्यापक बनकर गए हुए थे। मैं सप्ताह में दो-तीन दिन तुम्हारी दादी के पास आकर रहती थी और तुम्हारे बाबा कुछ बताते रहते थे। उस बताने का ही परिणाम हुआ कि हम दोनों का, मेरा अभिप्राय है कि मेरा और तुम्हारे पिता का जीवन अति मधुर और सुखप्रद चलता आ रहा है।"

"तो माँ! बाबा को कहो कि वह भी मेरे साथ अमेरिका चलें और वहाँ मेरी को कुछ ज्ञान दें।"

"कहूँगी, परंतु इस आयु में वह अकेले नहीं रह सकेंगे। मुझे भी उनके साथ वहाँ जाना पड़ेगा और इसके लिए तुम्हारे पिताजी से स्वीकृति लेनी पड़ेगी।"

इस समस्या पर राम माँ का मुख देखता रह गया।

अगले दिन ऐन्ना अमेरिका के लिए जाने लगी तो राम ने अवसर देख, उसे एक पत्र खुले लिफाफे में मेरी के नाम दे दिया। ऐन्ना हवाई पत्तन पर जाने के लिए तैयार खड़ी थी। उसने लिफाफे पर मेरी का नाम लिखा देखा और उसे खुला देख विस्मय हुआ और राम का मुख देखने लगी।

राम ने कह दिया, "आंटी! मैं इस पत्र में मेरी को 'प्रपोज़' कर रहा हूँ और मेरे गुरुजी ने कहा है कि जो उचित बात हो, वह माता-पिता और बड़ों से छुपाने की नहीं होती। इस कारण आपके हाथ ही इसे भेज रहा हूँ।"

ऐन्ना हँस पड़ी। हँसते हुए पूछने लगी, "और तुम मेरे द्वारा यह खुला प्रपोज़ल भेजकर किस व्यवहार की आशा करते हो?"

"जो बड़ों से आशा करनी चाहिए।"

इस समय ऐन्ना को शोभा कहने आई कि सामान मोटर में लाद दिया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वह ऐन्ना के हाथ में खुला लिफाफा देख पूछने लगी, "यह क्या लिए जा रही हो?"

ऐन्ना ने मुस्कराते हुए कह दिया, "राम का मेरी से विवाह का प्रस्ताव है।"

"और ऐन्ना! तुम ले जा रही हो?"

"दूत-मात्र बनने में कुछ हानि समझ नहीं आई।"

"आंटी! एक सहानुभूति रखनेवाली दूत बनकर।" राम ने कहा।

"हाँ! इसका वचन मैं देती हूँ। इस पर भी निश्चय करनेवाला कोई दूसरा है।"

शोभा चुप रही तो ऐन्ना ने राम का पत्र अपने पर्स में रख लिया।

:: 5 ::

जब राम की परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ तो वह अपने नाना के घर गया हुआ था। समाचार-पत्र में अपना उत्तीर्ण छात्रों में रोल नंबर देखकर वह अपने कॉलेज को भागा। वह देखना चाहता था कि वह किस श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ है। रानी ने देखा कि समाचार-पत्र पढ़ता-पढ़ता वह उठा है और धड़ाधड़ सीढ़ियाँ उतर गया है। वह ड्राइंगरूम में बैठी सौमित्र से बातें कर रही थी। एकाएक राम को अपने कमरे से निकलते और मकान से उतरते देखा तो उसने सौमित्र को कहा, "तनिक देखो। दादा किधर गया है?"

सौमित्र उठ, उसके पीछे नीचे चला गया। रानी उत्सुकता से उसके लौटने की प्रतीक्षा करती रही। सौमित्र दस मिनट में लौटा और उसके हाथ में हिंदुस्तान टाईम्ज़ की एक प्रति पकड़ी हुई थी। उसने ड्राइंगरूम में आते ही कहा, "नानी माँ! राम तो नहीं मिला, परंतु पिताजी ने यह समाचार-पत्र दिया है। राम के उत्तीर्ण होने का समाचार छपा है।"

"कितने अंक लेकर उत्तीर्ण हुआ है?"

"अंक तो नहीं लिखे। केवल उत्तीर्ण विद्यार्थियों के 'रोल नंबर' छपे हैं। पिताजी ने बताया है कि उसका नंबर उत्तीर्ण छात्रों में है।"

"तब वह अवश्य अपने प्राप्त-अंक पता करने विश्वविद्यालय के कार्यालय अथवा अपने कॉलेज के कार्यालय में गया होगा?"

"तब तो उसके आने की प्रतीक्षा करनी चाहिए?"

"हाँ!" सौमित्र ने कहा और साथ ही यह कह दिया, "नानी माँ! राम दादा कहता था कि यदि वह उत्तीर्ण हुआ तो वह अमेरिका जाएगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, वह कह रहा है, परंतु तुम्हारे बाबा ने अभी निश्चय नहीं किया।"

"परंतु वह तो कहता था कि वह वहाँ से विवाह कर हमारी भाभी लेकर आएगा?"

"इन दोनों बातों का परस्पर संबंध नहीं है। पढ़ाई के लिए न भी जाए तब भी विवाह तो हो ही सकता है। परंतु वह अभी उन्नीस वर्ष का है। अभी उसका विवाह तीन वर्ष तक नहीं हो सकता।"

"क्यों?"

"इस कारण कि वह अभी छात्र-मात्र है और अमेरिका में कोई लड़की किसी बेकार लड़के से विवाह नहीं कर सकती।"

सौमित्र ने पूछ लिया, "पर नानी माँ! आपका विवाह किस आयु में हुआ था?"

इस पर नानी हँस पड़ी। उसने कहा, "मेरी आयु चौदह वर्ष की थी। परंतु मेरा विवाह मेरे माता-पिता ने किया था।"

"तब तो उसका विवाह नहीं होगा?"

"पर तुम्हारी इसमें क्या रुचि है?"

"यह कि मैं भी अपनी भाभी के दर्शन करना चाहता हूँ?"

"हाँ, यह इच्छा स्वाभाविक है। परंतु भाभी के दर्शन से पत्नी के दर्शन अधिक इच्छित होते हैं?"

"वह भी होंगे। परंतु उसमें अभी बहुत देर है?"

"हाँ, परंतु राम को अमेरिका में अभी अल्पायु माना जाएगा। अभी वह उन्नीस वर्ष का है और उसके माता-पिता इस आयु में विवाह नहीं करने देंगे और जब वह सज्ञान होगा तो तब तक उसका विचार बदल भी सकता है।"

"परंतु वह है कौन?"

"तुम्हारी माता की एक सहेली है ऐन्ना! कुछ महीने हुए वह यहाँ आई भी थी।"

"तो वह है?"

"वह नहीं। उसकी लड़की है। नाम है मेरी। वह अभी पंद्रह वर्ष की है। उसका विवाह पाँच वर्ष उपरांत होगा।"

बात समाप्त हो गई। सौमित्र समझ गया कि भाभी के दर्शन होने में अभी पाँच वर्ष हैं। यद्यपि राम ने कुछ अन्य कहा था, परंतु बड़ी माँ की बात अधिक विश्वास योग्य थी।

अगले दिन राम अपने बाबा के पास जा पहुँचा और बताने लगा कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छे अंक लेकर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ है।

मुकुटबिहारी ने कहा, ''ऐन्ना का पत्र आया है कि फिलाडैल्फिया विश्वविद्यालय में ही प्रवेश मिल जाएगा। यदि अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण न हुए तो सिफारिश लगवानी पड़ेगी।''

''बाबा! अब तो सिफारिश की आवश्यकता नहीं होगी।''

''मैं तुम्हारे पासपोर्ट के लिए यत्न करूँगा। मैं समझता हूँ कि अब नई सरकार बन जाने पर यह कठिन नहीं होगा। साथ ही मुझे अपना पासपोर्ट का नवीकरण कराना होगा।''

इसके उपरांत अमेरिका जाने की तैयारी होने लगी। राम ने अपने उत्तीर्ण होने की सूचना मेरी को भेज दी।

जब मुकुटबिहारी माथुर और राम को अमेरिका जाने का पासपोर्ट तथा विसा मिला तो बाबा-पोता फिलाडैल्फिया जा पहुँचे। हवाई पत्तन पर उनके स्वागत के लिए स्टीफंस-परिवार पहुँचा हुआ था।

मिस्टर स्टीफंस जानता था कि उसकी बड़ी लड़की मेरी आनेवाले लड़के से लगाव रखती है। इस कारण स्टीफंस स्वयं राम से संपर्क बना उसकी मानसिक अवस्था का अनुमान लगाना चाहता था और तब ही वह इस संबंध की अनुमति देना चाहता था।

अतः हवाई पत्तन पर मेल-मुलाकात के उपरांत जब अभी वे सामान की प्रतीक्षा कर रहे थे, स्टीफंस राम से बात करने लगा। उसने वहाँ ही बात आरंभ कर दी।

''मुझे यह जान अति प्रसन्नता हुई है कि तुम अमेरिका में अर्थशास्त्र पढ़ने आए हो। परंतु मैं विस्मय करता हूँ कि आजकल के युवक अर्थशास्त्र के पीछे क्यों भाग खड़े हुए हैं।''

राम ने मुस्कराते हुए कहा, ''मेरा इस विषय में अनुभव अभी बहुत कम है। मैंने यह विषय इसलिए लिया था क्योंकि भूमंडल के सब कहे जानेवाले उन्नत देशों में अर्थशास्त्र की हवा चल रही है। इस कारण मैं भी इसके बवण्डर में आ गया हूँ।''

''और तुम्हें इसका पश्चात्ताप लग रहा है क्या?''

''जी नहीं। मेरी शिक्षा मेरे बाबाजी के अधीन हो रही है और उन्होंने मुझे पूर्ण शिक्षा के मूल का दर्शन कराया है। वह मानते हैं कि शिक्षा का प्रत्येक विषय एक साँझे आधार पर स्थिर है।''

''तो तुम समझते हो कि अर्थशास्त्र और इतिहास के मूल में कुछ अन्य है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वह एक ही है।''

''जी! बाबा बताते हैं कि किसी भी विषय का ज्ञान मन को होता है और बुद्धि उस ज्ञान का विश्लेषण कर प्राणी में विद्यमान आत्मतत्त्व को लाभ पहुँचाने का यत्न करती है।

''यदि मन और बुद्धि की कार्यविधि को भलीभाँति समझ लें तो कोई भी विषय पढ़ें, उसमें वही आत्मा बोलती दिखाई देगी जो किसी अन्य विषय में बोल रही है।

''बाबा कह रहे थे कि सबमें रस पेड़ के मूल से ही आता है। अतः मूल को जानने से पूर्ण पेड़ का ज्ञान होता है। शिक्षा पेड़ है और ये विषय उसके पत्ते, फूल-फल इत्यादि हैं।''

इस समय ऐन्ना और मुकुटबिहारी सामान चेक कराकर आ गए और सब चल पड़े।

अभी तो बाबा-पोता को होटल में ठहरा दिया गया और यह विचार होने लगा कि राम का दाखिला कब होगा और फिर वह कॉलेज-होस्टल में ठहरेगा अथवा किसी प्राइवेट मकान में।

इसी विचार के क्रम में ऐन्ना की लड़की मेरी ने अपने पिता से पूछ लिया, ''पापा! राम हमारे घर में नहीं रह सकता क्या?''

''इससे तुम्हें क्या लाभ होगा?''

''उससे हेल-मेल बढ़ेगा और हम एक-दूसरे को भली प्रकार से जान सकेंगे।''

''परंतु राम का बाबा कह रहा है कि वह तुमको भारत ले जाना चाहते हैं?''

''क्यों?''

''तुम्हें कुछ शिक्षा देने के लिए।''

''परंतु वह तो कानून पढ़े हैं और मैं इतिहास की छात्रा हूँ?''

''मिस्टर माथुर का कहना है कि सब विषय परमात्मा की निर्माण-शक्ति से उत्पन्न होने के कारण एक समान ही हैं। वह इतिहास के मर्म को वैसे ही जानता है जैसे कानून के मर्म को समझता है।

''उसने एक बात यह भी कही है कि भारत के विश्वविद्यालय इतिहास को उसी दृष्टि से पढ़ा रहे हैं जिस दृष्टि से यूरोपीय विश्वविद्यालय पढ़ा रहे हैं। परंतु भारत की एक प्राचीन विधि भी है। वह उस विधि का दर्शन अपनी पौत्र-वधू को कराना चाहता है। तब वह दोनों विधाओं से इतिहास को जान स्वयमेव उस विधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को स्वीकार कर लेगी जो उसे युक्तियुक्त प्रतीत होगी।''

''और पापा!'' मेरी ने पूछ लिया, ''आप क्या समझते हैं ?''

''इसमें मेरे समझने की बात नहीं है। मैंने तो अपनी जीवन-संगिनी अमेरिका से बाहर की नहीं बनाई। इस कारण मुझे अमेरिका से बाहर की बातों को जानने की आवश्यकता नहीं। यह तो तुमने इच्छा व्यक्त की है कि एक अपनी समाज से बाहर के व्यक्ति के साथ जीवन चलाना चाहती हो। इस कारण तुम जानो।''

मेरी गंभीर विचार में निमग्न चुप रही। मुकुटबिहारी की योग्यता के विषय में उसको ज्ञान था। वह यह भी विचार करती थी कि उसका निर्वाचन जब एक भारतीय है तो भारत की बात समझकर ही अंतिम पग उठाना चाहिए।

इस पर एक दिन उसकी इसी विषय पर बात राम के बाबा के साथ हो गई।

चंद्र ने जो 'माथुर-विला' बनवाया था, वह भाड़े पर उठाया हुआ था। इस कारण, एक दिन वह उसे देखने गया। ऐन्ना और मेरी उसके साथ थीं। मार्ग में जाते हुए मेरी ने पूछ लिया, ''अंकल! मुझे आप भारत ले जाना चाहते हैं ?''

''हाँ।''

''किसलिए ?''

''इसलिए कि तुम राम की एक भारतीय पत्नी बन सको। मैंने उसके मन में भारत और अमेरिका में अंतर भली-भाँति अंकित कर रखा है और यदि वही बात तुम्हारे मस्तिष्क में नहीं बैठी तो तुम दोनों की जीवन-यात्रा दूभर हो सकती है।''

''पापा ने तो आपके ग्रांडसन को अपनी स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए यहाँ इस कारण बुलाया है कि उसे अमरीकी जीवन का भली-भाँति परिचय हो जाए। इस कारण कि वह किसी प्रकार मेरे जीवन में बाधक न हो।''

''हाँ! मुझे ज्ञात है। मिस्टर स्टीफंस ने मुझे एक पत्र में लिखा था। मैंने उनके इस कथन का यह उत्तर दिया था कि राम के हृदय में भारतीयता सराबोर हो रही है। उस पर अमरीकी जीवन का रंग चढ़ा भी तो भारतीयता सर्वथा मिट नहीं जाएगी। वह दो प्रकार की जीवन-विधाओं का मिश्रण होगा। इसी प्रकार मैं तुम्हें भी दोनों जीवन-विधाओं का परिचय कराना चाहता हूँ। इन दोनों में से कौन कितनी-कितनी तुमने जीवन में स्वीकार करनी है, यह तुम विवाह के उपरांत स्वयं निश्चय करोगी। परंतु दोनों विधाओं का परिचय दोनों को होना अत्यावश्यक है।''

मेरी समझ गई। साथ ही वह एक स्त्री स्वभाव के कारण नवीन-नवीन बातों को देखने, सुनने और समझने के लिए उत्सुक थी।

इसी कारण उसने पूछ लिया, ''परंतु क्या भारत में मनुष्य यहाँ से भिन्न प्रकार से रहते-खाते-पीते अथवा सोचते हैं ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माथुर ने मुस्कराते हुए कहा, "रहना, खाना-पहनना तो बहुत ही साधारण बात है। इनको बदल लेना तो किसी प्रकार भी कठिन नहीं। अब देखो, मुझे यहाँ आए एक सप्ताह हो गया है और मैं यहाँ का भोजन खा रहा हूँ। मुझे यह किसी प्रकार भी अस्वाभाविक प्रतीत नहीं हो रहा। न ही यहाँ के पहिनावे में मुझे किसी प्रकार की कठिनाई होती है। परंतु विचारों की बात दूसरी है। विचार कर्म का स्रोत हैं और विचार के दो स्रोत हैं। एक बुद्धि और दूसरा संस्कार। संस्कार बनने और मिटने में समय लगता है। कभी-कभी तो संस्कार एक जन्म के दूसरे जन्म में भी जाते हैं। मेरा अभिप्राय है कि हमारे बहुत-से विचार पूर्वजन्म के संस्कारों से बने होते हैं। संस्कारों के अतिरिक्त बुद्धि भी है। यह सबकी समान नहीं। साथ ही बुद्धि की दिशा देश के वातावरण, समाज और ज्ञान से बनती है।

"इन सबके बिगड़ने अथवा बनने में समय लगता है। साथ ही कभी-कभी बुद्धि दुर्बल होने से संस्कारों को मोड़ दे नहीं सकती। अतः विचार बहुत बलशाली होते हैं।

"इसके विषय में हमारे धर्मशास्त्र में एक फार्मूला बताया गया है। वह है— कर्मों को दो भागों में बाँट देना। एक वे कर्म हैं जो किए जाने पर किसी दूसरे के न तो आश्रय हैं, न ही दूसरे पर प्रभाव डालते हैं। इसमें हम स्वतंत्र हैं और जो ऐसे कर्म हैं, जिनके करने से दूसरों पर प्रभाव पड़ता है, उनमें हमें दूसरों से समन्वय कर लेना चाहिए।

"बस, इन दो प्रकार के कर्मों में भेद और फिर भेद पर किसी प्रकार इनमें समन्वय किया जाए, यह ही हमें सीखना होता है। इसको ही मैं सिखाने के लिए तुम्हें अपने साथ ले जाना चाहता हूँ।

"जब तुम दोनों यह जान जाओगे कि कहाँ तुम्हारा निजी-जीवन समाप्त होता है और दाम्पत्य अर्थात् सामाजिक जीवन आरंभ होता है, तब तुम दोनों जीवन को सुख और शांतिपूर्वक चलाने का अवसर पा जाओगे।"

मेरी के मन में भारतीय जीवन-मीमांसा के विषय में जानने की लालसा जाग पड़ी।

इसने बात समाप्त कर दी। माथुर-विला देखने के कुछ दिन उपरांत राम को विश्वविद्यालय में प्रवेश मिला तो यह निश्चय हुआ कि राम स्टीफंस के परिवार में रहे। स्टीफंस की लड़की को माथुर साहब के घर में रहने के लिए भेजने का विचार बनते ही राम के इस प्रबंध के लिए आग्रह होने लगा।

माथुर को इस विषय में आपत्ति नहीं हुई तो ऐन्ना मेरी को कम-से-कम पाँच वर्ष के लिए भारत भेजने पर तैयार हो गई। तब तक वह सज्ञान होनेवाली थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

:: 6 ::

आधुनिक शिक्षा-पद्धति में दोष यही है कि मन के ज्ञान-ग्रहण करने के योग्य बनने से पूर्व ही उसमें संसार का कूड़ा-कर्कट भरने का यत्न कर दिया जाता है। यह समझा जाता है कि मन को ज्ञान ग्रहण करने के योग्य बनाने का उपाय उसे ज्ञान से भरना है। ज्ञान और मन दो भिन्न-भिन्न बातें हैं। एक बर्तन है और दूसरा उसमें डाला जानेवाला अमृत अथवा विष। अमृत अथवा विष की मात्रा बढ़ा देने से मन की ग्रहण शक्ति बढ़ती नहीं। बर्तन को बड़ा और ऐसा बनाना होगा जिससे उसमें डाला गया पदार्थ अमृत अथवा हलाहल विष सुरक्षित रह सके। यह स्मरण-शक्ति पर निर्भर करता है। इस शक्ति का निर्माण ही मन की ग्रहण-शक्ति को बड़ा करता है।

इसके लिए सरल योग-क्रियाएँ हैं। साथ ही, खुली हवा में घूमना और स्मरण करने का अभ्यास करना है। मंत्र, कविताएँ, किंवदंतियाँ, छोटी-छोटी कहानियाँ सुन उनको दुहराना, स्मरण-शक्ति को विकास देने के साधन हैं।

स्मरण की गई बातों का विश्लेषण करने की शक्ति पृथक् है। उनके विकास के पृथक् उपाय हैं। इन दोनों बातों की न्यूनता ही वर्तमान शिक्षा-प्रणाली को दोषपूर्ण बना रही है।

माथुर इस विद्या को जानता था। यह विद्या, उसमें भारतीय दर्शनशास्त्र पढ़ने से और पढ़े पर मनन करने से उत्पन्न हुई थी।

यही कारण था कि जब शोभा स्वरूपरानी के पास आकर सप्ताह में तीन दिन रहने लगी तो वह उसके मन और बुद्धि को विकास देने में सफल हुआ था।

राम को भी वह ज्ञान ग्रहण करने और ग्रहण किए पर चिंतन करने में कुशल बना सका था। यही वह मेरी के साथ करना चाहता था। मेरी में प्रायः स्कूलों-कॉलेजों में पढ़नेवाली छात्राओं की भाँति उड़ने-फिरने का स्वभाव था। इस कारण उसके सुधार में मुकुटबिहारी को समय लगा।

दूसरी ओर देश की राजनीति भी करवट ले रही थी। इस बदलती राजनीति का प्रभाव एक सोलह वर्ष की कुमारी पर भी हो रहा था।

मन बहुत चंचल है। यह उड़ती तितलियों के पीछे भागनेवाले की भाँति अस्थिर रहने में सुख और सुविधा अनुभव करता है। मेरी का चंचल मन भी भारत की समस्याओं के पीछे भाग खड़ा हुआ। देश की बदलती स्थिति में वह स्थिर नहीं रह सका।

यह सन् 1978 के अप्रैल-मई मास की बात थी। एक दिन मेरी कॉलेज से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई तो राम के माता-पिता अभी चाय ले रहे थे। मेरी भी अपनी पुस्तकें अपने कमरे में रख वहाँ आ बैठी। वहाँ चर्चा चल रही थी एक संसद-सदस्य—मधु लिमये के वक्तव्य पर। उसने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर गंभीर आरोप लगाए थे। उसने कहा था कि यह 'फासिस्ट' संस्था है; यह मुसलमानों से दंगे-फसाद करती है; इस संस्था ने गांधीजी की हत्या की है; यह सांप्रदायिक राज्य स्थापित करना चाहती है।

उसका आग्रह था, ये सब बातें भारत के संविधान में वर्जित होने से इस संस्था को एक वर्जित संस्था घोषित किया जाए।

मेरी चाय लेती हुई राम के पिता चंद्र को श्री मधु लिमये के वक्तव्य को उल्लेख करते सुन रही थी। अन्य सब भी चाय लेते हुए इस वार्त्तालाप को सुन रहे थे।

मुकुटबिहारी इस वक्तव्य पर टीका-टिप्पणी करना नहीं चाहता था। एकाएक मेरी बोल उठी, "बाबा! मैं इतिहास पढ़ती हुई इन बातों के विषयों में जानने के लिए उत्सुक हूँ कि ये आरोप यदि ठीक हैं तो सरकार इस पर कोई कार्यवाही क्यों नहीं करती?"

चंद्र ने इस प्रश्न का विश्लेषण कर दिया। उसने कहा, "इन आरोपों पर दो प्रकार से कार्यवाही की जा सकती है।

"एक तो सरकार अथवा संघ स्वयं इन आरोपों को किसी न्यायालय में सिद्ध करने की चुनौती दे। दूसरे, न्यायालय स्वयं भी संविधान की एक धारा के अनुसार मधु लिमये को कोर्ट में बुलाकर अपने वक्तव्य को सिद्ध करने के लिए कह सकती है। यह उच्च न्यायालय अथवा सर्वोच्च न्यायालय कर सकता है।"

मेरी का कहना था, "मैं यही तो पूछ रही हूँ कि ऐसा क्यों नहीं किया जा रहा? मैं इतिहास की छात्रा होने से इसको जानने में रुचि रखती हूँ। सबसे बड़ी बात जो मस्तिष्क में हलचल पैदा करनेवाली है कि यह संस्था महात्मा गांधी की हत्या करने वाली कही जाती है।"

अब माथुर साहब ने कहा, "देखो मेरी! इन तीनों आरोपों में केवल एक आरोप है ज़िसको एक सीमा तक सत्य माना जा सकता है। अन्य दो आरोपों को मैं बिल्कुल निराधार समझता हूँ।

"एक आरोप है कि यह संस्था फासिस्ट है। मैं इसे कुछ सीमा तक ही ठीक समझता हूँ, पूर्ण रूप से नहीं। प्रत्येक संस्था कुछ सीमा तक फासिस्ट होती है। इसे अनुशासन में रहना कहा जाता है। एक संस्था का फासिस्ट होना कानून और मानव-व्यवहार के विपरीत नहीं है। जब तक एक फासिस्ट संस्था राज्य-बल के आश्रय अपनी बात चलाती नहीं, तब तक यह संस्था वर्जित घोषित नहीं हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती, न ही होनी चाहिए।

"देखो, मैं समझाता हूँ। एक सीमा तक हम परिवार में भी फासिस्ट हैं। जाति-बिरादरियों में भी यह व्यवहार एक सीमा तक स्वीकार किया जाता है और प्रत्येक राजनीतिक संस्था चाहे विपक्ष में हो, चाहे शासन में हो, भी एक सीमा तक फासिस्ट होती है। आखिर मतदान के समय 'ह्विप' जो जारी किए जाते हैं वे क्या हैं ? नाम अनुशासन का है।

"परंतु फासिज़्म क्या है, यही विचारणीय है। कुछ लोग दस-बीस अथवा सहस्रों तथा लाखों मिलकर कुछ एक बातों को ठीक मान लेते हैं और तब वे उन बातों को दूसरों पर जबर्दस्ती आरोप करना चाहते हैं, यही फासिज़्म है।

"यही एक परिवार में माता-पिता बच्चों पर करते हैं। बिरादरियों और सभा-समाजों के अधिकारी सदस्यों पर करते हैं और राज्य भी कई बातें लोगों पर करता है। जब तक उन विशेष बातों को लागू करने के पीछे राजसी अथवा किसी प्रकार का बल न हो, तब तक वह बात मनवाने का यत्न किसी भी समाज में वर्जित नहीं हो सकता।

"जब तक किसी बात को मनवाने के लिए बल-प्रयोग न किया जाए, तब तक यह फासिज़्म अथवा जो कुछ भी तुम इसे कहो, वर्जित नहीं। अत: यदि इस संस्था ने किसी को बलपूर्वक हिंदू बनाया हो अथवा उसके न मानने पर उसकी हत्या की हो, तब ही यह संस्था दोषी हो सकती है।

"अत: यह संस्था फासिस्ट है अथवा नहीं है, यह विचारणीय नहीं है। विचारणीय यह है कि इसने किसी को बलपूर्वक अपनी बात मानने पर विवश किया है क्या ?

"मैं एक घटना का उल्लेख करता हूँ। इस संस्था के विचारवालों ने एक राजनीतिक पार्टी बनाई थी। नाम था—जनसंघ।

"मुझे उसके एक प्रतिष्ठित सदस्य की बात स्मरण है। वह तब इस संस्था का नेता माना जाता था। उसका किसी विषय पर अधिकारियों से मतभेद हो गया। उसने मतभेद कार्यकारिणी में प्रकट किया। इस पर कार्यकारिणी ने उसकी बात पर विचार करने का वचन दिया।

"तब उस जनसंघ के प्रतिष्ठित सदस्य ने अपने विचार लिखकर कार्यकारिणी के सब सदस्यों, मंत्री तथा प्रधान के पास भेज दिए। उसकी बात विचार के लिए कार्यकारिणी में उपस्थित नहीं की गई। परिणामस्वरूप उस सदस्य ने अपने को जनसंघ से पृथक् कर लिया।

"मैंने उससे पूछा, 'अब क्या करोगे ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उस सदस्य ने कहा, 'मैं क्या कर सकता हूँ ? अपनी बात दूसरों को समझाने का यत्न करूँगा। पार्टी को भी कहूँगा कि यह अपने अयुक्त व्यवहार को छोड़ दे।'

"बस, वह जनसंघ का सदस्य पृथक् हो गया। किसी ने उसे हानि नहीं पहुँचाई। न ही उसने किसी के दुर्व्यवहार की शिकायत की। कोई भी इसका सदस्य जब चाहे संस्था को छोड़ अपना, पृथक् जीवन चलाने के लिए स्वतंत्र है। उस पर किसी प्रकार का बल-प्रयोग होता सुना नहीं गया।"

"परंतु बाबा! गांधीजी की हत्या का आरोप जो इन पर लगाया जाता है ?" मेरी का प्रश्न था।

"परंतु मेरी! हत्याएँ क्या फासिस्ट ही करते हैं? अमेरिका के प्रधान अब्राह्म लिंकन और कैनेडी क्या फासिस्टों ने मारे थे? प्रतिवर्ष संसार में सहस्रों की हत्याएँ होती हैं। मैं गांधीजी की हत्या भी उसी प्रकार की समझता हूँ।

"यह ठीक है कि गांधीजी देश के एक नेता माने जाते थे, परंतु उनके नेता होने से उनका हत्यारा फासिस्ट होगा, यह युक्तियुक्त कथन नहीं हो सकता।"

"परंतु बाबा!" मेरी, जो कुछ दिन पूर्व ही गांधीजी की हत्या का इतिहास पढ़ती रही थी, पूछने लगी, "यह गांधीजी का हत्यारा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सदस्य था?"

"तो संघ के सर-संघचालक को छोड़ क्यों दिया गया था? उसे भी तो पकड़ा था। परंतु उसे और सावरकर को न्यायाधीश ने छोड़ दिया था। इससे तो यही बात पता चलती है कि संघ का इस हत्या के साथ संबंध नहीं था। अधिक-से-अधिक यही कहा जा सकता है कि संघ के एक घटक ने गांधीजी की हत्या कर दी थी। परंतु यह संघ की प्रेरणा से थी, यह तो सिद्ध नहीं हुआ। इतने-मात्र से कि कोई किसी सभा-समाज का घटक है और हत्यारा है तो वह सभा-समाज कैसे दोषी हो सकती है?

"कोई ईसाई अथवा यहूदी किसी की हत्या कर दे तो ईसाई-मत को गैर-कानूनी कर दिया जाएगा क्या?"

मेरी ने कहा, "पंडित जवाहरलाल ने तो यह बात यहाँ की पार्लियामेंट में कही थी।"

"हाँ, परंतु पार्लियामेंट में कहे गए झूठ का कोई उपचार नहीं।"

"तो क्या नेहरू जी ने झूठ बोला था?"

"उनके कथन में कोई प्रमाण नहीं दिया गया।"

मेरी गम्भीर विचार में खो गई। माथुर ने आगे कहा, "देखो मेरी! मैं तुम्हें एक अन्य घटना बताता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यहाँ के एक धर्म-गुरु शंकाराचार्य ने पटना में एक व्याख्यान दिया था। यह माना गया था कि उस व्याख्यान में गुरु शंकराचार्य ने कहा है कि किसी अछूत-जाति का घटक उच्च-वर्ण में नहीं आ सकता, जब तक वह उच्च-वर्ण की स्त्री के पेट से जन्म न ले।

''इस पर देश के दो समुदायों में वैमनस्य फैलाने का आरोप लगाकर उस पर मुकद्दमा किया गया। पटना हाईकोर्ट ने उसे बरी कर दिया। इस पर भी लोकसभा में कुछ मुख्य-मुख्य लोकसभा के सदस्यों ने गुरु शंकराचार्य की निंदा की।

''गुरु शंकराचार्य ने सर्वोच्च न्यायालय में मान-हानि का दावा कर दिया।

''इस पर न्यायालय ने लोकसभा के उन सदस्यों को उत्तर देने के लिए कोर्ट में बुलाया तो पूर्ण लोकसभा सर्वोच्च न्यायालय के साथ झगड़ा करने के लिए तैयार हो गई। लोकसभा के अध्यक्ष ने कह दिया कि वे सुप्रीमकोर्ट की आज्ञा को नहीं मानेंगे।

''पीछे इस विषय पर बात समाप्त कर दी गई। मैं जो कहता हूँ, वह यह है कि लोकसभा में झूठ भी बोला जा सकता है और झूठ बोलनेवाले पर कोई बाहर का व्यक्ति किसी प्रकार की चाराजोई नहीं कर सकता।''

''परंतु हमारे देश में तो एक सामान्य न्यायाधीश भी देश के प्रेज़िडेंट के विरुद्ध आज्ञा दे सकता है। 'वाटर गेट' के मामले में ऐसा हुआ है।''

''हाँ! परंतु भारत में अभी उतनी स्वतंत्रता नहीं है।''

''परंतु बाबा! गांधी की हत्या गलत बात थी न?''

''हाँ! गलत थी और देश के कानून से यह अपराध भी था। परंतु हत्या करनेवाले के भावों का भी तो ध्यान रखना होगा। मैं उस दिन शिमला हाईकोर्ट में गांधी के हत्यारे का मुकद्दमा देखने गया था और हत्यारे गोडसे के बयान सुनने के लिए तीन दिन वहाँ ठहरा रहा।

''मैं सत्य कहता हूँ कि उसके वक्तव्य को कोर्ट में सुनकर उपस्थित जनों में कोई भी ऐसा नहीं था, जिसकी आँखों में आँसू नहीं आ रहे थे। गोडसे ने देश की दुर्दशा का वर्णन किया था। उसका कहना था कि उसने हत्या इस कारण नहीं की क्योंकि उसका गांधीजी से किसी प्रकार का निजी-द्वेष था। यह हत्या गांधीजी के बार-बार देश और देश की समाज के हितों का विरोध करने के कारण की थी।

''उसने देश की दशा का वर्णन ऐसे शब्दों में व्यक्त किया था कि लोग रो उठे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और जब अपने वक्तव्य के अन्त में उसने 'सदा वत्सले मातृभूमे' का उच्चारण किया तो मेरे सामने बैठी एक लड़की अपने पर काबू न पा, उठ कोर्ट-रूम से भाग खड़ी हुई थी और कोर्ट-रूम से बाहर जा विह्वल हो, रोती रही थी।"

"तो क्या कोर्ट में बैठे लोग समझ रहे थे कि उसने देश की सेवा की है?"

"यह मैं कैसे कह सकता हूँ? मैंने लोगों के मनोभावों के विषय में जानने का यत्न नहीं किया। हाँ, मेरे मन में यह भावना थी कि भारतीय-समाज के साथ गांधीजी ने घोर अन्याय किया था। मैं समाज को मातृभूमि मानता हूँ और समाज के साथ अन्याय मातृभूमि के साथ अन्याय है।

"गांधीजी ने पाकिस्तान का पक्ष लिया था और वहाँ की समाज को प्रसन्न करने के लिए भारतीय-समाज का विरोध किया था।"

मेरी देख रही थी माथुर साहब की आँखें इस कथा को सुनाते हुए तरल हो रही थीं।

बात माथुर साहब ने ही समाप्त की, "मेरे इस कथन का अर्थ यह नहीं कि मैं हत्या को पसन्द करता हूँ। मैं तो किसी भी मनुष्य की हत्या को घोर पाप मानता हूँ। परन्तु हत्या तो गोडसे की भी हुई है। हत्या का बदला हत्या से लिया गया है। इस पर भी जो अधिमान गांधीजी ने पाकिस्तानी-समाज को भारतीय-समाज पर दिया था, वह क्षम्य कैसे हो गया? उस समय भारतीय-समाज पर पाकिस्तानी समाज ने आक्रमण किया था और यह महात्मा उनको वह रुपया, जो उनका लेना बनता भी नहीं था, दिलाने का हठ कर रहे थे।"

मेरी इस सब वक्तव्य पर माथुर साहब का मुख देखती रह गई।

माथुर साहब ने आगे कहा, "गांधीजी ने हठ किया था और भारत सरकार ने गांधीजी का हठ मानकर पचपन करोड़ रुपया पाकिस्तान को दे दिया था जबकि पाकिस्तान के साथ भारत के सैनिक लड़ रहे थे। इस कारण सरकार भी निर्दोष नहीं कही जा सकती। परन्तु हमारे यहाँ कहावत है कि—'समरथ को न दोष गुसाईं'। इस कारण गांधी और सरकार दोनों ही कसूरवार थे। वे शक्तिशाली थे और गोडसे को फाँसी हो गई।"

मुकुटबिहारी का कहना था कि जनता-पार्टी के शासन में पूर्वदल के शासन से किसी प्रकार भी विलक्षणता नहीं है। इस काल में देश की शिक्षा, अर्थव्यवस्था तथा समाज की नैतिक अवस्था में कुछ पतन ही हुआ है और कोई अचम्भा नहीं होगा यदि देश जनता-पार्टी से भी उपराम न हो जाए। हुआ भी ऐसा ही।

देश का राजनीतिक चित्र बदलने लगा और बदलते-बदलते सन् 1980 में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब पुनः इन्दिरा गांधी का शासन स्थापित हो गया तो माथुर को कोई आश्चर्य नहीं हुआ।

राम फिलाडैल्फिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर पी-एच०डी० की उपाधि पा चुका था। उसके निबन्ध का विषय था—'भूमण्डल के देशों में अर्थ की दुर्व्यवस्था'। उपाधि मिलने पर उसे विश्वविद्यालय में ही प्राध्यापक का कार्य करने का प्रस्ताव हुआ तो उसने इस विषय में पिता को पत्र लिखकर उनकी सम्मति माँग ली।

जब राम का पत्र चन्द्र को मिला तो उसने घर के सब सदस्यों के समक्ष राम का पत्र उपस्थित कर दिया। परिवार की गोष्ठी हो गई। इसमें मुकुटबिहारी, चन्द्र, शोभा, रामलाल, रानी, सौमित्र, मोहिनी और मेरी सब थे।

चन्द्र ने राम का पत्र पढ़कर सुनाया। राम ने लिखा था, ''पिताजी! मुझे डॉक्टरेट मिल गई है और कुलपति महोदय ने बुलाकर कहा है कि उनका विश्वविद्यालय मुझे यहाँ अर्थशास्त्र पढ़ाने पर नियुक्त कर अति प्रसन्नता अनुभव करेगा।

''मैंने उनको कहा है कि मेरे कुछ सूत्र भारत से बँधे हुए हैं। उनके विषय में भी विचार करना है। अतः अपने सम्बन्धियों की सम्मति इस विषय में जानकर ही उनके प्रस्ताव का उत्तर दे सकता हूँ। उन्होंने मुझे आप लोगों की अनुमति लेने के लिए कहा है। अतः मैं आपको पत्र लिख रहा हूँ।''

पत्र को सुन मेरी ने कहा, ''पिताजी! मुझे भी उसका पत्र मिला है। मुझसे भी उसने इसी विषय पर सम्मति पूछी है।''

इस पर मुकुटबिहारी ने पूछा, ''मेरी! तुम उसको पत्र लिखने वाली हो क्या?''

''मैंने इस विषय पर कुछ विचार किया है, परन्तु उसके विषय में आप सबकी सम्मति जानकर ही बताऊँगी।''

अब माथुर ने रामलाल से पूछ लिया, ''हाँ तो रामलाल! तुम क्या कहते हो?''

''वकील साहब!'' रामलाल ने कहा, ''मैं भारत के उस भाग का रहनेवाला हूँ जो अब पाकिस्तान बन चुका है। वहाँ वापिस जाकर रहने का तो विचार भी नहीं कर सकता। वहाँ रानी के साथ जो दुर्व्यवहार हुआ था, वह क्षमा करने योग्य नहीं है।

''फिर जो कुछ यहाँ भारत में हुआ है, वह भी तो संतोषजनक नहीं है। परन्तु मैं इस जीवन के लिए भारत और दिल्ली के साथ संयुक्त हो चुका हूँ। अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ से कहीं जाने की मुझमें सामर्थ्य नहीं है। इस पर भी यहाँ का समाज कुछ जँच नहीं रहा और वकील साहब! आपका कहना है कि किसी भूखण्ड में समाज ही मुख्य है। देश-प्रेम वास्तव में समाज-प्रेम ही है। किसी भूमि-खण्ड पर रहते हुए वास्तव में हम वहाँ बसनेवाली समाज में ही रह रहे होते हैं। ऐसी अवस्था में यहाँ से मैं जा नहीं सकता, परन्तु जो जा सकते हैं, उनको मैं यहाँ के बन्धन में बँधकर रहने के लिए नहीं कह सकता।''

रामलाल की बात को सुनकर माथुर गम्भीर हो गया। वह कह नहीं सका कि वह ग़लत है। उसने शोभा के समीप बैठी रानी से पूछ लिया, ''रानी! तुम क्या कहती हो?''

''मैं वैसा ही विचार रखती हूँ जैसा शोभा के पिता ने बताया है।''

''और शोभा! तुम क्या चाहती हो?''

''मैंने राम के पिता से राय की है। हम दोनों की राय यह है कि राम को वहीं काम स्वीकार कर लेना चाहिए और साथ ही यहाँ भारत में आते-जाते रहना चाहिए। हमें भी उससे सम्पर्क रखना चाहिए। यहाँ भारत में अपनी विद्वत्ता को वह न तो विकास दे सकेगा और न ही यहाँ की समाज का कुछ कल्याण कर सकेगा। अयुक्तिसंगत विचारों की यहाँ बाढ़ आई हुई है और देश द्रुतगति से रसातल की ओर जा रहा है।''

''और मेरी! तुम्हारा क्या विचार है?''

''मैं तो मन में निश्चय कर चुकी हूँ। मैं वहाँ अमेरिका में जाकर रहूँगी। मैं यहाँ की समाज को न तो अपने अनुकूल पाती हूँ, न ही अपने को इस समाज के अनुकूल देख रही हूँ। इस कारण मैं आपके पुत्र को लिख रही हूँ कि मैं वहाँ अमेरिका में ही रहना चाहती हूँ और यदि वहाँ काम मिलता हो तो ले लें।''

चन्द्र ने पूछ लिया, ''और यदि राम की यहाँ भारत में आकर रहने की इच्छा हुई तो?''

''मैं वहीं रहूँगी। मुझे भारतीय-समाज रहने योग्य अनुभव नहीं हो रहा। वैसे मैं आपके पुत्र से विवाह की इच्छा करती हूँ, परन्तु विवाह के लिए अपने अनुकूल समाज को नहीं छोड़ सकती।''

मुकुटबिहारी अनुभव कर रहा था कि जब उसने गांधीजी की हत्या पर विवेचना की थी, तब के उपरान्त कभी भी समाज और देश की बात मेरी से नहीं हुई थी। कोई अवसर ही नहीं आया था कि उस विषय में फिर बात हो। तबका प्रभाव इसके मन पर है।

आज मेरी की बात से उसे यह अनुभव हुआ कि उसको भारतीय समाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की गतिविधियाँ पसन्द नहीं आईं। इस पर उसने पूछ लिया, "परन्तु पति-पत्नी भी तो समाज में एक इकाई होते हैं ?"

"बाबा! इकाई से पूर्ण बड़ा होता है। इकाई को पूर्ण के साथ रहना चाहिए।"

"देखो मेरी! मेरी सम्मति यह है," मुकुटबिहारी ने कहा, "राम को यहाँ आ जाना चाहिए और अपना जीवन, अपनी समाज को सन्मार्ग दिखाने के लिए लगाना चाहिए। वहाँ वेतन अधिक मिलेगा, परन्तु यहाँ पुण्य अधिक मिल सकेगा। जहाँ अधिक आवश्यकता हो, वहाँ अपना कार्य करना चाहिए।"

इस पर सब गम्भीर विचार में मग्न हो गए। परन्तु एकाएक मोहिनी बोल उठी, "बाबा! आप जाइए और दादा को यहाँ ले आइए।"

चन्द्र ने कहा, "परन्तु तुम तो मेरी की सहेली हो न, उसे क्यों नहीं यहाँ रख लेतीं ? तब राम स्वयं ही यहाँ आ जाएगा।"

"पिताजी! आप राम को ले आइए। मैं भाभी के पाँव पकड़ उसे यहाँ रख लूँगी।"

अतः निश्चय हुआ कि मुकुटबिहारी स्वयं अमेरिका जाए और राम से विचार-विमर्श कर उचित निश्चय कर आए। इस पर मेरी बोल उठी, "मैं भी बाबा के साथ जाऊँगी।"

"और मैं भी चलूँगी।" मोहिनी का कहना था।

"तुम किसलिए जाओगी ?"

"भाभी के पाँव पकड़ने के लिए कि यहाँ वापिस चली आए। दादा तो बाबा के कहने पर आएँगे ही और भाभी को मैं चरण पकड़ यहाँ ले आऊँगी।"

सब हँसने लगे।

परिणामस्वरूप मुकुटबिहारी, मेरी और शोभा तथा मोहिनी फिलाडैल्फिया जा पहुँचे और उनके वहाँ पहुँचने के एक सप्ताह उपरान्त शोभा का पत्र आया, "अभी कुछ निश्चय नहीं हुआ।"

एक सप्ताह उपरान्त पुनः पत्र आया कि मेरी और राम ने यहाँ कोर्ट में विवाह के लिए याचिका कर दी है। तदनन्तर मुकुटबिहारी माथुर, शोभा भारत लौट आए।

इनके पहुँचने का समाचार पाते ही रानी, रामलाल और सौमित्र माथुर साहब की कोठी पर चले आए।

माथुर साहब ने वहाँ का समाचार दिया, "राम और मेरी कहते हैं कि पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव-समाज में विकृति आ गई है। भारतीय-समाज उससे पृथक् नहीं है।

''राम ने अभी कुछ काल के लिए वहाँ रहना चाहा है। वैसे उसका निश्चय है कि भारत लौटेगा और अपना कार्यक्षेत्र भारत ही रखेगा। मेरी उससे काफी बातें हुईं हैं। मैंने उसे कहा है कि यदि शुद्ध गंगाजल का सेवन करना है तो उसे गंगोत्री जाना पड़ेगा। गंगोत्री स्रोत है शुद्ध गंगाजल का। इसी प्रकार ज्ञान का स्रोत भारत है। यहाँ के वेदादि धर्म शास्त्र हैं। इस स्रोत में डुबकी लगाएगा तो उसे अमृत मिलेगा। आज आवश्यकता है उस अमृत को जन-जन तक पहुँचाकर उसका सेवन कराया जाए। इसके लिए सैकड़ों विद्वानों का चिन्तन, लाखों कार्यकर्त्ताओं का प्रयास तथा असीम साधन चाहिएँ। साधन एकत्रित करने के लिए वह वहाँ रुकना चाहता है।

''उसे कुछ साथी वहाँ मिल गये हैं जो इसी प्रकार के विचार रखते हैं। साधनों के लिए वे योजना बना रहे हैं।

''राम जिस कॉलेज में प्राध्यापक है, वहाँ के कुछ विद्यार्थियों ने एकसभा बनाई है। उसका नाम उन्होंने आर्डेन्ट सोसायटी रखा है। मास में एक बार वे सभा करते हैं जहाँ सामयिक समस्याओं पर चर्चा होती है तथा यदि कोई विशेष व्यक्ति आता है तो उसे बुलाकर उसके विचार सुनते हैं। पिछले शनिवार राम का सम्मान करने के लिए उन्होंने उसे आमंत्रित किया था। साथ ही मेरे विषय में जब उनको पता चला कि भारत का कानून-विशेषज्ञ हूँ तो मुझे भी आमन्त्रित किया गया।

''मैंने तो साधारण कानूनी बातें रखीं परन्तु राम ने एक घंटा भर 'रीयल हिन्दूइज़्म ऐण्ड ह्यूमन प्राब्लम्स' पर व्याख्यान दिया। उसने कई ऐतिहासिक घटनाओं, ऋषियों के तथा सन्तों के उदाहरण देकर बताया कि हिन्दू धर्म वास्तव में मानव धर्म है। यदि मानव समाज का उत्थान करना है तो हिन्दुत्व की व्याख्या आज की परिस्थितियों के सन्दर्भ में सामने रखनी होगी।

''मैंने अनुभव किया है कि चन्द्र की अपेक्षा उसका बेटा राम काफी होशियार निकला है। चन्द्र तो उसकी तुलना में कुछ नहीं।

रामलाल ने हँसते हुए कहा, ''इसका कारण यह है कि चन्द्र में बुद्धि का विकास आपने किया था। राम में भी बुद्धि का विकास तो उसी प्रकार हुआ है। परन्तु परिस्थितियों में मार्ग बनाने की व्यवहारिकता उसे ननिहाल से मिली है, शोभा के द्वारा।

''मुझे विश्वास है कि राम मानव समाज को उन्नत करते हुए भारत माता के सच्चे सपूतों में अपना नाम लिखाएगा।''

''एक बात विशेष हुई है।'' माथुर साहब ने कहा, ''कालेज की सभा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम के व्याख्यान के बाद मेरी का मन भी डोल गया है। राम का स्वागत जिस उत्साह से हुआ था, उससे वह बहुत प्रभावित हुई है। उसका चिन्तन तथा मनन अभी समाप्त नहीं हुआ।

राम ने उसे एक दिन कहा था, जहाँ तक मानव का प्रश्न है, हिन्दू समाज, ईसाई समाज में अन्तर नहीं है। देखना यह चाहिए कि हमारा सम्बन्ध ज्ञान के स्रोत से नहीं टूटे। प्रेरणा हमें वहीं से प्राप्त होगी।

"मुझे लगता है मेरी भी भारत आएगी। वह बुद्धिशील प्राणी है। बुद्धि का प्रयोग करेगी तो उसे मार्ग भी मिलेगा।"

●●●

Central Library
168006
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
168006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-5 आगत संख्या 168006

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवावस्था से ही राजनीतिज्ञों से सम्पर्क, क्रान्तिकारियों से समीप का सम्बन्ध तथा इतिहास का गहन अध्ययन—इन सब की पृष्ठभूमि पर इस श्रृंखला में चार राजनीतिक अत्यन्त रोमांचकारी एवं लोमहर्षक उपन्यास श्री गुरुदत्त ने हिन्दी जगत् को दिये है—

1 विश्वासघात   2 देश की हत्या

3 दासता के नये रूप   4 सदा वत्सले मातृभूमे!

समाचार पत्र, लेख, नेताओं के वक्तव्यों के आधार पर उपन्यासों की रचना की गई है! उपन्यासों के पात्र राजनीतिक नेता तथा घटनाएं वास्तविक हैं।

हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005
फोन : 23553624, 23551344 ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar